VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

क्लासरूम स्टडी मटीरियल 2024

अगस्त 2023 – मई 2024

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

8468022022
9019066066

enquiry@visionias.in /c/VisionIASdelhi /visionias_upsc vision_ias /VisionIAS_UPSC www.visionias.in

ABHYAAS MAINS 2024

ALL INDIA MAINS (GS + ESSAY + OPTIONAL) MOCK TEST (OFFLINE)

PAPER DATES

GS-I & II	GS-III & IV	ESSAY	OPTIONAL-I & II
24 AUG	25 AUG	31 AUG	1 SEPT

OPTIONAL SUBJECTS ANTHROPOLOGY | GEOGRAPHY | HINDI | HISTORY | MATHS | PHILOSOPHY
PHYSICS | POLITICAL SCIENCE | PUBLIC ADMINISTRATION | SOCIOLOGY

Scan to Know More and Register

- All India Percentile
- Comprehensive Evaluation
- Concrete Feedback & Corrective Measures
- Complete coverage of UPSC Mains syllabus
- Available in English/Hindi
- Live Test Discussion

Register at: www.visionias.in/abhyaas

AHMEDABAD | BENGALURU | BHOPAL | BHUBANESWAR | CHANDIGARH | CHENNAI | CHHATARPUR (MP)
COIMBATORE | DEHRADUN | DELHI - KAROL BAGH | DELHI - MUKHERJEE NAGAR | GHAZIABAD | GORAKHPUR
GURUGRAM | GUWAHATI | HYDERABAD | INDORE | JABALPUR | JAIPUR | JAMMU | JODHPUR | KANPUR | KOCHI
KOLKATA | KOTA | LUCKNOW | LUDHIANA | MUMBAI | NAGPUR | NOIDA | ORAI | PATNA | PRAYAGRAJ | PUNE RAIPUR
RANCHI | ROHTAK | SHIMLA | THIRUVANANTHAPURAM | VARANASI | VIJAYAWADA VISAKHAPATNAM

अंतर्राष्ट्रीय संबंध (International Relations)

विषय-सूची

1. बदलती विश्व व्यवस्था की गतिशीलता (Dynamics Of Changing World Order) ____ 4
1.1. भारत की विदेश नीति की गतिशीलता ____ 4
1.1.1. भारत की आर्थिक कूटनीति: एक नज़र में ____ 4
1.1.2. भू-राजनीति में प्रौद्योगिकी की भूमिका ____ 5
1.1.3. आपदा राहत कूटनीति ____ 6
1.1.4. पैराडिप्लोमेसी: एक नज़र में ____ 8
1.5. भारत की सामरिक स्वायत्तता ____ 8
1.6. भारत: द वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ ____ 10
1.6.1. विश्व को एकजुट करने वाले देश के रूप में भारत ____ 11
1.7. भारत और विकासात्मक सहयोग ____ 13
1.8. सॉफ्ट पॉवर कूटनीति ____ 14
1.8.1. सॉफ्ट पॉवर और सांस्कृतिक कूटनीति ____ 14
1.8.2. भारतीय डायस्पोरा: एक नज़र में ____ 16
1.8.2.1. भारत में विप्रेषण ____ 17
1.8.2.2. विदेश में काम करने वाले भारतीयों श्रमिकों के लिए श्रम नियम ____ 17
1.9. बंदरगाहों का भू-राजनीतिक महत्त्व ____ 18
1.10. सामरिक उपकरण के रूप में क्रूड ऑयल ____ 20
2. भारत से जुड़े और/ या भारत के हितों को प्रभावित करने वाले क्षेत्रीय एवं वैश्विक समूह और समझौते (Regional, and Global Groupings and Agreements Involving India and/or Affecting India's Interest) ____ 22
2.1. भारत और G20 ____ 22
2.1.1. नई दिल्ली घोषणा-पत्र ____ 24
2.1.2. भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा ____ 25
2.1.3. अफ्रीकी संघ: G20 का एक स्थायी सदस्य ____ 27
2.1.4. ग्लोबल बायोफ्यूल अलायन्स ____ 28
2.2. ब्रिक्स का विस्तार ____ 29
2.3. भारत और हिंद-प्रशांत: एक नज़र में ____ 31
2.3.1. इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क फॉर प्रॉस्पेरिटी 33
2.4. शंघाई सहयोग संगठन: एक नज़र में ____ 34
2.5. क्वाड ____ 36
2.6. भारत-आसियान: एक नज़र में ____ 38
2.7. राष्ट्रमंडल ____ 39
2.8. गुटनिरपेक्ष आंदोलन ____ 40
2.9. अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी ____ 41
3. भारत और उसके पड़ोसी देशों के साथ संबंध (India and its Neighbourhood Relations) ____ 43
3.1. भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी ____ 43
3.2. चीन का उदय और भारत के लिए खतरा ____ 44
3.2.1. भारत-चीन सीमा विवाद ____ 45
3.3. सिंधु जल संधि ____ 46
3.3.1. सीमापारीय नदी जल प्रबंधन ____ 48
3.4. भारत-नेपाल संबंध: एक नज़र में ____ 49
3.4.1. भारत-नेपाल राज्यक्षेत्र विवाद ____ 51
3.5. भारत-भूटान संबंध: एक नज़र में ____ 52
3.6. तालिबान शासन के तहत भारत-अफगानिस्तान संबंध ____ 53
3.7. भारत के उत्तर-पूर्व में स्थित पड़ोसी देश: एक नज़र में ____ 54
3.8. भारत-श्रीलंका समुद्री सीमा रेखा ____ 55
3.9. भारत-मालदीव संबंध: एक नज़र में ____ 56
3.9.1. मालदीव चीन सैन्य समझौता ____ 57
3.10. भारत-दक्षिण एशिया ____ 57
3.10.1. दक्षिण एशिया उप-क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग ____ 57
4. भारत को शामिल करने वाले और/ या भारत के हितों को प्रभावित करने वाले द्विपक्षीय समूह तथा समझौते (Bilateral Grouping and Agreements Involving India and/or Affecting India) ____ 60
4.1. पश्चिम एशियाई संकट ____ 60
4.1.1. अब्राहम समझौता ____ 60
4.1.2. इज़रायल-हमास युद्ध ____ 61
4.1.3. नागोर्नो-काराबाख क्षेत्र ____ 63
4.2. भारत और पश्चिम एशिया ____ 65
4.2.1. भारत-इजरायल संबंध: एक नज़र में ____ 65
4.2.2. भारत-संयुक्त अरब अमीरात (UAE) संबंध: एक नज़र में ____ 66
4.2.3. भारत-सऊदी अरब संबंध: एक नज़र में ____ 67
4.2.4. भारत-खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) संबंध: एक नज़र में ____ 68
4.3. भारत- मध्य एशिया संबंध: एक नज़र में ____ 69

4.4. भारत-दक्षिण कोरिया संबंध: एक नज़र में ____ 70
4.5. भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया ____ 71
4.5.1. भारत और इंडोनेशिया संबंध ____ 71
4.5.2. दक्षिण चीन सागर ____ 72
4.6. भारत-अमेरिका ____ 74
4.6.1. भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका संबंध: एक नज़र में ____ 74
4.6.2. भारत-कनाडा संबंध: एक नज़र में ____ 75
4.6.3. भारत-लैटिन अमेरिका संबंध: एक नज़र में ____ 76
4.6.4. भारत-ब्राजील ____ 77
4.7. भारत-यूरोप ____ 78
4.7.1. भारत-यूरोपीय संघ संबंध: एक नज़र में ____ 78
4.7.2. भारत-रूस संबंध: एक नज़र में ____ 79
4.7.2.1. रूस-चीन संबंध और भारत पर प्रभाव ____ 80
4.7.2.2. उत्तरी समुद्री मार्ग ____ 81
4.7.3. भारत-यूक्रेन संबंध ____ 81
4.7.4. भारत-फ्रांस संबंध: एक नज़र में ____ 82
4.7.5. भारत-यूनाइटेड किंगडम (UK) संबंध: एक नज़र में 84
4.7.6. भारत-इटली संबंध ____ 85
4.7.7. भारत-ग्रीस संबंध: एक नज़र में ____ 87
4.7.8. भारत नॉर्डिक संबंध: एक नज़र में ____ 88
4.8. भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंध: एक नज़र में ____ 89
4.8.1. भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौते (INDAUS ECTA) का एक वर्ष पूरा हुआ ____ 90
4.9. भारत-अफ्रीका ____ 91
4.9.1. भारत-अफ्रीका संबंध: एक नज़र में ____ 91
4.9.2. भारत-मॉरीशस संबंध: एक नज़र में ____ 92
5. भारत के हितों पर विकसित तथा विकासशील देशों की नीतियों और राजनीति का प्रभाव (Effect of Policies and Politics of Developed and Developing Countries on India's Interests) ____ 93
5.1. बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव - दसवीं वर्षगांठ ____ 93
5.1.1 चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा ____ 94
5.2. नाटो यानी उत्तर अटलांटिक संधि संगठन ____ 94
5.3. ऑकस ____ 95
6. महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संस्थान, एजेंसियां और मंच, उनकी संरचना, अधिदेश (Important International Institutions, Agencies, and Fora, Their Structure, Mandate) ____ 98
6.1. बदलते समय में वैश्विक संस्थाएं ____ 98
6.1.1. भारत और बहुपक्षीय विकास बैंक ____ 99
6.2. संयुक्त राष्ट्र ____ 101
6.2.1. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद: एक नज़र में ____ 101
6.2.2. भारत और संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना: एक नज़र में ____ 102
6.2.3. संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद: एक नज़र में ____ 103
6.2.4. अंतर्राष्ट्रीय समुद्र संगठन ____ 103
6.2.5. भ्रष्टाचार के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन ____ 105
6.3. अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय ____ 106
6.3.1. जेनोसाइड कन्वेंशन ____ 107
7. परिशिष्ट (Appendix) ____ 109
8. विगत वर्षों के प्रश्न 2013-2023 (सिलेबस के अनुसार) {Previous Year Questions 2013-2023 (Syllabus-Wise)} ____ 118

GS मेन्स एडवांस कोर्स 2024
प्रारंभ: 28 जून | दोपहर 1 बजे
लाइव/ऑनलाइन कक्षाएं भी उपलब्ध

अभ्यर्थियों के लिए संदेश

प्रिय अभ्यर्थी,

समसामयिक घटनाक्रमों को ठीक से समझने से जटिल मुद्दों के बारे में आपकी समझ और बेहतर हो सकती है। इससे विशेष रूप से मुख्य परीक्षा के संदर्भ में आपको बारीक समझ विकसित करने में मदद मिलती है।

इसे ध्यान में रखते हुए, मेन्स 365 अंतर्राष्ट्रीय संबंध डॉक्यूमेंट के जरिए आपकी अध्ययन प्रक्रिया को और सरल बनाने का प्रयास किया गया है।

मेन्स 365 अंतर्राष्ट्रीय संबंध: प्रमुख विशेषताएं

संक्षिप्त और ऑब्जेक्टिव: प्रत्येक टॉपिक को संक्षिप्त और ऑब्जेक्टिव रूप से प्रस्तुत करने के लिए, प्रासंगिक उदाहरणों एवं तथ्यों को शामिल किया गया है। इससे आप अपने उत्तर को स्पष्टता और सटीकता के साथ प्रस्तुत कर सकेंगे।

बेहतर इन्फोग्राफिक्स: इन्हें टॉपिक्स की प्रभावी समझ के लिए डिज़ाइन किया गया है। साथ ही, नॉर्दर्न सी रूट, भारत-मध्य पूर्व यूरोप आर्थिक गलियारा जैसे टॉपिक्स में मानचित्रों का उपयोग किया गया है।

टॉपिक: एक नज़र में: इस खंड में स्टेटिक विषयों और बार-बार पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण टॉपिक्स का सारांश प्रस्तुत किया जाता है, जिससे क्विक रिव्यू आसान हो जाता है।

उद्धरण: उत्तर में उद्धरणों को शामिल करने से उत्तरों की गुणवत्ता बढ़ सकती है, जिससे आपको मुख्य परीक्षा में अतिरिक्त लाभ मिल सकता है।

वीकली फोकस: प्रासंगिक वीकली फोकस डॉक्यूमेंट्स की QR कोड से लिंक्ड एक सूची को इस डॉक्यूमेंट के अंत में जोड़ा गया है। इसकी मदद से आप अंतर्राष्ट्रीय संबंध के क्षेत्र में हुए नवीनतम विकास और ट्रेंड्स से अपडेट रहेंगे।

परिशिष्ट और विगत वर्षों के प्रश्न (PYQs): इस डॉक्यूमेंट में महत्वपूर्ण तथ्यों और डेटा का एक परिशिष्ट भी शामिल किया गया है। साथ ही, इसमें 2013 से 2023 तक के पिछले वर्षों के प्रश्नों की एक पृथक सूची शामिल भी है, जो सिलेबस के अनुसार अलग-अलग खंडों में व्यवस्थित की गई है।

हम आशा करते हैं कि मेन्स 365 अंतर्राष्ट्रीय संबंध डॉक्यूमेंट आपकी तैयारी में प्रभावी ढंग से आपका मार्गदर्शन करेगा और इससे आपको मुख्य परीक्षा में बेहतर अंक प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

"आप कभी भी, किसी से भी, कुछ भी सीख सकते हैं। हमेशा एक ऐसा समय आएगा, जब आप सुखद अनुभव करेंगे कि आपने ऐसा किया।"

शुभकामनाएं! टीम VisionIAS

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

VISION IAS
INSPIRING INNOVATION

OUR ACHIEVEMENTS

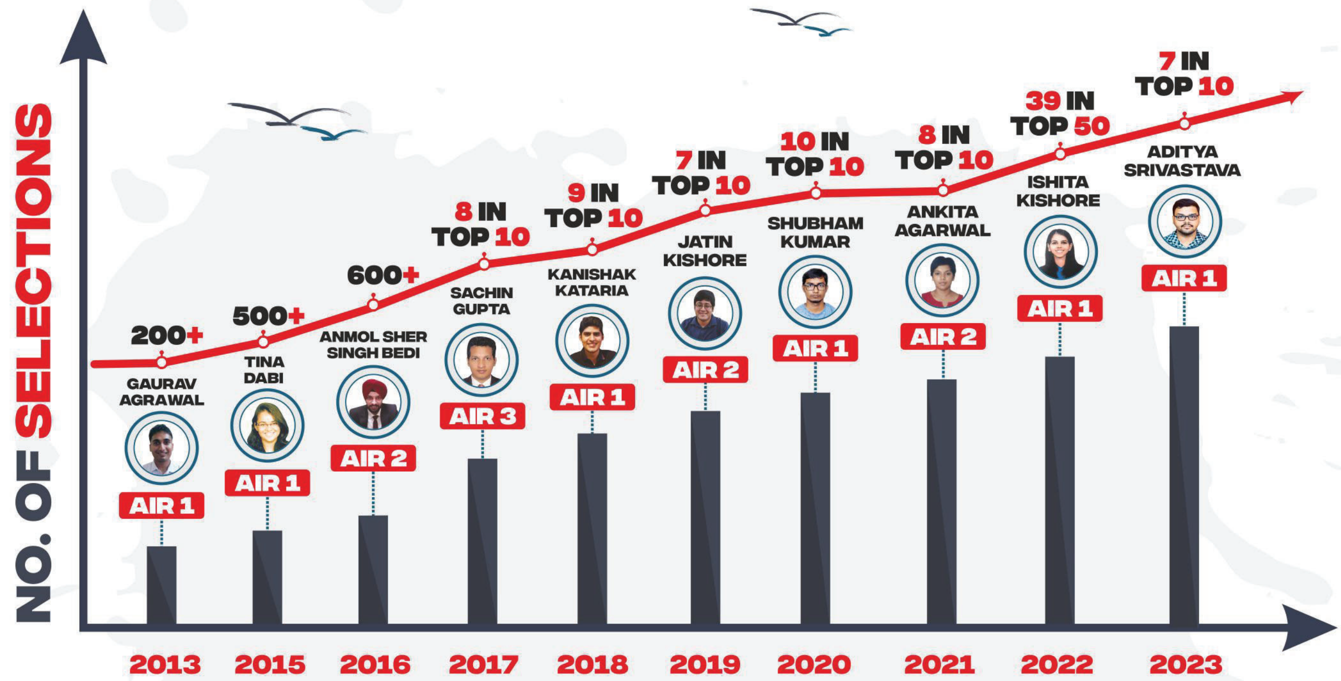

LIVE/ONLINE Classes Available

www.visionias.in

Foundation Course
GENERAL STUDIES
PRELIMS cum MAINS 2025

DELHI: 12 AUG, 9 AM | 14 AUG, 1 PM | 17 AUG, 5 PM
29 JULY, 1 PM | 30 JULY, 9 AM | 31 JULY, 5 PM

GTB Nagar Metro (Mukherjee Nagar):
19 JULY, 8:30 AM | 23 JULY, 5:30 PM

AHMEDABAD: 20 AUG | **BENGALURU:** 12 & 18 JULY | **BHOPAL:** 18 JULY | **CHANDIGARH:** 18 JULY
HYDERABAD: 12 AUG | **JAIPUR:** 6 AUG | **JODHPUR:** 11 JULY | **LUCKNOW:** 17 JULY | **PUNE:** 5 JULY

फाउंडेशन कोर्स सामान्य अध्ययन 2025

▸ प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा और निबंध के लिए महत्वपूर्ण सभी टॉपिक का विस्तृत कवरेज

DELHI: 22 अगस्त, 1 PM | 18 जुलाई, 1 PM | **BHOPAL:** 23 जुलाई | **LUCKNOW:** 18 जुलाई | **JAIPUR:** 16 अगस्त | **JODHPUR:** 11 जुलाई

Scan the QR CODE to download VISION IAS App. Join official telegram group for daily MCQs & other updates.

/visionias.upsc | /c/VisionIASdelhi | /c/VisionIASdelhi | /t.me/s/VisionIAS_UPSC

DELHI: HEAD OFFICE: 1st floor, Apsara Arcade, Near Gate-7 Karol Bagh Metro Station, 1/8 b, Pusa Road, Karol Bagh, Delhi – 110005 | **CONTACT:** 8468022022, 9019066066

AHMEDABAD | BENGALURU | BHOPAL | CHANDIGARH | GUWAHATI | HYDERABAD | JAIPUR | JODHPUR | LUCKNOW | PRAYAGRAJ | PUNE | RANCHI

1. बदलती विश्व व्यवस्था की गतिशीलता (Dynamics Of Changing World Order)

1.1. भारत की विदेश नीति की गतिशीलता (Evolving Nature of India’s Foreign Policy)

1.1.1. भारत की आर्थिक कूटनीति: एक नज़र में (India’s Economic Diplomacy at a Glance)

भारत की आर्थिक कूटनीति

- आर्थिक कूटनीति विदेश नीति का एक साधन है जिसमें देश के **आर्थिक, राजनीतिक और रणनीतिक हितों की पूर्ति के लिए अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के परिचालन में आर्थिक साधनों का उपयोग** किया जाता है।

भारत **ने 1964 में ITEC** की स्थापना की और तर्क **दिया कि "संबंध...न केवल साझा आदर्शों पर आधारित होंगे, बल्कि ठोस आर्थिक नींव पर भी आधारित होंगे।"**

2008 और 2020 के बीच, भारत ने विभिन्न विकास समझौतों के तहत अनुदान और ऋण के रूप में **लगभग 8.35 बिलियन अमेरिकी डॉलर** का वितरण किया।

आर्थिक कूटनीति के उद्देश्य

- **देश को एक प्रमुख आर्थिक शक्ति के रूप में पेश करना:** उदाहरण के लिए- अमेरिका ने विदेशी सहायता पर लगभग 61 बिलियन डॉलर खर्च किए (2023)।
- **अनुकूल बहुपक्षीय व्यापार वार्ता सुनिश्चित करना:** उदाहरण के लिए- हाल ही में संपन्न इंडिया-यूएई CEPA (2022)।
- **विदेशों में निर्यात एवं व्यापार को बढ़ावा देना:** उदाहरण के लिए- हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद।
- **आर्थिक कार्यों के माध्यम से राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति करना:** उदाहरण के लिए- चीन की ऋण जाल कूटनीति, CPEC आदि।

आर्थिक कूटनीति के प्रयोग में भारत की सफलता

- वैश्विक स्तर पर अर्थव्यवस्था की **प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए FDI मानदंडों को उदार बनाने, PLI योजनाओं और आत्मनिर्भर भारत अभियान** जैसी कई पहलें शुरू की गई हैं।
- **बहुपक्षीय प्लेटफार्म्स के माध्यम से वित्त-पोषण:** भारत-संयुक्त राष्ट्र विकास कोष, आदि।
- **साझेदार देशों को अनुदान के साथ-साथ लाइन ऑफ क्रेडिट (LOC) के रूप में द्विपक्षीय विकास सहायता:** उदाहरण के लिए- भारत ने कनेक्टिविटी और विकासात्मक परियोजनाओं के लिए मध्य एशियाई देशों को 1 बिलियन डॉलर की ऋण सहायता प्रदान की है।
- भारत दक्षिण-दक्षिण सहयोग (SSC) गठबंधन के नेतृत्वकर्ता के रूप में उभरा है। उदाहरण के लिए- भारत ने मॉरीशस के अगलेगा (Agaléga) में एक हवाई पट्टी और एक जेटी का निर्माण किया है।

चुनौतियां

- भारत WTO, UNSC जैसे बहुपक्षीय मंचों में सुधारों के लिए **बहुमत का समर्थन जुटाने में असमर्थ है।**
- नौकरशाही की विभाजित संरचनाएं **आर्थिक और रणनीतिक लक्ष्यों के एकीकरण को प्रभावित** करती हैं।
- **वैश्विक मूल्य श्रृंखला (GVC)** में शामिल वस्तुओं की हिस्सेदारी में गिरावट आई है।
- दक्षिण एशियाई क्षेत्र में **चीन से प्रतिस्पर्धा का सामना करना** पड़ रहा है। उदाहरण के लिए- ग्वादर बंदरगाह।
- **संरक्षणवाद जैसे उभरते मुद्दे:** उदाहरण के लिए- यूरोपीय संघ का CBAM

आगे की राह

- **सहायता कार्यक्रम में सुधार:** देश-वार रणनीति पर ध्यान केंद्रित करना, अंतर्राष्ट्रीय विकास सहयोग एजेंसी की स्थापना आदि उपाय करने चाहिए। उदाहरण के लिए- अमेरिकी सहायता कार्यक्रम उसके सामरिक हित से जुड़ा हुआ है।
- **GVC में आगे बढ़ना:** पी.एम. गति शक्ति और राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करना चाहिए।
- **उभरते अवसरों का लाभ उठाना:** स्वास्थ्य कूटनीति अपनाना, डिजिटल क्षेत्र के लिए डोमेन विशेषज्ञों को शामिल करना, लघुपक्षीय संगठनों में नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाना, आदि।
- **ब्रांड इंडिया को बढ़ावा देना,** नीति निर्माण में लचीलापन लाना आदि।

निष्कर्ष

- आर्थिक कूटनीति को **प्रतिस्पर्धा और सहयोग, आकांक्षाओं और प्राप्य लक्ष्यों तथा क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों के बीच संतुलन** बनाना चाहिए। इसे नियम-आधारित सहयोग की मजबूत नींव पर संचालित किया जाना चाहिए। साथ ही, घरेलू स्तर पर भारत के ठोस कदम, वैश्विक मंच पर एक प्रमुख अभिकर्ता के रूप में इसके उद्भव को प्रेरित करेंगे।

1.1.2. भू-राजनीति में प्रौद्योगिकी की भूमिका (Role of Technology In Geopolitics)

सुर्ख़ियों में क्यों?

राष्ट्रीय क्वांटम मिशन (NQM) का उद्देश्य भारत को क्वांटम प्रौद्योगिकी के विकास और उसके उपयोग के मामले में अग्रणी देशों की श्रेणी में लाना है।

प्रौद्योगिकी भू-राजनीति को कैसे प्रभावित करती है?

- **वैश्विक गवर्नेंस:** प्रौद्योगिकी, उभरते मुद्दों {जैसे- इंटरनेट गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), बायोटेक, डेटा गोपनीयता आदि} के कारण **राज्य की संप्रभुता (भौतिक और क्षेत्रीय) की पारंपरिक अवधारणा को चुनौती** देती है।
- **आर्थिक प्रभाव:** उदाहरण के लिए- **चौथी औद्योगिक क्रांति किसी राष्ट्र की आर्थिक शक्ति और प्रतिस्पर्धात्मकता को आकार** दे सकती है।
- **सैन्य शक्ति और सुरक्षा:** परमाणु हथियारों जैसी उन्नत सैन्य तकनीक रखने वाले राष्ट्र वैश्विक मंच पर प्रभाव डाल सकते हैं और **राष्ट्रों के बीच शक्ति संतुलन में बदलाव** ला सकते हैं।
    - **गैर-राज्य अभिकर्ताओं का खतरा बढ़** रहा है, उदाहरण के लिए- इजरायल में हिज़्बुल्लाह का बढ़ता खतरा।
- **संचार और सूचना:** भू-राजनीतिक लाभ के लिए सूचना प्रवाह को नियंत्रित करने, सेंसरशिप लगाने और दुष्प्रचार फैलाने की रणनीति अपनाई जा सकती है, उदाहरण के लिए- **जनमत, चुनाव और कूटनीति को प्रभावित करना।**
- **अंतरिक्ष अन्वेषण:** बाह्य अंतरिक्ष में **गतिविधियों का संचालन विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण उपकरण** है।
- **ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन:** ऊर्जा संबंधी भू-राजनीति में **संसाधनों तक पहुंच के लिए प्रतिस्पर्धा, ऊर्जा पारगमन मार्गों पर नियंत्रण** आदि शामिल हैं।

भारत की भू-राजनीति में प्रौद्योगिकी की केंद्रीय भूमिका

- **डिजिटल कूटनीति:** भूटान और नेपाल द्वारा UPI मानकों को अपनाना।
- **अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी:** 2017 में, दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (सार्क/ SAARC) के सदस्यों के लिए GSAT-9 उपग्रह लॉन्च किया गया था।
- **सूचना प्रौद्योगिकी (IT) और सॉफ्टवेयर सेवाएं:** भारत की आईटी कंपनियों की बढ़ती हुई वैश्विक पहुंच देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत कर रही है और उसे विश्व मंच पर एक महत्वपूर्ण स्थान दिला रही है।
- **ऊर्जा कूटनीति:** उदाहरण के लिए- 'वन सन वन वर्ल्ड वन ग्रिड (OSOWOG)', अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन आदि।
- **AI और उभरती प्रौद्योगिकियां:** AI के क्षेत्र में भारत की प्रगति वैश्विक मानकों को आकार देने में इसकी भूमिका को प्रभावित कर सकती है।

प्रौद्योगिकी का प्रभावी ढंग से लाभ उठाने में भारत की क्षमता को प्रभावित करने वाली चुनौतियां

- **भू-राजनीतिक तनाव:** भारत एक जटिल जिओ-पॉलिटिकल डायनेमिक्स वाले क्षेत्र में स्थित है, उदाहरण के लिए- चीन और पाकिस्तान जैसे देशों के साथ तनाव।
- **प्रौद्योगिकी पर निर्भरता:** विदेशी प्रौद्योगिकी पर निर्भरता को कम करना और घरेलू नवाचार को बढ़ावा देना एक जटिल और दीर्घकालिक चुनौती है।
- **डेटा संबंधी निजता और संप्रभुता:** भारत के कड़े डेटा सुरक्षा नियम और डेटा को देश के भीतर रखने की मांग अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों के लिए भारत में कारोबार करना मुश्किल बना सकती है और इससे द्विपक्षीय डेटा समझौतों में देरी हो सकती है।
- **पर्यावरणीय दुविधा:** तकनीकी विकास को सतत विकास के साथ संतुलित करना और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना।
    - उदाहरण के लिए- एक बार चैट-जीपीटी पर सर्च करने में गूगल पर समान सर्च की तुलना में 10 गुना अधिक ऊर्जा की खपत होती है।

आगे की राह

- **नियामकीय एकरूपता:** समान विचारधारा वाले देशों के साथ द्विपक्षीय और बहुपक्षीय जुड़ाव बढ़ाना और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करना।
- **अंतर्राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी सिद्धांतों और मानकों के संबंध में नेतृत्व करना:** यह सुनिश्चित करना कि डेटा निजता, ई-कॉमर्स, बौद्धिक संपदा अधिकार जैसे क्षेत्रों में विनियमन न्यायपूर्ण, पारदर्शी और सुसंगत हों।
- **प्रौद्योगिकी का नैतिक उपयोग:** अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों का पालन करना और भारत के जिओ-पॉलिटिकल मूल्यों के अनुरूप नैतिक ढांचे पर काम करना।
- **डेटा कूटनीति को मजबूत करना:** विभिन्न देशों के बीच मध्यस्थता और सीमा-पार सहयोग के जरिए AI या ब्लॉकचेन जैसी तकनीकों पर अधिक सहयोग।

© Vision IAS

1.1.3. आपदा राहत कूटनीति (Disaster Diplomacy)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारत में **आपदा-रोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ICDRI)**[1] **का छठा संस्करण** आयोजित हुआ। इस सम्मेलन में वैश्विक संकट के समय दी जाने वाली प्रतिक्रिया या सहायता में भारत के बढ़ते योगदान पर जोर दिया गया।

आपदा राहत कूटनीति के बारे में

- **आपदा राहत कूटनीति** से तात्पर्य **'प्राकृतिक/ मानव जनित आपदाओं या संघर्षों से प्रभावित अन्य देशों को सहायता और समर्थन प्रदान करने के लिए एक देश के प्रयासों'** से है।
- **आपदा राहत में विदेशी सैन्य और असैन्य सुरक्षा परिसंपत्तियों का उपयोग - "ओस्लो दिशा-निर्देश"** संयुक्त राष्ट्र की मानवतावादी एजेंसियों के लिए किसी देश को मानवीय सहायता प्रदान करने के मार्गदर्शक सिद्धांत निर्धारित करते हैं।

भारत की आपदा राहत कूटनीति का महत्त्व

- **सॉफ्ट पावर को मजबूत करना:** संकट के दौरान मानवीय सहायता प्रदान करने के पीछे भारत का लक्ष्य सद्भावना को बढ़ावा देना और अन्य देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करना है।
- **भू-राजनीतिक पहुंच को बढ़ाना:** भारत ने सुदूर पूर्व में जापान से लेकर पश्चिम में तुर्किये तक उत्पन्न हुए संकटों में तुरंत प्रतिक्रियात्मक सहायता प्रदान की है। इस प्रकार भारत एक प्रमुख वैश्विक शक्ति के रूप में अपने उदय का दावा कर रहा है।
- **द्विपक्षीय संबंधों में सफलता:** 2015 में नेपाल में आए भूकंप के दौरान राहत कार्यों के परिचालन के लिए भारत ने **ऑपरेशन मैत्री** शुरू किया था। इसके परिणामस्वरूप, बाद के वर्षों में काठमांडू के साथ भारत के संबंध काफी मजबूत हुए और भारत के प्रभाव में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुई। इसके अलावा, भारत इसी रणनीति के तहत तुर्किये के साथ अपने संबंधों को बेहतर बनाने पर भी जोर दे रहा है।
- **मानवीय सहायता और आपदा राहत (HADR)**[2] **का रणनीतिक महत्त्व:** भारत अपने प्रतिद्वंद्वी देशों के भू-राजनीतिक प्रभावों (विशेष रूप से चीन) को प्रतिसंतुलित करने में HADR को अपनी विदेश नीति और कूटनीति के एक प्रमुख तत्व के रूप में देखता है।
- इससे भारत को **क्षेत्रीय शक्ति बनने** और **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता हासिल** करने में मदद मिलेगी

आपदा राहत के प्रति भारत का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	भारत की पहलें
प्राकृतिक आपदाओं में सबसे पहले सहायता व समर्थन प्रदान करना	• **तुर्किये में आए विनाशकारी भूकंप** के बाद **'ऑपरेशन दोस्त'** शुरू किया गया था। • **चक्रवात प्रभावित म्यांमार** की सहायता के लिए भारत ने **'ऑपरेशन करुणा'** शुरू किया था।
क्षमता निर्माण	• भारत पांच देशों- **नेपाल, मालदीव, श्रीलंका, बांग्लादेश और मॉरीशस** की आरंभिक चेतावनी प्रणालियां (EWSs)[3] विकसित करने में मदद कर रहा है। ○ भारत का यह प्रयास **2022 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित 'अर्ली वॉर्निंग फॉर ऑल (EW4All)' पहल** का हिस्सा है।
संघर्षरत/ आपदाग्रस्त क्षेत्रों में लोगों की सहायता करना	• मिशन सागर (SAGAR) के एक भाग के रूप में, भारत की मानवीय सहायता में **मॉरीशस और कोमोरोस में आवश्यक खाद्य पदार्थों, दवाओं व आयुर्वेदिक दवाओं की आपूर्ति तथा चिकित्सा सहायता दलों** को भेजना शामिल है। ○ **मिशन सागर (SAGAR):** क्षेत्र में सभी के लिए विकास और सुरक्षा।

[1] International Conference on Disaster Resilient Infrastructure

[2] Humanitarian Assistance and Disaster Relief

[3] Early Warning Systems

संघर्ष/ आपदा-उपरांत राहत एवं पुनर्वास	• **नेपाल, श्रीलंका और अफगानिस्तान** में वर्षों से जारी हिंसक संघर्ष के बाद **राहत, पुनर्वास एवं पुनर्निर्माण** पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।
संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना मिशनों में भाग लेना	• भारत ने विश्व के अलग-अलग हिस्सों में **शांति स्थापित करने और पुनर्निर्माण संबंधी कार्यों** को सुविधाजनक बनाने वाले संयुक्त राष्ट्र के विविध शांति स्थापना मिशनों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
स्वास्थ्य संबंधी आपदाओं का प्रबंधन	• कोविड-19 महामारी के दौरान, भारत ने **कोविड-19 वैक्सीन मैत्री कार्यक्रम** शुरू किया था। इस कार्यक्रम के तहत **100 से अधिक देशों को चिकित्सा सहायता** प्रदान की गई थी।

आपदा राहत कूटनीति में भारत द्वारा सामना की जाने वाली मुख्य चुनौतियां

- **तकनीकी क्षमताओं का अभाव:** वर्ष 2011 में जापान में हुई फुकुशिमा आपदा पर भारत की प्रतिक्रिया काफी धीमी थी। साथ ही, **राष्ट्रीय आपदा मोचन बल** (NDRF)[4] भी प्रभावी ढंग से सहायता प्रदान करने में असमर्थ था।
- **सीमित प्रभाव:** नेपाल को भारत द्वारा दी जाने वाली सहायता से स्थायी लाभ नहीं मिला है, क्योंकि 2021 से जारी क्षेत्रीय विवादों के कारण द्विपक्षीय संबंध लगातार तनावपूर्ण होते जा रहे हैं।
- **भू-राजनीतिक तनाव:** आपदा प्रतिक्रिया संबंधी भारत के कूटनीतिक प्रयासों में पड़ोसी देशों के साथ मौजूदा भू-राजनीतिक तनावों के कारण बाधा आ सकती है। पाकिस्तान ने 2022 में आई बाढ़ के दौरान भारत की मदद को अस्वीकार कर दिया था।

आगे की राह

- **क्षमता निर्माण की आवश्यकता:** भारत को आपदाओं के खिलाफ तेजी से एवं अधिक प्रभावी तरीके से प्रतिक्रिया देने के लिए अपनी HADR क्षमताओं को बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके लिए भारत को **यूटिलिटी हेलीकॉप्टर, लैंडिंग प्लेटफ़ॉर्म और हॉस्पिटल शिप जैसे प्लेटफॉर्म्स में निवेश** करना चाहिए।
- **बजटीय आवंटन में सुधार:** आपातकालीन तैयारियों और लॉजिस्टिक क्षमताओं में सुधार के लिए बजटीय आवंटन को बढ़ाने की आवश्यकता है।
- **वैश्विक मंच पर अपनी उपलब्धियों को सामने रखना:** वैश्विक शक्ति बनने की अपनी महत्वाकांक्षा के बीच भारत को उसके द्वारा अर्जित मानवीय उपलब्धियों का बेहतर तरीके से प्रस्तुत करना चाहिए।
- **क्वाड जैसे मंचों का उपयोग करना:** क्वाड (ऑस्ट्रेलिया, जापान, भारत एवं संयुक्त राज्य अमेरिका) जैसे उभरते मंचों का उपयोग मानवीय सहायता और आपदा राहत प्रयासों को और बेहतर बनाने के लिए किया जाना चाहिए।
  - ऐसे मंचों के माध्यम से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में देशों के क्षमता निर्माण को बेहतर बनाया जा सकेगा। इससे भारत की छवि एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में सामने आएगी, जो अपनी सीमाओं से परे आपदा राहत संबंधी कार्यों के संचालन में सक्षम है।

[4] National Disaster Response Force

1.1.4. पैराडिप्लोमेसी: एक नज़र में (Para-diplomacy at a Glance)

पैराडिप्लोमेसी

- इस अवधारणा को पहली बार 1990 में जॉन किनकैड ने प्रस्तावित किया था। यह गैर–केंद्रीय सरकारों की विदेश नीति क्षमता और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में केंद्र सरकार से स्वतंत्र उनकी भागीदारी को इंगित करती है। इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर औपचारिक एवं अनौपचारिक संपर्क स्थापित किए जाते हैं।

7वीं अनुसूची में संघ सूची के तहत **विदेशी मामले विशेष रूप से "संघ" का विषय** है।

उभरती प्रवृत्तियां:
- **बॉर्डर हाटों** के माध्यम से अधिक सीमा–पार व्यापार।
- आंध्र प्रदेश, तेलंगाना में विदेशी सहयोग समझौतों में वृद्धि।
- उच्चस्तरीय मंत्रियों का प्रतिनिधिमंडल।

पैराडिप्लोमेसी का महत्त्व

- यह **संघीय ढांचे को मजबूत** करती है क्योंकि यह विकास में समान भागीदार के रूप में कार्य करने वाले राज्यों पर अधिक बल देती है।
- उप–राष्ट्रीय सरकार के **प्रतिस्पर्धात्मक लाभ को बढ़ावा** देती है।
- क्षेत्रीय मुद्दों को वैश्विक मंच पर लाकर और वैश्विक समस्याओं का स्थानीय समाधान ढूंढकर **स्थानीयता के वैश्वीकरण की सुविधा** प्रदान करती है।
- **संघीय सरकारों के साथ विदेश नीति–निर्माण** के संसाधनों और लागत को साझा करने की सुविधा प्रदान करती है।
- **शहरों के बढ़ते वैश्विक महत्त्व के कारण शहर स्तरीय कूटनीति आवश्यक हो गई है।**

पैराडिप्लोमेसी से जुड़ी चुनौतियां

- जब राज्य केंद्र से असामान्य व्यवहार करते हैं तो **विदेश नीति में समन्वय का अभाव** होता है।
- **राज्यों की सीमित वित्तीय भूमिका।**
- अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में राज्यों की प्रभावी भागीदारी पर **डेटा या सिद्धांत का अभाव।**

सिस्टर–सिटी की अवधारणा

- यह विभिन्न देशों के दो शहरों के बीच दीर्घकालिक, सहकारी संबंध है।
- ऐसी व्यवस्थाओं से संसाधनों और विशेषज्ञता का निर्बाध आदान–प्रदान संभव होता है।
- उदाहरण के लिए– मुंबई और हो ची मिन्ह सिटी, (वियतनाम); चेन्नई और ग्वांगझोउ सिटी(चीन)।

आगे की राह

- **केंद्रीय और गैर–केंद्रीय सरकारों की भूमिकाओं में संतुलन** लाया जाना चाहिए।
- अलग–अलग राज्यों में वाणिज्य दूतावासों के निर्माण और अधिकारियों के प्रशिक्षण के माध्यम से **प्रभावी संस्थागत तंत्र स्थापित किया जाए।**
- **अंतर्राज्यीय परिषद** जैसे मौजूदा समन्वय तंत्र को मजबूत किया जाए।

निष्कर्ष

- भारत में पैराडिप्लोमेसी अब भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है। पैराडिप्लोमेसी की क्षमता का उपयोग करके, भारत अपनी विविध क्षेत्रीय शक्तियों का लाभ उठा सकता है और उपराष्ट्रीय संस्थाओं को अपने स्वयं के अंतर्राष्ट्रीय जुड़ाव को आकार देने के लिए सशक्त बनाते हुए वैश्विक कूटनीति में प्रभावी ढंग से योगदान दे सकता है।

1.5. भारत की सामरिक स्वायत्तता (India's Strategic Autonomy)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारत ने अपने सामरिक स्वायत्तता (Strategic Autonomy) के प्रति प्रतिबद्धता को दोहराया।

सामरिक स्वायत्तता के बारे में

- **परिभाषा:** सामरिक स्वायत्तता का मतलब है महत्वपूर्ण नीतिगत क्षेत्रों में, विशेषकर बड़े शक्तिशाली देशों के दबाव से स्वतंत्र होकर निर्णय लेने की क्षमता। दूसरे शब्दों में सामरिक स्वायत्तता किसी देश की वह क्षमता है जिसके तहत वह अपने राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि रखते हुए, बिना किसी बाहरी दबाव में आकर, अपनी स्वतंत्र विदेश नीति बना सकता है और कार्यान्वित कर सकता है।
- **सामरिक स्वायत्तता को समझना:**
    - सामरिक स्वायत्तता का मतलब विदेश नीति में अलगाव से नहीं है। यह विभिन्न शक्तिशाली देशों और संगठनों के साथ अपने राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए अधिक मजबूत संबंध बनाने का आह्वान करती है।
    - इसके अलावा, इसमें विदेश नीति को एक **"जीरो-सम गेम (Zero-Sum Game)" के रूप में नहीं देखा जाता, जहां एक पक्ष को कुछ हासिल करने के लिए** दूसरे पक्ष का नुकसान होता है। इसके विपरीत, यह **एक "पॉजिटिव-सम गेम" (Positive-Sum Game)** है, जहां सभी पक्ष लाभान्वित होते हैं।

भारत की सामरिक स्वायत्तता के प्रमुख स्तंभ और उनका महत्त्व

- **विदेश नीति में स्वतंत्रता:**
    - **बहु-दिशात्मक कूटनीति:** जहां वैचारिक रूप से दो भिन्न ब्लॉकों, जैसे- रूस और अमेरिकी नेतृत्व वाले पश्चिमी ब्लॉक, के बीच संतुलन बनाए रखा जाता है।
    - **विभिन्न मुद्दों के बीच तालमेल:** जैसे- भारत का इज़राइल और फिलिस्तीन के साथ संबंध। भारत 'दो-राष्ट्र समाधान' का समर्थन करता है और इसने इजरायली क्षेत्र पर हमास के हमले की निंदा की है।
- **सैन्य आत्मनिर्भरता:**
    - **हथियार आपूर्तिकर्ताओं का विविधीकरण:** जैसे- भारत ने रूसी हथियारों पर निर्भरता कम की है और फ्रांस शीर्ष आपूर्तिकर्ता के रूप में उभरा है (SIPRI रिपोर्ट)।
- **रणनीतिक निर्णय लेने की स्वायत्तता:**
    - **अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर लचीलापन:** जैसे- भारत ने मानवाधिकार परिषद में श्रीलंका पर वोटिंग में हिस्सा नहीं लिया।
    - **उलझन भरे गठबंधनों से बचाव:** जैसे, रूस-यूक्रेन युद्ध में पक्ष लेने के लिए अमेरिका के दबाव का सामना।
- **आर्थिक संप्रभुता:**
    - **व्यापार संबंधों में संतुलन:** जैसे, भारत UK के साथ मुक्त व्यापार समझौते (FTA) पर बातचीत कर रहा है और साथ ही EU के साथ भी जुड़ाव बनाए हुए है।
    - **रणनीतिक संसाधन प्रबंधन:** जैसे, ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच महत्वपूर्ण खनिजों के समझौते पर हस्ताक्षर।
- **ऊर्जा सुरक्षा:**
    - **ऊर्जा बास्केट का विविधीकरण:** जैसे, रूस सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता बनकर उभरा है, जिससे खाड़ी देशों पर निर्भरता कम हो गई है।
    - **भारत की अपने शर्तों पर नेट जीरो तक पहुंचने की योजना:** जैसे, 2070 तक नेट जीरो का लक्ष्य।

सामरिक स्वायत्तता का पालन करने में भारत के समक्ष आने वाली समस्याएं और चुनौतियां?

- **"अस्पष्ट रुख अपनाने" का आरोप:** उदाहरण के लिए- कई देश भारत पर आरोप लगाते हैं कि वह अस्पष्ट रुख अपनाने वाला देश है। उदाहरण के लिए, इजराइल-हमास संघर्ष के संबंध में।
- **आक्रमणकारी देश के पक्ष में युद्ध को वित्त-पोषित करने का आरोप:** उदाहरण के लिए- यूरोपीय शक्तियां भारत पर सस्ते रूसी कच्चे तेल को खरीदकर रूस के युद्ध को परोक्ष तरीके से वित्त-पोषित करने का आरोप लगाती हैं।
- **नई धुरी का उदय:** उदाहरण के लिए- भारत का संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ संबंधों को गहन करना एक नई धुरी अर्थात् **रूस-चीन-पाकिस्तान की धुरी के उदय का कारण** बनता जा रहा है।
- **प्रतिष्ठा को क्षति:** उदाहरण के लिए- भारत ने संयुक्त व्यापक कार्य योजना (JCPOA)[5] से अमेरिका के हटने की निंदा नहीं की है। इसने कथित तौर पर भारत की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाया है और ईरान को चीन के साथ अपने संबंधों को आगे बढ़ाने का अवसर प्रदान किया है।
- **मिनी-लैटरल्स का उदय:** हिंद-प्रशांत क्षेत्र में क्वाड जैसे **मिनी-लैटरल्स का उदय** वैश्विक सहयोग के आदर्श दृष्टिकोण को कमजोर कर देता है।

[5] Joint Comprehensive Plan of Action

आगे की राह

- **विकल्प के रूप में उभरना:** भारत अमेरिका और चीन के विकल्प के रूप में सामने आ सकता है। साथ ही, यह तेजी से ध्रुवीकृत होती विश्व व्यवस्था में ग्लोबल साउथ का प्रतिनिधित्व करने पर भी ध्यान केंद्रित कर सकता है।
- **सामरिक बचाव:** उदाहरण के लिए- चीन को प्रतिसंतुलित करना। इसमें चीन के साथ असैन्य राजनयिक संबंधों और व्यापार को बनाए रखते हुए उसके द्वारा भारत के खिलाफ की जाने वाली राजनीतिक एवं सैन्य गतिविधियों से निपटने की क्षमता और संबंध विकसित करना शामिल है।
- **आत्मनिर्भरता या जोखिमों का विविधीकरण:** यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रकों जैसे कि रक्षा, ऊर्जा आदि में आवश्यक है।
- **अंतर्राष्ट्रीयवाद और बहु-गठबंधन आधारित विदेश नीति का पालन करना:** ऐसी नीति विशेष मुद्दों पर आधारित गठबंधन (जैसे- ब्रिक्स, क्वाड, G20, G7, SCO आदि) से संबंधित हो सकती है।
- **वैश्विक चुनौतियों से निपटने में नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाना:** जलवायु परिवर्तन, कनेक्टिविटी, आतंकवाद और आपूर्ति श्रृंखला के लचीलेपन से संबंधित चुनौतियों से निपटने में नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभानी चाहिए।

1.6. भारत: द वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ (India: The Voice of Global South)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत ने अपनी G20 अध्यक्षता के दौरान ग्लोबल साउथ के मुद्दे को आगे बढ़ाने और उनका समर्थन करने के लिए भी इस मंच का उपयोग किया तथा दूसरे "वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट (VOGSS)" की मेजबानी की।

ग्लोबल साउथ क्या है?

- ग्लोबल साउथ शब्द सामान्यतः **विकासशील, अल्प विकसित या अविकसित देशों** को व्यक्त करता है।
  - ये देश मुख्य रूप से **दक्षिणी गोलार्ध** में अवस्थित हैं। इनमें अधिकतर **अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका** के देश शामिल हैं।
- ग्लोबल साउथ की अवधारणा का सर्वप्रथम उल्लेख **ब्रैंट रिपोर्ट, 1980** में किया गया था। इस रिपोर्ट में उत्तर और दक्षिण के देशों के बीच उनकी **प्रौद्योगिकी संबंधी प्रगति, सकल घरेलू उत्पाद तथा जीवन स्तर के आधार** पर विभाजन का प्रस्ताव दिया गया था।

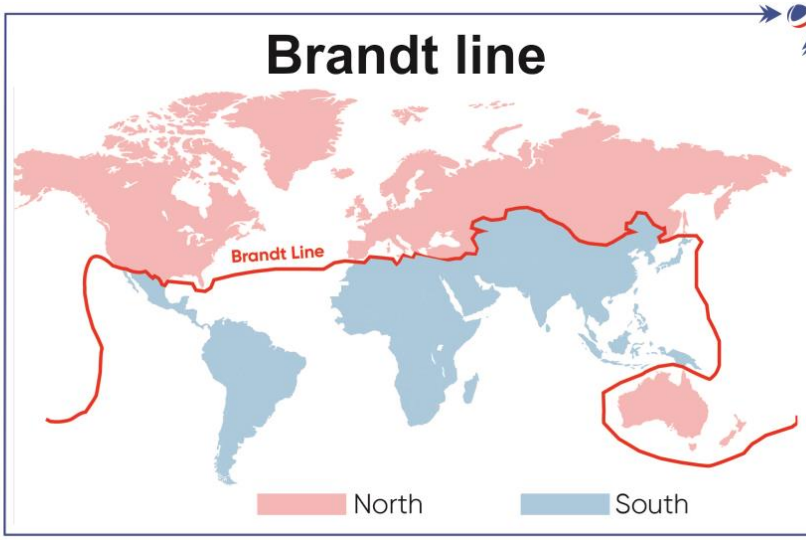

ग्लोबल साउथ के समक्ष चुनौतियां

- **वैश्विक मंचों पर कम प्रतिनिधित्व:** उदाहरण के लिए ग्लोबल साउथ के देशों को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता से बाहर रखा गया है। यह उनके कम प्रतिनिधित्व को दर्शाता है।
- **ग्लोबल नॉर्थ के भू-राजनीतिक संघर्ष वैश्विक स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं।** उदाहरण के लिए, रूस-यूक्रेन संघर्ष के कारण खाद्य और तेल की कीमतों में बढ़ोतरी हुई है। इससे ग्लोबल साउथ के देशों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।
- **मानदंड संबंधी मुद्दों पर ग्लोबल नॉर्थ का अलग दृष्टिकोण:** उदाहरण के लिए- लोकतंत्र, मानवाधिकार, जलवायु गवर्नेंस के लिए एजेंडा आदि की व्याख्या को लेकर ग्लोबल नॉर्थ और ग्लोबल साउथ के बीच आम सहमति का अभाव है।
- जलवायु परिवर्तन सहित अधिकांश वैश्विक चुनौतियों का **ग्लोबल साउथ पर विषमतापूर्वक प्रभाव पड़ता** है।

ग्लोबल साउथ की आवाज के रूप में कार्य करने के लिए भारत के पक्ष में कारक: ऐतिहासिक और दार्शनिक प्रभाव व आकर्षण, आर्थिक और भू-राजनीतिक प्रभाव, विकसित और विकासशील दुनिया के बीच सेतु, NAM, G-77 आदि में भारत का नेतृत्व।

भारत ने स्वयं को ग्लोबल साउथ के नेतृत्वकर्ता के रूप में कैसे स्थापित किया है?

- भारत ने ग्लोबल साउथ को प्रभावित करने वाली वैश्विक संकट की स्थितियों से निपटने के लिए **बहु-दिशात्मक कूटनीतिक सहभागिताएं** की हैं। साथ ही, **आर्थिक एवं तकनीकी संवृद्धि के पथ पर बढ़ कर वैश्विक स्तर पर अपनी मजबूत साख बनाई है।**
  - उदाहरण के लिए- भारत ने **वैक्सीन मैत्री पहल** के तहत 100 से अधिक देशों को दवाएं और टीके उपलब्ध कराए थे।

- भारत वैश्विक स्तर पर जलवायु गवर्नेंस के लोकतंत्रीकरण की दिशा में अपना सहयोग दे रहा है। उदाहरण के लिए- वार्ताओं में **साझा लेकिन विभेदित उत्तरदायित्व (CBDR)**[6] का समर्थन करना आदि।
- भारत **बहुपक्षीय संस्थानों को अधिक समावेशी बनाने के लिए उनमें सुधार** का पुरजोर समर्थन कर रहा है। उदाहरण के तौर पर यह **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के विस्तार की मांग** कर रहा है।
- यह लोकतंत्र और मानवाधिकार जैसे मानदंड संबंधी मुद्दों पर **वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान** करता है।
- भारत अनेक क्षेत्रकों में **ग्लोबल साउथ की क्षमता निर्माण** के लिए कार्य कर रहा है।
  - उदाहरण के लिए- हाल ही में, **भारत-संयुक्त राष्ट्र क्षमता निर्माण पहल** की शुरुआत की गई है। इसके तहत **क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित** किए जाएंगे। इन कार्यक्रमों के माध्यम से **ग्लोबल साउथ में भागीदार देशों के साथ भारत के विकास से संबंधित अनुभवों, सर्वोत्तम पद्धतियों और विशेषज्ञता को साझा** किया जाएगा।
- यह **सहयोगात्मक संवाद के लिए एक मंच प्रदान** करता है। उदाहरण के लिए- जनवरी, 2023 में भारत ने "वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ" शिखर सम्मेलन की मेजबानी की थी। यह सम्मेलन वर्चुअल रूप से आयोजित किया गया था।

ग्लोबल साउथ का नेतृत्व करने में भारत के समक्ष चुनौतियां

- **राष्ट्रीय हितों के साथ संतुलन स्थापित करना:** एक नेतृत्वकर्ता के रूप में अंतर्राष्ट्रीय दायित्वों को पूरा करते समय रणनीतिक संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता होती है।
  - उदाहरण के लिए- हाल ही में, भारत ने चावल के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया है।
- भारत के पास ग्लोबल साउथ के देशों को पर्याप्त सहायता प्रदान करने के लिए **सीमित मात्रा में ही संसाधन उपलब्ध** हैं।
- भारत को विशेष रूप से विकास वित्त, अवसंरचना और व्यापार संबंधी विकास योजनाओं में **चीन के साथ प्रतिस्पर्धा करनी** पड़ रही है। इसके अलावा, **उसके द्वारा किए जा रहे हस्तक्षेप** का भी सामना करना पड़ रहा है।
  - चीन आर्थिक सहायता और ऋण कूटनीति के माध्यम से अपने **भू-राजनीतिक एजेंडे को आगे बढ़ा** रहा है।

आगे की राह

- **बहुपक्षीय मंचों पर ग्लोबल साउथ की चिंताओं को स्वीकार किया जाना चाहिए और उन पर विचार किया जाना चाहिए।**
  - उदाहरण के लिए- भारत बहुपक्षीय मंचों के लिए निर्मित अपने **5 स्तंभों** वाले दृष्टिकोण का उपयोग करके समावेशी संवाद स्थापित कर सकता है। ये स्तंभ हैं: **सम्मान, संवाद, सहयोग, शांति और समृद्धि।**
- **कनेक्टिविटी संबंधी अवसंरचना एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में निवेश करके** व्यापार, प्रौद्योगिकी, पर्यटन और संसाधनों पर ग्लोबल साउथ के देशों में **सहक्रियाएं विकसित** करनी चाहिए।
- ग्लोबल साउथ के देशों में वित्तीय रूप से आत्मनिर्भरता बढ़ाने और पूंजी तक उनकी पहुंच में सुधार करने के लिए **वैश्विक व्यापार एवं वित्त संस्थानों में सुधार** करने की आवश्यकता है।
- **भारत का प्रस्ताव:** विश्व व्यवस्था को फिर से ऊर्जावान बनाने के लिए भारत ने **4R (रिस्पांस, रिकॉग्नाइज, रिस्पेक्ट और रिफ़ॉर्म) के वैश्विक एजेंडे** का आह्वान किया है।
  - इसका अर्थ है- **ग्लोबल साउथ के देशों की प्राथमिकताओं की ओर ध्यान** देना। यह स्वीकार करना कि **साझा लेकिन विभेदित उत्तरदायित्व का सिद्धांत सभी वैश्विक चुनौतियों पर लागू** होता है। सभी देशों की **संप्रभुता का सम्मान करना तथा मतभेदों एवं विवादों का शांतिपूर्ण तरीके से समाधान** करना। संयुक्त राष्ट्र सहित अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को अधिक प्रासंगिक बनाने के लिए उनमें **सुधार** करना।

1.6.1. विश्व को एकजुट करने वाले देश के रूप में भारत (India as a Global Unifier)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत के अधीन G20 की अध्यक्षता के तहत G20 का शिखर सम्मेलन नई दिल्ली में आयोजित हुआ था। इस सम्मेलन की थीम थी- **"वसुधैव कुटुंबकम्- एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य"।**

'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा

- **अर्थ:** वसुधैव कुटुंबकम् का अर्थ है **'विश्व एक परिवार है'।** यह पद **सभी जीवों** (अर्थात् मनुष्य, पशु, पौधे और सूक्ष्मजीव) **के जीवन के मूल्य** तथा पृथ्वी पर एवं व्यापक ब्रह्मांड में उनके **परस्पर अंतर्संबंध** की पुष्टि करता है।

[6] Common but Differentiated Responsibilities

© Vision IAS

वैश्विक एकीकरण के लिए
वसुधैव कुटुंबकम् की विचारधारा का महत्त्व

- मानव-केंद्रित प्रगति, **साझा भविष्य-एक भविष्य** को प्रोत्साहित करता है।
- **'हम-बनाम-वे'** की मानसिकता को नियंत्रित करता है।
- विविधता को स्वीकार करके **समावेशन** को बढ़ाता है, न कि एकरूपता थोपता है।
- **ग्लोबल कॉमन्स से जुड़ी समस्याओं** को हल करने के लिए **सहयोग बढ़ाता** है।
- समानता, अहिंसा जैसे मूल्यों पर **वैचारिक सामंजस्य** के विचार को आगे बढ़ाता है।

भारत वसुधैव कुटुंबकम् की विचारधारा के माध्यम से विश्व को एकजुट करने वाले देश के रूप में कैसे कार्य कर रहा है?

- **पर्यावरण संरक्षण:** भारत अपने मिशन लाइफ/ LiFE (पर्यावरण के लिए जीवन शैली), नेट जीरो उत्सर्जन के लक्ष्य, निम्नीकृत भूमि की पुनर्बहाली और बहुपक्षीय पहलों के जरिए एक संधारणीय पर्यावरण को बढ़ावा दे रहा है।
- **डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI):** भारत समावेशी संवृद्धि को बढ़ावा देने के लिए **विकासशील देशों को DPI को अपनाने में सक्षम बनाने, उसका निर्माण करने तथा उसके लिए आवश्यक मानदंडों के विकास में मदद** कर रहा है।
- **एनर्जी ट्रांजिशन:** भारत अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन और ग्लोबल बायोफ्यूल अलायन्स जैसी पहलों के माध्यम से ग्लोबल एनर्जी ट्रांजिशन का समर्थन कर रहा है।
- **समावेशी बहुपक्षवाद:** इस प्रयास के तहत भारत ने **अफ्रीकी संघ को G20 के स्थायी सदस्य के रूप में शामिल** करने का समर्थन किया है।
- **क्षमता निर्माण करना:** भारत, ग्लोबल साउथ के विकास के लिए **क्षमता निर्माण विकास के लिए डेटा पहल** शुरू करने हेतु प्रयासरत है।
- **संस्कृति:** G20 की अध्यक्षता ने भारत को अलग-अलग क्षेत्रों और राष्ट्रों की **अनूठी एवं विविधतापूर्ण संस्कृतियों को प्रदर्शित करने** का अवसर प्रदान किया है।

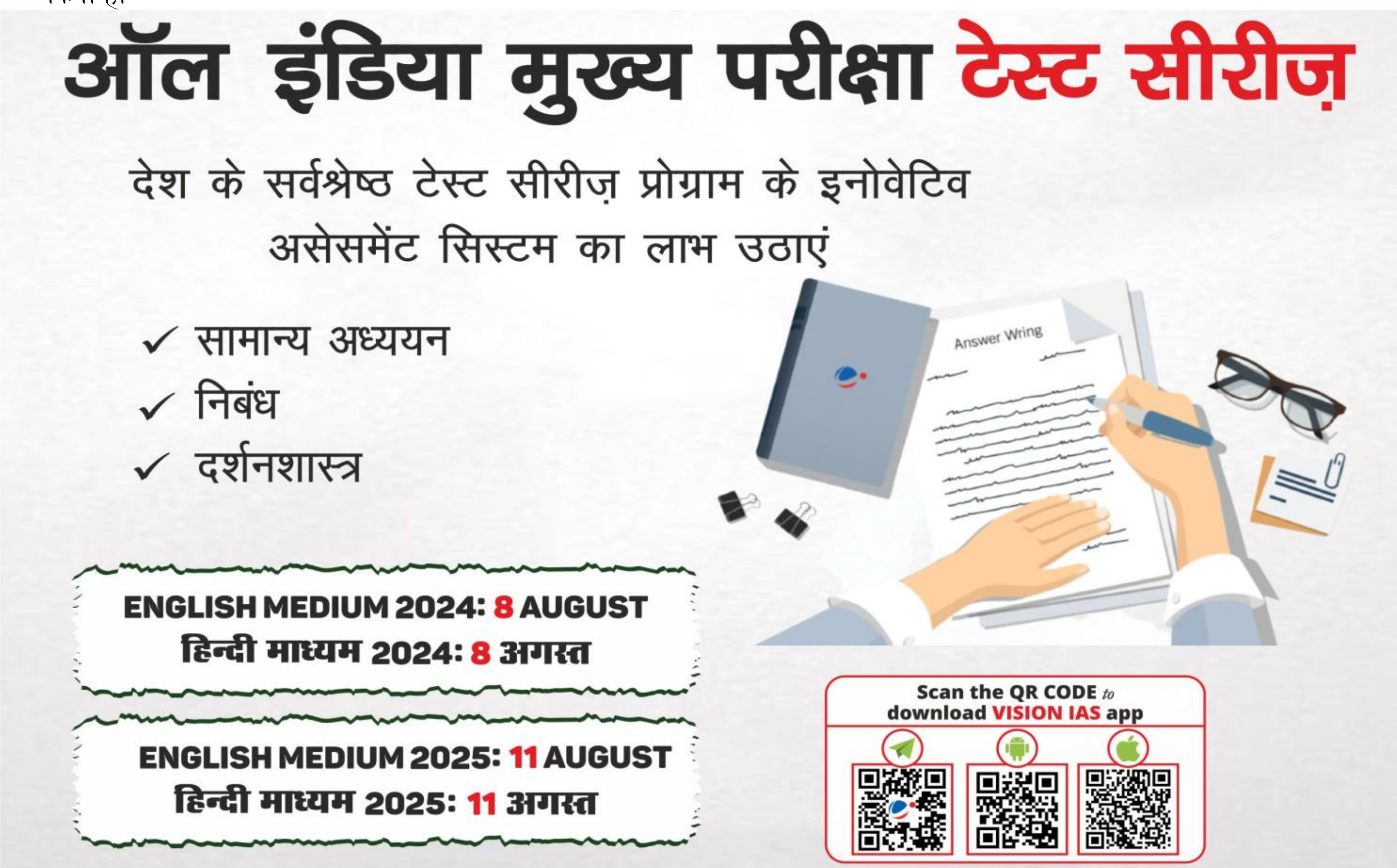

1.7. भारत और विकासात्मक सहयोग (India's Development Cooperation)

सुर्ख़ियों में क्यों?

विकासात्मक सहयोग भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ रहा है।

पृष्ठभूमि

- भारत का दृष्टिकोण उसके स्वतंत्रता संघर्ष और अन्य उपनिवेशों के साथ साझा किए गए अनुभवों से गहराई से प्रभावित है।
- भारत के विकासात्मक सहयोग की रूपरेखा को आकार देने के लिए भारत द्वारा प्रथम प्रयास**, वर्ष 2003 में भारत विकास पहल (IDI)** की घोषणा के साथ किया गया था।
- इसके बाद, क्रेडिट लाइन प्रबंधन के लिए वर्ष 2005 में **भारतीय विकास और आर्थिक सहायता योजना (IDEAS)** शुरू की गई थी
- वर्ष 2007 में, सरकार ने IDI को निलंबित कर दिया था और **भारत अंतर्राष्ट्रीय विकास सहयोग एजेंसी (IIDCA)** की स्थापना की घोषणा की गई थी।
    - **ज्ञातव्य है कि IIDCA को अभी तक स्थापित नहीं किया जा सका है।**
- 2012 में सरकार ने विदेश मंत्रालय के अंतर्गत **विकास साझेदारी प्रशासन (DPA)**[7] का गठन किया।

विकासात्मक सहयोग में भारत द्वारा किए गए प्रयास

- **भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (ITEC) कार्यक्रम,** साझेदार देशों के साथ भारत के विकासात्मक अनुभव को साझा करने का समर्थन करता है।
- विकासशील देशों को 34.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर की बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का समर्थन करने के लिए **रियायती क्रेडिट लाइंस।**
- **सहायता अनुदान से जुड़ी परियोजनाएं-** कुल मिलाकर लगभग 4 बिलियन अमेरिकी डॉलर।
- 97 देशों और संयुक्त राष्ट्र के दो संस्थाओं को **कोविड टीकों की 162.43 मिलियन खुराकें** प्रदान की गईं।

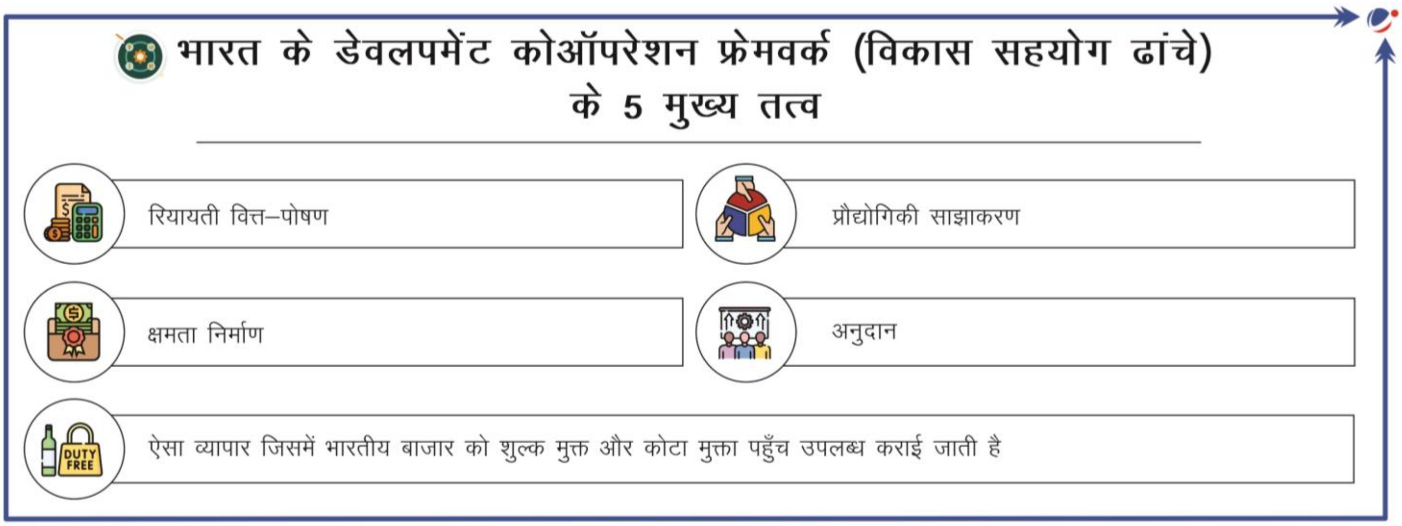

भारत का विकासात्मक सहयोग

- वर्तमान में, भारत के विकास सहयोग का उद्देश्य मोटे तौर पर **दक्षिण-दक्षिण सहयोग (SSC) ढांचे पर आधारि**त हैं।
- हालांकि, भारत की 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर की क्रेडिट लाइन पर विचार करते हुए इसके लिए आवंटन, **भारत के कुल बजट के 1% से भी कम है।** परन्तु अन्य उच्च-आय वाले देशों की तुलना में यह महत्वपूर्ण योगदान है, जैसे ऑस्ट्रेलिया (2.8 बिलियन डॉलर, जी.डी.पी.का 0.22 प्रतिशत)।
- विदेश मंत्रालय के अंतर्गत स्थापित **विकास साझेदारी प्रशासन (DPA)**, भारत की विकास भागीदारी के समग्र **प्रबंधन, समन्वय और प्रशासन** के लिए उत्तरदायी है।

[7] Development Partnership Administration

© Vision IAS

आगे की राह

- **अनुकूल दृष्टिकोण:** यह सुनिश्चित करना कि विकास के प्रयास संदर्भ-विशिष्ट और मांग-संचालित हों।
- **संस्थागत समन्वय:** विभिन्न भारतीय एजेंसियों के बीच समन्वय में सुधार।
- **नवीन वित्त-पोषण तंत्र:** विकास पहलों को वित्त-पोषित करने के नए तरीके तलाशना। उदाहरण के लिए, भारत-संयुक्त राष्ट्र विकास भागीदारी निधि।
- **डिजास्टर रिज़िलीएंस और मानवीय सहायता:** समर्पित निधि की स्थापना के ज़रिए रैपिड रिस्पांस क्षमताओं और दीर्घकालिक रिज़िलीएंस को मजबूत करना।

1.8. सॉफ्ट पॉवर कूटनीति (Soft power Diplomacy)

1.8.1. सॉफ्ट पॉवर और सांस्कृतिक कूटनीति (Soft Power and Cultural Diplomacy)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, विदेश मामलों से संबंधित संसदीय स्थायी समिति ने एक रिपोर्ट सौंपी है। इसका शीर्षक **'भारत की सॉफ्ट पॉवर और सांस्कृतिक कूटनीति: संभावनाएं एवं सीमाएं[8]'** है।

सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक कूटनीति क्या है?

- **सॉफ्ट पावर** गैर-आक्रामक साधनों का उपयोग करके अपील और आकर्षण के माध्यम से दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता है।
- सांस्कृतिक कूटनीति "देशों और लोगों के बीच विचारों, सूचनाओं, कला, भाषा और संस्कृति के अन्य पहलुओं का आदान-प्रदान" है ताकि आपसी समझ को बढ़ावा दिया जा सके।
  - उदाहरण के लिए- त्रिनिदाद एंड टोबैगो में रामलीला की परंपरा अभी भी उन भारतीय प्रवासियों द्वारा निभाई जाती है, जो भारत से गिरमिटिया मजदूरों के रूप में वहां चले गए थे।

भारत में स्मार्ट पावर के उपयोग के बारे में समिति की टिप्पणी

- **स्मार्ट पावर** किसी देश की ऐसी क्षमता है, जिसमें हार्ड और सॉफ्ट पावर दोनों के ही तत्व शामिल होते हैं। यह किसी देश के लक्ष्यों को प्राप्त करने में प्रभावी और कुशल भूमिका निभा सकती है।
- **विदेश मंत्रालय के अनुसार,** भारत मौजूदा दौर में वैश्विक स्तर पर स्मार्ट पावर की भूमिका निभा रहा है।
- **इंटरकनेक्टिविटी और निर्भरता के इस युग में** स्मार्ट पावर ही भविष्य है।

विदेश मंत्रालय द्वारा उल्लिखित मुद्दे: विदेश मंत्रालय ने सॉफ्ट पॉवर और सांस्कृतिक कूटनीति के **प्रभावी संचालन को बाधित करने वाले निम्नलिखित प्रमुख मुद्दों को रेखांकित किया है:**

- उचित समय पर और **पर्याप्त बजट आवंटित नहीं हो पाता है।**
- सरकारी और निजी क्षेत्रक दोनों में कई संस्थानों के बीच **अधिक समन्वय एवं परामर्श की आवश्यकता है।**
  - वर्तमान में, कई मंत्रालयों और एजेंसियों के कार्य एक-दूसरे के अधिकार क्षेत्रों में आते हैं। इससे **प्रयासों तथा संसाधनों का दोहराव** होता है।
- मुख्यालयों के साथ-साथ विदेशों में भी स्थित भारतीय मिशनों/ केंद्रों में **सांस्कृतिक कार्यों में अपेक्षित उत्साह और रुचि रखने वाले कुशल तथा प्रेरित कार्यबल** की कमी है।
- **भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR)[9]** के अधिदेश (मैंडेट) और 'संस्कृति' के दायरे के बारे में **स्पष्टता का अभाव** है।
  - विदेशों में सांस्कृतिक सॉफ्ट पॉवर को बढ़ावा देने के लिए **एक राष्ट्रीय नीति का अभाव है।** इसके कारण **अस्थाई तथा असंधारणीय** तरीकों को अपनाया जाता है।

[8] India's Soft Power and Cultural Diplomacy: Prospects and Limitations

[9] Indian Council for Cultural Relations

भारत की सांस्कृतिक कूटनीति के साधन

- **योगः** संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता दी।
- **भारतीय सिनेमाः** दुनिया भर में इसके बहुत से दर्शक हैं।
- **भारतीय मूल्य और सहिष्णुताः** ये अपनी प्रकृति में काफी हद तक सकारात्मक माने जाते हैं।
- **भारतीय भोजनः** सांस्कृतिक विविधता के साथ–साथ भारत में कई तरह के आकर्षक व्यंजन मिलते हैं।
- **पर्यटनः** लोगों और संस्कृति को जोड़ने में मदद करता है।

समिति की सिफारिशें

- **समर्पित दस्तावेज़:** भारत के सॉफ्ट पावर टूलबॉक्स और इसे विदेशों में कैसे पेश किया जा रहा है, इसका विवरण देने के लिए एक समर्पित दस्तावेज़ तैयार करना।
- **भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) का पुनर्गठन:** ICCR के बजटीय आवंटन में कम से कम 20% की वृद्धि करके।
- **समन्वय समिति:** विदेश मंत्रालय/ ICCR और अन्य संबंधित मंत्रालयों (जैसे कि संस्कृति मंत्रालय) के बीच एक समन्वय समिति का गठन करना।
- **प्रवासी भारतीयों से सक्रीय जुड़ाव:** प्रवासी भारतीयों के साथ सक्रिय रूप से बातचीत करने के लिए एक तंत्र तैयार करना।
- **धार्मिक और चिकित्सा पर्यटन पर ध्यान केंद्रित करना:** आवश्यक बुनियादी ढांचे और कुशल विशेषज्ञता का निर्माण करके एक बहु-आयामी दृष्टिकोण अपनाना।

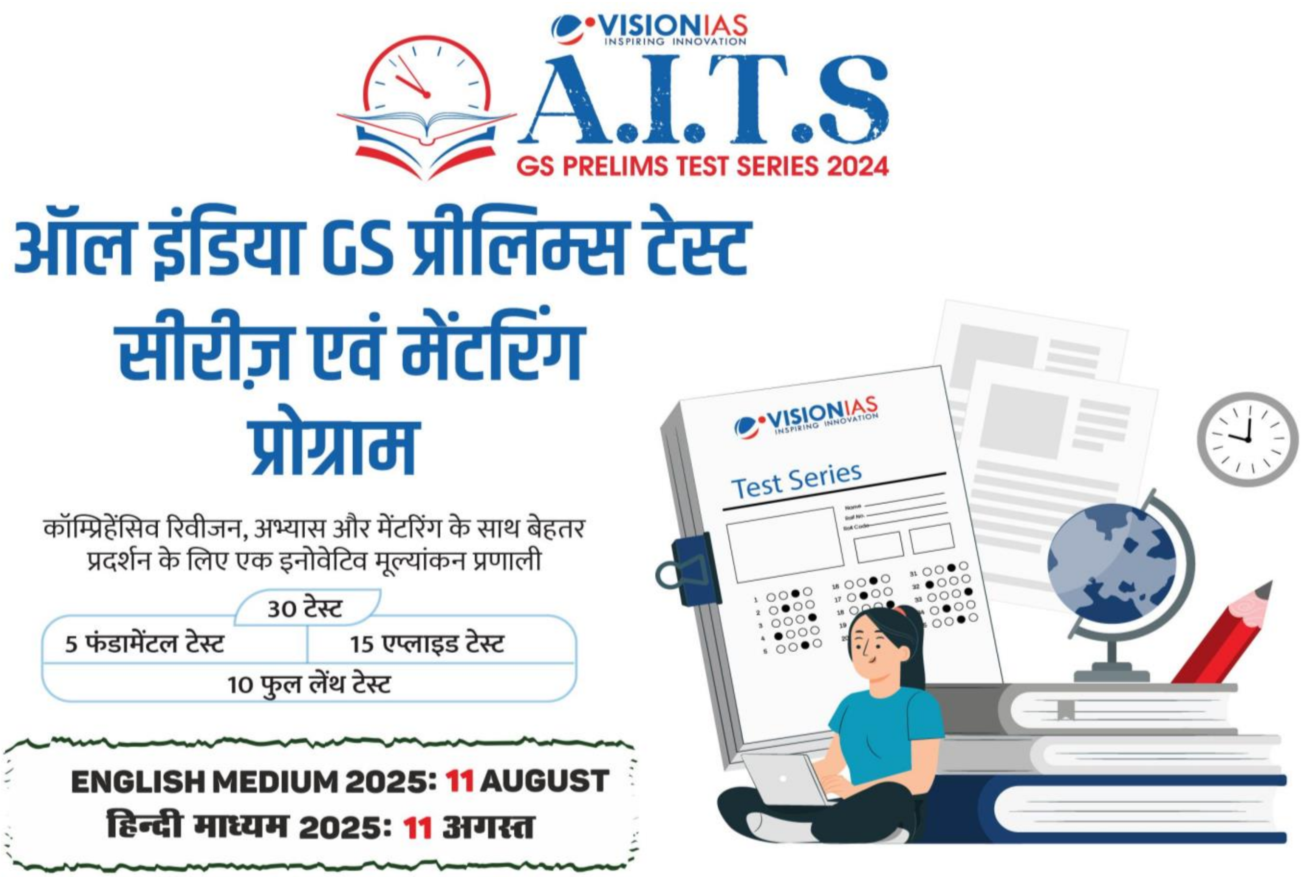

1.8.2. भारतीय डायस्पोरा: एक नज़र में (Indian Diaspora at a Glance)

भारतीय डायस्पोरा

- भारतीय डायस्पोरा या प्रवासी भारतीय, भारत के विभिन्न क्षेत्रों से प्रवास करने वाले लोगों और उनके वंशजों के लिए प्रयोग किया जाने वाला एक सामान्य शब्द है।

डायस्पोरा **भारत और विश्व को जोड़ने वाले अंतर्राष्ट्रीय सेतु के रूप** में कार्य करते हैं और उनमें से प्रत्येक देश का ब्रांड एंबेसडर होता है।

- दुनिया में निवास करने वाले प्रवासियों में सर्वाधिक संख्या भारत के प्रवासियों की है। **इसमें 31 मिलियन से अधिक लोग शामिल हैं जिसमें 13 मिलियन से अधिक NRIs और 18 मिलियन PIOs हैं।**
- **भारत के प्रवासियों की सर्वाधिक संख्या संयुक्त अरब अमीरात, यू.एस.ए. और सऊदी अरब** में निवास करती है।

भारत 2022 में **100 बिलियन डॉलर वार्षिक विप्रेषण (रेमिटेंस)** प्राप्त करने वाला पहला देश बन गया था।

डायस्पोरा का महत्त्व

- **आर्थिक:** प्रवासी श्रमिक भारत में महत्वपूर्ण सूचनाओं और प्रौद्योगिकियों के प्रवाह को आसान बनाते हैं। कम कुशल श्रमिकों का प्रवास (विशेषकर पश्चिम एशिया में) भारत में **प्रच्छन्न बेरोजगारी को कम करने में मदद** करता है।
- **डायस्पोरा डिप्लोमेसी भारत की सॉफ्ट डिप्लोमेसी का एक अहम हिस्सा है,** उदाहरण के लिए- भारत और अमेरिका के बीच परमाणु समझौता कराने में प्रवासी भारतीयों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- **अनुभवों का प्रचार और प्रसार:** उदाहरण के लिए- योग, आयुर्वेद, भारतीय व्यंजन, **UAE** में **BAPS** हिन्दू मंदिर आदि।
- **मेजबान/ गंतव्य देश का विकास:** उदाहरण के लिए- अमेरिका में सिलिकॉन वैली, भारतीयों की सफलता को दर्शाती है।

भारतीय डायस्पोरा के कल्याण के लिए किए गए उपाय

- **प्रवासी भारतीयों के लिए विदेश मंत्रालय में एक समर्पित प्रभाग** स्थापित किया गया है।
- **प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन किया जाता है।**
- **स्वर्ण प्रवास योजना-** विदेशों में भारतीय कामगारों की रोजगार क्षमता को बढ़ावा देने के लिए नई योजना बनाई गई है।
- भारत सरकार ने कई अन्य देशों के साथ **सामाजिक सुरक्षा समझौतों** पर हस्ताक्षर किए हैं।
- प्रवासी भारतीयों की मदद के लिए **लैटिन अमेरिका और अफ्रीकी देशों में नए दूतावास खोले** गए हैं।
- **संकट समाधान:** MADAD/ मदद पोर्टल, भारतीय सामुदायिक कल्याण कोष (ICWF)।

भारतीय डायस्पोरा द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियां

- **पश्चिम एशिया:**
  - **कफाला श्रम प्रणाली शोषणकारी है।**
  - **निताकत कानून का उद्देश्य** सऊदी अरब में विदेशी श्रमिकों के एक बड़े वर्ग की जगह स्थानीय लोगों को रोजगार देना है।
- **यू.एस.ए., कनाडा और यू.के.**
  - अमेरिका में भेदभावपूर्ण व्यवहार, संरक्षणवाद और H-1B वीजा के कठोर मानदंड
  - ब्रिटेन में ब्रेक्जिट के बाद वीजा नियमों में संशोधन।
- **सामान्य आर्थिक मुद्दे:** अनुबंध की शर्तों का उल्लंघन, काम करने की प्रतिकूल स्थितिआदि।
- **अन्य मुद्दे:** नस्लवाद, नफरत या द्वेष (जेनोफोबिया), अपराधीकरण, जेंडर के आधार पर हिंसा, मानवाधिकार का उल्लंघन।

आगे की राह

- मेजबान/ गंतव्य देशों के साथ **एक मानक श्रम निर्यात समझौते पर बातचीत** की जानी चाहिए।
- हमारे **विदेशी कामगारों के सामने आने वाले जोखिमों को कवर करने वाली अनिवार्य बीमा योजनाएं** शुरू की जानी चाहिए।
- NRI/ PIO द्वारा स्थापित की जाने वाली परियोजनाओं के लिए **विशेष आर्थिक क्षेत्रों की स्थापना** पर विचार किया जाना चाहिए।
- NRI/ PIO से निवेश आकर्षित करने के लिए **इजरायल बॉण्ड की तर्ज पर विशेष इंफ्रास्ट्रक्चर बॉण्ड** जारी करना।

निष्कर्ष

- भारतीय डायस्पोरा देश के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण सेतु का काम करता है।

1.8.2.1. भारत में विप्रेषण (Remittances to India)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, विश्व बैंक ने एक वार्षिक रिपोर्ट "माइग्रेशन एंड डेवलपमेंट ब्रीफ: लेवरेजिंग डायस्पोरा फाइनेंस फॉर प्राइवेट कैपिटल मोबिलाइजेशन" जारी की।

भारत में विप्रेषण से जुड़े तथ्य

- **दुनिया में विप्रेषण का सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता:** भारत को 2023 में लगभग 125 बिलियन डॉलर का विप्रेषण प्राप्त हुआ।
  - संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, वर्तमान समय में लगभग 18 मिलियन भारतीय विदेशों में रहते हैं।
- **स्रोत देश:** अमेरिका, UK और सिंगापुर (उच्च कुशल प्रवासी) से आने वाला विप्रेषण **कुल विप्रेषण का 36%** है।
  - **अमेरिका** के बाद संयुक्त अरब अमीरात भारत में विप्रेषण का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत है, जो कुल का 18% है।
- **विप्रेषण में वृद्धि के प्रमुख कारक:**
  - संयुक्त राज्य अमेरिका में सदियों पुराने और तनावग्रस्त श्रम बाजार में ढील।
  - यूरोप में उच्च रोजगार वृद्धि का एक प्रमुख कारण **वर्कर रिटेंशन प्रोग्राम** का व्यापक उपयोग है।

भारत के लिए विप्रेषण का महत्त्व		
विप्रेषण से बचत बढ़ती है और अर्थव्यवस्था में मांग पैदा होती है।	यह **राजकोषीय घाटे के वित्त-पोषण में मदद** करता है और भुगतान संतुलन को महत्वपूर्ण समर्थन प्रदान करता है। उदाहरण के लिए- तजाकिस्तान में, विप्रेषण अंतर्वाह सकल घरेलू उत्पाद का 48% है।	यह देश की क्रेडिट रेटिंग और कर्ज चुकाने की क्षमता में सुधार करके **देश की क्रेडिट साख में सुधार करता है।**

विप्रेषण से जुड़ी चिंताएं

- **कई देशों द्वारा प्रतिबंधात्मक उपाय:** उदाहरण के लिए- यूरोपीय संघ में इटली, जर्मनी, नॉर्वे, स्वीडन आदि देशों ने सीमा पर आंतरिक जाँच शुरू कर दी है।
- **उच्च विप्रेषण लागत:** विप्रेषण भेजने के लिए बैंक सबसे महंगे चैनल बने हुए हैं (औसत लागत 12%), इसके बाद डाकघर (7%) और मोबाइल ऑपरेटर (4.1%) का स्थान है।
- **उच्च मुद्रास्फीति और धीमी संवृद्धि:** वैश्विक मुद्रास्फीति और धीमी संवृद्धि की संभावनाओं के कारण 2024 में प्रवासियों की वास्तविक आय में गिरावट आ सकती है।
- **अन्य चिंताएं:** मनी लॉन्ड्रिंग, ब्रेन ड्रेन, आदि।

आगे की राह

- आरक्षित भंडार को बढ़ावा देने और बैंकिंग प्रणाली के लिए उपलब्ध विदेशी मुद्रा बढ़ाने के लिए **औपचारिक चैनलों के माध्यम से विप्रेषण प्रवाह** को प्रोत्साहित करना।
  - मेज़बान देशों में श्रम बाजार और सामाजिक सुरक्षा नीतियां प्रवासियों के लिए समावेशी होनी चाहिए, क्योंकि विप्रेषण विकासशील देशों के लिए एक महत्वपूर्ण लाइफ़लाइन के रूप में कार्य करता है।
- **डायस्पोरा बॉण्ड्स के माध्यम से सीधे प्रवासी वित्त जुटाना:** डायस्पोरा बॉण्ड्स की संरचना इस प्रकार की जा सकती है कि विदेशी गंतव्यों में रखी गई प्रवासी बचत का प्रत्यक्ष उपयोग किया जा सके।
  - सितंबर 2023 तक, भारत में NRI डिपाजिट 143 बिलियन अमेरिकी डॉलर थी।

1.8.2.2. विदेश में काम करने वाले भारतीयों श्रमिकों के लिए श्रम नियम (Labour Rules for Workers Abroad)

सुर्ख़ियों में क्यों?

ट्रेड यूनियंस ने **उत्तर प्रदेश और हरियाणा** सरकार द्वारा **इजरायल** में काम करने के लिए **श्रमिकों की भर्ती** करने का विरोध किया है। इन श्रमिकों की मुख्य रूप से **निर्माण कार्यों में काम करने** के लिए भर्ती की जा रही है।

प्रवासी श्रमिकों की सुरक्षा के लिए भारत द्वारा उठाए गए कदम

- **द्विपक्षीय और बहुपक्षीय समझौते:** भारत ने **कुवैत, ओमान सहित पश्चिम एशिया के छह देशों के साथ लेबर मैनपावर एग्रीमेंट्स (LMAs)** पर हस्ताक्षर किए हैं।
- **कल्याण कार्यक्रम:** अनिवासी भारतीयों (NRIs) के लिए **राष्ट्रीय पेंशन योजना** शुरू की गई है, भारतीय समुदाय कल्याण निधि स्थापित की गई है आदि।
- भारत ने **"ग्लोबल कॉम्पैक्ट फॉर सेफ, ऑर्डरली एंड रेगुलर माइग्रेशन (2018)"** समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।
- इसके अतिरिक्त, वर्ष 2023-24 के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन संगठन (IOM) ने **विदेश मंत्रालय के साथ साझेदारी में "प्रोजेक्ट प्रयास"** लॉन्च किया है। प्रोजेक्ट प्रयास (PRYAS) से आशय है: **प्रमोटिंग रेगुलर अस्सीस्टेड माइग्रेशन फॉर यूथ एंड स्किल्ड प्रोफेशनल्स।**
    - **उद्देश्य:** विदेश मंत्रालय, नीति आयोग और राज्य सरकारों के सहयोग से भारतीय श्रमिकों और छात्रों के लिए सुरक्षित, कानूनी प्रवासन सुनिश्चित करने के लिए सहयोग करना।

प्रवासी श्रमिकों की सुरक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के कन्वेंशंस

- **रोजगार के लिए प्रवासन कन्वेंशन (संशोधित), 1949 (नंबर 97):** इसका उद्देश्य रोजगार के लिए प्रवास करने वाले श्रमिकों हेतु पर्याप्त और मुफ्त सेवा जारी रखने में सहायता करना है।
- **प्रवासी श्रमिक (अनुपूरक प्रावधान) कन्वेंशन, 1975 (नंबर 143):** यह गैर-कानूनी रूप से नियोजित प्रवासी श्रमिकों की सुरक्षा के लिए कन्वेंशन है।

नोट: भारत ने इन दोनों कन्वेंशंस का अनुसमर्थन नहीं किया है।

1.9. बंदरगाहों का भू-राजनीतिक महत्त्व (Geopolitical Significance of Ports)

सुर्खियों में क्यों?

हाल ही में, भारत ने **चाबहार बंदरगाह** पर **शाहिद बेहिश्ती पोर्ट टर्मिनल** के विकास के लिए **ईरान के साथ 10 वर्षीय समझौते** पर हस्ताक्षर किए।

अन्य संबंधित तथ्य

- यह बंदरगाह **पाकिस्तान को बाइपास करते हुए भारत के पश्चिमी तट से भू-आबद्ध अफगानिस्तान, मध्य एशिया और यूरोपीय देशों के बीच की दूरी को कम करेगा।**
- इसी से संबंधित एक घटनाक्रम में, विदेश मंत्रालय ने IPGL के एक प्रस्ताव को मंजूरी दी है। इस प्रस्ताव के तहत IPGL, **म्यांमार के सितवे बंदरगाह पर सभी तरह की गतिविधियों का प्रबंधन** करेगा।

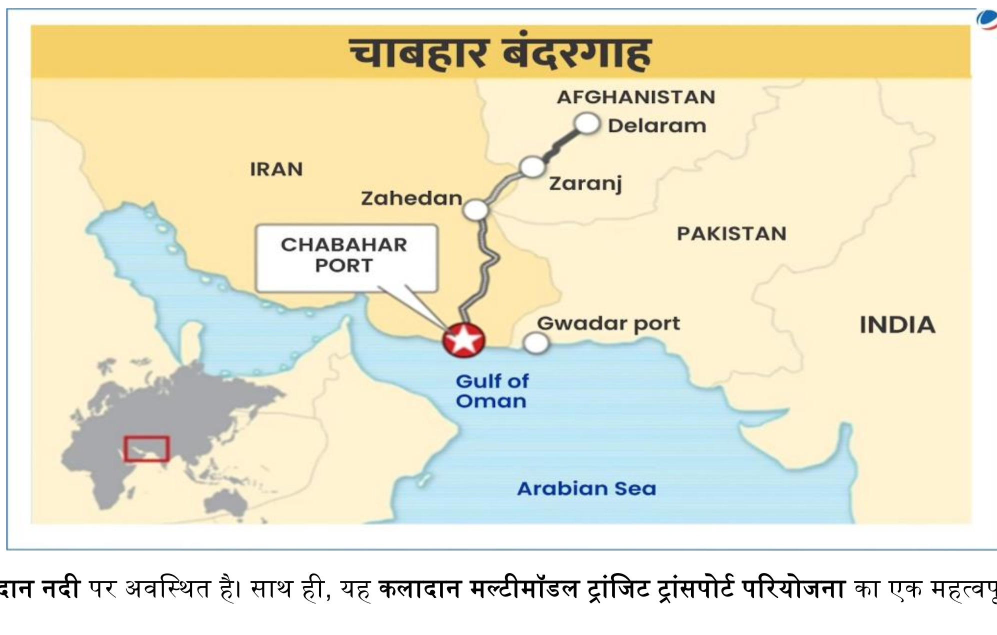

    - सितवे बंदरगाह **म्यांमार की कलादान नदी** पर अवस्थित है। साथ ही, यह **कलादान मल्टीमॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट परियोजना** का एक महत्वपूर्ण घटक भी है।
- इस तरह के घटनाक्रम न केवल आर्थिक पहलू के रूप में, बल्कि **भू-राजनीति के एक रणनीतिक साधन** के रूप में भी बंदरगाहों के बढ़ते महत्त्व को दर्शाते हैं।

कलादान मल्टीमॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट परियोजना के बारे में

- यह भारत के **पूर्वी बंदरगाहों (उदाहरण के लिए विजाग और कोलकाता) को म्यांमार से जोड़ेगा।** इसके अलावा, यह परियोजना **बांग्लादेश को दरकिनार करते हुए म्यांमार के जरिए भारत के उत्तर-पूर्वी हिस्से तक आवाजाही** की सुविधा प्रदान करेगी।
- इसका उद्देश्य **भूटान और बांग्लादेश के बीच स्थित चिकन नेक के नाम से मशहूर सिलीगुड़ी कॉरिडोर पर आवाजाही की निर्भरता को कम** करना है।

बंदरगाहों का सामरिक महत्त्व

- **भू-राजनीतिक परिसंपत्तियों के रूप में कार्य करते हैं:** उदाहरण के लिए- **अगालेगा द्वीप** पर मौजूद भारतीय नौसेना के स्टेजिंग बेस के माध्यम से **मोजाम्बिक चैनल पर समुद्री गश्त लगाना काफी आसान** हो जाएगा।
- **समुद्री सुरक्षा को मजबूत करते हैं:** उदाहरण के लिए- **म्यांमार के सितवे बंदरगाह तक पहुंच** से भारत की हिंद महासागर क्षेत्र में स्थिति और मजबूत होगी। इससे समुद्री क्षेत्र जागरूकता के लिए भारत की क्षमताओं में सुधार होगा।
- **द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंधों को मजबूत करना:** उदाहरण के लिए- **ओमान द्वारा भारत को दुकम बंदरगाह तक पहुंच** की अनुमति देने से खाड़ी देशों के साथ भारत का संबंध और मजबूत हो गया है।
- **बंदरगाहों का आर्थिक महत्त्व:**
  - अलग-अलग देशों या क्षेत्रों से **कनेक्टिविटी बढ़ाने एवं व्यापार को सुविधाजनक बनाने** में बंदरगाहों की अति महत्वपूर्ण भूमिका होती है। साथ ही, बंदरगाह खरीद, उत्पादन और वितरण प्रणालियों के एकीकरण के जरिए **वैश्विक मूल्य श्रृंखला में देश की भागीदारी को सक्षम** बनाते हैं।
    - **स्थानीय मुद्रा** (जैसे रुपया) **में लेन-देन को बढ़ावा देने का मार्ग प्रशस्त** होता है। इससे स्थानीय मुद्रा का अंतर्राष्ट्रीयकरण होता है।
  - **बंदरगाह शहर** वैश्विक शहर के रूप में किसी देश को वैश्विक व्यापार और वित्तीय नेटवर्क के केंद्र में रखते हैं।
  - **आर्थिक और ऊर्जा सुरक्षा के संरक्षण के लिए वैकल्पिक मार्ग:**
    - उदाहरण के लिए- **ग्वादर बंदरगाह (पाकिस्तान) में निवेश से चीन को मलक्का जलडमरूमध्य पर अपनी निर्भरता को कम करने में मदद** मिलेगी। साथ ही उसे **मध्य-पूर्व, अफ्रीका और यूरोप** से व्यापार के लिए एक छोटा मार्ग मिल जाएगा।

बंदरगाहों का रणनीतिक रूप से उपयोग किए जाने में चुनौतियां

- **राष्ट्रों के बीच प्रतिद्वंद्विता:** उदाहरण के लिए- चीन और भारत के बीच अपने प्रभाव का विस्तार करने की प्रतिद्वंद्विता में बंदरगाह अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। इस कारण से **स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स (चीन) और नैकलेस ऑफ डायमंड्स (भारत)** नामक रणनीतियां बनाई गई हैं।
- **राष्ट्रीय हितों को नुकसान:** उदाहरण के लिए- **श्रीलंका में पैदा हुए आर्थिक संकट के लिए काफी हद तक चीन की ऋण जाल कूटनीति (हंबनटोटा के संबंध में)** को उत्तरदायी माना गया था।
- **रक्षा एवं सुरक्षा से जुड़ी चिंताएं:** इस तरह की चिंताएं समुद्री डकैती के साथ-साथ बंदरगाहों पर विदेशी या प्रतिद्वंद्वी राष्ट्र के स्वामित्व के कारण भी उत्पन्न हो सकती हैं।
- **सुभेद्यता में वृद्धि:** जिस समय भू-राजनीतिक तनाव अपने चरम पर होता है, उस दौरान समुद्री जल मार्गों से होने वाले परिवहन, विशेष रूप से चोक पॉइंट्स को नियंत्रित या बाधित किया जा सकता है।
- **भारत के संबंध में चुनौतियां:**
  - भारत के छोटे पड़ोसी देश (जैसे- श्रीलंका, बांग्लादेश, मालदीव आदि) स्वयं को **चीन और भारत की भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता में फंसा** हुआ महसूस करते हैं।
  - विदेशों में बंदरगाहों का विकास करके अपने भू-राजनीतिक प्रभाव को और बढ़ाने के लिए भारत के पास **वित्तीय संसाधन सीमित** हैं।

© Vision IAS

आगे की राह

- **वैश्विक स्तर पर**
    - बंदरगाहों से संबंधित **जोखिमों की निगरानी** करने पर ध्यान देने की जरूरत है। इन जोखिमों में मेजबान देश के बंदरगाहों के विकास के लिए बहुत अधिक ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराना और सैन्य संचालन का समर्थन करने के लिए बंदरगाहों पर वाणिज्यिक व्यवस्थाओं का दुरुपयोग शामिल है।
    - किसी देश के बंदरगाह से होने वाली ऐसी अपारदर्शी आर्थिक गतिविधियों, जिनसे उस राष्ट्र की संप्रभुता और वैश्विक हितों को नुकसान पहुंचता है, उन्हें रोकने के लिए **वैश्विक स्तर पर सुरक्षा साझेदारियों का निर्माण** किया जाना चाहिए।

- **भारत के संदर्भ में विशिष्ट उपाय:**
    - भारत द्वारा हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती मौजूदगी को प्रतिसंतुलित करने के प्रयास किए जाने चाहिए। साथ ही, भारत के समुद्री सुरक्षा से जुड़े हितों की रक्षा के लिए समान विचारधारा वाले देशों (जैसे- क्वाड देशों) के साथ **बहुपक्षीय साझेदारी की संभावनाओं का पता लगाना** चाहिए।
    - भारत को **पश्चिमी हिंद महासागर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति को और मजबूत करना** चाहिए, क्योंकि यह क्षेत्र चीन से काफी अधिक दूरी पर है। इसके कारण कहीं-न-कहीं भारत को इस क्षेत्र में भौगोलिक बढ़त हासिल है।

निष्कर्ष

चूंकि बंदरगाह न केवल भूमि और समुद्र जैसे दो भौगोलिक क्षेत्रों को आपस में जोड़ते हैं, बल्कि आर्थिक विकास के प्रवेश द्वार और भू-रणनीतिक कूटनीतियों के संचालन के साधन के रूप में दोहरी भूमिका भी निभाते हैं। इसलिए, उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करना वर्तमान भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के समय काफी महत्वपूर्ण हो जाता है।

1.10. सामरिक उपकरण के रूप में क्रूड ऑयल (Crude Oil as a Strategic Tool)

सुर्ख़ियों में क्यों?

रूस-यूक्रेन युद्ध, इजराइल-फिलिस्तीन संघर्ष जैसी हालिया घटनाओं ने भू-राजनीति में एक सामरिक उपकरण के रूप में कच्चे तेल यानी क्रूड ऑयल के महत्त्व को बढ़ा दिया है।

क्रूड ऑयल के मामले में भारत की स्थिति

- 2021 में, भारत संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बाद **तेल का तीसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता** देश था।
- **कच्चे तेल के प्रमुख निर्यातक देश हैं:** रूस, इराक, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, आदि।
- भारत दुनिया का **चौथा सबसे बड़ा रिफाइनर, पेट्रोलियम उत्पादों का छठा सबसे बड़ा आयातक और पेट्रोलियम उत्पादों का सातवां सबसे बड़ा निर्यातक** है।
- 2020-2040 तक वैश्विक स्तर पर ऊर्जा की मांग में होने वाली वृद्धि में **भारत की हिस्सेदारी लगभग 25-28%** रहने की संभावना है।

कच्चे तेल का सामरिक महत्त्व

- **आर्थिक लाभ:** तेल उत्पादक देश, जैसे- ओपेक देश वैश्विक तेल की कीमतों में हेरफेर कर सकते हैं, जिससे वैश्विक बाजार और अर्थव्यवस्थाएं प्रभावित होती हैं।
- **रणनीतिक साझेदारी:** लंबे समय तक आपूर्ति समझौतों के माध्यम से तेल आयात करने वाले देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी, उदाहरण के लिए- रूस के सुदूर पूर्व में चीन का निवेश।
- **भू-राजनीतिक शक्ति का प्रदर्शन:** तेल समृद्ध क्षेत्रों पर नियंत्रण से देशों को स्थानीय और वैश्विक राजनीति को प्रभावित करने की ताक़त मिलती है।
- **सैन्य शक्ति की निरंतर तैनाती और प्रदर्शन:** सैन्य बलों को प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए विश्वसनीय और निरंतर तेल आपूर्ति अनिवार्य है।
- **प्रतिबंध के साधन के रूप में:** उदाहरण के लिए, 1973 में योम-किप्पुर युद्ध के दौरान तेल उत्पादक अरब राष्ट्र द्वारा USA पर प्रतिबंध लगाना।

क्रूड ऑयल के आयात को कम करने के लिए उठाए गए कदम

- **रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार कार्यक्रम (SPRs):** ऊर्जा सुरक्षा बनाए रखने और आपूर्ति संबंधी व्यवधानों को कम करने के लिए ओडिशा के चंडीखोल और पादुर (कर्नाटक) में तेल भंडारण सुविधाएं स्थापित की गई हैं।
- **इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल (EBP) कार्यक्रम:** इसका उद्देश्य ईंधन के लिए आयात पर निर्भरता को कम करना है।
- **राष्ट्रीय जैव ईंधन नीति, 2018:** इसमें 2025-26 तक पेट्रोल में 20% इथेनॉल का सांकेतिक लक्ष्य रखा गया है।
- **खोजे गए लघु क्षेत्रों (DSF) के लिए नीति, 2015:** इसका उद्देश्य हाइड्रोकार्बन संसाधनों का मुद्रीकरण करना है।
- **हाइड्रोकार्बन अन्वेषण और लाइसेंसिंग नीति में सुधार:** तेल और गैस के घरेलू अन्वेषण तथा उत्पादन को बढ़ाने के लिए।
- **राष्ट्रीय तेल कंपनियों को कार्यात्मक स्वतंत्रता प्रदान करना और निजी क्षेत्रक की भागीदारी को बढ़ावा देना:** इलेक्ट्रॉनिक सिंगल विंडो तंत्र के माध्यम से अनुमोदन प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करके।

भारत से जुड़ी चिंताएं

- **मूल्य अस्थिरता:** रूस-यूक्रेन युद्ध, मध्य-पूर्व में संघर्ष और लाल सागर पर हूती हमले के कारण तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव हो रहा है।
- **घरेलू उत्पादन में कमी:** भारत के लगभग आधे कच्चे तेल का उत्पादन समुद्री क्षेत्रों से होता है और मांग का केवल 15% हिस्सा घरेलू उत्पादन से पूरा होता है।
- **आपूर्ति श्रृंखला की समस्याएं:** कच्चे तेल की पाइपलाइन का सीमित नेटवर्क, उच्च परिचालन और परिवहन लागत।
- **अपर्याप्त भंडारण:** वर्तमान में कच्चे तेल और पेट्रोलियम उत्पादों के भंडारण की कुल राष्ट्रीय क्षमता 74 दिनों की है, जबकि IEA के अनुसार यह 90 दिनों का होना चाहिए।

आगे की राह

हाल ही में, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस (PNG) संबंधी स्थायी समिति ने कच्चे तेल के आयात संबंधी नीति की समीक्षा पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसमें निम्नलिखित सुझाव दिए गए हैं:-

- **स्रोतों में विविधता लाना:** क्योंकि भारत के अधिकांश हाइड्रोकार्बन आयात मध्य पूर्व क्षेत्र से होते हैं जो भू-राजनीतिक तनाव के प्रति संवेदनशील है।
- **आयात निर्भरता कम करना:** यह घरेलू उत्पादन बढ़ाकर, जैव-ईंधन और नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देकर, ऊर्जा दक्षता में सुधार करके, रिफाइनरी प्रक्रिया में सुधार करके प्राप्त किया जा सकता है।
- **स्पॉट और टर्म कॉन्ट्रैक्ट:** एक निश्चित अवधि (एक वर्ष या उससे अधिक) हेतु सुनिश्चित मात्रा के लिए।
- **कच्चे तेल की कीमत निर्धारण में एशियाई प्रीमियम:** ऐसे शुल्क हटाने के लिए बहुपक्षीय संस्थानों का उपयोग करना चाहिए।
- **आयात के वैकल्पिक मार्ग का पता लगाना:** कम लागत वाले और कम भू-राजनीतिक तनाव वाले छोटे मार्गों की तलाश करनी चाहिए।
- **देश के कच्चे तेल के पाइपलाइन नेटवर्क को मजबूत करना:** मौजूदा पाइपलाइन परियोजनाओं को समय पर पूरा करना और कच्चे तेल की रणनीतिक भंडारण क्षमता को बढ़ाना चाहिए।

DELHI: 22 अगस्त, 1 PM | 18 जुलाई, 1 PM
LUCKNOW: 18 जुलाई
BHOPAL: 23 जुलाई
JAIPUR: 16 अगस्त
JODHPUR: 11 जुलाई
फाउंडेशन कोर्स
सामान्य अध्ययन
प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा 2025
इनोवेटिव क्लासरूम प्रोग्राम

© Vision IAS

VISION IAS
INSPIRING INNOVATION

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के लिए उत्तर लेखन

UPSC मुख्य परीक्षा में सबसे ज्यादा उत्तर लेखन का कौशल मायने रखता है। इसका कारण यह है कि उत्तर लिखने की कला ही अभ्यार्थियों के लिए अपने ज्ञान, समझ, विश्लेषणात्मक क्षमता और टाइम मैनेजमेंट के कौशल को प्रदर्शित करने के एक प्राथमिक साधन के रूप में कार्य करती है। मुख्य परीक्षा में प्रभावी उत्तर लेखन, इन्फॉर्मेशन को सही तरीके से पेश करने, विविध दृष्टिकोणों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने और संतुलित तर्क प्रस्तुत करने की क्षमता प्रदर्शित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। कुशलतापूर्वक एवं समग्रता से लिखा गया उत्तर, परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने एवं इस प्रतिस्पर्धी माहौल में अभ्यार्थियों को भीड़ से अलग करने में सहायक होता है, जो अंततः UPSC मुख्य परीक्षा में उनकी सफलता का निर्धारण करता है।

प्रभावशाली उत्तर लेखन के प्रमुख घटक

संदर्भ की पहचानः प्रश्न के थीम या टॉपिक को समझना एवं उस टॉपिक के संदर्भ में ही अपना उत्तर लिखना।

कंटेंट की प्रस्तुतीः विषय–वस्तु की व्यापक समझ का प्रदर्शन करना भी जरूरी होता है। इसके लिए प्रश्न से संबंधित सटीक तथ्यों, प्रासंगिक उदाहरणों एवं व्यावहारिक विश्लेषण को उत्तर में शामिल करना चाहिए।

सटीक एवं प्रभावी इंट्रोडक्शनः उत्तर शुरू करने के लिए भूमिका को आकर्षित ढंग से लिखने से, परीक्षक का ध्यान आकर्षित होता है एवं इससे उत्तर के आगे होने वाली चर्चाओं का संक्षिप्त विवरण मिलता है।

संरचना एवं प्रस्तुतीकरणः उत्तर को क्लियर हेडिंग के साथ, सब–हेडिंग या बुलेट पॉइंट के माध्यम से व्यवस्थित तरीके से लिखना आवश्यक होता है। इसके अलावा, आसान समझ के लिए जानकारी को तार्किक ढंग से एवं बेहतर रूप से प्रस्तुत करना जरूरी होता है।

संतुलित निष्कर्षः मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में लिखने का प्रयास करना चाहिए। यदि प्रश्न में पूछा गया हो तो अंतर्दृष्टि या सिफारिशें प्रस्तुत करनी चाहिए। साथ ही, अपने तर्क या चर्चा को संतोषजनक निष्कर्ष तक पहुंचाना भी आवश्यक होता है।

भाषाः संदर्भ के अनुरूप सटीक और औपचारिक भाषा का उपयोग करना आवश्यक होता है। साथ ही, शब्दजाल, आम बोलचाल की भाषा के इस्तेमाल या अस्पष्टता से बचते हुए अभिव्यक्ति में प्रवाह एवं स्पष्टता का प्रदर्शन करना आवश्यक होता है।

Vision IAS के "ऑल इंडिया GS मेन्स टेस्ट सीरीज़ और मेंटरिंग प्रोग्राम" से जुड़कर प्रभावशाली उत्तर लेखन की कला एवं रणनीति में महारत हासिल कीजिए। इस प्रोग्राम में शामिल हैं:

- उत्तर लेखन पर 'मास्टर क्लासेज'
- विस्तृत मूल्यांकन
- व्यक्तिगत मेंटरिंग
- फ्लेक्सिबल टेस्ट शेड्यूल
- व्यापक फीडबैक
- पोस्ट–टेस्ट डिस्कशन

यह हमेशा ध्यान रखिए कि **सिविल सेवा मुख्य परीक्षा UPSC CSE** की यात्रा का एक चरण मात्र नहीं है, बल्कि यह सिविल सेवाओं में प्रतिष्ठित पद तक पहुंचने का एक डायरेक्ट गेटवे है। इस प्रकार, यह परीक्षा आपकी आकांक्षाओं को वास्तविकता में बदल देता है।

"ऑल इंडिया GS मेन्स टेस्ट सीरीज़ और मेंटरिंग प्रोग्राम" के लिए रजिस्टर करने और ब्रोशर डाउनलोड करने हेतु QR कोड को स्कैन कीजिए।

टॉपर्स के एप्रोच और तैयारी की रणनीतियों को जानने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

अहमदाबाद | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची | सीकर

2. भारत से जुड़े और/ या भारत के हितों को प्रभावित करने वाले क्षेत्रीय एवं वैश्विक समूह और समझौते (Regional, and Global Groupings and Agreements Involving India and/or Affecting India's Interest)

2.1. भारत और G20 (India and G20)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारत ने पहली बार G20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता की। इस सम्मेलन का आयोजन नई दिल्ली में **"वसुधैव कुटुंबकम्" अथवा "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य"** की थीम के साथ किया गया।

G20

G-20 के बारे में

यह **अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग** को बढ़ावा देने वाला एक प्रमुख मंच है। यह वैश्विक अर्थव्यवस्था के समक्ष उत्पन्न होने वाले सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करने के लिए नियमित रूप से बैठक करता है।

G-20 की उत्पत्ति

इसका गठन **1999 में एशियाई वित्तीय संकट** के बाद किया गया था। इसका उद्देश्य **वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों के लिए वैश्विक स्तर के आर्थिक एवं वित्तीय मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक मंच** प्रदान करना था।

उद्देश्यः

यह सभी **प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर वैश्विक व्यवस्था और गवर्नेंस को आकार देने एवं मजबूत करने** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

कार्यः

- **G-20 शिखर सम्मेलन** का आयोजन **प्रतिवर्ष** होता है। इसकी **अध्यक्षता क्रमिक रूप से बदलती रहती है।** सम्मेलन का नेतृत्व तत्कालीन अध्यक्ष द्वारा किया जाता है।
- **ट्रोइका** अर्थात् भूतपूर्व, वर्तमान और आगामी अध्यक्ष देश - G20 प्रेसीडेंसी में सहायक की भूमिका निभाते हैं।
  - वर्तमान में, ट्रोइका में **इंडोनेशिया, भारत और ब्राजील** शामिल हैं।
- G20 में दो समानांतर ट्रैक शामिल हैं: **फाइनेंस ट्रैक और शेरपा ट्रैक।**
- इसका कोई **स्थायी सचिवालय या स्टाफ नहीं** है।

प्रतिनिधित्व

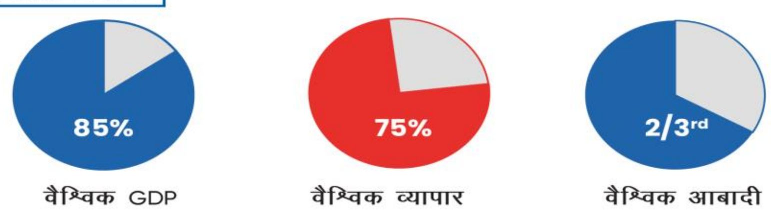

*ये आंकड़े अफ्रीकी संघ को G20 के सदस्य के रूप में शामिल किए जाने से पहले के हैं।

G-20 की उपलब्धियां

- **इसने कई वित्तीय संकटों से संबंधित मुद्दों का समाधान किया है,** जैसे– वैश्विक वित्तीय संकट (2008–09), यूरो जोन संकट (2010) आदि।
- कोविड–19 महामारी से निपटने के लिए **10 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का पैकेज।**
- 2018 में यू.एस.ए.–चीन व्यापार समझौता
- निम्न आय वाले देशों के लाभ के लिए **कर संबंधी सुधारों को आगे बढ़ाने में अग्रणी भूमिका।**

G20 का महत्त्व

- **वैश्विक वित्तीय स्थिरता का समर्थन करना:** यह समूह वित्तीय विनियमन, आर्थिक संकट की रोकथाम और प्रबंधन के जरिए वैश्विक वित्तीय स्थिरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **वैश्विक विकास के समक्ष विद्यमान चुनौतियों का समाधान करना:** इस समूह ने गरीबी उन्मूलन, अवसंरचना हेतु वित्त-पोषण और सतत विकास सहित कई विकासात्मक चुनौतियों का समाधान करने का प्रयास किया है।
- **मानव संसाधन विकास एवं रोजगार:** 2014 में आयोजित ब्रिस्बेन शिखर सम्मेलन में G20 के नेताओं ने 2025 तक श्रम बल भागीदारी में लैंगिक अंतराल को 2012 की तुलना में 25 प्रतिशत तक कम करने के लिए प्रतिबद्धता प्रकट की थी।
- **द्विपक्षीय संबंधों को बेहतर बनाना:** जैसे, भारत-अमेरिका, भारत-बांग्लादेश, आदि।

भारत के लिए G20 की अध्यक्षता का महत्त्व

- **नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन:** भारत को **चर्चाओं के विषय को तय करने, मुद्दों पर आम सहमति बनाने, विकास संबंधी और भू-राजनीतिक समस्याओं के समाधान की पेशकश** करने आदि के माध्यम से अपनी नेतृत्वकारी भूमिका साबित करने का अवसर मिला, उदाहरण के लिए- ग्लोबल बायोफ्यूल अलायन्स (GBA)।
- **ग्लोबल साउथ की अभिव्यक्ति:** G20 की अध्यक्षता के जरिए भारत ग्लोबल साउथ की प्राथमिकताओं को बड़े वैश्विक मंच पर रखने और ग्लोबल साउथ की अभिव्यक्ति बनने के रूप में अपनी साख को मजबूत करने में सफल रहा है।
    - उदाहरण के लिए- भारत की पहल पर ही **अफ्रीकी संघ को G20 का स्थायी सदस्य** बनाया गया था।
- **आर्थिक अवसर:** G20 की अध्यक्षता भारतीय व्यवसायों के वैश्विक स्तर पर विस्तार के लिए व्यापार और निवेश के अधिक अवसर प्रदान कर रही है, उदाहरण के लिए, भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC)।
- **भारत के प्रभाव का विस्तार:** शिखर सम्मेलन की मेजबानी करते हुए भारत प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपनी समकालीन प्रगति, अपनी धरोहर, संस्कृति तथा परम्पराओं का प्रदर्शन करने में सफल रहा है।
- **देशों के बीच आपसी विश्वास में वृद्धि:** भारत की उदारवादी छवि ने देशों के बीच आम सहमति बनाने तथा पूर्व-पश्चिम ध्रुवीकरण और उत्तर-दक्षिण विभाजन को कम करने में मदद की है। उदाहरण के लिए- यूक्रेन मुद्दे पर आम सहमति।
- **अपने हितों को ध्यान में रख वैश्विक एजेंडा बनाना और विश्व व्यवस्था को आकार देना:** भारत, G20 की अध्यक्षता का उपयोग अपनी प्राथमिकताओं के अनुसार वैश्विक एजेंडे को नया आकार देने तथा अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपने हितों को बढ़ावा देने के लिए कर रहा है।

G20 के समक्ष मौजूद चुनौतियां

- **सदस्य देशों के अलग-अलग हित और प्राथमिकताएं।**
- **प्रभावी शक्ति का अभाव:** गौरतलब है कि G20 संस्था और इसके समझौते कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं हैं।
- **भू-राजनीतिक तनाव:** G20 के कई सदस्य देशों के बीच भू-राजनीतिक तनाव हैं, जो सहयोग की भावना को कमजोर करते हैं। उदाहरण के लिए, रूस-यूक्रेन युद्ध; अमेरिका-चीन तनाव।
- **वैश्विक चुनौतियों के प्रति अपर्याप्त प्रतिक्रिया:** G20 समूह ने मौजूदा दौर की प्रमुख वैश्विक चुनौतियों (जलवायु परिवर्तन, असमानता आदि) को कम करने की दिशा में कोई कार्यवाही नहीं की है। इसके कारण इसकी आलोचना की जाती रही है।
- **सीमित जवाबदेही और पारदर्शिता:** इस समूह की अधिकतर कार्यवाहियां गोपनीय होती हैं। इस वजह से इन कार्यवाहियों की सार्वजनिक जांच अधिक नहीं हो पाती है और जवाबदेही भी सीमित रहती है। G20 का कोई औपचारिक चार्टर भी नहीं है।
- **बढ़ता संरक्षणवाद:** विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच संरक्षणवाद और व्यापार संबंधी तनाव की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

आगे की राह

- **समावेशिता:** इस समूह को अपनी पहुंच का विस्तार गैर-सदस्यीय देशों और गैर-सरकारी अभिकर्ताओं तक भी करना चाहिए। साथ ही, उनकी चिंताओं को मंच पर उठाते हुए उन पर विचार भी करना चाहिए।
- **आंतरिक संघर्षों से बचना:** सामूहिक कार्रवाई और सामूहिक समस्या-समाधान जैसी कार्यविधियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे समाधान पारंपरिक रूप से समान विचारधारा वाले देशों के समूहों तक ही सीमित नहीं रहेगा।

© Vision IAS

- **प्रभावी कार्यान्वयन:** शिखर सम्मेलन में शामिल हुए नेताओं को अपनाए गए संकल्पों का तेजी से कार्यान्वयन करने के लिए इस समूह की भूमिका को मजबूत करना चाहिए।
- **निरंतरता बनाए रखना:** सामूहिक कार्रवाई को निरंतर रूप से बढ़ावा देने की जरूरत है। साथ ही, अलग-अलग देशों की अध्यक्षता में आयोजित हुए शिखर सम्मेलनों में उठाए गए मुद्दों पर चर्चाओं को जारी रखा जाना चाहिए।

2.1.1. नई दिल्ली घोषणा-पत्र (New Delhi Declaration)

नई दिल्ली घोषणा-पत्र के मुख्य बिंदुओं पर एक नज़र

थीम (विषय)	विवरण
सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) पर प्रगति में तेजी लाना	• इस घोषणा-पत्र में **विकास के लिए डेटा (D4D)[10] के उपयोग** पर G20 सिद्धांतों का समर्थन किया गया। • **वन-हेल्थ एप्रोच** अपनाने पर बल दिया गया।
मजबूत, संधारणीय, संतुलित और समावेशी विकास	• **G20 शिखर सम्मेलन, 2023 में वित्तीय समावेशन कार्य योजना (FIAP)[11]** पर सहमति व्यक्त की गई। • **वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (GVCs)[12] की मैपिंग हेतु G20 जेनेरिक फ्रेमवर्क** अपनाने पर सहमति बनी है।
महिला सशक्तीकरण	• **महिला सशक्तीकरण पर एक अलग कार्य समूह** बनाया जाएगा। यह समूह लैंगिक समानता, महिला सशक्तीकरण और महिलाओं के नेतृत्व को प्राथमिकता देने का काम करेगा।
21वीं सदी के लिए बहुपक्षीय संस्थान	• G20 में पहली बार **UNGA 75/1** पर समझौता संपन्न हुआ। संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) 75/1 **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में सुधार** करने से संबंधित है। • **बहुपक्षीय विकास बैंक पूंजी पर्याप्तता फ्रेमवर्क[13]** पर G20 की स्वतंत्र समीक्षा की सिफारिशों को लागू करने के लिए रोडमैप तैयार किया गया है।
प्रौद्योगिकी रूपांतरण और डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर (DPI)	• भारत एक **"ग्लोबल डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर रिपोजिटरी (GDPIR)"** बनाने और उसके रखरखाव की योजना बना रहा है। • **क्रिप्टो-परिसंपत्तियों** के लिए समन्वित व व्यापक तथा एक विनियामकीय फ्रेमवर्क का समर्थन करने हेतु एक **संयुक्त रोडमैप** विकसित किया जाएगा।
अंतर्राष्ट्रीय कराधान	• सदस्य देशों ने **'द्वि-स्तंभ' (Twin pillars) आधारित अंतर्राष्ट्रीय पैकेज पर** प्रतिबद्धता की पुष्टि की है। इनमें से एक स्तंभ में बाजार अर्थव्यवस्थाओं को अधिक कर अधिकार सौंपने के लिए नए गठजोड़ बनाने एवं लाभ हस्तांतरण नियमों के विकास से संबंधित है। दूसरा स्तंभ, वैश्विक न्यूनतम कर नियमों के विकास से संबंधित है।
सतत भविष्य के लिए हरित विकास समझौता	• सदस्य देशों ने **2030 तक नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता को तीन गुना** करने के प्रयासों को बढ़ावा देने पर सहमति प्रकट की है। • घोषणा-पत्र में विकासशील देशों को अपने राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदानों (NDCs)[14] को लागू करने के लिए **2030 से पहले लगभग 5.8-5.9 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर** के वित्त-पोषण की आवश्यकता का उल्लेख किया गया है। • **रिसोर्स एफिशिएंसी सर्कुलर इकोनॉमी इंडस्ट्री कोएलिशन (RECEIC), ट्रैवल फॉर लाइफ** जैसी पहलें शुरू करने की बात कही गई है।
ग्रह, लोगों, शांति और समृद्धि के लिए (For Planet, People, Peace and Prosperity)	• **यूक्रेन मुद्दे पर आम सहमति:** सभी सदस्य देश संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुरूप क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के सिद्धांतों को बनाए रखने पर सहमत हुए। • **रूस-यूक्रेन युद्ध के वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों** पर चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त, उन रचनात्मक पहलों का भी स्वागत किया गया, जो **यूक्रेन में व्यापक, न्यायसंगत और स्थायी शांति का समर्थन करती हैं।**

10 Data for Development

11 Financial Inclusion Action Plan

12 Global Value Chains

13 Capital Adequacy Framework

14 Nationally Determined Contributions

थीमेटिक रोडमैप और सिद्धांतों को बढ़ावा देना	• सतत और लचीली **ब्लू इकोनॉमी/ महासागर आधारित अर्थव्यवस्था पर 'चेन्नई उच्च-स्तरीय सिद्धांत'** दस्तावेज अपनाया गया। • **"G20 ग्लोबल लैंड इनिशिएटिव"** को मजबूती प्रदान करने के लिए **गांधीनगर इम्प्लीमेंटेशन रोडमैप (GIR) और गांधीनगर सूचना मंच (GIP)** को अपनाया गया है। ○ "G20 ग्लोबल लैंड इनिशिएटिव" का लक्ष्य भूमि क्षरण को कम करना, रोकना और पूर्व स्थिति को बहाल करना है। साथ ही, **2040** तक भू-क्षरण को **50 प्रतिशत** तक कम करना है।

2.1.2. भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (India-Middle East- Europe Economic Corridor: IMEC)

सुर्ख़ियों में क्यों?

G20 शिखर सम्मेलन में भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (IMEC) की स्थापना के लिए एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किया गया। इस MoU पर **भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, सऊदी अरब, यूरोपीय संघ, संयुक्त अरब अमीरात, फ्रांस, जर्मनी और इटली** ने हस्ताक्षर किए हैं।

अन्य संबंधित तथ्य

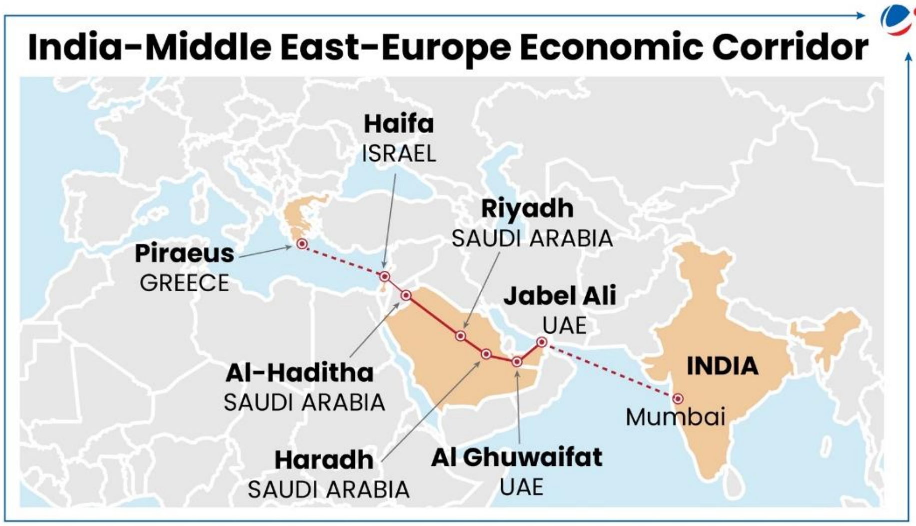

- MEC में **रेलमार्ग, जहाज-रेल पारगमन नेटवर्क (सड़क और समुद्र) तथा सड़क परिवहन मार्ग (व नेटवर्क)** शामिल होंगे। **इसमें दो गलियारे शामिल हैं:**
  - **पूर्वी गलियारा:** यह **भारत को अरब की खाड़ी** से जोड़ेगा।
  - **उत्तरी गलियारा:** यह **अरब की खाड़ी को यूरोप** से जोड़ेगा।
- **उद्देश्य:** एक विश्वसनीय व लागत प्रभावी **सीमा-पार जहाज-रेल पारगमन नेटवर्क** का निर्माण करना। यह **भारत, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, जॉर्डन, इज़रायल और यूरोप** के बीच वस्तुओं एवं सेवाओं के पारगमन व्यापार को सक्षम बनाएगा।
  - रेल लाइन्स बिछाने के अलावा, इस परियोजना के भागीदारों के अन्य उद्देश्य हैं- **विद्युत् और डिजिटल कनेक्टिविटी के लिए केबल बिछाना तथा स्वच्छ हाइड्रोजन के निर्यात के लिए पाइपलाइन्स बिछाना।**
- यह परियोजना **वैश्विक अवसंरचना और निवेश के लिए साझेदारी (PGII)** का हिस्सा है।

IMEC का महत्त्व

- **वैश्विक व्यवस्था का झुकाव यूरेशिया की ओर करने में महत्वपूर्ण भूमिका:** यह अधिक संतुलित और परस्पर संबद्ध यूरेशियाई व्यवस्था को बढ़ावा देने में संयुक्त राज्य अमेरिका एवं यूरोप जैसे विकसित क्षेत्रों तथा भारत, सऊदी अरब व संयुक्त अरब अमीरात जैसी उभरती शक्तियों की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- **व्यापार सुविधा और पहुंच:** यह गलियारा एकीकृत व्यापार मार्ग का निर्माण करेगा, जिससे निम्नलिखित लाभ मिलेंगे:
  - देशों के बीच व्यापार लागत में कमी आएगी,
  - बाजार पहुंच को बढ़ावा मिलेगा,
  - निवेश के अवसरों में वृद्धि होगी, आदि।
- **क्षेत्रीय कनेक्टिविटी में वृद्धि:** यह बेहतर परिवहन अवसंरचना, सीमा-पार सहयोग, ऊर्जा आपूर्ति और लॉजिस्टिक क्षमताएं बढ़ाएगा। इससे क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को बढ़ावा मिलेगा।
- **आर्थिक एकीकरण:** यह भारत, पश्चिम एशिया और यूरोप के बीच आर्थिक एकीकरण में प्रभावी भूमिका निभाएगा।

- **राजनयिक सहयोग और भू-राजनीतिक स्थिरता:** इस गलियारे के कारण विकसित होने वाले घनिष्ठ आर्थिक संबंधों से सुरक्षा, आतंकवाद से निपटने और क्षेत्रीय स्थिरता के मामले में सहयोग को बढ़ावा मिलेगा।
- **सुरक्षित क्षेत्रीय आपूर्ति श्रृंखला की स्थापना:** यह वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को अधिक मजबूत बनाएगा।
- **सतत विकास:** IMEC के निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं:
    - स्वच्छ ऊर्जा के विकास और निर्यात को बढ़ावा देना,
    - ऊर्जा ग्रिड एवं दूरसंचार का विस्तार करना,
    - स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के अंगीकरण को बढ़ावा देना, तथा
    - सभी के लिए इंटरनेट तक पहुंच में सुधार करना।

भारत के लिए IMEC का महत्त्व

- इससे भारत और यूरोप के बीच व्यापार में **लगभग 40 फीसदी तक की वृद्धि होने** की संभावना है।
- इससे लॉजिस्टिक लागत में कमी आएगी। साथ ही, **भारत और अन्य देशों के बीच वस्तुओं व सेवाओं के व्यापार को बढ़ावा** भी मिलेगा।
- इससे भारत की **'एक्ट वेस्ट नीति'** को मजबूती मिलेगी।

IMEC बनाम चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)

- यदि उद्देश्यों की दृष्टि से देखें तो दोनों **अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं** के समान उद्देश्य हैं।
- आकार की दृष्टि से, चीन का न्यू सिल्क रूट **अपेक्षाकृत बड़ा** है।
    - BRI को 2013 में आरंभ किया गया था। चीन ने 150 से अधिक देशों और 30 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ BRI सहयोग दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए हैं। साथ ही, इसके तहत 3,000 से अधिक परियोजनाएं बनाई गई हैं।

BRI की तुलना में IMEC के अपेक्षित लाभ

मापदंड	IMEC	BRI
डिजाइन	यह परियोजना सभी भागीदारों देशों के साथ **सहयोगात्मक विचार-विमर्श** पर आधारित है।	इसे **केंद्रीकृत तरीके से (चीन द्वारा) डिजाइन** किया गया है।
लाभ	यह क्षेत्र के **सभी देशों के साझा लाभ** के लिए है।	यह मुख्य रूप से **चीन के हितों की पूर्ति** करती है।
रोजगार	यह पहल **स्थानीय आबादी के लिए रोजगार पैदा** करने पर बल देती है।	यह मुख्य रूप से **चीन की कंपनियों के लिए रोजगार पैदा** करती है।
ऋण व्यवस्था	**सर्वोत्तम अंतर्राष्ट्रीय ऋण पद्धतियों** का अनुसरण करने का प्रस्ताव किया गया है।	**भागीदार देशों को ऋण जाल में फंसाने** के कारण इस पहल की आलोचना की जाती रही है।

चुनौतियां और ध्यान देने वाले पहलू

- **परियोजना से जुड़े क्षेत्र की जटिल भू-राजनीति:** इस गलियारे का विस्तार कई देशों तक किया जाना प्रस्तावित है। इस तरह अलग-अलग राजनीतिक प्रणालियों और हितों वाले देशों को एक साथ जोड़ना बड़ी चुनौती है। इनमें से कई देशों के बीच पहले से ही तनावग्रस्त संबंध हैं।
    - उदाहरण के लिए- सऊदी अरब और इजरायल के बीच संबंधों को लेकर अनिश्चितताएं मौजूद हैं। ये परियोजना पर सहयोग में बाधा उत्पन्न कर सकती हैं।
- **मौजूदा प्रतिद्वंद्विता:** चीन इस गलियारे का रणनीतिक रूप से प्रतिस्पर्धी देश है। ऐसे में, वह व्यापार और निवेश को अपने गलियारों की ओर मोड़ने की कोशिश कर सकता है। चीन के इस प्रयास से IMEC की प्रभावशीलता कम होने की आशंका है।
    - इसके अलावा, IMEC गलियारा एक वैकल्पिक भूमि मार्ग भी प्रदान करेगा। इससे व्यापार के लिए **स्वेज नहर का एक विकल्प उपलब्ध होने के कारण क्षेत्र में मिस्र का व्यापार प्रभुत्व प्रभावित** हो सकता है।
- **लॉजिस्टिक संबंधी चुनौतियां:** विविध भौगोलिक क्षेत्रों, विनियामकीय प्रक्रियाओं, परिवहन प्रोटोकॉल, वित्तीय तंत्र और ढांचागत क्षमताओं वाले कई देशों को जोड़ने वाला एक मल्टी मॉडल नेटवर्क स्थापित करना चुनौतीपूर्ण होगा।
- **सुरक्षा संबंधी चिंताएं:** यह क्षेत्र आतंकवाद, संघर्ष और राजनीतिक अस्थिरता से गुजर रहा है। साथ ही, सुरक्षा संबंधी कई अन्य खतरों का भी सामना करता रहा है।

- **मल्टी-मॉडल मार्गों के साथ समस्या:** IMEC में भूमि और समुद्री मार्ग, दोनों शामिल हैं। इसमें केवल भूमि आधारित मार्ग या केवल समुद्री मार्ग के विकास की तुलना में मल्टी-मोडल मार्ग के विकास की लागत बढ़ सकती है।
- **वित्तीय प्रतिबद्धताएं:** इसमें वित्तीय लागत के संदर्भ में प्रतिबद्धता की कमी है। इसे आने वाले महीनों में अंतिम रूप दिए जाने की उम्मीद है।

आगे की राह

- इस गलियारे के सभी भागीदारी देशों के बीच संभावित संघर्षों को कम करने के लिए **राजनयिक संवाद और एक एकीकृत विज़न स्थापित** किया जाना चाहिए।
- सीमा शुल्क प्रक्रियाओं जैसी विनियामकीय फ्रेमवर्क में सामंजस्य स्थापित करना चाहिए और वित्तीय कनेक्टिविटी बढ़ानी चाहिए।
- खुफिया जानकारी साझा करके **रक्षा और सुरक्षा पर क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत** करना चाहिए। साथ ही, सुरक्षा संबंधी खतरों से निपटने के लिए संयुक्त पहलें आरंभ की जानी चाहिए।
- सरकारों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और निजी क्षेत्रक की संस्थाओं सहित कई हितधारकों से निवेश आकर्षित करने के लिए **मजबूत वित्तीय ढांचा तैयार** करना चाहिए।

2.1.3. अफ्रीकी संघ: G20 का एक स्थायी सदस्य (African Union: A Permanent Member of the G20)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत की अध्यक्षता में आयोजित G20 सम्मेलन में अफ्रीकी संघ (AU) औपचारिक रूप से G20 के स्थायी सदस्य के रूप में समूह में शामिल हुआ। **यूरोपीय संघ के बाद, G20 का सदस्य बनने वाला अफ्रीकी संघ दूसरा क्षेत्रीय संगठन** है।

अफ्रीकी संघ को G20 में शामिल करने का महत्त्व

- **G20 के लिए महत्त्व**
  - **अफ्रीका महाद्वीप की क्षमताओं का उपयोग करना:** अफ्रीका में **विश्व के 60% नवीकरणीय ऊर्जा संसाधन** मौजूद हैं। साथ ही, नवीकरणीय और निम्न-कार्बन प्रौद्योगिकियों के लिए महत्वपूर्ण **30% से अधिक खनिज संसाधन** विद्यमान हैं।
  - **G20 की विश्वसनीयता को बढ़ावा देना::** AU का G20 में शामिल किया जाना समावेशी और न्यायसंगत समाधान तैयार करने के लिए G20 की क्षमता को बढ़ाता है।
  - **G20 की छवि का पुनर्निर्माण:** इस कदम ने G20 को अधिक प्रतिनिधित्व वाला संगठन बनाया है। साथ ही यह G20 को एक निष्पक्ष, अधिक समृद्ध और संधारणीय विश्व के निर्माण का साधन बनाता है।
- **भारत के लिए महत्त्व**
  - **ग्लोबल साउथ की अभिव्यक्ति बनना:** G20 में AU को शामिल करने के लिए भारत का सफल प्रयास **ग्लोबल साउथ की अभिव्यक्ति के रूप** में इसकी छवि को मजबूत करता है।
  - **भारत की आकांक्षाओं के अनुरूप:** यह कदम बहुध्रुवीय विश्व तथा अधिक न्यायसंगत व बहु-प्रतिनिधि वाली अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को बढ़ावा देने की भारत की अपनी वैश्विक आकांक्षाओं के अनुरूप है।
  - **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में स्थायी सदस्यता:** भारत UNSC में अपनी स्थायी सदस्यता के लिए अफ्रीकी संघ का समर्थन चाहता है। G20 में अफ्रीकी संघ को शामिल करने से इस दिशा में भारत को मदद मिल सकती है।
  - **संसाधनों का विविधीकरण:** अफ्रीका एक संसाधन-समृद्ध महाद्वीप है। यहां कच्चा तेल, गैस, दालें व लेंटिल, चमड़ा, सोना तथा अन्य धातुएं बहुतायत में मौजूद हैं।
- **अफ्रीका के लिए महत्त्व**
  - **समावेशिता:** इससे वैश्विक कर सुधार व ऋण राहत जैसे मुद्दों और जलवायु परिवर्तन से संबंधित चर्चाओं पर अफ्रीकी देशों को अधिक नेतृत्व प्राप्त होगा।
  - **असंतुलन को दूर करना:** अफ्रीका के आर्थिक भविष्य पर होने वाली चर्चाओं के परिणाम महज इसे उपलब्ध करा दिए जाते हैं, जबकि इन चर्चाओं में इसकी कोई सक्रिय भागीदारी नहीं होती है। हालांकि, अब इसमें परिवर्तन आएगा।
  - **अफ्रीका की संवृद्धि का संकेत:** G20 में शामिल होना अफ्रीका महाद्वीप की वैश्विक मंचों पर महत्वपूर्ण भागीदारी को प्रकट करता है। गौरतलब है कि अब तक अफ्रीका को गृहयुद्ध, आतंकवाद, भुखमरी और आपदा के पीड़ित क्षेत्र के रूप में ही दर्शाया जाता रहा है।

अफ्रीकी महाद्वीप के साथ एकीकरण को बढ़ावा देने में भारत के प्रयास

- **पैन अफ्रीकन ई–नेटवर्क प्रोजेक्ट (PANEP):** यह एक सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) परियोजना है। यह उपग्रह और फाइबर–ऑप्टिक नेटवर्क के जरिए अफ्रीकी संघ के सदस्य देशों को एक–दूसरे से जोड़ने के साथ–साथ उन्हें भारत से भी जोड़ेगी।
- **भारत–अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन:** इसका उद्देश्य भारत और अफ्रीका के बीच व्यापक सहयोग को बढ़ावा देना है।
- **भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम:** यह अफ्रीकी संघ में भारत के विदेश मंत्रालय द्वारा संचालित अग्रणी क्षमता–निर्माण मंच है।
- **एशिया–अफ्रीका विकास गलियारा:** इसका उद्देश्य भारत व जापान के सहयोग से अफ्रीका में अवसंरचना और डिजिटल कनेक्टिविटी विकसित करना है।

अफ्रीकी संघ (AU) के बारे में

- यह एक महाद्वीपीय संगठन है। अफ्रीकी महाद्वीप के 55 देश इस संघ के सदस्य हैं।
- **उत्पत्ति:** इसे 2002 में ऑर्गेनाइजेशन ऑफ अफ्रीकन यूनियन (OAU, 1963-1999) की जगह स्थापित किया गया था।
- **उद्देश्य:** इसका उद्देश्य नागरिक समावेशन और अफ्रीकी देशों के बीच सहयोग व एकीकरण द्वारा अफ्रीका की आर्थिक संवृद्धि एवं विकास को बढ़ावा देना है।
- **अन्य महत्वपूर्ण जानकारी:** इस समूह के सदस्य देशों की कुल आबादी 1.4 अरब और GDP 3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर है।

2.1.4. ग्लोबल बायोफ्यूल अलायन्स (Global Biofuel Alliance: GBA)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत के प्रधान मंत्री ने **सिंगापुर, बांग्लादेश, इटली, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राजील, अर्जेंटीना, मॉरीशस और संयुक्त अरब अमीरात (UAE)** के नेताओं के साथ मिलकर नई दिल्ली में G-20 शिखर सम्मेलन के दौरान 2023 में **'ग्लोबल बायोफ्यूल अलायन्स'** की शुरुआत की।

अन्य संबंधित तथ्य

- GBA जैव ईंधन पर **ज्ञान के केंद्रीय भंडार और एक विशेषज्ञ केंद्र** के रूप में कार्य करेगा।
- **उद्देश्य:** जैव ईंधन क्षेत्रक में प्रगति और इसे व्यापक रूप से अपनाने के लिए वैश्विक सहयोग को प्रोत्साहन देना।
- **GBA के वर्तमान सदस्यों में शामिल हैं-** 24 देश और 12 अंतर्राष्ट्रीय संगठन।

GBA का महत्त्व

- **जैव ईंधन के लिए एक बाजार विकसित करना:** GBA पर्यावरण अनुकूल ईंधन की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करेगा। इसके अलावा यह उद्योगों, देशों एवं प्रौद्योगिकी प्रदाताओं को जोड़ने वाले एक **'वर्चुअल मार्केटप्लेस'** का निर्माण करेगा। इससे मांग और आपूर्ति की मैपिंग की जा सकेगी।
- **मजबूत मानक निर्धारण:** अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त मानकों को लागू किया जाएगा।
- **जलवायु संबंधी प्रयासों में योगदान:** अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA) का अनुमान है कि वैश्विक संधारणीय जैव ईंधन उत्पादन को 2030 तक तीन गुना करने की आवश्यकता होगी। इससे विश्व की ऊर्जा प्रणाली को 2050 तक नेट जीरो उत्सर्जन के लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में ले जाया जा सकेगा।
- **परिवहन क्षेत्रक को विकार्बनीकृत (Decarbonize) करना:** गौरतलब है कि ग्रीनहाउस गैस का लगभग एक-चौथाई उत्सर्जन परिवहन क्षेत्रक से होता है। जैव ईंधन से इस क्षेत्रक को विकार्बनीकृत करने में मदद मिलेगी।

भारत के लिए GBA के लाभ

- **जैव ईंधन से संबंधित भारत की पहलों,** जैसे– पी.एम.–जीवन (JIVAN) योजना, सतत (SATAT) और गोबरधन योजना को बढ़ावा मिलेगा।
- यह **किसानों की आय बढ़ाने और नई नौकरियां** पैदा करने में सहायक होगा।
- इससे **तेल पर निर्भरता कम करने में मदद** मिलेगी (भारत अपने कच्चे तेल की आवश्यकता का **80% से अधिक** आयात करता है)।
- यह **राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक** होगा (जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति के तहत सरकार ने **2025–26 तक पेट्रोल में 20% एथेनॉल मिश्रण का लक्ष्य** रखा है)।
- इससे **भारतीय उद्योगों के लिए अतिरिक्त अवसर** मिलेंगे (वैश्विक जैव ईंधन मांग को पूरा करना तथा प्रौद्योगिकी और उपकरणों का निर्यात करना)।

GBA के समक्ष चुनौतियां

- **स्पष्ट परिभाषा का नहीं होना:** संधारणीय ईंधन क्या हैं, इस पर सर्वसम्मति का अभाव है। इसके अतिरिक्त, कई देश तो जैव ईंधन को संधारणीय मानते भी नहीं हैं।
- **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण:** कई विकसित देश अग्रणी प्रौद्योगिकी तकनीक को साझा नहीं करते हैं। वे इसे विकासशील देशों के साथ साझा करने में अनिच्छा प्रकट करते हैं। इससे भी समस्या उत्पन्न हो सकती है।
- **भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा:** ऐसी आशंका है कि तेल उत्पादक देश GBA के पक्ष में न हों, क्योंकि इससे ऊर्जा संसाधन पर उनके वर्चस्व में कमी आएगी।
- **धीमी वृद्धि:** विशेष रूप से सौर एवं पवन ऊर्जा जैसे अन्य नवीकरणीय संसाधनों की तुलना में जैव ईंधन को अपनाने में पर्याप्त तेजी नहीं देखी जा रही है।
- **उत्पादन संबंधी चुनौतियां:** गुणवत्तापूर्ण कच्चे माल (फीडस्टॉक) की सीमित उपलब्धता, जैव ईंधन उत्पादन में खाद्यान्न के इस्तेमाल से खाद्य उत्पादन और कीमतों पर प्रभाव, फसल पैटर्न में बदलाव, लागत प्रभावी प्रौद्योगिकियों की कमी आदि चुनौतियां जैव ईंधन के संधारणीय उत्पादन में बाधा बन सकती हैं।

निष्कर्ष

GBA गठबंधन को संधारणीय दीर्घकालिक योजनाएं बनानी होंगी, पर्याप्त निवेश करने होंगे, नवाचार को बढ़ावा देना होगा, आपूर्ति श्रृंखला से जुड़ी समस्याओं का समाधान करना होगा, किसी भी विवाद का त्वरित रूप से निपटान करना होगा तथा सहयोग को प्रोत्साहित करना होगा।

2.2. ब्रिक्स का विस्तार (Expansion of BRICS)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, पांच नए सदस्य अर्थात् **मिस्र, इथियोपिया, ईरान, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात पूर्णकालिक स्थायी सदस्यों के रूप में ब्रिक्स में शामिल** हुए हैं।

ब्रिक्स के विस्तार का महत्त्व

- **बहुध्रुवीय विश्व को आकार देने में महत्त्व:** ब्रिक्स एक बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर एक सूक्ष्म बदलाव की पेशकश करता है, जहां मध्यवर्ती शक्तियां तेजी से केंद्रीय भूमिका निभा रही हैं।
- **नए क्षेत्रों में ब्रिक्स समूह के फुटप्रिंट का विस्तार:** यह विस्तार मध्य-पूर्व, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका सहित प्रमुख क्षेत्रों में ब्रिक्स की उपस्थिति को मजबूत करता है। इससे ब्रिक्स की वैश्विक पहुंच में और वृद्धि हुई है।

 © Vision IAS

- **वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रभाव बढ़ना:** विस्तार के बाद दुनिया की 40% आबादी वाले ब्रिक्स देशों ने क्रय शक्ति समता के मामले में G7 देशों को पीछे छोड़ दिया है।
  - अफ्रीका महाद्वीप के **मिस्र और इथियोपिया** के ब्रिक्स में शामिल होने से वैश्विक आर्थिक समावेशन को बढ़ावा मिलेगा।
- **वि-डॉलरीकरण को बढ़ावा:** ब्रिक्स सदस्य वि-डॉलरीकरण की वकालत कर सकते हैं और स्थानीय मुद्राओं के उपयोग को सुविधाजनक बना सकते हैं।
  - **मिस्र ने चीन, भारत और रूस** से आयात करने के लिए इन देशों की संबंधित मुद्राओं में भुगतान करने के संदर्भ में अपना मत साझा किया है।

ब्रिक्स (BRICS)

उत्पत्ति

- इस समूह की अवधारणा 2000 के दशक की शुरुआत में गोल्डमैन सैक्स पेपर में रखी गई थी। इसमें ऐसे देशों को शामिल किया गया था, जिनकी अर्थव्यवस्था **सात सबसे विकसित अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ने की उम्मीद थी अर्थात् जो G–7 में शामिल नहीं थे।**
- **BRIC** देशों ने 2006 में अपनी वार्ताएं शुरू की। वर्ष 2010 में **साउथ अफ्रीका** के शामिल होने से BRIC समूह **BRICS** बन गया।

प्रतिनिधित्व

ब्रिक्स द्वारा शुरू की गई महत्वपूर्ण पहलें/प्रमुख उपलब्धियां

ब्रिक्स देशों ने 2014 में **न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB)** को संस्थागत रूप दिया।	सदस्यों को अल्पकालिक तरलता सहायता प्रदान करने के लिए ब्रिक्स ने **आकस्मिक आरक्षित व्यवस्था (CRA)** की शुरुआत की है।	संक्रामक रोगों की रोकथाम और नियंत्रण हेतु टीकों के लिए **ब्रिक्स अनुसंधान एवं विकास केंद्र** की स्थापना की गई है।	**ब्रिक्स निवेश और व्यापार** में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 2022 में ब्रिक्स देशों के बीच कुल 162 अरब डॉलर का व्यापार हुआ।

ब्रिक्स के विस्तार से संबंधित मुद्दे

- **विकास के विविध स्तर:** ब्रिक्स समूह में शामिल किए गए देशों के **आर्थिक विकास का स्तर काफी अलग-अलग है**। अतः ब्रिक्स का विस्तार उनके बीच सहयोग को और सीमित कर सकता है।
- **भू-राजनीतिक संवेदनशीलता:** भू-राजनीतिक रूप से, कई देश ब्रिक्स की विस्तार नीति को चीन की रणनीति के रूप में देखते हैं, जहां वह समान विचारधारा वाले देशों को साथ लेकर अपने प्रभाव क्षेत्र को बढ़ाने का प्रयास कर रहा है।
- **सदस्यों के बीच व्यापक आंतरिक मतभेद:** यह समूह अलग-अलग सामाजिक संरचनाओं, संसाधनों और विकासात्मक पथों वाले लोकतांत्रिक एवं सत्तावादी शासनों का मिश्रण है।
- **वैश्विक संस्थाओं में सुधारों के प्रति दृष्टिकोण:** संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) जैसी संस्थाओं में संस्थागत सुधारों के प्रति दृष्टिकोण अधिक घोषणात्मक प्रकृति का बना हुआ है।

आगे की राह

- **स्थायी सचिवालय:** इसकी विस्तारित सदस्यता के साथ एक स्थायी सचिवालय की स्थापना की जानी चाहिए।
- **संरक्षणवाद के खिलाफ सामूहिक रुख:** ब्रिक्स का भविष्य व्यापार संबंधी संरक्षणवाद के खिलाफ ब्रिक्स देशों के सामूहिक रुख पर निर्भर करेगा। तात्पर्य यह है कि व्यापार संबंधी संरक्षणवाद के खिलाफ सामूहिक रूप से एकजुट होने, निवेश बढ़ाने और वैश्विक राजनीतिक एजेंडा साझा करने हेतु ब्रिक्स नेतृत्वकर्ता किस स्तर तक सहमत होंगे।

- **सामंजस्य को प्राथमिकता:** मौजूदा सदस्य देशों के बीच सामाजिक-आर्थिक सहयोग के द्वारा आपस में आर्थिक और सामाजिक सामंजस्य को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- **बॉटम अप दृष्टिकोण:** यह दृष्टिकोण अपनाने से निजी क्षेत्र की और नागरिक भागीदारी में वृद्धि हो सकती है। इसमें एकल ब्रिक्स वीजा, शोधकर्ताओं के बीच सहयोग बढ़ाना आदि को शामिल किया जा सकता है।
- **बहुपक्षीय प्रयासों को आगे बढ़ाना:** ब्रिक्स देशों को ग्लोबल साउथ के साथ अपने संबंधों को मजबूत बनाकर बहुपक्षीय प्रयासों को आगे बढ़ाना चाहिए। इन देशों में ध्रुवीकरण की बजाय एकता का वैश्विक संदेश दिया जाना चाहिए।
- **सहयोग के अन्य क्षेत्र:** उदाहरण के लिए ब्रिक्स स्पेस एक्सप्लोरेशन कंसोर्टियम का निर्माण; पारंपरिक चिकित्सा पर रिपॉजिटरी स्थापित करना जैसे उद्देश्यों का और अधिक विस्तार करना आदि।

भारत के लिए ब्रिक्स का महत्त्व

- **भारत इस मंच का उपयोग** वैश्विक मुद्दों पर विकासशील देशों की चिंताओं को उठाने और उनके अधिकारों की वकालत करने के लिए करता है। **उदाहरण के लिए- आतंकवाद और जलवायु परिवर्तन संबंधी मुद्दे।**
- ब्रिक्स भारत को द्विपक्षीय तनाव के समय भी वार्ता में शामिल होने और संभावित प्रतिद्वंद्विता का प्रबंधन करने के लिए **तटस्थ मंच** प्रदान करता है। जैसा कि भारत-चीन डोकलाम गतिरोध के समय देखा गया था।
- यह भारत को समतापूर्ण वैश्विक व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए UNSC और WTO जैसे संस्थानों में **सुधारों पर जोर देने** की अनुमति देता है।
- यह NDB जैसी पहलों के साथ अधिक **समावेशी वैश्विक वित्तीय प्रणाली** के निर्माण में योगदान देता है।
- यह भारत को आयात स्रोतों के विविधीकरण और व्यापार के लिए बेहतर समझौतों का अवसर प्राप्त होता है। इससे इससे भारत को आयात पर अपनी अत्यधिक निर्भरता को कम करने में मदद मिल सकती है।
- गरीबी और भुखमरी को कम करने से संबंधित SDGs को हासिल करने में ब्रिक्स सहयोग (जैसे- कृषि अनुसंधान मंच) भारत के लिए काफी मददगार हो सकता है।

2.3. भारत और हिंद-प्रशांत: एक नज़र में (India-Indo-Pacific at a Glance)

भारत और हिंद–प्रशांत

भारत के विदेश मंत्री ने **"हिंद–प्रशांत के बारे में भारत के विजन"** पर कहा कि "केवल जिनकी मानसिकता प्रभाव क्षेत्रों के इर्द–गिर्द ही सीमित है और जो वैश्विक विषयों के लोकतंत्रीकरण से असहज हैं, वे ही आज हिंद–प्रशांत पर विवाद करेंगे"।

वैश्विक व्यापार का 50% और तेल का 40% हिस्सा हिंद–प्रशांत क्षेत्र से गुजरता है।	**भारत का 90 प्रतिशत व्यापार** इस क्षेत्र से होता है। इसमें 80 प्रतिशत महत्वपूर्ण माल ढुलाई–कोयला, पेट्रोलियम और गैस, लौह अयस्क, उर्वरक आदि शामिल हैं।	**"हम हिंद–प्रशांत को एक ऐसा क्षेत्र मानते हैं जो अफ्रीका के पूर्वी तट से लेकर अमेरिका के पश्चिमी तट तक फैला हुआ है।"** • भारत के विदेश मंत्री

हिंद–प्रशांत के लिए भारत के विज़न के प्रमुख तत्व में शामिल हैं

- एक मुक्त, खुला व समावेशी क्षेत्र।
- हिंद प्रशांत के केंद्र में दक्षिण पूर्व एशिया और आसियान।
- क्षेत्र के लिए एक साझा नियम–आधारित व्यवस्था का समर्थन करता है और बल प्रयोग की बजाय संवाद को बढ़ावा देता है।

हिंद–प्रशांत क्षेत्र के लिए भारत की नीति

- **IOR में पारंपरिक भूमिकाओं**, जैसे– सुरक्षा प्रदाता, विकास संबंधी सहायता आदि को म**जबूत और संरक्षित करना।**
- **नौसैनिक रणनीतिः** सूचना प्रबंधन और विश्लेषण केंद्र **(IMAC)** जैसे संस्थानों के माध्यम से समुद्री डोमेन जागरूकता **(MDA)**।
- **पहलः** इंडो–पैसिफिक ओशन इनिशिएटिव, हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी, एशिया अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर आदि।
- **विदेश नीतिः विदेश मंत्रालय के तहत** अलग इंडो–पैसिफिक डिवीजन **(IPD)**, एक्ट ईस्ट पॉलिसी, सागर आदि का उपयोग।

हिंद–प्रशांत में भारत के हित

- इस क्षेत्र में **अपनी उपस्थिति का विस्तार करना।** विशेष रूप से अफ्रीका, मध्य पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया में।
- **निवल सुरक्षा प्रदाता के रूप में अपनी भूमिका बनाए रखना।**
- **चीन का मुकाबला।**

हिंद–प्रशांत को आगे बढ़ाने में चुनौतियां

- **सीमित नौसैनिक क्षमता और सैन्य ठिकानों की कमी।**
- **विभिन्न पहलों के विकास की धीमी गति।**
- **हिंद–प्रशांत की निश्चित सहमति** का अभाव।

निष्कर्ष

सामूहिक प्रयास एक ऐसे स्वतंत्र, ओपन और समावेशी हिंद–प्रशांत क्षेत्र को बरकरार रखने में योगदान देंगे।

2.3.1. इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क फॉर प्रॉस्पेरिटी (Indo-Pacific Economic Framework for Prosperity: IPEF)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क फॉर प्रॉस्पेरिटी (IPEF) की तीसरी मंत्रिस्तरीय बैठक अमेरिका के **सैन फ्रांसिस्को** में आयोजित की गई।

IPEF के बारे में

- **उत्पत्ति:** इसे मई 2022 में **टोक्यो** में लॉन्च किया गया था। इसे **संयुक्त राज्य अमेरिका और हिंद-प्रशांत क्षेत्र के अन्य भागीदार** देशों ने संयुक्त रूप से लॉन्च किया था।
- **उद्देश्य:** हिंद-प्रशांत क्षेत्र में संवृद्धि, शांति और समृद्धि को आगे बढ़ाने के लक्ष्य के साथ साझेदार देशों के बीच **आर्थिक जुड़ाव को मजबूत करना।**
- **सदस्य:** IPEF के **14 भागीदार** देश है। इनमें **भारत** भी शामिल है।
    - IPEF के भागीदार देशों की **वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 40% और वैश्विक वस्तु एवं सेवा व्यापार में 28% की हिस्सेदारी** है।
- **मॉड्यूल: इस फ्रेमवर्क के चार स्तंभ है।**
    - **IPEF के चार स्तंभ हैं:** (I) व्यापार; (II) आपूर्ति श्रृंखला; (III) स्वच्छ अर्थव्यवस्था और (IV) निष्पक्ष अर्थव्यवस्था। भारत IPEF के **तीन स्तंभों में तो शामिल** हो गया है, लेकिन **व्यापार स्तंभ से बाहर है।**
- **नेतृत्व प्रदाता एजेंसी: यू.एस. ट्रेड रिप्रेज़ेंटेटिव (USTR) व्यापार स्तंभ** के लिए नेतृत्व प्रदाता एजेंसी है, जबकि **वाणिज्य विभाग अन्य तीन स्तंभों** का नेतृत्व कर रहा है।
- **पारंपरिक व्यापार समझौते बनाम IPEF:**
    - पारंपरिक व्यापार समझौतों (RCEP)[15] या मुक्त व्यापार समझौतों (FTAs) के विपरीत, IPEF के तहत प्रशुल्क या बाजार पहुंच पर वार्ता नहीं की जाएगी।
    - FTA में हर विषय पर एक ही तंत्र के अधीन चर्चा की जाती है। इसके विपरीत, **IPEF के तहत वार्ताएं चार मॉड्यूल (स्तंभों) के अधीन एक-दूसरे से स्वतंत्र व अलग** होती हैं।
        - IPEF के अंतर्गत देशों को **एक मॉड्यूल के सभी घटकों पर सहमत होना** होता है, उन्हें **प्रत्येक मॉड्यूल में हिस्सा लेने की जरूरत नहीं** होती है।
    - **IPEF** केवल सदस्य देशों के बीच **विनियामकीय सामंजस्य** बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करता है।

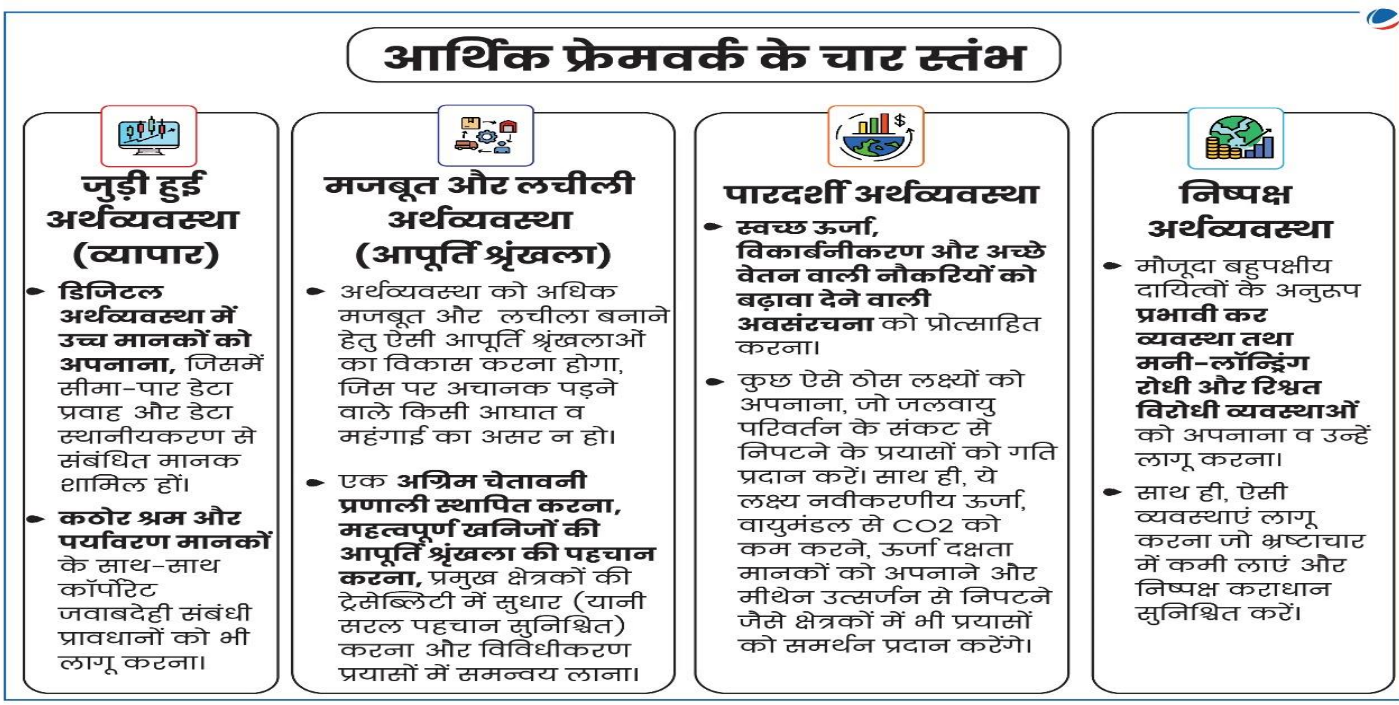

[15] Regional Comprehensive Economic Partnership/ क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी

IPEF का महत्त्व

- इससे **आर्थिक साझेदारी को मजबूत करने के लिए वाणिज्य के नए नियमों** को अपनाने में मदद मिलेगी।
- **एक मुक्त एवं खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र का निर्माण** किया जा सकेगा। इससे संधारणीय और समावेशी आर्थिक संवृद्धि सुनिश्चित होगी।
- यह **आपूर्ति श्रृंखला को अधिक मजबूत और लचीला बनाएगा,** जिससे उच्च लागत संबंधी बाधाओं से बचा जा सकेगा।
- ट्रांस-पैसिफिक पार्टनरशिप (TPP) से अमेरिका के बाहर निकलने के बाद, यह इस क्षेत्र में **अमेरिका के प्रभाव को पुनः स्थापित** करने में मदद करेगा।
- यह **हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन का विकल्प तैयार करने** में मदद करेगा।
- इसके चलते **वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं** से बेहतर तरीके से एकीकृत होने में भारत को मदद मिलेगी।

IPEF के समक्ष चुनौतियां: स्थायित्व पर चिंताएं, चीन को अलग करना मुश्किल है, पारस्परिकता पर चिंताएं, संवेदनशील क्षेत्रों में प्रवेश, बाध्यकारी प्रतिबद्धताओं का अभाव।

आगे की राह

- **IPEF की विश्वसनीयता को मजबूत करना:** IPEF को एक ऐसे विश्वसनीय विकल्प के रूप में विकसित करने का प्रयास करना चाहिए, जो क्षेत्र में आर्थिक गतिविधि और निवेश के लिए ठोस लाभ प्रदान कर सके।
- **भागीदारी को प्रोत्साहित करना:** IPEF में शामिल होने और इसे अधिक आकर्षक बनाने के लिए क्षेत्रीय FTAs (CPTPP और RCEP) पर पहले से ही हस्ताक्षर करने वाले देशों को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है।
- **बाध्यकारी नियम सुनिश्चित करना:** यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि वार्ता के नियम बाध्यकारी हों और सभी हितधारकों की चिंताओं पर विचार किया जाना चाहिए।
- **IPEF की सदस्यता का विस्तार करना:** IPEF वार्ताओं से जुड़ने के लिए क्षेत्र के अन्य देशों को आमंत्रित करने हेतु प्रक्रिया और मानदंड विकसित करने की जरूरत है।
- **चीन के प्रति संतुलित दृष्टिकोण:** चीन के प्रति एक व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। ऐसा इसलिए, क्योंकि खुले तौर पर चीन विरोधी रणनीति प्रतिकूल सिद्ध हो सकती है। इसके अलावा, हिंद-प्रशांत के कई IPEF सदस्य इस प्रकार की नीति का शायद समर्थन भी न करें।

अन्य संबंधित सुर्ख़ियां

- भारत **खनिज सुरक्षा भागीदारी (Mineral Security Partnership: MSP) का 14वां सदस्य** बन गया है।
- यह महत्वपूर्ण खनिजों की आपूर्ति श्रृंखलाओं को सुरक्षित करने के लिए अमेरिका के नेतृत्व वाली एक महत्वाकांक्षी नई भागीदारी है। इसका उद्देश्य चीन पर निर्भरता को कम करना है।
- इसका उद्देश्य महत्वपूर्ण खनिजों के उत्पादन, प्रसंस्करण और पुनर्चक्रण के लिए एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करना है जो देशों को उनके भूवैज्ञानिक संसाधनों के अधिकतम आर्थिक उपयोग को सक्षम बनाए।
- खनिज सुरक्षा भागीदारी संपूर्ण मूल्य श्रृंखला में रणनीतिक अवसरों के लिए **सरकारों और निजी क्षेत्रक से निवेश** जुटाने में मदद करेगी।

2.4. शंघाई सहयोग संगठन: एक नज़र में {Shanghai Cooperation Organization (SCO) at a Glance}

शंघाई सहयोग संगठन (SCO)

- यह वर्ष 2001 में स्थापित एक **स्थायी अंतर-सरकारी राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य संगठन है।**

SCO प्रतिनिधित्व करता है

- 60% यूरेशियाई क्षेत्र
- 42% वैश्विक आबादी
- 25% वैश्विक GDP

भारत के संदर्भ में SCO की प्रासंगिकता

- **यह भारत की 'कनेक्ट सेंट्रल एशिया नीति' को आगे बढ़ाने** और एक उपयुक्त यूरेशियाई रणनीति तैयार करने हेतु एक संभावित मंच हो सकता है।
- **भू-राजनीति और भू-अर्थशास्त्र:** यह भारत की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति को बढ़ाएगा, क्षेत्रीय बाजारों तक अधिक पहुंच प्रदान करेगा।
- **क्षेत्रीय आतंकवाद को नियंत्रित करना:** उदाहरण के लिए- क्षेत्रीय आतंकवाद-रोधी संरचना (RATS) तंत्र।
- **अफगानिस्तान का मुद्दा:** SCO के सदस्य देशों ने एक स्वतंत्र देश के रूप में अफगानिस्तान के निर्माण हेतु अपना समर्थन व्यक्त किया है।
- **आर्थिक: लौह-अयस्क, कोयला, तेल, गैस, यूरेनियम** जैसे खनिजों के मामले में मध्य एशियाई गणराज्य (CAR) अत्यंत समृद्ध हैं।
  - **ऊर्जा सहयोग:** SCO यूरेशिया में भारत की पहुंच को सुगम बना सकता है।
- **लोगों का आपस में संपर्क:** जैसे- SCO फिल्म महोत्सव, SCO सूरजकुंड शिल्प मेला, आदि।

SCO में भारत के समक्ष चुनौतियां

- **चीन का प्रभुत्व:** भारत को छोड़कर, सभी सदस्यों ने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) का समर्थन किया है।
- **यूरेशिया की उभरती भू-राजनीति,** जैसे कि रूस-यूक्रेन युद्ध।
- **सदस्य राष्ट्रों के बीच संघर्ष:** जैसे- भारत-पाकिस्तान, भारत-चीन, किर्गिज़स्तान-ताजिकिस्तान के मध्य सीमा संबंधी मुद्दे।
- **सीमित संस्थागत क्षमता और निर्णय प्रक्रिया से संबंधित खामियां।**
- तालिबान से निपटने के लिए **एकीकृत दृष्टिकोण का अभाव।**

भारत के लिए आगे की राह

- **रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखना:** समूह में अन्य सदस्यों के प्रभुत्व के विरुद्ध भारत को अपना स्वतंत्र मत बरकरार रखना चाहिए।
- **कनेक्टिविटी परियोजनाओं को पुनर्जीवित करना:** चाबहार बंदरगाह का उपयोग यूरेशिया में एक मजबूत उपस्थिति के लिए किया जाना चाहिए।
- **मध्य एशियाई क्षेत्र (CAR) में रचनात्मक भूमिका:** भारत मध्य एशिया में युवाओं के कट्टरपंथ को खत्म करने में अपनी भूमिका निभा सकता है।
- **सहयोग के नए क्षेत्रों को तलाशना:** AI, जलवायु परिवर्तन। **उदाहरण के लिए-** भारत की राष्ट्रीय AI रणनीति, AI मिशन का **AI सहयोग के रोडमैप पर SCO फ्रेमवर्क** के साथ कन्वर्जेंस।

निष्कर्ष

- SCO हमें लोगों को एकजुट करने, सहयोग करने, विकास करने और एक साथ समृद्ध होने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करता है, जो वसुधैव कुटुम्बकम के सहस्राब्दियों पुराने सिद्धांत का पालन करता है जिसका अर्थ है 'सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है'।

© Vision IAS

2.5. क्वाड (QUAD)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, अमेरिकी हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स ने **"स्ट्रेंथ यू.एस.-ऑस्ट्रेलिया-इंडिया-जापान कोऑपरेशन[16]"** या **"स्ट्रेंग्थेनिंग द क्वाड एक्ट"** को पारित किया।

अधिनियम के मुख्य बिंदुओं पर एक नज़र

इस अधिनियम का उद्देश्य क्वाड (QUAD) के चारों सदस्यों के बीच आपसी सहयोग को मजबूत करना है, ताकि एक स्वतंत्र, खुले, समावेशी, लचीले एवं सुव्यवस्थित हिंद-प्रशांत क्षेत्र को बढ़ावा दिया जा सके। **इस अधिनियम के तहत निम्नलिखित हेतु प्रावधान किए गए हैं:**

- **क्वाड अंतर-संसदीय कार्य समूह[17]:** इसे हिंद-प्रशांत क्षेत्र में संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, भारत और जापान के बीच घनिष्ठ सहयोग को आसान बनाने के लिए स्थापित किया जाएगा।
- **वार्षिक बैठकों और समूह के नेतृत्व के लिए दिशा-निर्देश** जारी किए जाएंगे।
- अमेरिका का विदेश मंत्री क्वाड से जुड़े घटनाक्रमों के बारे में अपडेट देगा और निम्नलिखित मुद्दों पर सहयोग बढ़ाने की रणनीति भी प्रस्तुत करेगा:
  - किसी भावी वैश्विक महामारी का सामना करने हेतु क्षमता-निर्माण करना,
  - नवोन्मेषी आधुनिक प्रौद्योगिकियों का संयुक्त रूप से विकास करना, तथा

क्वाड्रीलेटरल सिक्योरिटी डायलॉग (QUAD/ क्वाड) के बारे में

- क्वाड **समान विचारधारा वाले चार देशों का एक अनौपचारिक मंच** है। इसमें **संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत, ऑस्ट्रेलिया** और **जापान** शामिल हैं।
- **उद्देश्य:** यह सदस्य देशों को **वैश्विक कल्याण** के लिए एक केंद्र के रूप में कार्य करने पर जोर देता है। यह एक ऐसे **खुले, स्वतंत्र और समावेशी हिंद-प्रशांत** (Indo-Pacific) का समर्थन करता है, जो **समृद्ध और मजबूत** हो।
- **कार्य:** क्वाड के व्यावहारिक कार्य को **निम्नलिखित 6 कार्य-क्षेत्रों पर "सिक्स लीडर्स लेवल वर्किंग ग्रुप्स"** के माध्यम से आगे बढ़ाया जाता है।

कार्य-क्षेत्र	उठाए गए कदम
जलवायु	• अनुसंधान और विकास को सुविधाजनक बनाने तथा एनर्जी ट्रांजिशन का समर्थन करने के लिए **स्वच्छ ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला पहल[18]** की घोषणा की गई है। • हिंद-प्रशांत क्षेत्र में पूर्व चेतावनी प्रणालियों एवं जलवायु संबंधी आंकड़ों तक पहुंच बढ़ाने के लिए **क्वाड क्लाइमेट चेंज एडेप्टेशन एंड मिटिगेशन पैकेज (Q-CHAMP)** नामक एक पहल शुरू की गई है।
महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियां	• प्रशांत महासागर क्षेत्र में पहला **ओपन रेडियो एक्सेस नेटवर्क (Open RAN)** को स्थापित करने के लिए पलाऊ के साथ सहयोग की घोषणा की गई है। • रणनीतिक प्रौद्योगिकियों में निवेश को सुविधाजनक बनाने के लिए निजी क्षेत्रक के नेतृत्व वाले **क्वाड इन्वेस्टर्स नेटवर्क (QUIN)** शुरू किया गया है।
साइबर	• **क्वाड जॉइंट प्रिंसिपल फॉर सिक्योर सोफ्टवेयर** और **क्वाड जॉइंट प्रिंसिपल फॉर साइबर सिक्योरिटी ऑफ़ क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर** जारी किए गए हैं। इनका उद्देश्य साइबर खतरों के विरुद्ध सुरक्षा को मजबूत करना है।
स्वास्थ्य सुरक्षा साझेदारी	• क्वाड देशों ने क्वाड वैक्सीन साझेदारी को और अधिक **व्यापक स्वास्थ्य सुरक्षा साझेदारी** में विकसित करने का निर्णय लिया है। इसका उद्देश्य हिंद-प्रशांत क्षेत्र में क्वाड देशों एवं विभिन्न भागीदारों के बीच समन्वय और सहयोग को बढ़ावा देना है।

[16] Strengthen US-Australia-India-Japan Cooperation

[17] Quad Intra-Parliamentary Working Group

[18] Clean Energy Supply Chains Initiative

आधारभूत अवसंरचना	• **क्वाड इन्फ्रास्ट्रक्चर फेलोशिप प्रोग्राम:** इसे हिंद-प्रशांत क्षेत्र में इन्फ्रास्ट्रक्चर कार्य से जुड़े 1,800 से अधिक व्यवसायियों को गुणवत्तापूर्ण इन्फ्रास्ट्रक्चर के डिजाइन व निर्माण के लिए सशक्त बनाने हेतु शुरू किया गया है। • हिंद-प्रशांत क्षेत्र में केबल सिस्टम को मजबूत करने के लिए **क्वाड पार्टनरशिप फॉर केबल कनेक्टिविटी एंड रेजिलिएंस** शुरू किया गया है।
अंतरिक्ष	• **अर्थ ऑब्जर्वेशन वाले सैटेलाइट डेटा** और उनके विश्लेषण कार्यों का आदान-प्रदान किया जा रहा है। इससे देशों को जलवायु परिवर्तन के प्रति बेहतर तरीके से अनुकूलित होने, प्राकृतिक आपदाओं से निपटने तथा महासागर और समुद्री संसाधनों का प्रबंधन करने में सहायता मिलेगी।

भारत के लिए क्वाड का महत्त्व

- **हिंद-प्रशांत में भारत की सक्रिय भागीदारी:** यह क्षेत्र दुनिया की सकल घरेलू उत्पाद में 60 प्रतिशत से अधिक का योगदान देता है।
- **एक्ट ईस्ट को बढ़ावा:** क्वाड गठबंधन ने भारत को पूर्वी एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के साथ संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा, क्वाड के चलते भारत को अपने रणनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के साथ-साथ समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने, आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देने और क्षेत्र में शांति व स्थिरता को बढ़ावा देने में भी मदद मिली है।
- **सहयोग के विविध क्षेत्र:** उदाहरण के लिए- ऑस्ट्रेलिया, भारत और जापान ने चीन पर अपनी निर्भरता को कम करने के लिए **आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल (SCRI)**[19] शुरू करने की घोषणा की है।
- **आर्थिक लाभ:** क्वाड भारत को आर्थिक लाभ भी प्रदान करेगा। चीन पर निर्भरता के कारण कुछ समय पहले ही आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान आया था। ऐसे में क्वाड भारत को निवेश के लिए एक पसंदीदा स्थान बना सकता है।

क्वाड के समक्ष मौजूद चुनौतियां

- **पूरी तरह से संस्थागत नहीं:** अपने वर्तमान स्वरूप में, क्वाड अपेक्षाकृत कम संस्थागत बना हुआ है। यह कोई **सुरक्षा मंच या व्यापार समूह नहीं है।**
- **शीत-युद्ध की मानसिकता:** चीन ने क्वाड कूटनीति की आलोचना करते हुए इसे **"शीत-युद्ध की मानसिकता"** और **"एशियाई नाटो"** स्थापित करने का प्रयास बताया है।
- **अद्वितीय चरित्र:** क्वाड के उद्देश्य को आसियान (ASEAN), पैसेफिक आइलैंड फोरम और इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA) जैसे अन्य क्षेत्रीय समूहों से अलग परिभाषित करना कठिन साबित हुआ है।
- **अन्य समस्याएं:** अपने प्रयासों को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ावा देने में असमर्थता के लिए क्वाड की आलोचना की जाती है। उदाहरण के लिए- क्वाड "800 मिलियन कोविड-19 वैक्सीन खुराक" वितरित करने का वादा पूरा नहीं कर सका।

क्वाड के समक्ष मौजूद चुनौतियां

- **विभिन्न मोर्चों पर चीन के साथ फिर से तनाव होने की संभावना**
- भारत ने ऐसे देशों या संगठनों के साथ भी साझेदारी को बढ़ावा देना जारी रखा है, जो तथाकथित क्वाड विरोधी हैं, जैसे कि SCO (शंघाई सहयोग संगठन) और ब्रिक्स।
- क्वाड में भारत की भागीदारी बढ़ने से अन्य महत्त्वपूर्ण भागीदार, जैसे- **रूस और ईरान भारत से दूर हो सकते** हैं।

आगे की राह

- **क्षेत्रीय समृद्धि पर ध्यान देना:** क्वाड हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति एवं स्थिरता हेतु एक महत्वपूर्ण फोर्स के रूप में कार्य करता है। इसका उद्देश्य क्षेत्र में समावेशी व नियम-आधारित व्यवस्था का विकास करना है। इसे हासिल करने के लिए, क्षेत्रीय समृद्धि में इसके योगदान पर स्पष्टता और सुरक्षा मामलों पर लचीलापन आवश्यक है।
- **क्षेत्र में मौजूदा संगठनों को बढ़ाना:** क्वाड को अन्य संगठनों को खत्म या प्रतिस्थापित करने के बजाय, अलग-अलग बहुपक्षीय या क्षेत्रीय संगठनों को बढ़ावा देने और आपसी सहयोग के लिए एक समावेशी दृष्टिकोण प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए।
- **अन्य भागीदारों को शामिल करना:** क्वाड को क्षेत्रीय साझेदारों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने की आवश्यकता है। इसके लिए क्वाड क्षेत्रीय साझेदारों के हितों एवं प्राथमिकताओं को भी ध्यान में रखना चाहिए।
- **स्पष्टता और अस्पष्टता को संतुलित करना:** क्वाड को पारंपरिक सुरक्षा चिंताओं (जैसे- संभावित चीनी सैन्य कार्रवाई) पर विशेष ध्यान देने के बजाय चीन के साथ सीधे टकराव के जोखिम को कम करने पर ध्यान देना चाहिए। इसके लिए क्वाड साझा हितों के क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित कर सकता है।

[19] Supply Chain Resilience Initiative

© Vision IAS

2.6. भारत-आसियान: एक नज़र में (India-ASEAN at a Glance)

भारत-आसियान संबंध

- भारतीय प्रधान मंत्री ने इंडोनेशिया के **जकार्ता में 20वें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन और 18वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (EAS) में हिस्सा लिया।**

आसियान भारत का **चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है।**

भारत-आसियान व्यापार: 122.67 बिलियन डॉलर (2023-24)

आसियान-भारत शिखर सम्मेलन के मुख्य आउटकम्स पर एक नज़र

- भारत के प्रधान मंत्री ने **हिंद-प्रशांत क्षेत्र में आसियान की केन्द्रीय भूमिका** की पुनः पुष्टि की।
- भारत-आसियान सहयोग को मजबूत करने के लिए भारत ने **12-सूत्रीय प्रस्ताव प्रस्तुत** किया है।
  - आसियान साझेदारों के साथ **भारत के डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर स्टैक को साझा** करना।
  - **डिजिटल भविष्य के लिए आसियान-भारत कोष** की स्थापना करना। यह डिजिटल रूपांतरण के लिए वित्तीय एकीकरण में सहयोग पर ध्यान केंद्रित करेगा।

भारत के लिए आसियान का महत्त्व

- **भू-राजनीतिक:** भारत की **एक्ट ईस्ट पॉलिसी और इंडो-पैसिफिक विज़न में आसियान का केंद्रीय स्थान** है।
- **आर्थिक: 2022-23 में भारत के वैश्विक व्यापार में आसियान के साथ किए गए व्यापार का हिस्सा 11.3 प्रतिशत** था, भारत के बाहरी निवेश का 20% से अधिक आसियान देशों को जाता है।
  - **वित्तीय सहयोग:** इसमें आसियान-भारत हरित निधि (AIGF); आसियान-भारत विज्ञान और प्रौद्योगिकी विकास निधि (AISTDF) शामिल हैं।
- **पूर्वोत्तर क्षेत्र का क्षेत्रीय एकीकरण और विकास:** भारत-म्यांमार-थाईलैंड (IMT) त्रिपक्षीय राजमार्ग; कलादान मल्टीमॉडल परियोजना।
- **रक्षा और सुरक्षा सहयोग:** आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक-प्लस (ADMM-Plus), आसियान-भारत समुद्री सैन्य अभ्यास (AIME)।
- **सॉफ्ट पावर:** दक्षिण-पूर्व एशिया भारत के साथ सांस्कृतिक समानताएं साझा करता है। इनमें मंदिर निर्माण, योग, रामायण व महाभारत जैसे महाकाव्यों पर आधारित अभिनय, आयुर्वेद का पाठ आदि शामिल हैं।

आसियान के साथ संबंधों में भारत के समक्ष आने वाली चुनौतियां

- **प्राथमिकताओं में टकराव:** भारत द्वारा BRI का विरोध करना और RCEP में शमिल न होना, म्यांमार के मुद्दे पर आसियान के भीतर विभाजन।
- **आर्थिक मुद्दे:**
  - आसियान के साथ भारत का व्यापार घाटा 2021-22 में 25.76 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। 2022-23 में यह बढ़कर 43.57 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया था।
  - **प्रतिस्पर्धी क्षेत्रीय समझौते:** आसियान देशों का अन्य **क्षेत्रीय संगठनों जैसे- क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (RCEP) तथा व्यापक और प्रगतिशील ट्रांस-पैसिफिक भागीदारी समझौते (CPTPP)** के साथ जुड़ाव बढ़ रहा है।
- **सुरक्षा:**
  - **महाशक्ति बनने की दिशा में प्रतिस्पर्धा:** दक्षिण-पूर्व एशिया विस्तृत **हिंद-प्रशांत क्षेत्र** में स्थित है। इस अवस्थिति के कारण यह **संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन** जैसी महाशक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा का मुख्य केंद्र बन गया है।
  - **समुद्री चुनौतियां:** दक्षिण चीन सागर में आसियान देशों के साथ चीन का समुद्री विवाद।
  - **इंडो-पैसिफिक में आसियान की कमजोर केंद्रीयता:** क्वाड, ऑकस की उपस्थिति के कारण।

संबंधों को मजबूत करने हेतु आगे की राह

- **व्यापार सुविधा: समयबद्ध तरीके से AITIGA की समीक्षा करना, IPEF के तहत आपूर्ति श्रृंखला नेटवर्क स्थापित करना।**
- **जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए सहकारी दृष्टिकोण,** जैसे- ISA, CDRI, LiFE और OSOWOG
- **व्यापक रणनीतिक साझेदारी:** इससे भारत की हिंद-प्रशांत महासागर पहल (IPOI) और हिंद-प्रशांत के लिए आसियान आउटलुक के बीच अधिक समन्वय सुनिश्चित किया जा सकता है।
- **कनेक्टिविटी को बढ़ाना:** इसके तहत IMT त्रिपक्षीय राजमार्ग परियोजना को तेजी से पूरा करना चाहिए।
- **सांस्कृतिक और शैक्षिक आदान-प्रदान:** साथ ही, लोगों के बीच संबंधों को बढ़ावा देना चाहिए (सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पर्यटन और शैक्षिक आदान-प्रदान के माध्यम से)।

निष्कर्ष

- भारत आसियान की एकता, केन्द्रीयता और हिंद-प्रशांत पर आसियान दृष्टिकोण का समर्थन करता है और माना जाता है कि यह एक मजबूत एवं एकीकृत आसियान हिंद-प्रशांत की उभरती क्षेत्रीय संरचना में रचनात्मक भूमिका निभा सकता है।

2.7. राष्ट्रमंडल (The Commonwealth)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, लंदन घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर के 75 वर्ष पूरे हुए हैं। ज्ञातव्य है कि 26 अप्रैल, 1949 को लंदन घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर किए गए थे और इसी के साथ **आधुनिक राष्ट्रमंडल की स्थापना** हुई थी।

राष्ट्रमंडल के साथ भारत के संबंध

- भारत **राष्ट्रमंडल का सबसे बड़ा सदस्य देश** है। राष्ट्रमंडल की कुल आबादी में से लगभग 60 प्रतिशत आबादी भारत में निवास करती है।
- भारत राष्ट्रमंडल में **चौथा सबसे बड़ा योगदानकर्ता** देश है। इसके अलावा, भारत CFTC, कॉमनवेल्थ फाउंडेशन, कॉमनवेल्थ यूथ प्रोग्राम और COL में भी योगदान करता है।
- भारत ने **नई दिल्ली** में **1983 में राष्ट्रमंडल शिखर सम्मेलन (CHOGM)**[20] और **2010** में **राष्ट्रमंडल खेलों** की मेजबानी की थी।
- 2018 में **इंडिया-यू.एन. डेवलपमेंट फंड** के अधीन **कॉमनवेल्थ सब-विंडो** (5 वर्षों में 50 मिलियन अमेरिकी डॉलर) की स्थापना की गई थी। यह सतत विकास लक्ष्यों को हासिल करने और जलवायु कार्रवाई से संबंधित परियोजनाओं के लिए राष्ट्रमंडल सदस्यों को अनुदान-सहायता प्रदान करने के लिए है।

क्या राष्ट्रमंडल वर्तमान समय में प्रासंगिक है?

- **पक्ष में तर्क:**
  - **चुनावों पर नज़र रखने के लिए मिशन:** 1967 से अब तक राष्ट्रमंडल ने **लगभग 40 देशों** में चुनावों की निगरानी तथा पारदर्शी और निष्पक्ष चुनावी प्रक्रियाओं को बढ़ावा देने हेतु **140 मिशन** भेजे हैं। ये मिशन इसलिए भेजे जाते हैं, ताकि **लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्धता को बनाए रखा जा सके।**
  - **सदस्यों की बढ़ती संख्या:** टोगो और गैबॉन (ये दोनों ब्रिटिश उपनिवेश नहीं थे) जैसे नए सदस्यों के जुड़ने से यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रमंडल सहयोग और संवाद का एक बेहतर मंच है।
  - **सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) का समर्थन:** राष्ट्रमंडल SDGs को लागू करने, विशेष रूप से **शांति और विकास पर ध्यान केंद्रित करने वाले लक्ष्य 16** के प्रति प्रतिबद्ध है।
  - **व्यापार:** राष्ट्रमंडल देशों में व्यापारिक भागीदारों के लिए द्विपक्षीय लागत गैर-सदस्य देशों की तुलना में **औसतन 21 प्रतिशत कम** है।
- **विपक्ष में तर्क:**
  - आलोचकों का कहना है कि इसका **अस्तित्व ही उपनिवेशवाद को वैधता प्रदान करता** है। एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में सदस्य देशों को संयुक्त राष्ट्र, आसियान और अन्य संगठनों से जुड़कर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर ध्यान देना चाहिए।
  - **समकालीन वैश्विक मुद्दों का समाधान करने में कम प्रासंगिक:** उदाहरण के लिए- कोरोना महामारी के दौरान, सदस्य देशों को सहायता प्रदान करने में यह प्रभावी नहीं था।
  - **सदस्यों के बीच सामंजस्य का अभाव:** रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान चल रहे यू.एन. वोटिंग में रूस की निंदा करने के लिए नौ राष्ट्रमंडल देशों ने भाग नहीं लिया।
  - **फंडिंग संबंधी रुकावट/ बाधाएं:** राष्ट्रमंडल की अंतर्राष्ट्रीय नौकरशाही को सीमित वित्तीय सहायता इसकी प्रभावशीलता को बाधित करती है। ब्रिटेन मुख्य रूप से द्विपक्षीय आधार पर इसे फंड उपलब्ध कराता है और इसके सचिवालयी काम-काज के लिए विशेष फंडिंग नहीं करता है।

[20] Commonwealth Summit

© Vision IAS

निष्कर्ष

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने, व्यापार और पीपल-टू-पीपल कॉन्टैक्ट बढ़ाने के लिए राष्ट्रमंडल नेटवर्क का लाभ उठाना चाहिए। यह दीर्घकालिक विकास एवं समृद्धि के लिए आवश्यक है।

2.8. गुटनिरपेक्ष आंदोलन (Non-Aligned Movement: NAM)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) का 19वां शिखर सम्मेलन युगांडा के कंपाला** में आयोजित किया गया।

अन्य संबंधित तथ्य

- इस वर्ष का NAM शिखर सम्मेलन **"साझा वैश्विक समृद्धि के लिए सहयोग में वृद्धि[21]"** विषय (थीम) पर केंद्रित था।
- इस शिखर सम्मेलन में **कंपाला घोषणा-पत्र** को अपनाया गया। इसके घोषणा-पत्र के तहत-
  - सदस्य देशों ने संयुक्त राष्ट्र को **प्राथमिक बहुपक्षीय संगठन के रूप में मजबूत करने के लिए प्रतिबद्धता** व्यक्त की।
  - सदस्य देशों ने **सतत विकास के लिए एजेंडा, 2030** और **अदीस अबाबा एक्शन एजेंडा (AAAA) को साकार** करने हेतु संयुक्त प्रयास करने पर सहमति व्यक्त की गई।
    - अदीस अबाबा एक्शन एजेंडा **सतत विकास के वित्त-पोषण के लिए एक वैश्विक ढांचा** प्रदान करता है। इसके लिए, यह एजेंडा सभी प्रकार के वित्त-पोषण प्रवाह और नीतियों को आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय प्राथमिकताओं के साथ संरेखित करता है।
- **साउथ सूडान NAM का नया सदस्य (121वां) बन गया है।**

गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) के बारे में

- **उत्पत्ति:** इसकी उत्पत्ति **1955 में बांडुंग (इंडोनेशिया) में** आयोजित **एशिया-अफ्रीका सम्मेलन** से मानी जाती है।
- **NAM के बारे में:**
  - **आंदोलन के संस्थापक:** मिस्र, घाना, भारत, इंडोनेशिया और यूगोस्लाविया के राष्ट्राध्यक्ष।
  - इसके गठन के पीछे यह विचार यह था कि ये देश **दो सैन्य गुटों (अमेरिका के अधीन नाटो और सोवियत संघ के अधीन वारसॉ पैक्ट) में से किसी के भी साथ गठबंधन नहीं** करेंगे।
- **1961** में NAM का पहला सम्मेलन **बेलग्रेड** में आयोजित किया गया था। **बेलग्रेड वर्तमान में सर्बिया की राजधानी है।**
- गुटनिरपेक्ष आंदोलन के पास **कोई औपचारिक संस्थापक चार्टर या संधि नहीं** है। साथ ही, इसका कोई **स्थायी सचिवालय** भी नहीं है।

NAM के मुख्य सिद्धांत

- **संयुक्त राष्ट्र चार्टर और अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का सम्मान।**
- सभी देशों की **संप्रभुता, समानता और क्षेत्रीय अखंडता।**
- संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुसार **अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों का शांतिपूर्ण समाधान।**
- संयुक्त राष्ट्र चार्टर के तहत **आत्मरक्षा के अधिकारों का सम्मान।**
- देशों के **आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना।**
- संवाद के माध्यम से **बहुपक्षवाद और सहयोग को बढ़ावा देना।**

[21] Deepening Cooperation for Shared Global Affluence

वर्तमान समय में NAM की प्रासंगिकता

- **संप्रभुता की रक्षा:** NAM देश आत्मनिर्णय; क्षेत्रीय अखंडता के प्रति सम्मान; गैर-आक्रामकता और सदस्य देशों की स्वतंत्रता व स्वायत्तता की रक्षा के सिद्धांतों का समर्थन करते हैं।
- **विदेश नीति का एक अभिन्न अंग:** भारत जैसे कई विकासशील देश अभी भी NAM नीति का पालन करते हैं, क्योंकि NAM में विदेश नीति में **'कार्रवाई की स्वतंत्रता'** निहित है।
- **एकजुट करने वाली शक्ति:** छोटे और विकासशील देशों के उपनिवेशीकरण व साम्राज्यवाद को रोकने के लिए NAM अभी भी एक सख्त उपाय के रूप में लागू है।
- **बहुपक्षवाद और वैश्विक शांति को बढ़ावा देना:** NAM बहुपक्षवाद, कूटनीति और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांतों का समर्थन करता है;
- **सक्रिय गुटनिरपेक्षता[22] की अवधारणा का बढ़ता महत्त्व:** इसमें निष्क्रिय तटस्थता की बजाय एक सक्रिय दृष्टिकोण समाहित है। इसका उद्देश्य समस्याओं को हल करना और संकटग्रस्त विश्व के लिए अत्यंत आवश्यक समाधान खोजना है।
- **संयुक्त राष्ट्र में सुधार और उसका लोकतंत्रीकरण:** NAM संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के सुधार में तेजी लाने की वकालत करता है। इससे यह संयुक्त राष्ट्र का अधिक लोकतांत्रिक, पारदर्शी और प्रतिनिधिक अंग बन सकेगा।

NAM के समक्ष मौजूद चुनौतियां: वैश्विक व्यवस्था में परिवर्तन, विकासशील गठबंधन, आसियान और SCO जैसे क्षेत्रीय संगठन, आदि।

गुटनिरपेक्षता बनाम तटस्थता

- गुटनिरपेक्षता एक **राजनीतिक अवधारणा** है। इसके विपरीत, तटस्थता एक **कानूनी अवधारणा** है।
- गुटनिरपेक्षता किसी **राज्य के संविधान में नहीं लिखी गई** है। तटस्थता **राज्य की नीति का एक स्थायी गुण** हो सकता है।
- गुटनिरपेक्षता **वैश्विक मामलों में सक्रिय भूमिका** पर जोर देती है। साथ ही, सभी देशों के साथ मित्रता और सहयोग को बढ़ावा देती है। इसलिए, यह एक **सकारात्मक अवधारणा** है।
  - तटस्थता का अर्थ है **गैर-भागीदारी,** जरूरी नहीं कि इसमें ऐसे सकारात्मक संबंधों को शामिल किया जाए।

निष्कर्ष

NAM को **स्वयं को पुनर्परिभाषित करने और समकालीन विश्व व्यवस्था में अपने उद्देश्यों में नवाचारी परिवर्तन** लाने की आवश्यकता है। गुटनिरपेक्ष आंदोलन तब तक प्रासंगिक बना रहेगा, जब तक विश्व में शोषण, युद्ध, भुखमरी, गरीबी और रोग व्याप्त हैं।

2.9. अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी {International Energy Agency: IEA}

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत पूर्ण सदस्यता के लिए अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA) के साथ वार्ता आरंभ करेगा।

अन्य संबंधित तथ्य

- हाल ही में, **IEA की 2024 मंत्रिस्तरीय बैठक और 50वीं वर्षगांठ का कार्यक्रम** आयोजित हुए थे। इस दौरान एक संयुक्त विज्ञप्ति जारी कर पूर्ण सदस्यता के लिए IEA के साथ वार्ता की घोषणा की गई है।
- **भारत 2017 में IEA में एक एसोसिएट सदस्य** के रूप में शामिल हुआ था। भारत ने इसकी पूर्ण सदस्यता के लिए 2023 में एक औपचारिक अनुरोध भी भेजा था।
  - 2021 में भारत ने IEA के साथ एक **रणनीतिक साझेदारी समझौते** पर हस्ताक्षर किए थे। इसका उद्देश्य **वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा, स्थिरता और संधारणीयता में सहयोग** को मजबूत करना है।
- **IEA की सदस्यता के लिए मानदंड**
  - सदस्यता के लिए इच्छुक देश **आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (OECD) का सदस्य** होना चाहिए।
  - **क्रूड आयल और/ या उत्पाद भंडार** पिछले वर्ष के निवल आयात के **90 दिनों की जरूरत के बराबर** होना चाहिए।

---

[22] Active Non-Alignment

- भारत के पास **अपनी जरूरत का 9.5 दिन का रणनीतिक तेल भंडार** है। यदि इसमें रिफाइनरियों और डिपो में रखे भंडारण को जोड़ लिया जाए तो यह अवधि **66 दिन की जरूरत के बराबर** हो जाती है।
  - भारत को अपनी **तेल खपत को 10% तक कम करने** के लिए एक **मांग नियंत्रण कार्यक्रम** चलाना होगा।
  - भारत द्वारा IEA के समक्ष यह सुनिश्चित किया जाना जरूरी है कि उसके अधिकार **क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली सभी तेल कंपनियां कानून और मानकों का पालन** करती हैं। ऐसी कंपनियों को मांगे जाने पर सूचनाएं उपलब्ध करानी होंगी।
- IEA का **गवर्निंग बोर्ड** किसी देश की सदस्यता पर अंतिम फैसला लेता है।
- **IEA की सदस्यता का भारत के लिए महत्त्व**
  - वैश्विक ऊर्जा और जलवायु संबंधी चुनौतियों से निपटने में भारत के **'रणनीतिक महत्त्व'** को मान्यता मिलेगी।
  - इससे **ऊर्जा सुरक्षा की अवधारणा** को बल मिलेगा। गौरतलब है कि **भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता** देश है।

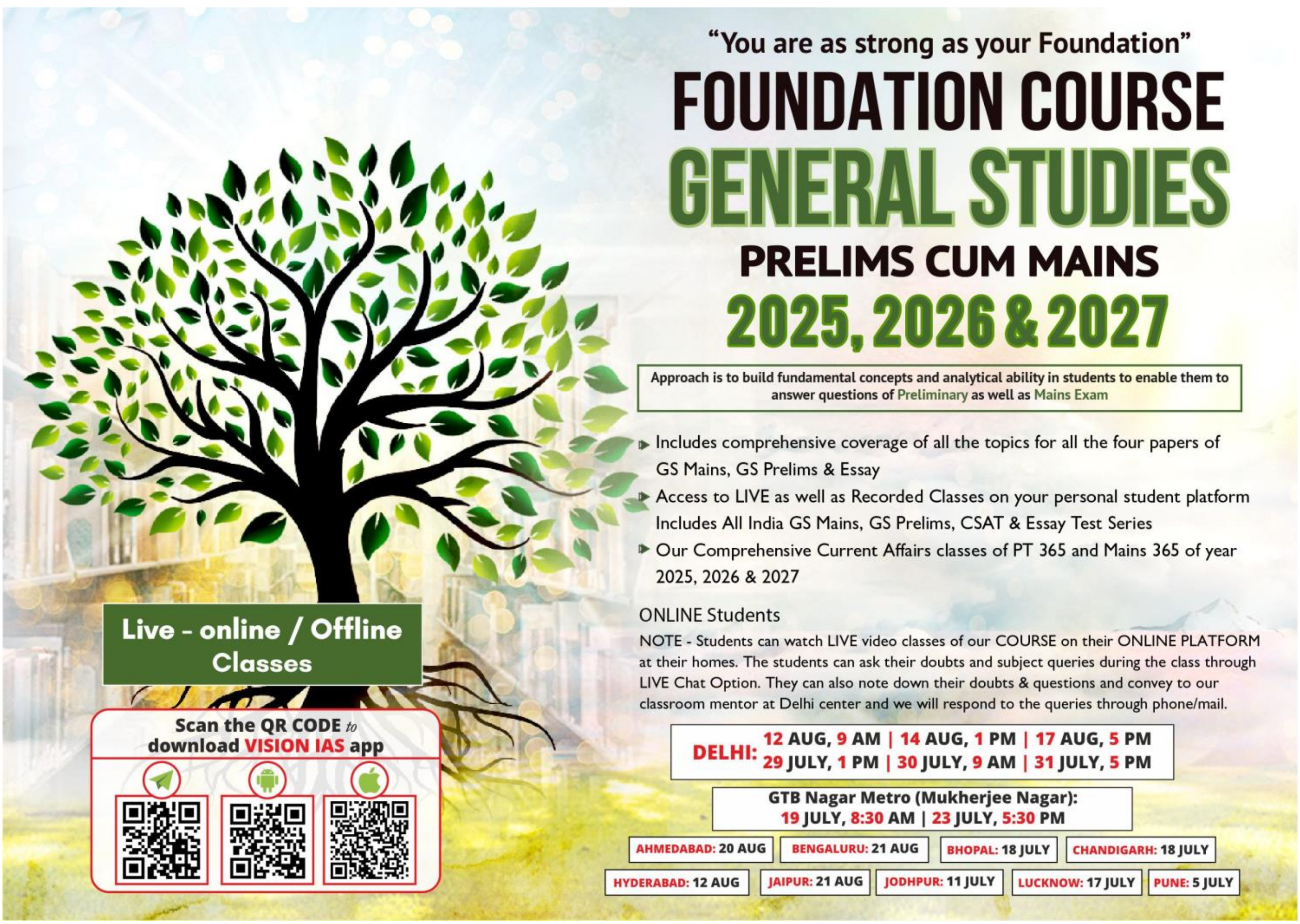

न्यूज़ टुडे

"न्यूज टुडे" डेली करेंट अफेयर्स की एक संक्षिप्त प्रस्तुति है। इस डॉक्यूमेंट की मदद से न्यूज-पेपर को पढ़ना काफी आसान हो जाता है और इससे अभ्यर्थी दैनिक घटनाक्रमों के बारे में अपडेट भी रहते हैं। इससे अभ्यर्थियों को कई अन्य तरह के लाभ भी मिलते हैं, जैसे:

- किसी भी न्यूज़ से जुड़े घटनाक्रमों के बारे मे बेहतर समझ विकसित करने के लिए
- न्यूज पढ़ने का एक ऐसा नजरिया विकसित करने के लिए, जिससे अभ्यर्थी आसानी से समझ सकें हैं कि न्यूज पेपर्स में से कौन-सी न्यूज पढ़नी है
- टेक्निकल टर्म्स और न्यूज़ से जुड़े जटिल कॉन्सेप्ट्स के बारे में सरल समझ विकसित करने के लिए

न्यूज़ टुडे डॉक्यूमेंट की मुख्य विशेषताएं

- स्रोत: इसमें द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस, PIB, न्यूज़ ऑन ए.आई.आर., इकोनॉमिक टाइम्स, हिंदुस्तान टाइम्स, द मिंट जैसे कई स्रोतों से न्यूज को कवर किया जाता है।
- भाग: इसके तहत 4 पेज में दिन-भर की प्रमुख सुर्ख़ियों, अन्य सुर्ख़ियों और सुर्ख़ियों में रहे स्थल एवं व्यक्तित्व को कवर किया जाता है।
- प्रमुख सुर्ख़ियां: इसके तहत लगभग 200 शब्दों में पूरे दिन की प्रमुख सुर्ख़ियों को प्रस्तुत किया जाता है। इसमें हालिया घटनाक्रम को विस्तार से कवर किया जाता है।
- अन्य सुर्ख़ियां और सुर्ख़ियों में रहे स्थल/ व्यक्तित्व: इस भाग के तहत सुर्ख़ियों में रहे व्यक्तित्व, महत्वपूर्ण टर्म, संरक्षित क्षेत्र और प्रजातियों आदि को लगभग 90 शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है।

न्यूज़ टुडे वीडियो की मुख्य विशेषताएं

- प्रमुख सुर्ख़ियां: इसमें दिन की छह सबसे महत्वपूर्ण सुर्ख़ियों को संक्षेप में प्रस्तुत किया जाता है। इससे आप एग्जाम के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण न्यूज को खोजने में आपना कीमती समय बर्बाद किए बिना मुख्य घटनाक्रमों को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं।
- सुर्ख़ियों में रहे स्थल/ व्यक्तित्व: इसमें सुर्ख़ियों में रहे एक महत्वपूर्ण स्थल या मशहूर व्यक्तित्व के बारे में बताया जाता है।
- स्मरणीय तथ्य: इस भाग में चर्चित विषयों को संक्षेप में कवर किया जाता है, जिससे आपको दुनिया भर के मौजूदा घटनाक्रमों की जानकारी मिलती रहती है।
- प्रश्नोत्तरी: प्रत्येक न्यूज टुडे वीडियो बुलेटिन के अंत में MCQs भी दिए जाते हैं। इसके जरिए हम न्यूज पर आपकी पकड़ का परीक्षण करते हैं। यह इंटरैक्टिव चरण आपकी लर्निंग को ज्ञानवर्धक के साथ-साथ मज़ेदार भी बनाता है। इससे आप घटनाक्रमों से जुड़े तथ्यों आदि को बेहतर तरीके से याद रख सकते हैं।
- रिसोर्सेज: वीडियो के नीचे डिस्क्रिप्शन में "न्यूज़ टुडे" के PDF का लिंक दिया जाता है। न्यूज़ टुडे का PDF डॉक्यूमेंट, न्यूज टुडे वीडियो के आपके अनुभव को और बेहतर बनाता है। साथ ही, MCQs आधारित प्रश्नोत्तरी आपकी लर्निंग को और मजबूत बनाती है।

रोजाना 9 PM पर न्यूज टुडे वीडियो बुलेटिन देखिए

न्यूज टुडे डॉक्यूमेंट को डाउनलोड करने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

न्यूज़ टुडे क्विज़ के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए

अहमदाबाद | बेंगलूरू | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

3. भारत और उसके पड़ोसी देशों के साथ संबंध (India and its Neighbourhood Relations)

3.1. भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी {India's Neighbourhood First Policy (NFP)}

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, विदेश मामलों की संसदीय स्थायी समिति ने भारत की **नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी (NFP) पर अपनी 22वीं रिपोर्ट** में शामिल ऑब्जरवेशन्स/ सिफारिशों पर की गई एक **कार्रवाई रिपोर्ट** प्रस्तुत की है।

नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी (NFP) के बारे में

- **नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी को 2008** में विदेश नीति के एक उपकरण के रूप में अपनाया गया था। इस नीति में पड़ोसी देशों के साथ मजबूत संबंध स्थापित करने पर जोर दिया गया है।
- **उद्देश्य:** इसके तहत अलग-अलग क्षेत्रकों में लाभ प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। उदाहरण के लिए- **बेहतर कनेक्टिविटी, उन्नत अवसंरचना, विविध क्षेत्रकों में मजबूत विकास सहयोग, सुरक्षा और व्यापक तौर पर लोगों-का-लोगों (P2P) के बीच परस्पर संपर्क** स्थापित करना आदि।

NFP का महत्त्व

- **सामरिक आवश्यकताओं की पूर्ति:** चीन जैसी **बाहरी शक्ति का मुकाबला करने** और भारत के **स्वतंत्र एवं खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र** के विज़न को बढ़ावा देने के लिए दक्षिण एशिया में **उन्नत क्षेत्रीय एकीकरण** महत्वपूर्ण है।
  - भारत के लिए **वैश्विक गवर्नेंस प्रणाली और UNSC, IMF जैसे संस्थानों में सुधारों** के लिए आवाज उठाने हेतु पड़ोसी देशों के साथ सहयोग महत्वपूर्ण है।
- **बहुपक्षवाद को बढ़ावा:** यह नीति **क्षेत्रीय/ उप-क्षेत्रीय संगठनों** जैसे कि सार्क, बिम्सटेक आदि के माध्यम से बहुपक्षवाद को मजबूत करने में भी सहायता प्रदान करती है।
- **सॉफ्ट पावर प्रभाव को बढ़ावा:** अपने पड़ोसी देशों के साथ **भारत के समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंध** इस क्षेत्र में इसके विविधतापूर्ण सांस्कृतिक मूल्यों और सॉफ्ट पावर प्रभाव को बढ़ावा देने में मदद करते हैं।
- **क्षेत्रीय स्थिरता और सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण:** बेहतर विश्वास और सहयोग **सुरक्षा संबंधी पारंपरिक एवं गैर-पारंपरिक खतरों से निपटने की क्षमता** प्रदान करता है। संसाधनों की कमी, अवैध प्रवास, जलवायु परिवर्तन आदि ऐसे गैर-पारंपरिक खतरे हैं, जिनसे निपटने के लिए परस्पर सहयोग की आवश्यकता होती है।
  - भारत की **सुरक्षा, संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता** सुनिश्चित करने के लिए **आतंकवाद-रोधी प्रयासों, उग्रवाद विरोधी अभियानों, अंतर्राष्ट्रीय संगठित अपराधों से निपटने** आदि के संदर्भ में परस्पर सहयोग बढ़ाना महत्वपूर्ण है।
- **आर्थिक विकास में सहयोगपूर्ण:** यह नीति **क्षेत्रीय व्यापार, निवेश और सीमा पार अवसंरचना में वृद्धि** की सुविधा प्रदान करती है। इससे आर्थिक संवृद्धि व रोजगार सृजन को बढ़ावा मिलता है और जीवन स्तर में सुधार होता है।
  - यह **भारत के लिए ऊर्जा सुरक्षा** सुनिश्चित करने हेतु भी महत्वपूर्ण है। इसे विशेष रूप से महत्वपूर्ण जल विद्युत क्षमता वाले **उत्तरी पड़ोसी देशों (नेपाल और भूटान)** के संदर्भ में देखा जा सकता है, जिनके साथ भारत विद्युत व्यापार को बढ़ावा दे रहा है।
  - भारत के पूर्वोत्तर में **विकासात्मक कमी को दूर करने** के लिए पड़ोसियों के साथ सक्रिय सहयोग भी महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, **कलादान मल्टी-मॉडल परियोजना, बांग्लादेश से होते हुए अखौरा-अगरतला रेल लिंक का निर्माण** आदि।

भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों के समक्ष चुनौतियां

- **ऐतिहासिक और अनसुलझे विवाद:** पाकिस्तान एवं चीन जैसे देशों के साथ अनसुलझे सीमा विवादों के परिणामस्वरूप लगातार तनाव व अविश्वास उत्पन्न होता है।
- **बिग-ब्रदर' अवधारणा:** कभी-कभी पड़ोसी देशों में **भारत विरोधी भावनाएं** भी जन्म लेती हैं और **द्विपक्षीय संबंध तनावपूर्ण** हो जाते हैं। उदाहरण के लिए- नेपाल।
- **भारत की घरेलू राजनीति:** उदाहरण के लिए- तमिल भावनाएं भारत की श्रीलंका संबंधी नीति को निर्धारित करती हैं।

© Vision IAS

- **पड़ोसी देशों में गतिशीलता: राजनीतिक अस्थिरता:** उदाहरण के लिए- अफगानिस्तान और म्यांमार में राजनीतिक अस्थिरता के कारण विविध परियोजनाओं के कार्यान्वयन में बाधा आई है।
- **भारत की सीमित क्षमता और संसाधन:** विकासात्मक परियोजनाओं के कार्यान्वयन में देरी से निराशा व अविश्वास पैदा हो सकता है।
- **बहुपक्षवाद का कमजोर होना:** सार्क जैसी निष्क्रिय क्षेत्रीय बहुपक्षीय संस्थाएं भारत-पाकिस्तान तनाव से प्रभावित हैं।

संसदीय समिति की मुख्य सिफारिशें

- **विकासात्मक परियोजनाओं का कार्यान्वयन:** विदेश मंत्रालय को पड़ोसी देशों के साथ अलग-अलग मंत्रालयों और विभागों द्वारा कार्यान्वित की जाने वाली विशिष्ट पहलों, परियोजनाओं एवं कार्यक्रमों की पहचान करने के लिए **एक सेल की स्थापना** करनी चाहिए।
- **सीमावर्ती बुनियादी ढांचा और कनेक्टिविटी: उदाहरण के लिए-** अवैध प्रवासन का समाधान करने और सीमावर्ती क्षेत्रों में जनसांख्यिकीय परिवर्तनों की निगरानी के लिए **विदेश मंत्रालय को केंद्रीय गृह मंत्रालय तथा राज्य सरकारों के साथ मिलकर** काम करना चाहिए।
- **विकास निधि:** बिम्सटेक (BIMSTEC) जैसे क्षेत्रीय मंच के तहत **कनेक्टिविटी संबंधी अवसंरचना के लिए एक क्षेत्रीय विकास कोष की स्थापना** की व्यवहार्यता का पता लगाना चाहिए।
- **सांस्कृतिक सहयोग और लोगों के बीच संपर्क** को बढ़ावा देना चाहिए।
- **द्विपक्षीय और बहुपक्षीय/ क्षेत्रीय फ्रेमवर्क्स की समीक्षा:** समसामयिक वास्तविकताओं के आधार पर इनकी आवधिक समीक्षा करनी चाहिए। साथ ही, निरंतर इन तंत्रों को उन्नत, मजबूत और ऊर्जावान बनाया जाना चाहिए।

3.2. चीन का उदय और भारत के लिए खतरा (China's Rise and Threats to India)

चीन का तेजी से बढ़ता आर्थिक और सैन्य विस्तार मौजूदा वैश्विक व्यवस्था के लिए चुनौती है, जिसका असर अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर भी पड़ रहा है। नतीजतन, एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में भारत एशिया और उसके बाहर चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने हेतु प्रयासरत है।

भारत के लिए चीन के प्रमुख सामरिक खतरे

- **सीमा पर प्रादेशिक खतरा (Territorial threat):** लद्दाख में चीनी घुसपैठ और अरुणाचल प्रदेश पर एकतरफा दावा।
  - इसके अलावा, पाकिस्तान से होकर गुजरने वाला CPEC भी भारत की संप्रभुता के लिए चुनौती है।
  - वास्तविक नियंत्रण रेखा के निकट बस्तियों में **बुनियादी ढांचे का विकास।**
- **चीन का अंधाधुंध सैन्य खर्च और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उसकी व्यापक उपस्थिति:** उदाहरण के लिए- **चीन का रक्षा बजट** 222 अरब डॉलर है, जबकि भारत का 75 अरब डॉलर।
- **लोकतांत्रिक समाजों को भीतर से नष्ट करना:** उदाहरण के लिए- चीन ने लोकतांत्रिक समाजों में घुसपैठ करने के लिए यूनाइटेड फ्रंट वर्क डिपार्टमेंट (UFWD) को तैनात किया है।
- **चीन के साथ भारत का बढ़ता व्यापार घाटा:** उदाहरण के लिए- 2023 में व्यापार घाटा 99 बिलियन डॉलर से अधिक था।
- **चीन अपने आर्थिक प्रभुत्व का उपयोग जियो-पोलिटिकल लाभों के लिए कर रहा है (जिसे "जिओ-इकोनॉमिक्स" कहा जाता है):** उदाहरण के लिए- श्रीलंका में हंबनटोटा बंदरगाह।
- **चीन भारत की खाद्य और जल सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर रहा है:** उदाहरण के लिए- चीन ब्रह्मपुत्र नदी के निचले इलाकों में जलविद्युत परियोजनाओं का निर्माण कर रहा है।

इन खतरों को कम करने के लिए भारत के प्रयास

- **चीनी सेना का डटकर सामना करना:** उदाहरण के लिए- लद्दाख में, डोकलाम में, आदि।
- **भारत की सक्रिय हिंद-प्रशांत नीति:** उदाहरण के लिए- भारत ने दक्षिण चीन सागर में चीनी आक्रामकता का विरोध करते हुए फिलीपींस को अपना स्पष्ट समर्थन दिखाया। ब्रह्मोस की पहली खेप फिलीपींस को दी गई।
    - ताइवान के साथ भारत का जुड़ाव।
- **क्वाड बहुआयामी गठजोड़ में तब्दील हो गया:** स्वतंत्र, खुले, समावेशी और जिम्मेदार आचरण जैसे सिद्धांतों का पालन सुनिश्चित किया जा रहा है।
- **चीनी आर्थिक प्रभुत्व को कम करने के लिए घरेलू नीति में परिवर्तन: उदाहरण के लिए-** टिकटॉक पर प्रतिबंध लगाना।
- **भारत तार्किक होने के साथ ही ग्लोबल साउथ के एक पक्षकार के रूप में उभर रहा है: उदाहरण के लिए-** अफ्रीकी संघ को G20 में शामिल करना।
- **भारत द्वारा अपनी सॉफ्ट पावर का प्रयोग और बहुपक्षीय सहयोग की शुरुआत: उदाहरण के लिए-** योग को दुनिया भर में लोकप्रिय बनाना; ISA, CDRI जैसे अंतर्राष्ट्रीय मंच।

चीन का वैश्विक मंच पर प्रतिस्पर्धात्मक रुख	
क्षेत्र/ विषय	**घटनाक्रम/ खतरे**
अमेरिका के साथ व्यापार युद्ध	• **अमेरिका ने 2018 में 6,000 चीनी उत्पादों पर 10% टैरिफ लगाया था।** लंबे समय से चल रहे व्यापार युद्ध ने विश्व अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है।
प्रशांत द्वीप समूह प्रभाव	• **चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका प्रशांत क्षेत्र में प्रभुत्व के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।** उदाहरण के लिए- सोलोमन द्वीप समूह ने बीजिंग के साथ सुरक्षा समझौता किया है।
दक्षिण चीन सागर विवाद	• चीन ने अपने क्षेत्रीय दावों के समर्थन में स्प्रैटली द्वीप, फिएरी क्रॉस रीफ और मिसचीफ रीफ पर **कृत्रिम द्वीप बनाए हैं।** • **चीन की नौसेना का दक्षिण चीन सागर में** अमेरिका, वियतनाम और फिलीपींस से टकराव हुआ है।
हांगकांग में विरोध प्रदर्शन	• स्थानीय विधायिका को दरकिनार करते हुए चीन ने **हांगकांग पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून लागू कर दिया।**
ताइवान के साथ तनाव	• **ताइवान के निकट चीनी सैन्य अभ्यास में वृद्धि,** आक्रमण का दिखावा तथा ताइवान की रक्षा को हाई अलर्ट पर रखना।
बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) को लेकर आलोचनाएं	• **ऋण जाल कूटनीति** जिसमें भाग लेने वाले देश अपनी संप्रभुता से समझौता करते हैं। • **इटली** ने BRI से खुद को बाहर कर लिया है।
अफ्रीका के संबंध में ऋण चिंताएँ	• **जिबूती:** चीन का ऋण इसकी GDP के 80% से अधिक है, जिससे ऋण संकट की चिंता बढ़ रही है। • **जाम्बिया:** ऋण संकट का सामना कर रहा है, इसके बाह्य ऋण में चीनी ऋण का हिस्सा 50% से अधिक है।

निष्कर्ष

विदेश मंत्री ने अपनी पुस्तक "व्हाई भारत मैटर्स" में लिखा है कि भारत और चीन के संबंधों को सकारात्मक दिशा में वापस लाने और इसे बनाए रखने के लिए, इन्हें तीन परस्पर बिंदुओं पर स्थापित करना होगा: "आपसी संवेदनशीलता, आपसी सम्मान और आपसी हित[23]।"

3.2.1. भारत-चीन सीमा विवाद (India-China Border Dispute)

सुर्ख़ियों में क्यों?

चीन द्वारा अरुणाचल प्रदेश का नाम बदलने के जवाब में भारत तिब्बत में 30 स्थानों का नाम बदलेगा।

अन्य संबंधित तथ्य

- यह प्रतिक्रिया **चीन द्वारा मई, 2024 में अरुणाचल प्रदेश में 30 स्थानों का नाम बदलने के बाद आई है, जिसे वह 'दक्षिण तिब्बत' कहता है।**
- इससे पहले, भारतीय **प्रधान मंत्री** और **चीनी राष्ट्रपति** ने वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) से शीघ्र पीछे हटने का आह्वान किया था।
    - भारत और चीन ने **वास्तविक नियंत्रण रेखा पर तनाव कम करने** के लिए प्रयास बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की थी।

[23] Three mutuals: mutual sensitivity, mutual respect and mutual interest

© Vision IAS

- भारत की योजना पहले **देपसांग-डेमचोक से सैनिकों को हटाना** था।

भारत-चीन सीमा विवाद

- **वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC)** दोनों देशों के बीच **विभाजन रेखा** है।
    - हालांकि, भारत और चीन के बीच सीमा का **औपचारिक रूप से सीमांकन नहीं किया** गया है। दोनों देशों के बीच **पारस्परिक रूप से सहमति आधारित LAC** भी नहीं है।
    - भारत के अनुसार **LAC की लंबाई 3,488 कि.मी.** है, जबकि **चीन इसे लगभग 2,000 कि.मी.** ही मानता है।
- **LAC को निम्नलिखित तीन सेक्टर्स में बांटा गया है:**
    - **वेस्टर्न सेक्टर (लद्दाख): भारत 1865** में निर्धारित **जॉनसन लाइन** को सीमा मानता है। वहीं चीन **1893 में निर्धारित मैकडॉनल्ड लाइन को वास्तविक सीमा** मानता है।
    - **मिडिल सेक्टर (हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड):** इस सेक्टर में मामूली विवाद है।
    - **ईस्टर्न सेक्टर (अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम):** चीन यह दावा करता है कि **अरुणाचल प्रदेश तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र का हिस्सा** है।

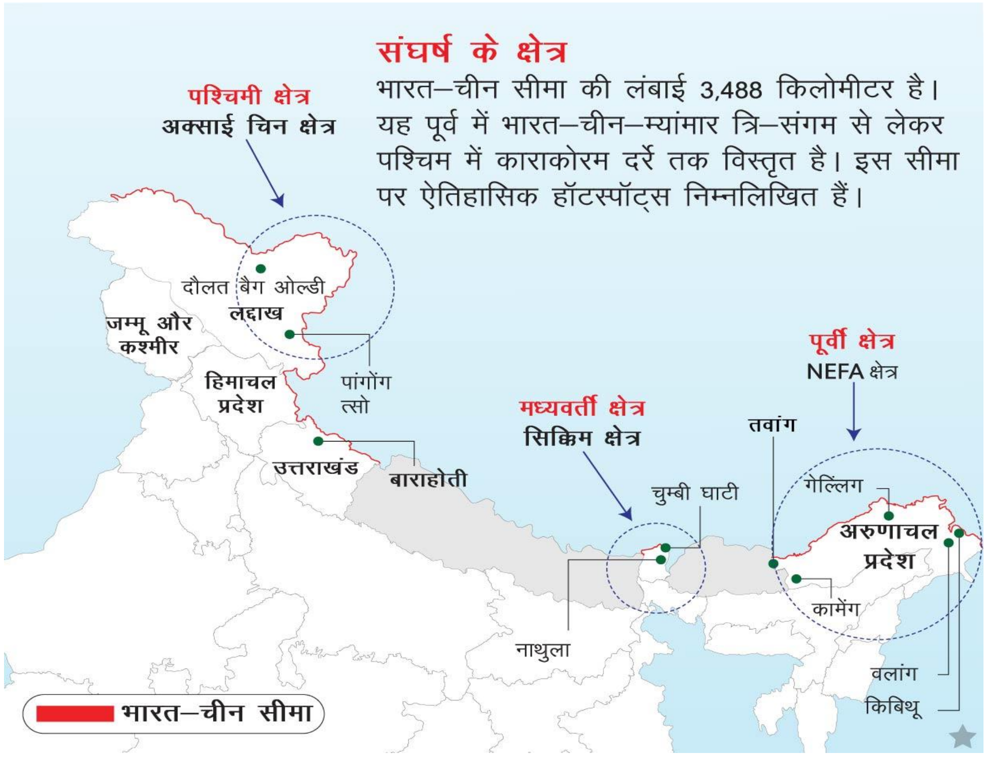

        - इस क्षेत्र में LAC, **1914 के शिमला सम्मेलन के दौरान निर्धारित की गई मैकमोहन रेखा** को इंगित करती है। इस सम्मेलन में **ब्रिटिश भारत, चीन और तिब्बत** शामिल हुए थे।
    - **1949** में जब **चीन में कम्युनिस्ट सरकार** आई, तो उसने पूर्व में उसके साथ किए गए विविध **अंतर्राष्ट्रीय समझौतों को असमान या भेदभावपूर्ण बताया और इन्हें मानने से अस्वीकार** कर दिया।
- **दोनों देशों के बीच प्रमुख विवाद समाधान पहलों में निम्नलिखित शामिल हैं:**
    - **1993:** LAC पर शांति और स्थिरता के रखरखाव पर समझौता।
    - **1996:** LAC पर सैन्य क्षेत्र में विश्वास-निर्माण उपायों पर समझौता।
    - **2005:** सैन्य क्षेत्र में विश्वास-निर्माण उपायों के कार्यान्वयन के तौर-तरीकों पर प्रोटोकॉल।
    - **2012:** भारत-चीन सीमा मामलों पर परामर्श और समन्वय के लिए एक कार्यकारी तंत्र की स्थापना पर समझौता।
    - **2013:** सीमा रक्षा सहयोग समझौता।

3.3. सिंधु जल संधि (Indus Water Treaty: IWT)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत ने **रावी नदी पर शाहपुर कंडी बैराज** के निर्माण का कार्य पूरा कर लिया है। इसके जरिए भारत ने **रावी नदी के जल प्रवाह को पाकिस्तान की ओर जाने से रोक** दिया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- **सिंधु जल संधि** के तहत **रावी** नदी के जल पर **भारत** का पूर्ण अधिकार है।

- अब, शाहपुर कंडी बांध परियोजना के पूरा होने से, भारत 1,150 क्यूसेक पानी **जम्मू-कश्मीर, पंजाब व राजस्थान** की ओर प्रवाहित करेगा। इससे इन क्षेत्रों में **कृषि कार्य के लिए अतिरिक्त जल उपलब्ध** होगा। साथ ही, **बांधों से जल विद्युत के उत्पादन** की संभावना भी बढ़ेगी।

सिंधु जल संधि (IWT) के बारे में

- **उत्पत्ति:** IWT पर **1960 में भारत और पाकिस्तान ने हस्ताक्षर** किए थे। इस संधि के लिए **विश्व बैंक ने मध्यस्थता** की थी। इसके अलावा, **विश्व बैंक** इस संधि में एक **हस्ताक्षरकर्ता** भी है।
- **उद्देश्य:** यह संधि सिंधु नदी प्रणाली के जल के उपयोग से संबंधित **दोनों देशों के अधिकारों एवं दायित्वों को निर्धारित और सीमित** करती है।
- **जल उपयोग संबंधी अधिकारों के लिए प्रावधान:**
  - **पूर्वी नदियों- सतलज, ब्यास और रावी** का पूरा जल **भारत को आवंटित** किया गया है। साथ ही, **भारत इन नदियों के जल का बिना किसी रोक के उपयोग** कर सकता है।
  - **पश्चिमी नदियों- सिंधु, झेलम और चिनाब** का जल **ज्यादातर पाकिस्तान को आवंटित** किया गया है।
    - हालांकि, कुछ मामलों में **भारत को पश्चिमी नदियों के जल का सशर्त उपयोग करने की अनुमति** है। भारत इन नदियों के जल का उपयोग **सिंचाई, परिवहन** और **विद्युत उत्पादन** के कार्यों में कर सकता है।
- **कार्यान्वयन:** इस संधि को लागू करने के लिए **स्थायी सिंधु आयोग**[24] का गठन किया गया है:
  - **स्थायी सिंधु आयोग** के लिए दोनों देश एक-एक आयुक्त की नियुक्ति करते हैं। इस आयोग का उद्देश्य आपसी संचार के लिए एक चैनल बनाए रखना है।
  - आयोग को **वर्ष में कम-से-कम एक बार बारी-बारी से भारत और पाकिस्तान में बैठक** करना अनिवार्य है।

संधि से जुड़े हुए मुद्दे

- **पाकिस्तान द्वारा भारतीय परियोजनाओं का लगातार विरोध: जैसे, झेलम नदी पर किशनगंगा जलविद्युत परियोजना** और **चिनाब नदी पर रतले जलविद्युत परियोजना पर पाकिस्तान का विरोध** ऐसे ही मुद्दे को व्यक्त करता है।
- **न्यायिक समाधान पर मतभेद:** भारत **तटस्थ विशेषज्ञ** के माध्यम से मतभेदों का समाधान चाहता है। **तटस्थ विशेषज्ञ संधि की मूल भावना की व्याख्या** करते हैं। वहीं पाकिस्तान ने **स्थायी मध्यस्थता न्यायालय** (PCA)[25] के पास जाने का विकल्प चुना है, जो **संधि की अक्षरशः व्याख्या** करता है।
  - PCA ने **जुलाई, 2023** में भारत की चिंताओं को सर्वसम्मति से खारिज कर दिया था और **बिना किसी अपील के दोनों पक्षों के लिए कानूनी रूप से बाध्यकारी** निर्णय दे दिया था।

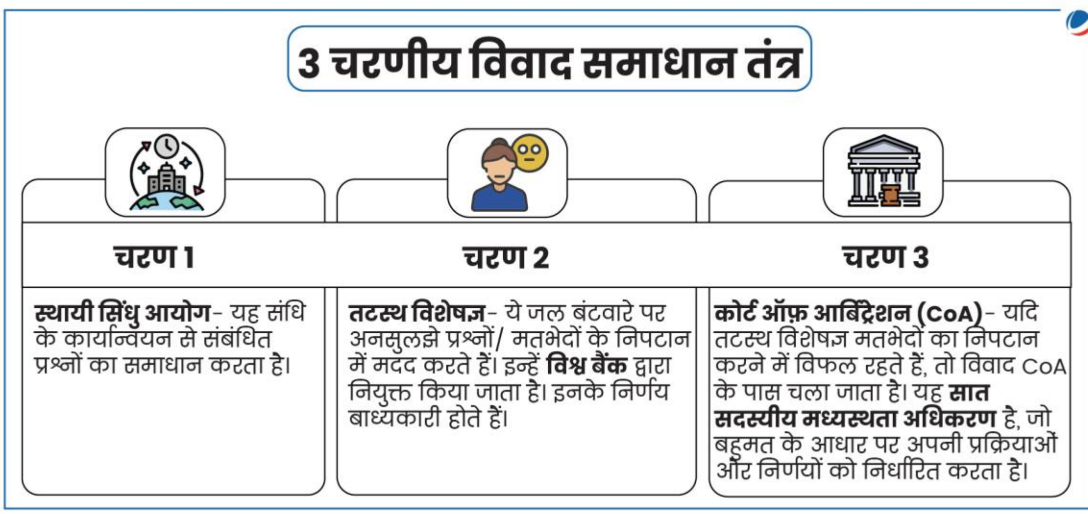

- **तनावपूर्ण द्विपक्षीय संबंध:** उदाहरण के लिए- पाकिस्तान द्वारा राज्य प्रायोजित आतंकवाद के लगातार उपयोग के कारण **स्थायी सिंधु आयोग के आयुक्तों के बीच अर्द्ध-वार्षिक वार्ता निलंबित** कर दी गई थी।
- **जलवायु परिवर्तन का प्रभाव:** जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा और अपवाह के पैटर्न, तीव्रता एवं समय चक्र में परिवर्तन आया है। IWT में जलवायु परिवर्तन के कारण जल उपलब्धता में हुए संभावित बदलावों पर ध्यान नहीं दिया गया है।
- **थर्ड-पार्टी गारंटर के माध्यम से संघर्ष का समाधान करने का तरीका:** विश्व बैंक IWT का गारंटर है और नदी के जल प्रवाह में अवैध हस्तक्षेप से संबंधित किसी भी मुद्दे की रिपोर्ट करने के लिए नदी के बहाव वाले निचले इलाके में आने वाले देश (भारत या पाकिस्तान कोई भी) पर निर्भर है।

[24] Permanent Indus Commission

[25] Permanent Court of Arbitration

- **नियमित आधार पर डेटा को साझा नहीं किया जाता है**
- **संधि की तकनीकी प्रकृति:** संधि के प्रावधान अत्यधिक तकनीकी प्रकृति के हैं, जिनकी विविध और व्यापक व्याख्या करनी आवश्यक हो जाती है।

आगे की राह

- **IWT को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए इस पर पुनर्विचार करना:** जल विशेषज्ञों का मानना है कि IWT का मसौदा तैयार करते समय **तकनीकी प्रगति को ध्यान में नहीं रखा गया था।** अतः दोनों देशों को तकनीकी प्रगति पर विचार करने की आवश्यकता है।
  - **अंतर्राष्ट्रीय जल कानून से संबंधित सिद्धांतों को शामिल करना: न्यायसंगत और उचित उपयोग[26] तथा नो हार्म रूल (NHR)** जैसे अंतर्राष्ट्रीय जल कानून से संबंधित सिद्धांत दोनों देशों के बीच मौजूद मतभेदों को समाप्त करने में मदद कर सकते हैं।
- **दोनों पक्षों के सिंधु जल आयुक्तों को सशक्त बनाया जाना चाहिए,** ताकि वे एक साथ काम करने और **राजनीतिक परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना** तर्कसंगत निर्णय लेने में सक्षम हो सकें।
  - दोनों पक्षों के बीच नियमित बैठकें और किसी परियोजना के डिज़ाइन एवं अपवाह से जुड़े डेटा को साझा करने से भविष्य की समस्याओं का समाधान करने में मदद मिल सकती है।
- **अनुकूल जल प्रबंधन को लागू करना:** जलवायु परिवर्तन चुनौतियों के बीच नदी की स्थिरता सुनिश्चित करना।
- पारदर्शिता एवं व्यावहारिक वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए **ओपन डेटा पॉलिसी** को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

3.3.1. सीमापारीय नदी जल प्रबंधन (Trans-boundary River Water Management)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, ब्रह्मपुत्र नदी में आई बाढ़ ने भारत के पड़ोसी देशों के साथ सीमापारीय नदी जल प्रबंधन की आवश्यकता पर ध्यान खींचा है।

ट्रांस-बॉर्डर यानी सीमापारीय नदी प्रबंधन से जुड़े प्रमुख मुद्दे

- **नदी के ऊपरी क्षेत्र (Riparian) में स्थित देशों को लाभ:** हिमालय को दक्षिण एशिया का **"वाटर टावर"** कहा जाता है। भारत की अधिकांश उत्तरी नदियों का उद्गम तिब्बत से होता है। चीन तिब्बत पर अपने पूर्ण नियंत्रण के परिणामस्वरूप जल आधिक्य (Water hegemony) की स्थिति में है।
- **क्षेत्रीय असंतुलन:** दक्षिण एशियाई देशों के मध्य सत्ता के क्षेत्रीय असंतुलन, परस्पर शत्रुता, संदेह एवं एक सार्वभौमिक रूप से **बाध्यकारी अंतर्राष्ट्रीय विधिक व्यवस्था की अनुपस्थिति** के कारण, सीमापारीय नदियों के साझा उपयोग को सुनिश्चित करना जटिल हो गया है।
- **संघीय मुद्दे:** उदाहरण के लिए- **प्रस्तावित तीस्ता समझौते का पश्चिम बंगाल द्वारा विरोध किए जाने** के परिणामस्वरूप भारत और बांग्लादेश के मध्य यथास्थिति बनी हुई है।
- **नदियों के कारण सीमा विवाद**: उदाहरण के लिए- भारत और नेपाल सीमा के कुछ हिस्से को महाकाली नदी अलग करती है।
- **डेटा साझाकरण का अभाव**: उदाहरण के लिए- चीन ब्रह्मपुत्र नदी के जल संबंधी डेटा को अपने निचले तटवर्ती देशों के साथ अक्सर साझा नहीं करता है।

भारत और पड़ोसी देशों के बीच नदी जल सहयोग

- **सिंधु जल संधि (1960): भारत और पाकिस्तान** के बीच।
- **भारत-बांग्लादेश संयुक्त नदी आयोग (JRC):** इसे वर्ष 1972 में मित्रता, सहयोग और शांति संधि के आधार पर गठित किया गया था।
- **भारत और बांग्लादेश के मध्य गंगा नदी जल के बंटवारे पर संधि (वर्ष 1996):** यह दोनों देशों के मध्य अपनी पारस्परिक सीमा के निकट फ़रक्का बैराज पर सतही जल साझा करने हेतु किया गया एक समझौता है।
- **कोसी नदी समझौता (वर्ष 1954), गंडक नदी समझौता (वर्ष 1959), टनकपुर बैराज समझौता (वर्ष 1991) और महाकाली नदी संधि (वर्ष 1996):** इन संधियों को भारत और नेपाल के मध्य हस्ताक्षरित किया गया है।

---

[26] Equitable and Reasonable Utilisation

- **भारत-चीन द्वारा जल संबंधी आंकड़ों का साझाकरण:** वर्ष 2006 में, भारत और चीन ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए थे, जिसमें चीन द्वारा ब्रह्मपुत्र और सतलज नदियों के लिए प्रतिवर्ष 15 मई से 15 अक्टूबर तक जल संबंधी आंकड़ों को साझा करने पर सहमति व्यक्त की गई थी।

आवश्यक दृष्टिकोण

- **एकीकृत दृष्टिकोण:** सभी ट्रांस-हिमालयी सह-तटीय देशों को न्यूनतम अंतर्राष्ट्रीय विधिक सिद्धांतों के आधार पर जल प्रबंधन प्रणाली को अपनाने के लिए एकजुट होना चाहिए।
- **हितधारकों की उचित भागीदारी सुनिश्चित करना:** स्थानीय उपयोगकर्ताओं का उचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए, ट्रांस-नेशनल विधायी तंत्र सहित सभी जल आयोगों में स्थानीय समितियों के प्रतिनिधियों की न्यूनतम संख्या को सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- **आंकड़ों में पारदर्शिता:** पारदर्शिता, जल पर साझाकृत लाभ के निर्माण और **"जल युद्धों (Water wars)" के बजाय "जल शांति (Water peace)" के विचारों** के निर्माण में सहायता करेगी।
- **संस्थागत तंत्र:** एक बहुपक्षीय तंत्र का निर्माण करना चाहिए, जिसमें सभी सह-तटीय देशों/ बेसिनों को आनुपातिक शक्ति प्राप्त हो।

अंतर्राष्ट्रीय जल कानून के सिद्धांत

- यह **हेलसिंकी नियम 1966** और **यू.एन. वाटरकोर्स कन्वेंशन, 1997** पर आधारित है।
  - **UN कन्वेंशन ऑन द लॉ ऑफ़ द नॉन-नेवीगेशनल यूज़ेस ऑफ़ इंटरनेशनल वाटर-कोर्सेज (यू.एन. वाटरकोर्स कन्वेंशन):** यह सार्वभौमिक रूप से लागू एकमात्र ऐसी संधि है, जो साझे मीठे जल संसाधनों को नियंत्रित करती है।
  - यह सिद्धांतों और नियमों का एक फ्रेमवर्क प्रदान करती है जिसे विशेष अंतर्राष्ट्रीय जलमार्गों (वाटरकोर्स) की विशेषताओं के अनुरूप लागू और समायोजित किया जा सकता है।
- **प्रिंसिपल ऑफ इक्विवेलेंट रेजिडेंशियल यूनिट (ERU):** ERU का सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है कि एक नदी बेसिन के प्रत्येक राज्य को अपने क्षेत्र के भीतर लाभकारी उपयोगों के लिए जल संसाधनों का उचित और समान हिस्सा मिले।
- **हानि न पहुंचाने का दायित्व या 'नो हार्म रुल यानी कोई हानि न पहुंचाने का नियम' (NHR):** किसी भी देश को अपने क्षेत्र में वाटरकोर्स का उपयोग इस तरह से करने की अनुमति नहीं है, जिससे अन्य बेसिन देशों या उनके पर्यावरण को काफ़ी अधिक नुकसान पहुंचे।

3.4. भारत-नेपाल संबंध: एक नज़र में (India-Nepal Relations at a Glance)

भारत-नेपाल संबंध

- नेपाल भारत का एक महत्वपूर्ण पड़ोसी देश है। यह सदियों से चले आ रहे भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों के कारण भारत की विदेश नीति में विशेष महत्व रखता है।

भारत और नेपाल के बीच धार्मिक एवं सांस्कृतिक संबंध बहुत पुराने और बहुत मजबूत हैं तथा दोनों देशों को इन संबंधों को और अधिक ऊंचाई तक ले जाने के लिए काम करना चाहिए।
- भारतीय प्रधान मंत्री

भारत नेपाल का **सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार** और FDI प्राप्त करने का सबसे बड़ा स्रोत है।

द्विपक्षीय व्यापार: दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय व्यापार 11 **बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक** का है।

सहयोग के क्षेत्र

- **रक्षा: सूर्य किरण** जैसे सैन्य अभ्यास इंटरऑपरेबिलिटी को बढ़ावा देते हैं।
- **जल संसाधन: कोसी संधि (1954), गंडक संधि (1959) तथा महाकाली संधि (1996)**
- **ऊर्जा:** विद्युत क्षेत्रक में सहयोग पर संयुक्त विजन वक्तव्य (2022), सीमा-पार पेट्रोलियम उत्पाद पाइपलाइन, जलविद्युत परियोजनाएं आदि।
- **कनेक्टिविटी परियोजनाएं:** रक्सौल-काठमांडू रेलवे परियोजना, BBIN (बांग्लादेश, भूटान, नेपाल और इंडिया) आदि।
- **संस्कृति:** धर्म, भाषा, व्यंजन, फिल्म आदि के संदर्भ में मजबूत ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध (रोटी-बेटी का नाता)।

द्विपक्षीय संबंधों में सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए हालिया पहल

- हाल ही में, **भारत-नेपाल संयुक्त आयोग** की छठी बैठक आयोजित हुई थी, जिसमें विद्युत्, तेल और गैस, जल संसाधन, क्षमता-निर्माण और पर्यटन सहित कई क्षेत्रों में सहयोग पर चर्चा की गई।
- **जयनगर (बिहार) से कुर्था (नेपाल)** तक सीमा-पार रेल लिंक की शुरुआत।
- **नेपाल में भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ावा देना:** भारतीय प्रधान मंत्री ने लुंबिनी में भारतीय सहायता से बनाए जा रहे एक बौद्ध विहार की आधारशिला रखी।
- **हाई इम्पैक्ट कम्युनिटी डेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स इन नेपाल (अस्पताल, स्कूल, कॉलेज का निर्माण)।**

संबंधों में चुनौतियां

- **चीन का बढ़ता प्रभाव:** नेपाल की अर्थव्यवस्था, राजनीति और समाज में **चीन का बढ़ता हस्तक्षेप** भारत के पारंपरिक रूप से प्रभुत्वशाली प्रभाव को कम कर रहा है। **नेपाल** चीन के BRI में शामिल हो गया है।
- **सीमा विवाद पर नेपाल का आक्रामक रुख** (कालापानी सीमा मुद्दा)।
- नेपाल में **द्विपक्षीय व्यापार में भारी व्यापार घाटे** के कारण असंतोष व्याप्त है। यह घाटा GDP का लगभग 18 प्रतिशत है।
- भारत का बड़े भाई वाला व्यवहार, वर्ष 1950 की शांति और मित्रता की संधि पर फिर से विचार करने के प्रति उदासीन दृष्टिकोण तथा नदी संधियों से निपटने से संबंधित शिथिल दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप **भारत के प्रति अविश्वास।**
- **लोगों की अप्रतिबंधित सीमा पार आवाजाही** ने नेपाल के घरेलू उद्योग, स्थानीय आजीविका के अवसरों, कानून और व्यवस्था तथा राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित किया है।

आगे की राह

- **आर्थिक सहयोग को मजबूत करना।**
- भारत और नेपाल के बीच **मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी पर ध्यान केंद्रित करना।**
- विवादास्पद मुद्दों पर चर्चा के लिए **उपयुक्त द्विपक्षीय तंत्र स्थापित करना।** (भारत और बांग्लादेश के बीच सीमा विवाद समाधान तंत्र को एक मॉडल के रूप में काम करना चाहिए)
- **बहुपक्षीय मंचों,** जैसे- BBIN, बिम्सटेक, NAM, सार्क आदि का उपयोग सामान्य हितों की पूर्ति हेतु करना चाहिए।
- दोनों देशों के मध्य एक स्थिर और पारस्परिक रूप से उत्पादक संबंध सुनिश्चित करने के लिए **लोगों के मध्य संपर्कों का लाभ उठाना।**
- दोनों देशों द्वारा संयुक्त रूप से गठित प्रख्यात व्यक्तियों के समूह द्वारा अनुशंसित **वर्ष 1950 की शांति और मित्रता संधि पर फिर से विचार करना।**

निष्कर्ष

- नेपाल और भारत के बीच बेहतर द्विपक्षीय संबंध हैं। ये घनिष्ठ, व्यापक और बहुआयामी संबंध इतिहास, संस्कृति, परंपरा एवं धर्म के सदियों पुराने संबंधों पर आधारित हैं।

3.4.1. भारत-नेपाल राज्यक्षेत्र विवाद (India-Nepal Territorial dispute)

सुर्ख़ियों में क्यों?

नेपाल ने भारतीय राज्यक्षेत्रों को दर्शाते हुए एक नया नोट जारी करने का निर्णय लिया।

अन्य संबंधित तथ्य

- हाल ही में, नेपाल की कैबिनेट ने 100 रुपये के नए नेपाली नोटों की छपाई को मंजूरी दी है। इन नए नोटों की विशेषता यह है कि इन नोटों पर नेपाल का नक्शा भी होगा। चिंतनीय विषय यह है कि इस नक्शे में **भारतीय राज्यक्षेत्रों (लिम्पियाधुरा, लिपुलेख और कालापानी)** को नेपाली क्षेत्रों के रूप में दर्शाया गया है। गौरतलब है कि नेपाल इन इलाकों को अपने क्षेत्र मानता है।
  - इससे पहले भी, 2020 में नेपाल ने अपना **दूसरा संविधान संशोधन विधेयक** पारित किया था। इस विधेयक में भारत के इन क्षेत्रों पर **नेपाल ने अपने दावों को कानूनी दर्जा** प्रदान किया गया था।
- नेपाल और भारत के बीच सबसे बड़ा क्षेत्रीय विवाद **कालापानी** को लेकर है। यह **भारत, नेपाल और तिब्बत (चीन) के बीच एक ट्राइ-जंक्शन** पर स्थित है।
- **विवाद की शुरुआत:**
  - **ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी** और **तत्कालीन नेपाली गोरखा शासकों** के बीच **1816 में सगौली की संधि** हुई थी। इस संधि में **उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र का सीमांकन किया गया था और काली नदी** को भारत और नेपाल के बीच सीमा माना गया था। काली नदी के पश्चिमी क्षेत्र को भारतीय क्षेत्र माना गया, जिसमें कुमाऊं-गढ़वाल भी शामिल हैं।
  - **उल्लेखनीय है कि दोनों देशों के बीच काली नदी की उत्पत्ति को लेकर भी असहमति है।**
    - नेपाल **कालापानी के पश्चिम में बहने वाली नदी को मुख्य काली नदी** मानता है। यह नदी **लिम्पियाधुरा या इसके निकटवर्ती लिपुलेख दर्रे** से निकलती है। इसलिए, नेपाल कालापानी पर अपना राज्यक्षेत्र होने का दावा करता है।
    - हालांकि, भारत का तर्क है कि काली नदी का उद्गम **पंखागढ़** नामक एक छोटी सी नदी से होता है। यह **कालापानी के दक्षिणी भाग** पर स्थित है। साथ ही, इस क्षेत्र के **पूर्वी भाग पर स्थित एक छोटी पहाड़ी (रिज) ही वास्तविक सीमा** है।
- **विवाद पर भारत का रुख:** ये तीनों क्षेत्र **(लिम्पियाधुरा, लिपुलेख और कालापानी)** भारत के हिस्से हैं। अत: भारत, नेपाल के संविधान संशोधन को **एकपक्षीय, मनमाना विस्तार और अनावश्यक दावे वाला कदम** मानता है।

3.5. भारत-भूटान संबंध: एक नज़र में (India-Bhutan Relations at a Glance)

भारत–भूटान संबंध

- हाल ही में, भारत के प्रधान मंत्री ने भूटान की राजकीय यात्रा की। इस यात्रा के दौरान भारत के प्रधान मंत्री को भूटान के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, **'ऑर्डर ऑफ द ड्रुक ग्यालपो'** से सम्मानित किया गया।

भारत, आयात स्रोत और एक निर्यात गंतव्य के रूप में **भूटान का शीर्ष व्यापारिक भागीदार है।** व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में है।

2023–24 के बजट के अनुसार भूटान, भारत से प्राप्त **बाह्य सहायता का सबसे बड़ा लाभार्थी** रहा है।

भारत और भूटान के बीच सहयोग के क्षेत्र

- प्रौद्योगिकीय सहयोगः भूटान में **RuPay** और **BHIM** ऐप की शुरुआत की गई है, इसरो ने **'भारत–भूटान SAT'** उपग्रह को लॉन्च किया है।
- **जलविद्युत परियोजनाः** भारत ने भूटान में **चार प्रमुख जलविद्युत परियोजनाओं** का निर्माण किया है। ये परियोजनाएं हैं– **कुरिछू, ताला, चुखा और मांगदेछु।** ये चारों परियोजनाएं भारत को विद्युत की आपूर्ति कर रही हैं।
- **अवसंरचनाः** भारत के सीमा सड़क संगठन (BRO) ने **'दंतक (DANTAK)' परियोजना** के तहत भूटान में अधिकांश सड़कों का निर्माण किया है।
- भारत और भूटान के बीच संबंधों का मूल आधार **1949 में हस्ताक्षरित "मित्रता और सहयोग की संधि"** है। इस संधि को 2007 में फिर से नवीकृत किया गया था।

भारत के लिए भूटान का महत्त्व

- **भू–सामरिक महत्त्वः** भूटान, **चीन और भारत** दोनों के साथ सीमा साझा करता है। भूटान की इस सामरिक अवस्थिति के कारण यह भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण बन जाता है।
- **आर्थिक महत्त्वः** भूटान में **जल विद्युत संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं।** ये संसाधन भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण हैं।
- **पर्यावरणीय सहयोगः** दोनों देश **हिमालयी पारिस्थितिकी–तंत्र को साझा** करते हैं। इसलिए, दोनों देश **पर्यावरण संरक्षण, आपदा प्रबंधन और जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन** पर एक साथ कार्य कर सकते हैं।
- **क्षेत्रीय एकीकरणः जैसे– सार्क (SAARC) और बिम्सटेक (BIMSTEC)**

चुनौतियां

- **जलविद्युत व्यापार में समस्याएंः** भारत द्वारा **पुनात्सांगछू–I और पुनात्सांगछू–II** जैसी परियोजनाओं को पूरा करने के लिए विद्युत प्रशुल्क देने में देरी हुई है।
- **सक्रिय उग्रवादियों / विद्रोहियों के लिए छुपने का स्थानः** भारत के यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (ULFA), नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोस (NDFB) जैसे विद्रोही संगठन छुपने के लिए भूटान चले जाते हैं।
- पर्यावरण संबंधी चिंताओं के कारण भूटान ने **बांग्लादेश–भूटान–भारत–नेपाल (BBIN) मोटर वाहन समझौते** को रोक दिया है।
- भारत पहले भूटान को **60:40 मॉडल (60% अनुदान–40% ऋण)** पर वित्तीय सहायता दे रहा था, लेकिन अब यह सहायता 30:70 मॉडल पर दी जा रही है।

आगे की राह

- **आर्थिक गतिविधियों में विविधता लानाः** भारत को भूटान के सकल राष्ट्रीय खुशहाली (GNH) दर्शन के अनुरूप **भूटान के सेवा क्षेत्रक में सतत निवेश** करने की आवश्यकता है।
- **चीन के साथ ट्राइलोग (Trilogue / त्रिपक्षीय बातचीत) की शुरुआतः** संवाद के नए माध्यमों को शुरू करने से सीमा विवादों के संबंध में बढ़ रही अनिश्चितताओं को कम किया जा सकता है।
- **सुरक्षा संबंधी उपायः** दोनों देशों के बीच संपर्क बिंदु (Contact points) स्थापित करना। इसके अलावा, आतंकवादी संगठनों के संबंध में जानकारी को रियल टाइम पर साझा करने के लिए एक तंत्र स्थापित करना।

निष्कर्ष

भूटान के प्रधान मंत्री की भारत यात्रा और भारतीय प्रधान मंत्री की भूटान यात्रा दोनों देशों के बीच स्थायी आर्थिक एवं विकासात्मक साझेदारी की मजबूत पुष्टि को दर्शाती है।

3.6. तालिबान शासन के तहत भारत-अफगानिस्तान संबंध (India-Afghanistan Relations under Taliban Regime)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत के आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल ने अफगान अधिकारियों के साथ वार्ता की।

अन्य संबंधित तथ्य

- अफगानिस्तान के दौरे पर गए भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने **अफगानिस्तान के लोगों को भारत की ओर से दी जाने वाली मानवीय सहायता और अफगान व्यापारियों द्वारा चाबहार बंदरगाह (ईरान) के उपयोग** के मुद्दे पर चर्चा की।
- अफगानिस्तान के मुद्दे पर क्षेत्रीय सुरक्षा परिषदों के अधिकारियों और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों की छठी क्षेत्रीय वार्ता का आयोजन **बिश्केक (किर्गिस्तान)** में किया गया।
  - इसमें भाग लेने वाले मुख्य देश थे- **भारत, ईरान, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, रूस, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान** और **उज्बेकिस्तान।**
  - **2021 में तालिबान द्वारा काबुल पर कब्जा करने के बाद अफगानिस्तान में स्थिति का आकलन** करने के लिए सुरक्षा अधिकारियों की क्षेत्रीय वार्ता एक महत्वपूर्ण तंत्र के रूप में उभरी है।
  - **भारत ने नवंबर 2021 में नई दिल्ली में तीसरी क्षेत्रीय सुरक्षा वार्ता की मेजबानी** की थी।

अगस्त 2021 में तालिबान द्वारा सत्ता पर कब्जा करने के बाद से भारत-अफगान संबंध

- **काबुल में तकनीकी मिशन:** इसे जून 2022 में भारत की मानवीय सहायता के प्रयासों को आगे बढ़ाने और इन प्रयासों में समन्वय स्थापित करने के लिए खोला गया था।
- **शिक्षा:** भारत ने **अफगान छात्रों के लिए "भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) छात्रवृत्ति योजना"** जारी रखी है।
- **व्यापार एवं वाणिज्य:** यह चाबहार बंदरगाह सहित सभी मार्गों से निरंतर जारी है।
- अमेरिका और अन्य अधिकांश देशों की तरह भारत ने भी तालिबान द्वारा स्थापित **इस्लामिक अमीरात ऑफ अफगानिस्तान की सरकार को अभी तक मान्यता नहीं दी है।**
  - भारत ने **"अफगान के नेतृत्व वाली, अफगान के स्वामित्व वाली और अफगान द्वारा नियंत्रित[27]"** शांति प्रक्रिया के महत्त्व पर जोर दिया है।

भारत-अफगानिस्तान संबंधों के समक्ष मुख्य चुनौतियां

- **वैचारिक मतभेद:** तालिबान की चरमपंथी धार्मिक विचारधारा **भारत के लोकतांत्रिक और पंथ-निरपेक्ष मूल्यों के विपरीत** है।
- **मानवीय चिंताएं:** ये चिंताएं विशेष रूप से महिलाओं के अधिकार तथा शिक्षा एवं स्वास्थ्य देखभाल सुविधा उपलब्ध कराने को लेकर हैं।
- **सीमित द्विपक्षीय संबंध:** हाल ही में **दिल्ली में अफगान दूतावास को बंद** कर दिया गया है। इसके अलावा, **अफगान छात्रों को वीज़ा देने से इनकार करने की वजह से संबंधों में तनाव** आ गया है।
- **क्षेत्रीय भू-राजनीति:** पाकिस्तान, अफगानिस्तान के किसी क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित किए बिना वहां अपना सामरिक प्रभाव बढ़ाने का प्रयास कर रहा है। भारत के लिए यह चिंताजनक स्थिति है।

[27] Afghan-led, Afghan-owned and Afghan-controlled

आगे की राह

- **व्यावहारिक कूटनीति अपनाने की जरूरत:** तालिबान से द्विपक्षीय वार्ता करने के साथ-साथ सार्क, शंघाई सहयोग संगठन (SCO) जैसे क्षेत्रीय मंचों पर भी उसके साथ चर्चा बढ़ानी चाहिए। इससे भारत अपनी सुरक्षा और सामरिक हितों की रक्षा कर सकता है।
- **दोनों देशों के लोगों का आपसी संपर्क:** भारत को अफगान छात्रों के लिए छात्रवृत्ति समेत अन्य सुविधाएं देना जारी रखना चाहिए। साथ ही**, अफगान लोगों में भारत के प्रति मजबूत सद्भावना का लाभ भी उठाना** चाहिए।

3.7. भारत के उत्तर-पूर्व में स्थित पड़ोसी देश: एक नज़र में (India's North-eastern Neighbours at a Glance)

भारत के उत्तर-पूर्व में स्थित पड़ोसी देश

- हाल ही में, विदेश मंत्री ने स्पष्ट किया था कि **बांग्लादेश, भूटान, म्यांमार** और **नेपाल** के साथ-साथ जापान और आसियान के सदस्य भारत के सबसे भरोसेमंद वैश्विक भागीदार हैं।

भारत का **पूर्वोत्तर क्षेत्र 5,812 कि.मी. की अंतर्राष्ट्रीय सीमा** साझा करता है।

पूर्वी सीमा के मामले में भारत के पड़ोसी देशों में **चीन, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान और म्यांमार** शामिल हैं।

भारत के लिए उत्तर-पूर्व के पड़ोसी देशों के साथ विश्वसनीय संबंधों का महत्त्व

- **भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र (NER) में विकास:** पूर्वी एशिया के साथ बेहतर व्यापारिक संबंध भारत के अल्प विकसित NER के तीव्र विकास को बढ़ावा दे सकते हैं।
- **पूर्वोत्तर क्षेत्र की सुरक्षा:** जैसे- मादक पदार्थों की तस्करी, उग्रवाद, आतंकवाद, जाली मुद्रा।
- आक्रामक चीन के बीच **भारत के प्रभाव क्षेत्र को सुरक्षित रखना और बनाए रखना।**
- **भू-राजनीतिक:** इस क्षेत्र के साथ अधिक जुड़ाव भारत को एक मजबूत **कूटनीतिक और आर्थिक आधार** प्रदान करेगा।
- **कनेक्टिविटी में सुधार: 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी'** के लिए दक्षिण-पूर्व एशिया से जुड़ना महत्वपूर्ण है।
- बांग्लादेश, वियतनाम, थाईलैंड और मलेशिया जैसे देश प्रमुख विनिर्माण केंद्र बन गए हैं। इसलिए **क्षेत्रीय और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के साथ भारत का एकीकरण** आवश्यक है।

उत्तर-पूर्व के पड़ोसी देशों के साथ संबंध सुधारने के लिए किए गए उपाय

- **एक्ट ईस्ट पॉलिसी:** इसके तहत वाणिज्य क्षेत्र में अपने दक्षिण-पूर्वी पड़ोसियों के साथ भारत के संबंधों को मजबूत करने पर बल दिया गया है।
- अपने पड़ोसियों के साथ संबंधों को बेहतर तरीके से विकसित करने के लिए **क्षेत्रीय** और **बहुपक्षीय संगठनों,** जैसे- आसियान, आसियान क्षेत्रीय मंच (ARF), पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (EAS), बिम्सटेक और इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA) **के साथ साझेदारी पर दिया गया है।**
- **कनेक्टिविटी परियोजनाएं:** भारत-म्यांमार-थाईलैंड (IMT) त्रिपक्षीय राजमार्ग, कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट (KMMTT)।

प्रमुख मुद्दे/ चिंता के विषय

- **भारत की सुरक्षा संबंधी चिंताएं:** खराब सीमावर्ती-अवसंरचना (बांग्लादेश, नेपाल, म्यांमार) और चीन जैसे देशों के साथ सीमा विवाद।
- **डेथ ट्राइएंगल (थाईलैंड, लाओस और म्यांमार) के नारकोटिक्स वेब से निकटता।**
- **पूर्वोत्तर में शरणार्थी संकट:** उदाहरण के लिए- रोहिंग्या संकट (म्यांमार), बांग्लादेश के अवैध प्रवासी।
- **त्रिपक्षीय IMT राजमार्ग जैसी कनेक्टिविटी परियोजनाओं को पूरा करने में अधिक विलंब हो रहा है।**

आगे की राह

- **व्यापारिक और आर्थिक संबंधों** को राजनीतिक एवं रणनीतिक हितों से अलग रखते हुए आगे बढ़ाना।
- **सहयोग के नए क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना:** डिजिटल प्रौद्योगिकियों, बांग्लादेश, नेपाल और भूटान के साथ अन्वेषित उत्तर-पूर्व गैस ग्रिड (NEGG) का एकीकरण करना।
- **सांस्कृतिक संबंधों का लाभ उठाना:** भारत सरकार की "बौद्ध सर्किट" पहल के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक कूटनीति, पूर्वी एशियाई देशों के साथ समन्वित होनी चाहिए।
- **सामरिक सहयोग:** विशेष रूप से समुद्री क्षेत्र में इसकी आवश्यकता है जहां चीन ने आक्रामक व्यवहार प्रदर्शित किया है।
- **अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं और मानदंडों के सृजन को बढ़ावा देना:** जैसे- अंतरिक्ष, समुद्री संबंध, जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में।

निष्कर्ष

- दक्षिण-पूर्व एशिया के प्रवेश द्वार के रूप में पूर्वोत्तर भारत की रणनीतिक अवस्थिति, महज भौगोलिक नजरिए से आगे बढ़कर भारत की विदेश नीति एवं आर्थिक विकास रणनीति का एक महत्वपूर्ण घटक बन गई है।

3.8. भारत-श्रीलंका समुद्री सीमा रेखा (India-Srilanka Maritime Border)

सुर्ख़ियों में क्यों?

श्रीलंका के मछुआरों ने श्रीलंका के जल क्षेत्र में अवैध तरीके से मछली पकड़ने को लेकर भारतीय मछुआरों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। श्रीलंकाई मछुआरों के अनुसार भारतीय मछुआरों ने श्रीलंका के लिए निर्धारित अंतर्राष्ट्रीय समुद्री सीमा रेखा (IMBL)[28] का उल्लंघन किया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- **इस समस्या के तीन परस्पर जुड़े हुए पहलू हैं:** कच्चातिवू द्वीप को लेकर दोनों देशों के बीच असहमति; श्रीलंकाई जलक्षेत्र में भारतीय मछुआरों द्वारा अवैध मत्स्यन; तथा मछली पकड़ने में उपयोग होने वाले बड़े ट्रॉलर्स (जिनसे पर्यावरण को हानि पहुंचती है)।
- इसके विपरीत, भारतीय मछुआरों का मानना है कि वे कच्चातिवू के आस-पास केवल अपने पारंपरिक समुद्री क्षेत्रों में मछली पकड़ रहे हैं। श्रीलंका अनावश्यक रूप से उनके ऊपर **अपने क्षेत्राधिकार वाले समुद्र में घुसपैठ** का आरोप लगाता है।
- भारतीय मछुआरों ने यह भी कहा है कि **जलवायु परिवर्तन और भारतीय IMBL में मत्स्य भंडार की कमी** ने उन्हें समुद्र में दूर तक जाने के लिए बाध्य किया है।
- इससे पहले 2023 में भी श्रीलंका की नौसेना ने श्रीलंकाई जलक्षेत्र में अवैध मत्स्यन के लिए 35 ट्रॉलर्स के साथ **240 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार** किया था।

अंतर्राष्ट्रीय समुद्री सीमा रेखा (IMBL) के बारे में

- **भारत-श्रीलंका अंतर्राष्ट्रीय समुद्री सीमा रेखा (IMBL):** भारत-श्रीलंका ने **1974 के समुद्री सीमा समझौते द्वारा IMBL को पाक जलडमरूमध्य में सीमांकित** किया था। इसे समुद्री कानून पर संयुक्त राष्ट्र अभिसमय (UNCLOS)[29] के सिद्धांतों के आधार पर सीमांकित किया गया था।
- **UNCLOS समुद्री सीमाओं को परिभाषित करता है:** UNCLOS के अनुसार, समुद्री सीमाओं को अक्सर समान दूरी के सिद्धांत के आधार पर परिभाषित किया जाता है। यह सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि **किसी देश की समुद्री सीमा को उसके पड़ोसी देश के तटीय क्षेत्रों से समान दूरी पर एक मध्य रेखा का पालन** करना चाहिए।
- **समुद्री सीमा स्थापित करने का औचित्य:** यह सीमा प्रत्येक देश के अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EEZ)[30], प्रादेशिक सागर[31] और अन्य समुद्री क्षेत्रों को परिभाषित करने के लिए स्थापित की गई है। इससे **समुद्री क्षेत्राधिकार संबंधी विवादों एवं संघर्षों को रोकने में मदद** मिलती है।

कच्चातिवू द्वीप का मुद्दा

- **कच्चातिवू और वेज बैंक (Wadge Bank) के बारे में**
  - कच्चातिवू श्रीलंका की समुद्री सीमा रेखा के भीतर समुद्र में **285 एकड़ का एक क्षेत्र** है।
  - यह **रामेश्वरम के उत्तर-पूर्व और श्रीलंका के डेल्फ़्ट द्वीप के दक्षिण-पश्चिम** में अवस्थित है।
  - इसका निर्माण 14वीं सदी के **ज्वालामुखी उद्गार** से हुआ था। इसकी लंबाई 1.6 कि.मी. है और इसकी चौड़ाई केवल 300 मीटर है।
  - **वेज बैंक विश्व में मछली पकड़ने के सबसे समृद्ध जलीय क्षेत्रों में से एक** है। यह **कच्चातिवू द्वीप की तुलना में समुद्र में कहीं अधिक सामरिक अवस्थिति में है।**

---

[28] International Maritime Boundary Line

[29] United Nations Convention on the Law of the Sea

[30] Exclusive Economic Zone

[31] Territorial waters

© Vision IAS

- **UNCLO के अनुच्छेद 15** में दो देशों के मध्य समुद्री सीमाओं को निर्धारित करने के लिए मध्य रेखा (Median line) का उपयोग करने से छूट प्रदान की गई है। यह संबंधित देशों को आपसी सहमति से समुद्री सीमा तय करने की अनुमति देता है।
- **1974 में भारत और श्रीलंका के बीच हुए समझौते** ने इस छूट के तहत एक आपस में सहमत समुद्री सीमा स्थापित की। परिणामस्वरूप, कच्चातिवू द्वीप श्रीलंका के समुद्री सीमा क्षेत्र में आ गया।
    - भारतीय मछुआरों को केवल आराम करने, जाल सुखाने और वार्षिक सेंट एंथनी चर्च उत्सव के लिए कच्चातिवू पर जाने की अनुमति दी गई थी।
- बाद में, **दोनों देशों के बीच 1976 में हुए समझौते के तहत कन्याकुमारी के पास अवस्थित वेज बैंक पर भारत को संप्रभु** अधिकार देकर समुद्री सीमा तय की गई।
    - विशिष्ट परिस्थितियों में सीमित संख्या को छोड़कर, श्रीलंकाई मत्स्यन जहाजों को वेज बैंक में मछली पकड़ने से प्रतिबंधित कर दिया गया था।

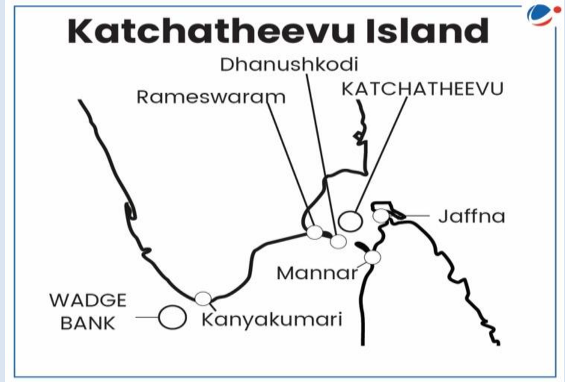

3.9. भारत-मालदीव संबंध: एक नज़र में (India- Maldives Relations at a Glance)

भारत-मालदीव संबंध

- हाल ही में, **मालदीव ने भारत के साथ हाइड्रोग्राफी समझौते को रद्द कर दिया और कोलंबो सिक्योरिटी कॉन्क्लेव की वार्षिक बैठक (2023)** से बाहर रहने का फैसला किया। हालांकि, मालदीव ने चीन की वैश्विक सुरक्षा पहल (GSI) और मालदीव-चीन रक्षा समझौते का समर्थन किया।

भारत 2023 में **मालदीव का सबसे बड़े व्यापारिक भागीदार** के रूप में उभरा है।

द्विपक्षीय व्यापार: भारत-मालदीव के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2023 में लगभग 548 मिलियन अमेरिकी डॉलर है, जो मुख्यतः भारत के पक्ष में है।

सहयोग के क्षेत्र

- **आर्थिक:** मालदीव के कर्ज को कम करने के लिए भारत ने सार्क मुद्रा विनिमय फ्रेमवर्क के तहत करेंसी स्वैप एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किए हैं।
- **कनेक्टिविटी:** ग्रेटर माले कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट (भारत द्वारा विकसित), ओपन स्काई अरेंजमेंट (2022)।
- **सुरक्षा और रक्षा:** वार्षिक रक्षा सहयोग वार्ता, सैन्य अभ्यास: **एकुवेरिन, एकाथा (Ekatha)।**
- **विकासात्मक सहायता:** हाई इम्पैक्ट कम्युनिटी डेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स योजना, इंदिरा गांधी मेमोरियल अस्पताल, मालदीव तकनीकी शिक्षा संस्थान, आदि।
- **भारत द्वारा मानवीय सहायता:** 2004 की सुनामी और दिसंबर 2014 में माले में जल संकट के दौरान सहायता {ऑपरेशन नीर (NEER)}, मालदीव में खसरे के प्रकोप को रोकने के लिए टीका, कोविड-19 वैश्विक महामारी के बाद त्वरित व व्यापक सहायता आदि।

भारत के लिए मालदीव का महत्त्व

- **भू-सामरिक:** यह भारत की **'नेबरहुड फर्स्ट'** नीति और सागर (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और संवृद्धि) विज़न का एक महत्वपूर्ण सदस्य है।
- **भू-आर्थिक क्षेत्र:** भारत का लगभग 50 प्रतिशत विदेशी व्यापार और उसका 80 प्रतिशत ऊर्जा आयात समुद्री संचार मार्गों (SLOCs) के माध्यम से ही होता है। इन संचार मार्गों की सुरक्षा के लिए मालदीव की भूमिका महत्वपूर्ण है।
- **चीन के प्रभाव को संतुलित करना:** हिंद महासागर क्षेत्र में तथा क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को बढ़ावा देना।
- **निवल सुरक्षा प्रदाता की भूमिका:** मालदीव पश्चिमी हिंद महासागर चोक पॉइंट्स तथा पूर्वी हिंद महासागर चोक पॉइंट्स के मध्य एक 'टोल गेट' की भांति स्थित है।
- **क्षेत्रीय और बहुपक्षीय सहयोग:** सार्क, दक्षिण एशिया उपक्षेत्रीय आर्थिक सहयोग (SASEC), IORA और हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी (IONS) जैसे मंचों के माध्यम से।

चुनौतियां

- **मालदीव का उच्च व्यापार घाटा**
- **चीन की भूमिका:**
    - मालदीव की चीन के साथ बढ़ती निकटता और BRI का समर्थन, भारत के प्रभाव क्षेत्र को कमजोर कर रहा है।
- **घरेलू राजनीति:** इंडिया आउट अभियान, बढ़ती कट्टरता और चरमपंथी हिंसा, इस्लामिक स्टेट जैसे आतंकवादी समूह एवं पाकिस्तान स्थित जिहादी समूह।
- **पर्यटन:** राजनयिक तनाव के बाद भारत के पर्यटकों की संख्या में 40-50% की कमी आई है।

आगे की राह

- विश्वास निर्माण के लिए सभी स्तरों पर खुला और पारदर्शी संचार करना।
- **सुरक्षा सहयोग को मजबूत करना:** उदाहरण के लिए- कोलंबो सिक्योरिटी कॉन्क्लेव
- **संप्रभुता और गैर-हस्तक्षेप का सम्मान:** उदाहरण के लिए- गुजराल सिद्धांत
- मुक्त व्यापार समझौते के विकल्प को तलाशना।
- दोनों देशों के लोगों के बीच संपर्क को बढ़ाना।

निष्कर्ष

- भारत और मालदीव की अवस्थिति एक-दूसरे के सामरिक हितों को सर्वोत्तम तरीके से पूरा कर सकती है। अपनी नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी के अनुसार, भारत स्थिर, समृद्ध और शांतिपूर्ण मालदीव के लिए एक प्रतिबद्ध विकास भागीदार बना हुआ है।

3.9.1. मालदीव चीन सैन्य समझौता (Maldives China Military pact)

सुर्ख़ियों में क्यों?

मालदीव ने चीन के साथ सैन्य समझौते पर हस्ताक्षर करके भारत से और अधिक दूरी बनाई।

अन्य संबंधित तथ्य

- मालदीव का यह निर्णय इसके राष्ट्रपति की घोषणा से मेल खाता है। इस घोषणा में **"मालदीव में कोई भारतीय सैनिक नहीं रहेगा"** की बात कही गई है।
- **मालदीव में चीन की बढ़ती सक्रियता: चीन मालदीव में तेजी से अपनी उपस्थिति का विस्तार कर रहा है।**
    - **मालदीव में चीन की बढ़ती सक्रियता**
    - **चीन मालदीव में तेजी से अपनी उपस्थिति का विस्तार कर रहा है।**

चीन के प्रभाव को कम करने के लिए भारत द्वारा उठाए गए कदम

- **रणनीतिक साझेदारी:** भारत ने **संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया** जैसे समान विचारधारा वाले देशों तथा अन्य क्षेत्रीय साझेदारों के साथ **रणनीतिक भागीदारी समझौतों पर हस्ताक्षर** किए हैं।
- **बहुपक्षीय संबंध:** हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी (IONS) और इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA) जैसे मंचों के माध्यम से सहयोग को बढ़ाया जा रहा है।
- **अधिक निगरानी और खुफिया जानकारी:** समुद्री खतरों और घटनाक्रमों की प्रभावी ढंग से निगरानी करना और उचित प्रतिक्रिया देना, उदाहरण के लिए- भारतीय नौसेना मालदीव की ओर जाने वाले हिंद महासागर में चीनी जहाज़ पर नज़र रखेगी।
- **राजनयिक आउटरीच:** चीन के बढ़ते प्रभाव के खतरों के बारे में विश्व के देशों को अवगत कराया जा रहा है।

3.10. भारत-दक्षिण एशिया (India-South Asia)

3.10.1. दक्षिण एशिया उप-क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग (South Asia Sub Regional Economic Cooperation: SASEC)

सुर्ख़ियों में क्यों?

प्रधान मंत्री ने **SASEC कॉरिडोर कनेक्टिविटी** के हिस्से के रूप में **असम** में कई परियोजनाओं की आधारशिला रखी।

अन्य संबंधित तथ्य

- इसमें 3400 करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाएं शामिल हैं। इन परियोजनाओं के तहत 38 पुलों सहित 43 सड़कों को अपग्रेड किया जाएगा। इनमें चार लेन की परियोजनाएं भी शामिल हैं, जो **ईटानगर** से कनेक्टिविटी में सुधार करेंगी और क्षेत्र के समग्र आर्थिक विकास को बढ़ावा देंगी।
- **SASEC की स्थापना 2001 में हुई थी।** ADB इसके सचिवालय के रूप में कार्य करता है।
    - इसका उद्देश्य **दक्षिण एशिया में अंतर-क्षेत्रीय व्यापार और सहयोग को बढ़ावा देना है।**
    - **सदस्य:** बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, म्यांमार, नेपाल और श्रीलंका।.

भारत के लिए SASEC का महत्त्व

- **दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच कनेक्टिविटी:** म्यांमार में बन रहे सड़क गलियारे भारत को दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच एक कनेक्टिविटी प्रदान करेंगे।
- **पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण:** म्यांमार में बंदरगाहों के विकास के साथ भूमि से घिरे उत्तर पूर्वी क्षेत्र के लिए अतिरिक्त प्रवेश द्वार प्राप्त होगा।

 © Vision IAS

- **आर्थिक संवृद्धि की व्यापक संभावना:** भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र, बांग्लादेश और म्यांमार के बीच मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी के विकास से उप-क्षेत्रों में तीव्र आर्थिक संवृद्धि की संभावना है।
    - **ग्रेट एशियन हाईवे** का हिस्सा होने के कारण यह कनेक्टिविटी परियोजना वैश्विक स्तर पर भारत की स्थिति को मजबूत करेगी। यह हाईवे **एशिया और प्रशांत के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक आयोग (UNESCAP)** के तहत विकसित किया जा रहा है।
    - SASEC ने **भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग** के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो **मणिपुर के मोरेह से म्यांमार होते हुए थाईलैंड के माई सॉट** तक जाएगा।

SASEC के समक्ष चुनौतियां

- दक्षिण एशिया में **प्रभावी सीमा-पार परिवहन अवसंरचना की कमी** ने व्यापार की संभावनाओं को कम किया है।
- **आधुनिक स्वचालित सीमा संबंधी प्रक्रियाओं की कमी।**
- **दक्षिण एशिया में अंतर-क्षेत्रीय व्यापार संभावना का कम उपयोग** किया गया है।
- **लालफीताशाही**

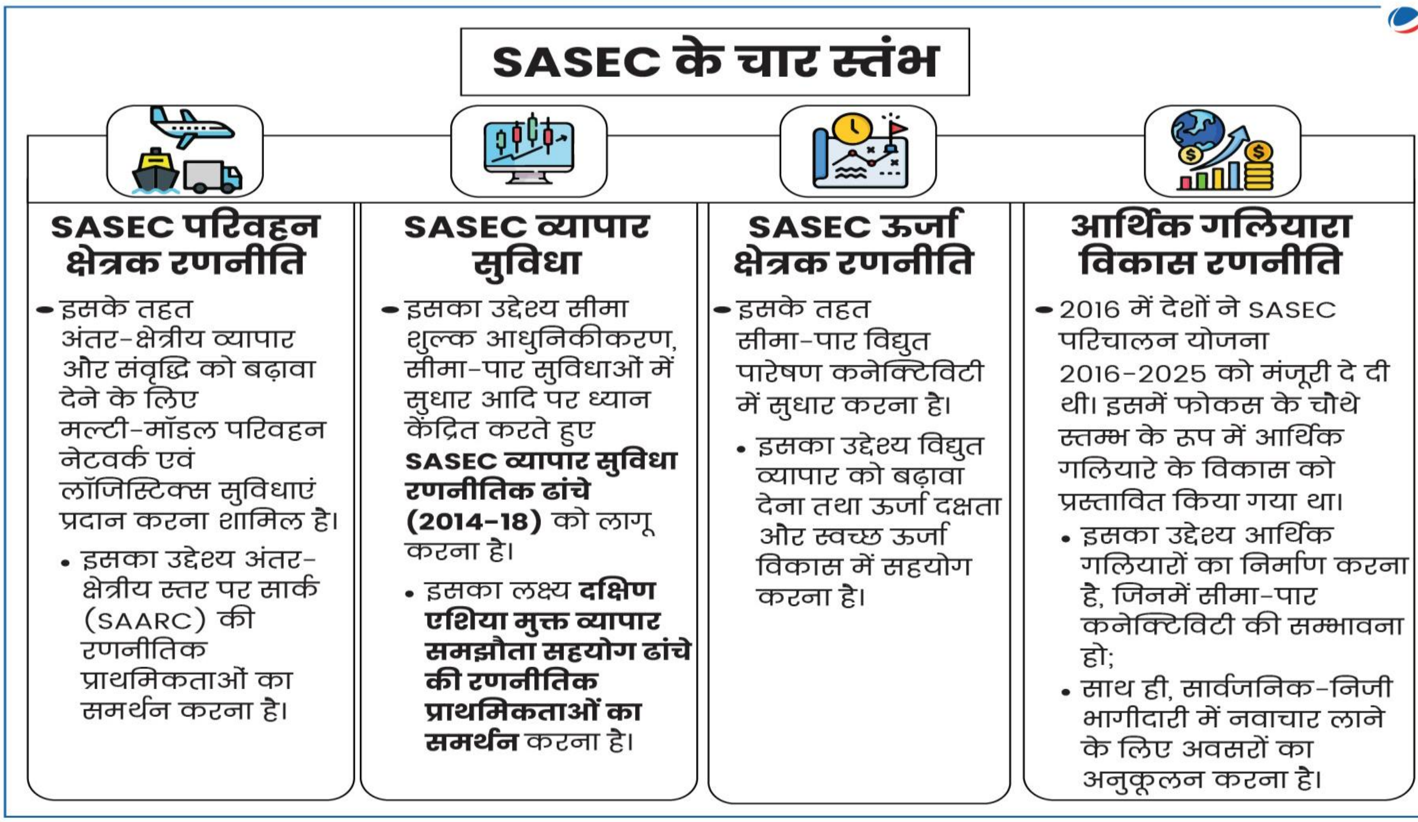

आगे की राह

- **मल्टी-मॉडल ट्रांसपोर्ट कनेक्टिविटी के माध्यम से क्षेत्रीय परिवहन और व्यापार सुविधा की दक्षता में सुधार** होगा। इससे दक्षिण एशिया में और विश्व के बाकी हिस्सों के साथ भी अंतर-क्षेत्रीय व्यापार में वृद्धि हो सकती है।
- अंतर्राष्ट्रीय मानकों को पूरा करने के लिए सीमा-पार व्यापार संबंधी प्रक्रियाओं का आधुनिकीकरण और अनुकूलन करना चाहिए। साथ ही, **सीमा-पार व्यापार संबंधी चेक पोस्ट्स पर अवसंरचना को उन्नत करने** को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- व्यापार में लगने वाले समय को कम करने और व्यापार को सस्ता व तेज बनाने के लिए **नीतिगत, विनियामक एवं संस्थागत सुधार लागू** करने चाहिए।
- **क्षेत्रीय ऊर्जा सहयोग** बाह्य आघात के दौरान ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत कर सकता है। साथ ही, नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों तक पहुंच एवं विकास में भी सुधार कर सकता है।

- आपूर्ति श्रृंखला, व्यापार और लॉजिस्टिक्स क्षमताओं से संबंधित **मौजूदा मूल्य श्रृंखलाओं को मजबूत** करना चाहिए और उन्हें पड़ोसी देशों में मूल्य श्रृंखलाओं से जोड़ना चाहिए।
- दक्षिण एशिया में औद्योगिक उत्पादकता और जीवन स्तर को बढ़ावा देने के लिए **शहरीकरण एवं औद्योगीकरण को एकीकृत और समन्वयित करना आवश्यक** है।

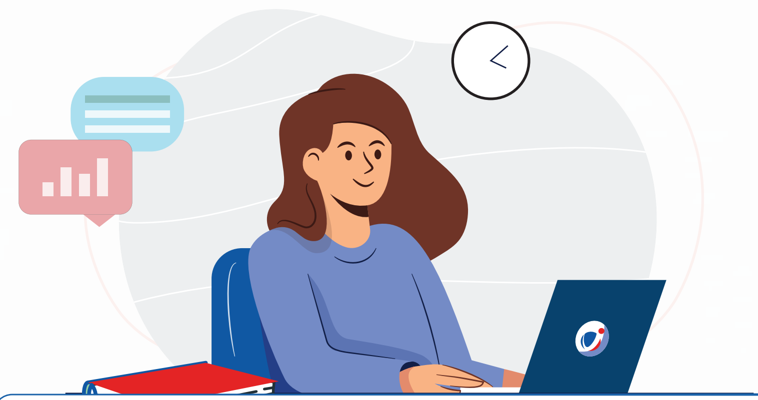

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

CSAT में महारत: UPSC प्रीलिम्स के लिए एक रणनीतिक रोडमैप

UPSC प्रीलिम्स सिविल सेवा परीक्षा का पहला एवं अत्यधिक प्रतिस्पर्धी चरण है। प्रीलिम्स एग्जाम में ऑब्जेक्टिव प्रकार के दो पेपर होते हैं: सामान्य अध्ययन (GS) और सिविल सर्विसेज एप्टीट्यूड टेस्ट (CSAT)। ये दोनों पेपर अभ्यर्थियों के ज्ञान, समझ और योग्यता का आकलन करते हैं।

पिछले कुछ सालों में CSAT पेपर के कठिन हो जाने से इसमें 33% का क्वालीफाइंग स्कोर प्राप्त करना भी कई अभ्यर्थियों के लिए चुनौतीपूर्ण हो गया है। अतः इस पेपर को क्वालीफाइ करने के लिए अभ्यर्थियों को टाइम मैनेजमेंट के साथ-साथ CSAT में कठिनाई के बढ़ते स्तर के साथ सामंजस्य बिठाना और GS पेपर के साथ संतुलन बनाए रखना बहुत जरूरी है। साथ ही, इसमें गुणवत्तापूर्ण प्रैक्टिस मटेरियल से भी काफी मदद मिलती है। ये सारी बातें एक सुनियोजित रणनीति के महत्त्व को रेखांकित करती हैं।

इंस्टैंट पर्सनलाइज्ड मेंटरिंग के लिए **QR कोड को स्कैन करें**

CSAT की तैयारी के लिए रणनीतिक रोडमैप

शुरुआत में स्व-मूल्यांकन: सर्वप्रथम पिछले वर्ष के CSAT के पेपर को हल करके हमें अपना मूल्यांकन करना चाहिए। इससे हमें अपने मजबूत एवं कमजोर पक्षों की पहचान हो सकेगी और हम उसी के अनुरूप अपनी तैयारी में सुधार कर सकेंगें।

स्टडी प्लान: अधिकतम अंक प्राप्त कर सकने वाले टॉपिक पर फोकस करते हुए एवं विश्वसनीय अध्ययन स्रोतों का चयन कर, एक व्यवस्थित स्टडी प्लान तैयार करें।

रेगुलर प्रैक्टिस एवं पोस्ट-टेस्ट एनालिसिस: पिछले वर्ष के पेपर एवं मॉक टेस्ट को हल करके तथा उनका विश्लेषण करके हम एग्जाम के पैटर्न एवं किस प्रकार के प्रश्न पूछे जा रहे हैं, इससे परिचित हो सकते हैं। इस अप्रोच से CSAT के व्यापक सिलेबस को प्रभावी ढंग से कवर करने के लिए एक बेहतर रणनीति तैयार करने में मदद मिलेगी।

व्यक्तिगत मेंटरशिप प्राप्त करें: CSAT की बेहतर तैयारी के लिए अपने अनुरूप रणनीति विकसित करने हेतु मेंटर से जुड़ें। इससे आप अपने स्ट्रेस को दूर कर सकेंगे और साथ ही फोकस्ड एवं संतुलित तैयारी कर पाएंगे।

रीजनिंग: क्लॉक, कैलेंडर, सीरीज एंड प्रोग्रेशन, डायरेक्शन, ब्लड-रिलेशन, कोडिंग-डिकोडिंग एवं सिलोगिज़्म जैसे विभिन्न प्रकार टॉपिक के प्रश्नों का अभ्यास करके अपने तार्किक और विश्लेषणात्मक क्षमताओं को बेहतर बनाएं।

एग्जाम के पैटर्न को समझने एवं प्रश्नों को हल करने के लिए स्टेप-बाय-स्टेप अप्रोच को विकासित करने पर ध्यान केंद्रित करें।

गणित एवं बेसिक न्यूमेरेसी: बेसिक कॉन्सेप्ट के रिवीजन एवं रेगुलर प्रैक्टिस के जरिए मूलभूत गणितीय अवधारणाओं पर अपनी पकड़ को मजबूत करें।

तेजी से कैल्कुलेशन करने के लिए शॉर्टकट और मेंटल मैथ टेक्निक का उपयोग करें।

रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन: नियमित रूप से अखबार पढ़कर अपनी पढ़ने की गति और समझ में सुधार करें। समझ बढ़ाने के लिए पैराग्राफ को संक्षेप में लिखने का अभ्यास करें और उसमें निहित मुख्य विचारों का पता लगाएं।

VisionIAS के CSAT क्लासरूम प्रोग्राम से जुड़कर अपनी CSAT की तैयारी को मजबूत बनाएं। इस कोर्स को अभ्यर्थियों में बेसिक कॉन्सेप्ट विकसित करने और उनकी प्रॉब्लम-सॉल्विंग क्षमताओं एवं क्रिटिकल थिंकिंग को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस कोर्स की मुख्य विशेषताएं हैं- ऑफ़लाइन/ ऑनलाइन और रिकॉर्ड की गई कक्षाएं, वन-टू-वन मेंटरिंग सपोर्ट और ट्यूटोरियल्स के जरिए नियमित प्रैक्टिस। यह आपको CSAT में महारत हासिल करने की राह पर ले जाएगा।

रजिस्टर करने और ब्रोशर डाउनलोड करने के लिए **QR कोड को स्कैन करें**

हमारे ऑल इंडिया CSAT टेस्ट सीरीज एवं मेंटरिंग प्रोग्राम के साथ अपनी तैयारी को और बेहतर बनाएं, जिसमें शामिल हैं:

- UPSC CSAT के सिलेबस का विस्तार से कवरेज
- वन-टू-वन मेंटरिंग
- फ्लेक्सिबल टेस्ट शेड्यूल और इनोवेटिव असेसमेंट सिस्टम
- प्रत्येक टेस्ट पेपर की विस्तार से व्याख्या
- लाइव ऑनलाइन/ ऑफ़लाइन टेस्ट डिस्कशन एवं पोस्ट टेस्ट एनालिसिस

VisionIAS से जुड़कर सिविल सेवाओं में शामिल होने की अपनी यात्रा शुरू करें, जहां हमारी विशेषज्ञता और सपोर्ट सिस्टम से आपके सपने पूरे हो सकते हैं।

4. भारत को शामिल करने वाले और/ या भारत के हितों को प्रभावित करने वाले द्विपक्षीय समूह तथा समझौते (Bilateral Grouping and Agreements Involving India and/or Affecting India)

4.1. पश्चिम एशियाई संकट (West Asia Crisis)

4.1.1. अब्राहम समझौता (Abraham Accords)

सुर्ख़ियों में क्यों?

अब्राहम समझौते पर हस्ताक्षर होने के तीन वर्ष पूरे हुए।

अब्राहम समझौते के बारे में

- अब्राहम समझौता **संयुक्त राज्य अमेरिका (USA), संयुक्त अरब अमीरात (UAE)** और **इज़रायल** के बीच एक सामूहिक समझौता है। इस समझौते पर **सितंबर, 2020** में हस्ताक्षर किए गए थे।
    - बाद में **सूडान, बहरीन** और **मोरक्को** भी इस समझौते में शामिल हो गए थे।
- **इस समझौते के दो भाग हैं: द्विपक्षीय समझौता और मध्य पूर्व शांति के लिए घोषणा-पत्र।**
    - तीन अब्राहमिक धर्मों और पूरी मानवता के बीच शांति के लिए अंतर-धार्मिक संवाद को बढ़ावा देना।
    - यह मध्य-पूर्व में सभी धर्मों और राष्ट्रीयताओं के लोगों के बीच सह-अस्तित्व, समझ एवं सम्मान के लिए भी प्रयास करता है।

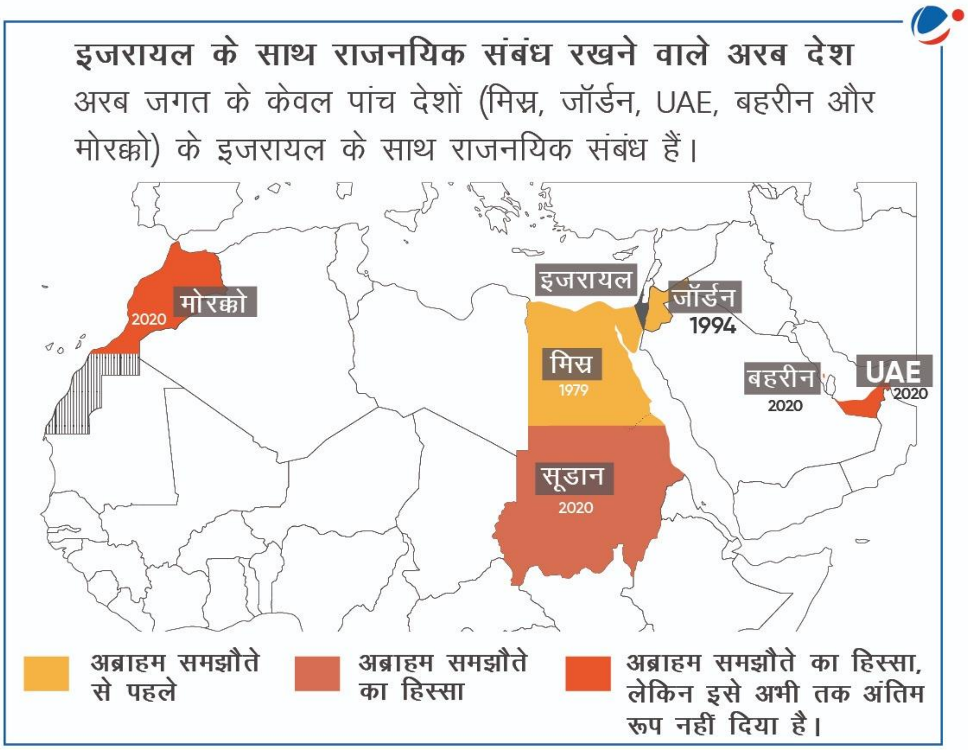

- यह समझौता **इज़रायल और अरब देशों के बीच संबंधों को सामान्य बनाने का प्रतीक** है। इससे पहले 1994 में जॉर्डन ने इज़रायल के साथ इस तरह के समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।

अब्राहम समझौते का महत्त्व

- **स्थिरता बनाए रखने में:** कई विशेषज्ञों का मानना है कि अब्राहम समझौते को फारस की खाड़ी में स्थिरता को बढ़ाने और संघर्ष को रोकने के लिए एक सामूहिक सुरक्षा फ्रेमवर्क तैयार करने के लिए डिजाइन किया गया है।
- **इज़रायल-फिलिस्तीन मुद्दे का समाधान:** अब्राहम समझौता, **अरब देशों और इज़रायल के बीच बातचीत का रास्ता खोलकर "टू स्टेट सॉल्यूशन"** के मुद्दे को आगे बढ़ा सकता है।
- **आर्थिक महत्त्व:** 2021-2022 के बीच इज़रायल और अन्य पश्चिम एशियाई देशों के बीच व्यापार में 74 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।
- **धार्मिक महत्त्व:** अब्राहम समझौते ने इज़रायल में **ऐतिहासिक धार्मिक स्थलों, जैसे- यरूशलेम में अल-अक्सा मस्जिद** की यात्रा करने हेतु अन्य समुदायों को भी अनुमति दी है।
- **प्रौद्योगिकी में सहयोग:** उदाहरण के लिए- इज़रायल, UAE और जॉर्डन के बीच **'प्रॉस्पेरिटी ग्रीन एंड ब्लू एग्रीमेंट'** किया गया है।

- **शिक्षा:** संयुक्त अरब अमीरात के कई छात्रों ने इज़रायली विश्वविद्यालयों में नामांकन करवाया है। बहरीन ने भी साझा शैक्षणिक गतिविधियों की संभावनाओं को अपनाया है।
- **इस समझौते का भारत के लिए महत्त्व**
    - **क्षेत्रीय सहयोग:** इस समझौते ने **क्षेत्रीय और बहुराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने** हेतु एक आधार तैयार किया है। इसका एक सटीक उदाहरण **I2U2 (इज़रायल, भारत, संयुक्त अरब अमीरात और संयुक्त राज्य अमेरिका)** समूह की स्थापना है।
    - **आर्थिक अवसर:** इज़रायल और अरब देशों के बीच संबंधों के सामान्य होने से भारत के लिए नए आर्थिक अवसर पैदा हो सकते हैं। **उदाहरण के लिए-** खाड़ी में रहने वाले प्रवासी भारतीयों को अब संयुक्त अरब अमीरात/ बहरीन और इज़रायल के बीच सीधी उड़ानों की सुविधा प्रदान की गई है।

निष्कर्ष

अब्राहम समझौता क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ावा देता है, किंतु **इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष समझौते के आगे भी जारी रहने में एक बहुत बड़ी बाधा उत्पन्न करता** है। मध्य पूर्व में स्थायी बहुपक्षीय सहयोग और सामूहिक सुरक्षा के लिए इस लम्बे विवाद का समाधान करना बहुत जरूरी है।

4.1.2. इज़रायल-हमास युद्ध (Israel-Hamas War)

सुर्ख़ियों में क्यों?

7 अक्टूबर को हमास के लड़ाकों ने **"ऑपरेशन तूफान अल-अक्सा (अल-अक्सा फ्लड)"** के तहत इज़रायल पर अचानक एक बड़ा हमला कर दिया था। इज़रायल ने इस हमले के प्रतिशोध में हमास के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी।

अन्य संबंधित तथ्य

- हमास ने यह हमला **योम किप्पुर युद्ध की 50वीं वर्षगांठ पर 'ऑपरेशन अल-अक्सा स्टॉर्म'** के तहत किया है। **वर्ष 1973 का योम किप्पर या रमजान युद्ध चौथा अरब-इजरायल** युद्ध था।
- **योम किप्पुर युद्ध (चौथा अरब-इज़राइल युद्ध) अक्टूबर 1973 में हुआ था।** इसमें **मिस्र और सीरिया** के नेतृत्व में अरब राष्ट्रों के एक गठबंधन ने **यहूदियों के पवित्र दिन 'योम किप्पुर दिवस' पर इज़रायल पर एक आश्चर्यजनक एवं संयुक्त हमला** कर दिया था।

इज़रायल-फ़िलिस्तीन संघर्ष की पृष्ठभूमि

- **इजराइल-फिलिस्तीन संघर्ष,** 1948 से पहले साझा मातृभूमि पर प्रतिस्पर्धी दावों से उत्पन्न हुआ है।
- फिलीस्तीनी (अरब) और इज़रायली (यहूदी) समान रूप से **जॉर्डन नदी एवं भूमध्य सागर के बीच के क्षेत्र** पर अपना-अपना दावा करते हैं।
- इस संघर्ष का केंद्र बिंदु **यरुशलेम शहर** है। **यरुशलेम** शहर **तीन प्रमुख इब्राहीम धर्मों (यहूदी, इस्लाम और ईसाई)** के लिए अत्यधिक महत्त्व रखता है।

- यरुशलेम शहर में मौजूद विवादित स्थल-
  - **अल-अक्सा मस्जिद:** यह इस्लाम धर्म में **तीसरा** सबसे पवित्र स्थल माना जाता है।
  - **पश्चिमी दीवार:** यह सबसे पवित्र **यहूदी** स्थल है।
  - **चर्च ऑफ द होली सेपल्कर:** यह चर्च ईसाई धार्मिक मान्यताओं के केंद्र में है।

पश्चिम एशिया में अस्थिरता के क्या प्रभाव हैं?

भारत पर प्रभाव	वैश्विक स्तर पर प्रभाव
➤ अलग–अलग हितों वाले देशों के साथ संलग्नता के कारण **भारत के कूटनीतिक और रणनीतिक संतुलन का परीक्षण हो सकता है। जैसे ईरान–रूस–चीन धुरी का उदय।**	➤ **राजनयिक उपलब्धियां प्रभावित** हो सकती हैं। जैसे– अब्राहम एकॉर्ड, इजरायल–सऊदी अरब संबंधों में सुधार आदि पर प्रभाव।
➤ **समुद्री सुरक्षा चुनौतियों में ड्रोन हमले, अपहरण** (लाल सागर में हूती विद्रोहियों के हमले) आदि शामिल हैं। ये भारत के समुद्री क्षेत्र में **पोत परिवहन की स्वतंत्रता** को प्रभावित करते हैं।	➤ संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम के जहाजों पर हमलों के कारण **हिंद–प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा संबंधी चुनौतियां बढ़** सकती हैं।
➤ मध्य–पूर्व क्षेत्र में प्रवासी **भारतीयों की सुरक्षा** चिंता का विषय बन सकता है।	➤ **हथियारों की स्पर्धा या परमाणु हथियारों की प्राप्ति के लिए देशों के बीच प्रतिस्पर्धा** से वैश्विक अस्थिरता की समस्या पैदा हो सकती है।
➤ **ऊर्जा सुरक्षा के समक्ष खतरा उत्पन्न** हो सकता है, क्योंकि भारत कच्चे तेल के आयात पर अत्यधिक निर्भर है। भारत कच्चे तेल का लगभग **85 प्रतिशत** आयात करता है, जबकि 50 प्रतिशत गैस का आयात करता है।	➤ **वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव:** तेल की उच्च कीमतों के कारण खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ सकती हैं। इससे कई देशों में **खाद्य असुरक्षा संबंधी समस्या में वृद्धि** हो सकती है। अर्थव्यवस्थाओं के डाउनग्रेड की भावना के कारण दुनिया भर में **निवेश में कमी** हो सकती है।
➤ **भारत–मध्य पूर्व–यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC)** जैसी **अवसंरचनात्मक परियोजनाओं के समय से पूरा होने में देरी** हो सकती है।	➤ जान–माल की हानि, जबरन विस्थापन और युद्ध अपराध की घटनाओं के कारण **अंतर्राष्ट्रीय मानवीय संकट** की स्थिति पैदा हो सकती है। उदाहरण के लिए– रफाह में इजरायल का हमला।
➤ **भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव: वैश्विक समुद्री व्यापार और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान से वस्तुओं एवं ईंधन की कीमतों में वृद्धि** हो सकती है। मुद्रास्फीति दर, फार्मा निर्यात, व्यापार संतुलन, विदेशी मुद्रा भंडार, शेयर बाजार, रुपये के मूल्य के साथ–साथ संपूर्ण अर्थव्यवस्था पर **नकारात्मक प्रभाव** पड़ सकता है। **शिपिंग लागत और बीमा प्रीमियम में वृद्धि** हो सकती है।	➤ संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसी **अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका और प्रासंगिकता पर सवाल उठने** लग जाएंगे।

पश्चिम एशिया में स्थिरता लाने के उपाय

- **तुरंत लागू किए जाने वाले उपाय:**
  - इजरायल और फिलिस्तीन, दोनों को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) द्वारा पारित संकल्प 2728 के माध्यम से रखी गई मांगों को पूरा करना चाहिए, जिसमें गाजा में "तत्काल" युद्ध-विराम का आह्वान किया गया है।
  - **इस संकल्प में तीन मांगें की गई हैं:**
    - तत्काल और स्थायी **युद्धविराम;**
    - **सभी बंधकों की** तत्काल और बिना शर्त रिहाई; और
    - सम्पूर्ण गाजा पट्टी में **मानवीय सहायता को पहुँचाने में तेजी लाने** एवं **नागरिकों की सुरक्षा को मजबूत** करने की तत्काल आवश्यकता।
- **दीर्घकालिक उपाय:**
  - हथियार नियंत्रण और सुरक्षा वार्ता के माध्यम से **निर्देशात्मक फ्रेमवर्क एवं प्रक्रिया का निर्माण** करना चाहिए तथा क्षेत्रीय **"व्यापक विनाश के हथियार मुक्त क्षेत्र"** की घोषणा करनी चाहिए। इससे वि-सैन्यीकरण को बढ़ावा मिलेगा।

- **दीर्घकालिक सुरक्षा, शांति और स्थिरता के लिए द्वि-राष्ट्र सिद्धांत के आधार पर इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष का समाधान करना: संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने टिप्पणी की थी कि,** "इजरायलियों को सुरक्षा के लिए **अपनी वैध जरूरतों को सुनिश्चित करने पर काम करना चाहिए**, और फिलिस्तीनियों को **एक स्वतंत्र देश के लिए अपनी वैध आकांक्षाओं को साकार** करने पर काम चाहिए।"
- **भारत** इस क्षेत्र में शांति लाने वाले एक नेट सिक्योरिटी प्रोवाइडर के रूप में **उभर सकता** है।

निष्कर्ष

इजराइल-हमास विवाद को सुलझाने के लिए एक व्यापक संघर्ष समाधान रूपरेखा को अपनाने की आवश्यकता है जो संरचनात्मक हिंसा **(जैसे- 7 अक्टूबर, 2023 को आतंकवादी हमला)**, क्षेत्रीय विवाद **(जैसे- पश्चिमी तट में बस्तियों का अतिक्रमण)** और मानवीय संकट **(जैसे- गाजा में वर्तमान संकट)** का समाधान करने में सक्षम हो। इस क्षेत्र में स्थायी शांति-व्यवस्था के लिए विश्वास-निर्माण उपायों और बहुपक्षीय कूटनीतिक भागीदारी के साथ प्रभावी मध्यस्थता की आवश्यक है।

इज़रायल और अरब राष्ट्रों के बीच ऐतिहासिक शांति समझौता

- **कैम्प डेविड समझौता (1978):** यह समझौता **अमेरिका** की मध्यस्थता में **मिस्र और इज़रायल** के बीच हुआ था। इस समझौते ने **दोनों देशों के बीच एक ऐतिहासिक शांति संधि को संपन्न** किया।
- **ओस्लो समझौता (1993):** यह समझौता **इज़रायल और फ़िलिस्तीन मुक्ति संगठन (PLO)** के बीच हुआ था। इस समझौते ने **वेस्ट बैंक के प्रशासनिक मामलों के प्रबंधन के लिए फ़िलिस्तीनी प्राधिकरण** की स्थापना की थी।
  - बदले में, PLO ने टू-स्टेट समाधान के आधार पर **इज़रायल को मान्यता** प्रदान की।
- **जॉर्डन-इज़रायल शांति संधि (1994):** इस संधि के बाद जॉर्डन (मिस्र के बाद) इज़रायल के साथ शांति स्थापित करने वाला **दूसरा अरब देश** बन गया। इस संधि के माध्यम से क्षेत्रीय विवादों को सुलझाया गया तथा जॉर्डन और इज़रायल के बीच **राजनयिक संबंधों व आर्थिक सहयोग** को शुरू किया गया।
- **अरब शांति पहल (2002):** इस पहल को **सऊदी अरब** ने प्रस्तावित किया था। इसमें **इज़रायल के साथ संबंधों को सामान्य** करने की पेशकश की गई थी। इसके लिए इज़रायल को फ़िलिस्तीनी स्टेटहुड समझौते पर हस्ताक्षर करने थे और 1967 में उसके द्वारा कब्जा किए गए क्षेत्रों से पूरी तरह से हटना था।
- **अब्राहम समझौता (2020):** इस समझौते ने 1994 में जॉर्डन के बाद इज़राइल और किसी अन्य अरब देश के बीच राजनयिक संबंधों को सामान्य करने का पहला कदम रखा।

4.1.3. नागोर्नो-काराबाख क्षेत्र (Nagorno-Karabakh Region)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, अजरबैजान ने नागोर्नो-काराबाख में **"आतंकवाद-रोधी"** एक सैन्य अभियान शुरू कर इस क्षेत्र पर पूर्ण नियंत्रण हासिल करने का दावा किया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- इससे पहले दिसंबर, 2022 में अजरबैजान ने **लाचिन कॉरिडोर** को बंद कर दिया था। इससे नागोर्नो-काराबाख में खाद्य पदार्थ, ईंधन और पीने के पानी सहित आवश्यक वस्तुओं की भारी कमी हो गई थी।
  - **लाचिन कॉरिडोर** 5 किलोमीटर लंबा एक गलियारा है। यह नागोर्नो-काराबाख कॉन्क्लेव को आर्मेनिया से जोड़ता है।

नागोर्नो-काराबाख कॉन्क्लेव के बारे में

- नागोर्नो-काराबाख एक **पर्वतीय क्षेत्र** है। इस क्षेत्र पर आर्मेनिया और अजरबैजान दोनों देश अपना-अपना दावा करते हैं।
- हालांकि, इस क्षेत्र की **1.2 लाख आबादी** मुख्यतः आर्मेनियाई मूल की है। यहां के आर्मेनियाई मूल के लोगों का आर्मेनिया के साथ घनिष्ठ सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक संबंध है।
- **आर्मेनिया और अजरबैजान के बीच युद्ध:**
  - **प्रथम युद्ध:** नागोर्नो-काराबाख पर **तनाव का पहला दौर 1988** में शुरू हुआ। जब इसकी **क्षेत्रीय विधायिका ने एक प्रस्ताव पारित करके** भौगोलिक रूप से अजरबैजान के भीतर स्थित होने के बावजूद **आर्मेनिया में शामिल होने के अपने इरादे की घोषणा** कर दी।

- 1994 में, **रूस** की मध्यस्थता से इस क्षेत्र में युद्ध विराम लागू हुआ। इसे **बिश्केक प्रोटोकॉल** के नाम से जाना जाता है।
- इस प्रोटोकॉल के तहत **स्टेपानाकर्ट** में एक स्व-घोषित सरकार के गठन के बाद **नागोर्नो-काराबाख को वास्तव में स्वतंत्रता** प्रदान कर दी गई।

  - **द्वितीय युद्ध:** यह 2020 में शुरू हुआ था। इसमें अजरबैजान ने नागोर्नो-काराबाख के आस-पास के क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया था।
    - एक बार फिर से रूस की मध्यस्थता में एक समझौता हुआ। हालांकि,अजरबैजान द्वारा और अधिक रियायत की मांग किए जाने के कारण कोई शांति समझौता नहीं हो पाया।
  - नागोर्नो-काराबाख गणराज्य **औपचारिक रूप से समाप्त हो चुका है।**

- **इस क्षेत्र में शांति बनाए रखने के लिए की गई पहलें:**
  - **मिन्स्क समूह:** OSCE[32] ने 1990 के दशक की शुरुआत में **मिन्स्क समूह** का गठन किया था। इसे रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका और फ्रांस की सह-अध्यक्षता में गठित किया गया था। इसका उद्देश्य नागोर्नो-काराबाख के लिए एक शांतिपूर्ण समाधान खोजना है।
    - **मिन्स्क समूह द्वारा प्रस्तुत मैड्रिड सिद्धांत** के तहत सुझाव दिया गया है कि अजरबैजान को काराबाख के सात जिलों पर नियंत्रण दिया जाए और इस क्षेत्र को स्वशासन प्रदान किया जाए, आदि।
    - हालांकि, **2011** में मैड्रिड सिद्धांत में संशोधन के बाद भी इसे स्वीकार नहीं किया गया।

इस क्षेत्र में भारत के हित

- **कनेक्टिविटी:** आर्मेनिया **अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे (INSTC)**[33] में एक प्रमुख भागीदार देश है।
- **भू-राजनीतिक हित:** 2017 में तुर्की, अजरबैजान और पाकिस्तान ने सुरक्षा सहयोग स्थापित किया था।
- **व्यापार:** भारत का **आर्मेनिया** के साथ व्यापार 2022-2023 में **134.1 मिलियन अमेरिकी डॉलर** है, जबकि भारत का **अजरबैजान** के साथ व्यापार **2022-23 में 1.882 बिलियन अमेरिकी डॉलर** है।

निष्कर्ष

विवादों के समाधान के लिए राजनयिक वार्ता एक प्रभावी तरीका हो सकता है। मिन्स्क समूह भारत-बांग्लादेश एन्क्लेव एक्सचेंज 2015 से सीख ले सकता है, ताकि विवाद को हल करने और क्षेत्र में स्थायी रूप से शांति स्थापित करने के लिए कुछ ठोस कदम सुझाए जा सके।

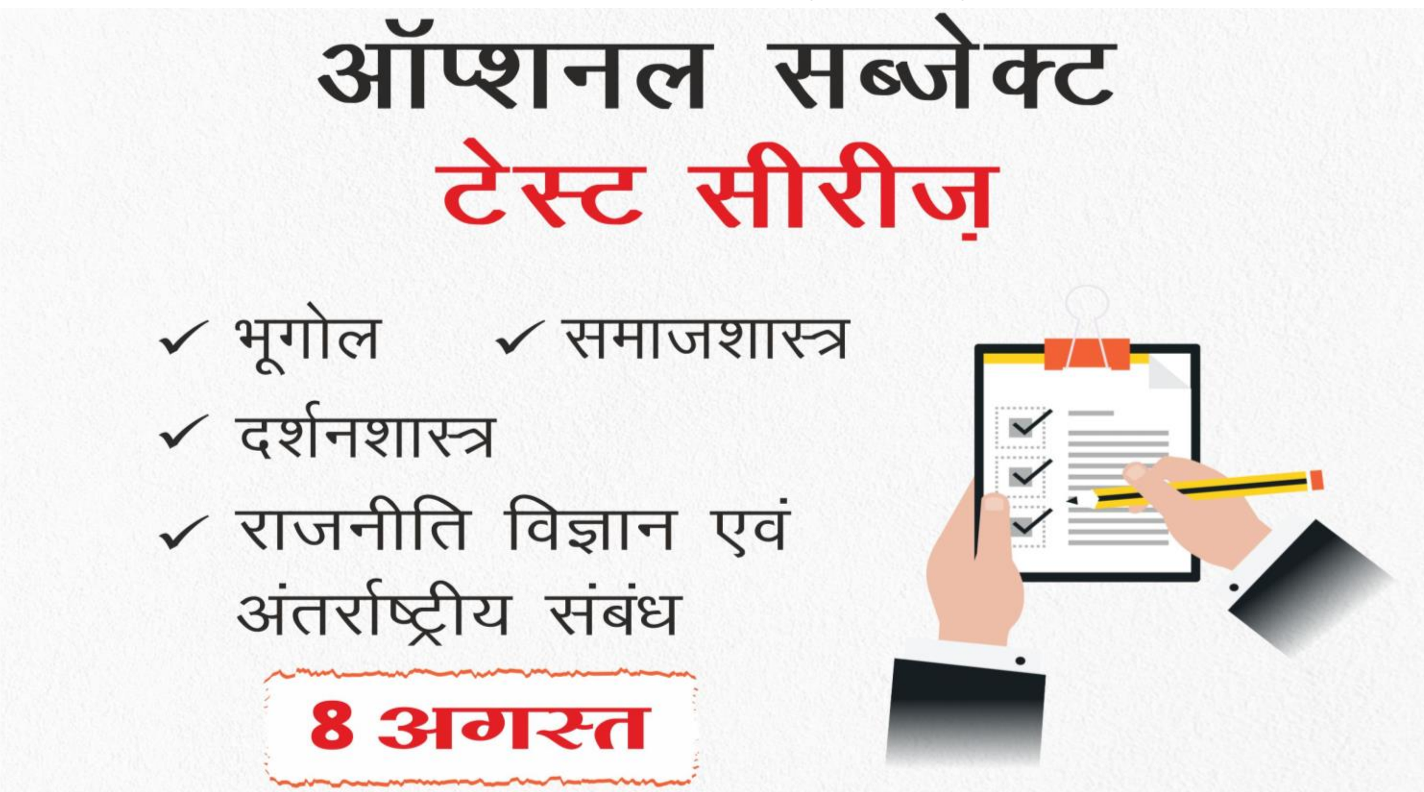

[32] Organisation for Security and Cooperation in Europe/ यूरोप के सुरक्षा और सहयोग हेतु संगठन

[33] International North-South Transportation Corridor

4.2. भारत और पश्चिम एशिया (India-West Asia)

4.2.1. भारत-इजरायल संबंध: एक नज़र में (india-Israel Relations at a Glance)

भारत–इजराइल संबंध

भारत और इज़रायल के आस–पास का भौगोलिक क्षेत्र काफ़ी जटिल है और दोनों देश क्षेत्रीय शांति तथा स्थिरता के लिए रणनीतिक खतरों से अवगत हैं। भारत ने प्रत्यक्ष हिंसा का सामना किया है और ऐसा ही इज़रायल के साथ भी है। इसलिए, इन दो लोकतांत्रिक राज्यों के बीच सहयोग अब एक आवश्यक कदम बन गया है।

"भारत–इज़रायल संबंध स्वर्ग में बने रिश्ते हैं, जो धरती पर निभाए जाते हैं"– इज़रायली प्रधान मंत्री

भारत एशिया में **इज़रायल का दूसरा सबसे बड़ा और वैश्विक स्तर पर सातवाँ सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार** है।

बेहतर होता भारत–इज़रायल संबंध

- **द्विपक्षीयः उदाहरण के लिए,** रणनीतिक साझेदारी; भारत ने 1950 में इज़रायल को मान्यता दी; 1992 में पूर्ण राजनयिक संबंध स्थापित हुए।
- **रक्षाः उदाहरण के लिए,** भारत ने इज़रायल से असॉल्ट राइफल, फाल्कन एयरबोर्न वार्निंग एंड कंट्रोल सिस्टम (AWACS), अन्य मिसाइल (BARAK-8) आदि कई तरह के उपकरण खरीदे हैं।
- **व्यापारः उदाहरण के लिए,** वस्तु व्यापार में विविधता आई है और यह 10.77 बिलियन अमेरिकी डॉलर (रक्षा को छोड़कर) तक पहुँच गया है।
- **कृषि और जलः उदाहरण के लिए,** इज़राइल की ड्रिप सिंचाई तकनीक ने जल संरक्षण और फसल की पैदावार बढ़ाने में मदद की है।
- **बहुपक्षीयः उदाहरण के लिए,** भारत और इज़राइल ने 2021 में संयुक्त अरब अमीरात और अमेरिका के साथ मिलकर I2U2 की स्थापना की।

चुनौतियाँ

- **फिलिस्तीन का प्रश्नः** भारत टू–नेशन सॉल्यूशन का समर्थन करता है।
- **आतंकवाद पर मतभेदः** भारत के लिए पाकिस्तान आतंकवाद का केंद्र है, जबकि इज़राइल के लिए यह ईरान है।
- **अरब जगतः** इज़राइल के साथ भारत के घनिष्ठ संबंधों के कारण अरब देशों के साथ इसके संबंध प्रभावित हो सकते हैं।
- इज़राइल द्वारा फिलिस्तीन के खिलाफ **मानवाधिकारों का उल्लंघन** एक मुद्दा बना हुआ है।

आगे की राह

- सेमीकंडक्टर डिजाइन और विनिर्माण तथा अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी जैसे **क्षेत्रकों में इज़राइल के साथ सहयोग बढ़ाना।**
- भारत अरब दुनिया और इज़राइल के बीच संबंधों को संतुलित करने के लिए **अब्राहम समझौते का लाभ** उठा सकता है।
- भारत वर्तमान संघर्ष में युद्धविराम की घोषणा सुनिश्चित करने के लिए अपने **तटस्थ संबंधों का लाभ** उठा सकता है।

निष्कर्ष

भारत–इज़राइल संबंधों को एक मजबूत, गतिशील और रेजिलिएंट रणनीतिक साझेदारी के रूप में सुदृढ़ बनाने के लिए भू–राजनीतिक हितों व लोकतांत्रिक आदर्शों पर एक मत बनाने और आतंकवाद विरोधी प्रयासों को समन्वित करने की आवश्यकता है।

 © Vision IAS

4.2.2. भारत-संयुक्त अरब अमीरात (UAE) संबंध: एक नज़र में (India-UAE Relationship at a Glance)

भारत–संयुक्त अरब अमीरात संबंध

हाल ही में, भारत के प्रधान मंत्री ने संयुक्त अरब अमीरात **(UAE)** की आधिकारिक यात्रा की थी। इस यात्रा के दौरान भारत और **UAE** ने एक **द्विपक्षीय निवेश संधि (BIT)** पर हस्ताक्षर किए।

भारत–**UAE** के बीच **राजनयिक संबंधों** की शुरुआत **1972** में हुई थी। **2015** एक ऐसा वर्ष है, जब दोनों देशों के बीच एक **नई रणनीतिक साझेदारी** की शुरुआत हुई थी।

इस साझेदारी को आगे बढ़ाते हुए दोनों देशों ने **2022 में व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (CEPA)** पर हस्ताक्षर किए थे। **CEPA** का उद्देश्य **द्विपक्षीय व्यापार को 100 बिलियन डॉलर** तक बढ़ाना है।

दोनों देशों के बीच सहयोग के प्रमुख क्षेत्रक

- **आर्थिक और वाणिज्यिक सहयोगः UAE** भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार (2022–23) और दूसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य है।
  - **फिनटेक सहयोगः** दोनों देशों ने अग्रलिखित त्वरित भुगतान प्लेटफॉर्म्स को जोड़ने हेतु समझौते किए हैं: **UPI** (भारत) और **AANI** (संयुक्त अरब अमीरात) तथा **घरेलू डेबिट/क्रेडिट कार्ड– RuPay** (भारत)।
- **बहुपक्षीय सहयोगः** दोनों देश **ब्रिक्स, I2U2 और UFI त्रिपक्षीय सहयोग** जैसे अलग–अलग मंचों का हिस्सा हैं।
- **प्रवासी समुदाय और लोगों के बीच संबंधः UAE** में **3.5** मिलियन से अधिक भारतीय लोग रहते हैं, जो **UAE** की आबादी का लगभग **35** प्रतिशत है।
- **अंतरिक्ष सहयोगः ISRO** और **UAE** अंतरिक्ष एजेंसी ने **शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए बाह्य अंतरिक्ष का अन्वेषण एवं उपयोग के लिए समझौते** पर हस्ताक्षर किए हैं।

भारत-UAE संबंधों में चुनौतियां

- क्षेत्र में **क्षेत्रीय शांति प्रभावित** हो रही है।
- **आप्रवासी मजदूरों के अधिकारः कफाला प्रणाली के कारण संयुक्त अरब अमीरात** में नियोक्ताओं को आप्रवासी मजदूरों पर अतार्किक अधिकार प्राप्त होता है।
- **व्यापार और बाजार पहुंच में बाधाएंः पक्षपातपूर्ण योग्यता खंडों** के साथ कृषि रसायन जैसे विविध क्षेत्रकों में **व्यापार और बाजार तक पहुंच** में बाधाओं के कारण भारत से होने वाला निर्यात प्रभावित होता है।

आगे की राह

- **प्रवासी श्रमिकों का कल्याण।**
- **रक्षा संबंधों को और अधिक मजबूत बनानाः** इससे हिंद महासागर क्षेत्र में चीन के प्रभाव को प्रतिसंतुलित करने में सहायता मिलेगी।
- **गैर–शुल्क बाधाओं को कम करनाः** इससे अलग–अलग क्षेत्रकों में भारत के निर्यात से संबंधित मुद्दों का समाधान किया जा सकेगा।

निष्कर्ष

संयुक्त अरब अमीरात के साथ संबंध **भारत के लिए न केवल द्विपक्षीय रूप से बल्कि भारत की विस्तारित पड़ोस नीति** और पश्चिम की ओर देखो नीति के लिए भी महत्वपूर्ण है।

4.2.3. भारत-सऊदी अरब संबंध: एक नज़र में (India-Saudi Arabia Relations at a Glance)

भारत–सऊदी अरब संबंध

हाल ही में, भारतीय प्रधान मंत्री और सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस ने **भारत–सऊदी अरब रणनीतिक साझेदारी परिषद (SPC)** की पहली शिखर सम्मेलन स्तर की बैठक की सह–अध्यक्षता की है।

वित्त वर्ष 2023 में भारत के कुल व्यापार में सऊदी अरब के साथ व्यापार का **हिस्सा 4.53 प्रतिशत** था।

भारत अपना **18%** से अधिक कच्चा तेल सऊदी अरब से आयात करता है।

भारत के लिए सऊदी अरब का महत्त्व

- **भू–सामरिक:** उदाहरण के लिए– **'लुक वेस्ट'** नीति और **भारत–मध्य पूर्व–यूरोप आर्थिक गलियारे।**
- **बहुपक्षीय मंचों और संगठनों में साझा रुचि:** सऊदी अरब, भारत द्वारा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में व्यापक सुधार किए जाने की मांग का समर्थन करता है।
- **व्यापार समझौता:** सऊदी अरब रुकी हुई भारत–**GCC–मुक्त व्यापार समझौता वार्ता** में तेजी लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
- **भारतीय प्रवासी:** सऊदी अरब में 2.4 मिलियन से अधिक प्रवासी भारतीय कार्यरत हैं।

भारत–सऊदी अरब संबंधों में विद्यमान चुनौतियां

- **मध्य–पूर्व में क्षेत्रीय संघर्ष:** मध्य–पूर्व क्षेत्र की जटिल और बहुआयामी राजनीति कई तरह की चुनौतियां प्रस्तुत करती है।
- **प्रवासी संबंधी मुद्दे:** सऊदी अरब की अपने नागरिकों को अधिक रोजगार प्रदान करने की नीति और प्रवासियों पर अधिक कर लगाने की नीति।
- **पाकिस्तान का प्रभाव:** ऐतिहासिक रूप से सऊदी अरब का पाकिस्तान के साथ घनिष्ठ संबंध रहा है।
- **व्यापार घाटा:** वित्त वर्ष 2022–23 में सऊदी के साथ भारत का व्यापार घाटा अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है।

आगे की राह

- **संतुलित दृष्टिकोण:** भारत और सऊदी अरब दोनों को एक–दूसरे के प्रतिद्वंद्वियों के साथ संबंध बनाते समय संतुलित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। उदाहरण किए लिए– ईरान और पाकिस्तान
- **व्यापार और वाणिज्य से परे द्विपक्षीय जुड़ाव:** दोनों देशों को 'रणनीतिक साझेदारी' के लक्ष्य को पूरा करना चाहिए।
- **श्रमिक कल्याण:** सऊदी अरब की सर्वोच्च प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि वह बड़ी संख्या में मौजूद भारतीय प्रवासी समुदाय का कल्याण और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रयास करे।
- **आतंकवाद–रोधी उपाय:** आतंकवाद–रोधी प्रयासों एवं खुफिया जानकारी साझा करने में सहयोग को मजबूत करने का प्रयास करना चाहिए।

निष्कर्ष

भारत और सऊदी अरब के बीच सौहार्दपूर्ण एवं मैत्रीपूर्ण संबंध हैं जो सदियों पुराने आर्थिक और सामाजिक–सांस्कृतिक संबंधों को दर्शाते हैं। भारत सऊदी अरब के साथ मिलकर पश्चिमी एशिया में शांति ला सकता है।

© Vision IAS

4.2.4. भारत-खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) संबंध: एक नज़र में (India-GCC Relations at a Glance)

भारत–खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) संबंध

- विदेश मामलों की संसदीय स्थायी समिति ने **खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) के सदस्य देशों में कैद भारतीय नागरिकों को कानूनी सहायता प्रदान करने की सिफारिश** की है।

GCC **खाड़ी क्षेत्र के 6 देशों का एक राजनीतिक और आर्थिक संगठन** है। ये 6 देश हैं– **सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, कतर, कुवैत, ओमान और बहरीन।**

GCC वर्तमान में **भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार समूह** है। वित्त वर्ष 2022–23 में दोनों पक्षों के बीच **184 बिलियन अमेरिकी डॉलर** का द्विपक्षीय व्यापार दर्ज किया गया था।

भारत–GCC कन्वर्जेंस का महत्त्व

- **GCC, एक संभावित निवेश स्रोत:** उदाहरण के लिए– सऊदी अरब (100 बिलियन डॉलर) और UAE (75 बिलियन डॉलर) भारत की अर्थव्यवस्था में भारी निवेश की योजना बना रहे हैं।
- **IOR में "समग्र सुरक्षा प्रदाता" के रूप में भारत की भूमिका के लिए GCC का सहयोग आवश्यक:** उदाहरण के लिए– हाल ही में लाल सागर में हमले की घटना।
- **भारत का क्षेत्रीय भू–आर्थिक फोकस:** उदाहरण के लिए– भारत ने इसे I2U2 के साथ जुड़ने और IMEC में शामिल होने के लिए प्रेरित किया है।
- **GCC अभी भी भारत की ऊर्जा सुरक्षा हेतु आवश्यक:** उदाहरण के लिए– 2023 के आते–आते, भारत दुनिया में कच्चे तेल का दूसरा सबसे बड़ा खरीददार बन गया था।

चुनौतियां

- **भू–आर्थिक मुद्दे:** खाड़ी देशों की अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक गिरावट आई है।
- **भू–राजनीतिक बाधाएं:** पश्चिम एशियाई देशों के साथ पाकिस्तान के मजबूत रणनीतिक संबंध है। ऐसा मुख्यतः उसकी इस्लामी पहचान और सैन्य संबंधों से प्रेरित है।
- **क्षेत्रीय संकट:** इस क्षेत्र में भू–राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता और संघर्ष जैसे मुद्दे विद्यमान हैं। उदाहरण के लिए– **ईरान–सऊदी अरब प्रतिद्वंद्विता (हाल ही में इसमें सुधार हुआ है), इजरायल हमास, आदि।**
- **चीनी प्रभाव:** उदाहरण के लिए, चीन का सऊदी–ईरान एकता का प्रयास।

आगे की राह

- **आर्थिक संबंधों में विविधता लाना:** भारत और खाड़ी देशों को अपने संबंधों का तेल व गैस व्यापार के अलावा भी अन्य क्षेत्रों में विस्तार करना चाहिए। इन्हें अपने संबंधों को प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य देखभाल और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे अलग–अलग क्षेत्रकों तक बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।
- **क्षेत्रीय सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर सहयोग करना:** यथा– समुद्री सुरक्षा (जैसे– पायरेसी) और आपदा प्रबंधन।
- भारत–GCC मुक्त व्यापार समझौते को सुगम बनाने के लिए GCC के साथ समन्वय।

निष्कर्ष

भारत और खाड़ी क्षेत्र के बीच बढ़ते रणनीतिक कन्वर्जेंस के परिणामस्वरूप गहन राजनीतिक, आर्थिक और रक्षा संबंध विकसित हुए हैं, लेकिन मध्य पूर्व में बिगड़ते सुरक्षा माहौल के कारण कुछ क्षेत्रों में प्रगति बाधित हो सकती है।

ऑल इंडिया मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज़
देश के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट सीरीज़ प्रोग्राम के इनोवेटिव असेसमेंट सिस्टम का लाभ उठाएं
ENGLISH MEDIUM 2024: 8 AUGUST
हिन्दी माध्यम 2024: 8 अगस्त
ENGLISH MEDIUM 2025: 11 AUGUST
हिन्दी माध्यम 2025: 11 अगस्त

4.3. भारत- मध्य एशिया संबंध: एक नज़र में (India-Central Asia Relations at a Glance)

भारत और पांच मध्य एशियाई गणराज्यों (CARs) के संबंध

भारत को अपने राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों का लाभ उठाते हुए यूरेशिया में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए **मध्य एशिया (भारत के एक्सटेंडेड नेबरहुड का एक हिस्सा) एक सही मंच प्रदान करता है।**

पांच CARs: कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उज्बेकिस्तान	सभी पांचों देश चारों ओर से स्थल–रुद्ध हैं।

समन्वय के क्षेत्र

- **कनेक्टिविटी:** उदाहरण के लिए, अंतर्राष्ट्रीय उत्तर–दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC) और अश्गाबात समझौता।
- **ऊर्जा:** जैसे, तापी (तुर्कमेनिस्तान–अफगानिस्तान–पाकिस्तान–भारत: TAPI) गैस पाइपलाइन, कजाकिस्तान और उज्बेकिस्तान के साथ यूरेनियम आपूर्ति समझौता।
- **बहुपक्षीय संगठन: SCO** और कॉन्फ्रेंस ऑन इंटरेक्शन एंड कॉन्फिडेंस–बिल्डिंग मेजर्स इन इंडिया (CICA) आदि।

भारत के CARs के साथ बेहतर संबंधों का महत्त्व

- **ऊर्जा और सुरक्षा,** उदाहरण के लिए– तुर्कमेनिस्तान के पास चौथा सबसे बड़ा गैस भंडार है।
- एक पूर्ण कार्यशील INSTC चीन के BRI का जवाब हो सकता है।
- CARs में शांति और सुरक्षा अफगानिस्तान में शांति से जुड़ी हुई है।

चुनौतियां

- **व्यापार:** लगभग 2 बिलियन डॉलर, जबकि चीन का व्यापार लगभग 100 बिलियन डॉलर है।
- **भू–राजनीतिक प्रतिस्पर्धा:** रूस और चीन की मौजूदगी के कारण।
- **कमजोर कनेक्टिविटी:** सीधे जमीनी संपर्क का अभाव और INSTC की धीमी गति।
- विकासात्मक और आर्थिक परियोजनाओं का मंद क्रियान्वयन।

आगे की राह

- **30 साल के लिए रोडमैप तैयार करना:** आपसी संबंधों में मजबूती, मध्य और दीर्घकालिक आकांक्षाओं को स्पष्ट रूप से निर्धारित कर सकते हैं।
- **अपनी क्षमताओं का लाभ उठाना:** ऐसी परियोजनाओं को पूरा करना जिनका स्थायित्व और इष्टतम लागत, दोनों के संदर्भ में दीर्घकालिक लाभ हो।
- **पर्यटन को प्रोत्साहित करना:** लोगों के मध्य बेहतर संपर्क के लिए।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर, हाल के वर्षों में भारत–मध्य एशिया संबंधों की रूपरेखा में अभूतपूर्व तरीके से परिवर्तन देखने को मिल रहा है, जिसमें बढ़ते जुड़ाव से एक्सपेंडेड नेबरहुड की भू–रणनीतिक गतिशीलता के प्रतिमानों में बदलाव लाने की क्षमता है।

GS मेन्स एडवांस कोर्स 2024
प्रारंभ: 28 जून | दोपहर 1 बजे
लाइव/ऑनलाइन कक्षाएं भी उपलब्ध

4.4. भारत-दक्षिण कोरिया संबंध: एक नज़र में (India-South Korea Relations at a Glance)

भारत–दक्षिण कोरिया संबंध

विगत कुछ वर्षों तक दक्षिण कोरिया और भारत के बीच संबंध **मुख्य रूप से आर्थिक पहलुओं पर आधारित** थे। हालाँकि, इंडो–पैसिफिक क्षेत्र के महत्त्व बढ़ जाने और चाइना फैक्टर के कारण **राजनीतिक व सुरक्षा आयाम** भी महत्वपूर्ण पहलू बन गए हैं।

रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी कविताः **द लैंप ऑफ द ईस्ट** में लिखा है– **"एशिया के स्वर्ण युग में, कोरिया उसके दीपकों में से एक था"**

2023 में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार 24.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।

सहयोग के क्षेत्र

- **दक्षिण कोरिया की नई सदर्न पॉलिसी (NSP) वस्तुतः भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी** के अनुरूप है।
- **द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भारत की भूमिकाः** कोरियाई युद्ध के संदर्भ में भारत के समर्थन से पेश किए एक संकल्प **(Resolution)** को संयुक्त राष्ट्र में सर्वसम्मति से अपनाया गया था। इसके परिणामस्वरूप **1953 में कोरियाई संघर्ष में विराम** लागू हो सका था।
- **राजनयिक संबंधः** 2015 में **"विशेष सामरिक भागीदारी"** में अपग्रेड किया गया, दोनों देश **नियम–आधारित हिंद–प्रशांत क्षेत्र** का समर्थन करते हैं। इसके अलावा, **चीन के एक महाशक्ति के रूप में उभरने** और **उत्तर कोरिया के परमाणु हथियार हासिल करने** से जुड़े मुद्दे को लेकर दोनों देशों की साझा चिंताएं हैं।
- **आर्थिक एवं व्यापारिक संबंधः 'कोरिया प्लस'** पहल का उद्देश्य **भारत में कोरियाई निवेश** को बढ़ावा देना और उसे सुविधाजनक बनाना है।
- **सामरिक एकीकरणः** भारत ने उत्तर कोरिया के परमाणु प्रसार को रोकने के लिए "वैंकूवर डायलॉग" का समर्थन किया था।

चुनौतियां

- **विश्व की दसवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के बावजूद,** वैश्विक राजनीति में एक ऑब्जर्वरके रूप में रहने और एक्टिव भूमिका अदा न करने के लिए इसकी आलोचना की जाती रही है।
- भारत दक्षिण कोरिया के साथ **व्यापारिक घाटे** (2021–22 में लगभग 8 बिलियन डॉलर) का सामना कर रहा है।
- **उत्तर कोरिया का दबावः** कोरियाई प्रायद्वीप पर किसी भी प्रकार की प्रतिकूल घटना दक्षिण कोरिया की इंडो–पैसिफिक परियोजना को विफल बना सकती है।

आगे की राह

- **रक्षा उद्योग में सहयोग को मजबूत करना,** उदाहरण के लिए– युद्धपोत विनिर्माण के क्षेत्र में सहयोग।
- **समुद्री प्रक्षेत्र जागरूकता (Maritime Domain Awareness: MDA) हेतु अवसरः** भारतीय नौसेना द्वारा हिंद महासागर क्षेत्र में एक इन्फॉर्मेशन फ्यूजन सेंटर **(IFC)** स्थापित किया गया है।
- **लगातार उच्च स्तरीय यात्राओं के जरिए राजनीतिक संबंधों को मजबूत करना** तथा आर्थिक संबंधों से आगे बढ़कर सुरक्षा और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में द्विपक्षीय एजेंडे का विस्तार करना।

निष्कर्ष

भारत और दक्षिण कोरिया के बीच द्विपक्षीय संबंधों का विकास धीमी गति से हुआ। ऐतिहासिक विसंगतियों, भू–राजनीतिक चुनौतियों और भौगोलिक दूरी ने इन संबंधों को प्रगाढ़ होने में बाधाएं उत्पन्न कीं।

4.5. भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया (India and South East Asia)

4.5.1. भारत और इंडोनेशिया संबंध (India and Indonesia Relations)

सुर्ख़ियों में क्यों?

2024 में, भारत और इंडोनेशिया अपने राजनयिक संबंधों की स्थापना की **75वीं वर्षगांठ** मना रहे हैं।

भारत-इंडोनेशिया द्विपक्षीय संबंधों का महत्त्व (दोनों देशों के लिए महत्त्व)

- **साझा इतिहास और सांस्कृतिक मूल्य**
  - दोनों देश **बांडुंग सम्मेलन 1955** का हिस्सा थे। इसी सम्मेलन से **गुटनिरपेक्ष आंदोलन यानी NAM (1961)** का जन्म हुआ था।
  - रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों की कहानियां इंडोनेशियाई लोक कला और नाटकों का स्रोत हैं।
- **हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा:** दोनों देश **समुद्र शक्ति (नौसेना) और भारत-इंडोनेशिया समन्वित गश्ती (IND-INDO CORPAT)** जैसे संयुक्त अभ्यास आयोजित करते हैं।
- **हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए विज़न में समन्वय:** भारत की **एक्ट ईस्ट पॉलिसी और हिंद-प्रशांत महासागर पहल (IPOI)**[34] **तथा इंडोनेशिया के ग्लोबल मैरीटाइम फलक्रम**[35] **विजन** में परस्पर समन्वय है। यह समन्वय भू-राजनीतिक संलग्नता को बढ़ावा देता है।
- **रणनीतिक साझेदारी:** दोनों देशों ने **2005 में "रणनीतिक साझेदारी"** की स्थापना की थी। इस साझेदारी को 2018 में आगे बढ़ाते हुए **"व्यापक रणनीतिक साझेदारी"** में बदल दिया गया था। इससे रक्षा उद्योग, विज्ञान व प्रौद्योगिकी आदि के क्षेत्र में नए सहयोग की सुविधा मिली है।

- **बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग:** दोनों देश G20, इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA), पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन और संयुक्त राष्ट्र जैसे बहुपक्षीय मंचों पर समुद्री सुरक्षा, डिजिटल रूपांतरण जैसे मामलों पर सहयोग करते हैं।

भारत के लिए महत्त्व

- **भारत के रक्षा निर्यात को बढ़ाना:** इंडोनेशिया ने **ब्रह्मोस मिसाइल और हल्के लड़ाकू विमान** सहित अन्य सैन्य प्लेटफॉर्म्स में रुचि दिखाई है।
- **महत्वपूर्ण व्यापार भागीदार:** इंडोनेशिया **आसियान क्षेत्र में भारत का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार** है।
  - वित्त वर्ष 2022-23 में **दोनों देशों के बीच कुल 38.85 बिलियन अमरीकी डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार** हुआ था।
- **भारतीय रुपये का अंतर्राष्ट्रीयकरण:** भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) और बैंक इंडोनेशिया (BI) ने 2024 में स्थानीय मुद्राओं के सीमा पार लेन-देन को बढ़ावा देने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।
- **समुद्री कनेक्टिविटी को बढ़ावा देना:** क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास **(SAGAR) पहल** के तहत, भारत विशेष रूप से **इंडोनेशिया के आचे (Aceh) में सबांग बंदरगाह** के अवसंरचना संबंधी विकास में मदद कर रहा है।
  - यह **भारत को मलक्का जलडमरूमध्य तक आसान** पहुंच प्रदान करेगा।

इंडोनेशिया के लिए महत्त्व

- **प्रमुख निर्यात गंतव्य:** भारत इंडोनेशिया से **कोयला और क्रूड पाम आयल का दूसरा सबसे बड़ा खरीदार** है।
- **मानवीय सहायता:** भारत ने 2018 में भूकंप और सुनामी के बाद इंडोनेशिया को मानवीय सहायता प्रदान करने के लिए **ऑपरेशन समुद्र मैत्री** शुरू किया था।
- **विकास भागीदारी:** इंडोनेशिया **भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम (ITEC), तथा कोलंबो योजना की तकनीकी सहयोग योजना (TCS) जैसे क्षमता निर्माण मंचों** का एक प्रमुख भागीदार है।

---

[34] Indo-Pacific Oceans Initiative

[35] Global Maritime Fulcrum

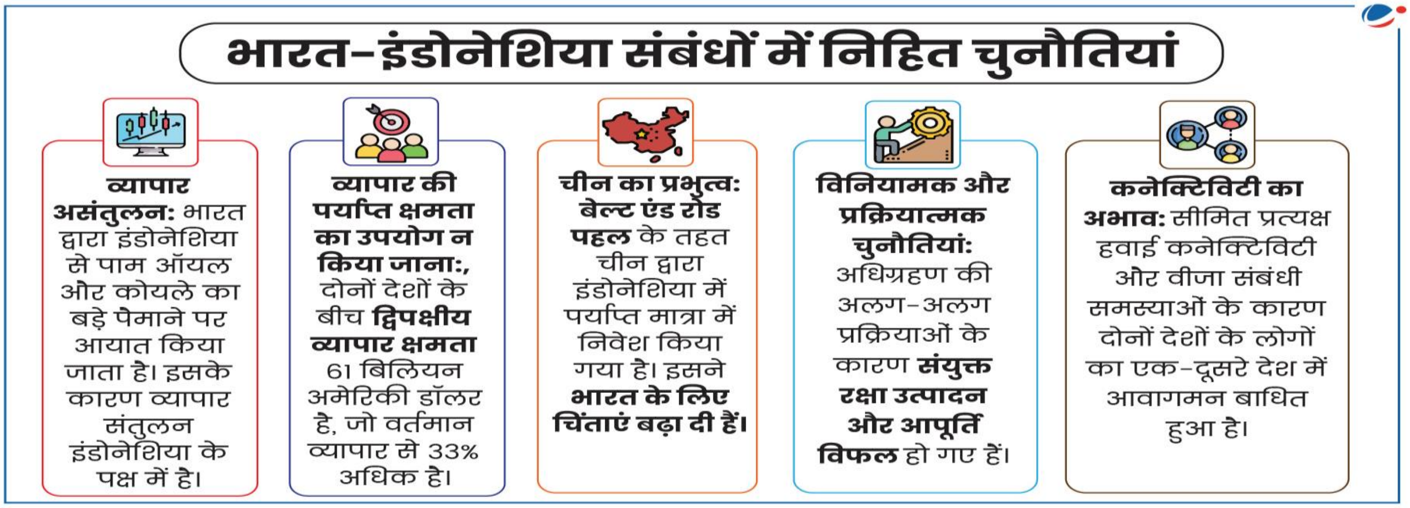

आगे की राह

- **पर्यटन संबंधी कूटनीति:** भारत-इंडोनेशिया को '**RICH**' अर्थात धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक थीम पर आधारित पर्यटन योजना स्थापित करनी चाहिए। इससे **पर्यटन क्षेत्रक मजबूत होगा और लोगों का आवागमन बढ़ेगा।**
- **व्यापार को बढ़ावा देना:** व्यापार और निवेश संबंधी बाधाओं को दूर करने के लिए **व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (CEPA)** को गति देने के साथ-साथ अधिक आर्थिक सहयोग की भी आवश्यकता है।
- **रणनीतिक इंटरफेस को बढ़ावा देना:** चूंकि इंडोनेशिया भारत का पड़ोसी देश है, उसे **अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA), आपदा-रोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन (CDRI) और वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन** में शामिल होने पर विचार करना चाहिए।
- **सहभागिता के माध्यम से वास्तविक सहयोग:** दोनों देशों को परस्पर सहयोग के लिए क्षेत्रीय बहुपक्षीय मंचों जैसे **आसियान क्षेत्रीय मंच, इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA) और हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी (IONS)** का उपयोग करना चाहिए।

4.5.2. दक्षिण चीन सागर (South China Sea)

सुर्ख़ियों में क्यों?

फिलीपींस ने दक्षिण चीन सागर के एक विवादित क्षेत्र में **चीन द्वारा लगाए गए फ्लोटिंग बैरियर को हटा दिया** है। चीन ने ये फ्लोटिंग बैरियर्स लगाकर मछली पकड़ने वाली फिलीपींस की नौकाओं को विवादित क्षेत्र में प्रवेश करने से रोक दिया था।

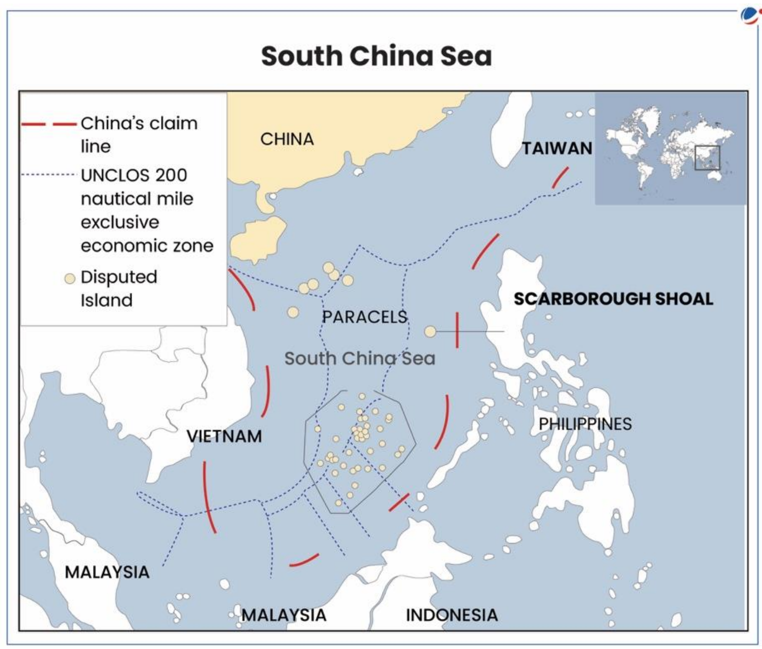

अन्य संबंधित तथ्य

- इससे पहले **चीन ने स्कारबोरो शोल** में एक लैगून के पास **फ्लोटिंग बैरियर स्थापित** किए थे। चीन ने यह दावा किया था कि यह उसका क्षेत्र है, जबकि **फिलीपींस का दावा है कि यह उसके अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EEZ) का हिस्सा** है।
- **नाइन-डैश लाइन**
  - यह एक **यू-आकार की रेखा** है। इसे पहली बार **1940 के दशक में चीन द्वारा मानचित्र पर दर्शाया** था। यह रेखा **दक्षिण चीन सागर के क्षेत्र पर चीन के तथाकथित दावे का प्रतिनिधित्व** करती है। इसके अनुसार, **दक्षिण चीन सागर का लगभग 90% हिस्सा 'नाइन-डैश लाइन' के अंतर्गत** आता है।
  - **1952** तक 'नाइन-डैश लाइन' को **'इलेवन डैश लाइन'** के रूप में जाना जाता था। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा **टोंकिन की खाड़ी** को इलेवन डैश लाइन के बाहर करने के बाद से इसे 'नाइन-डैश लाइन' के रूप में जाना जाता है।

दक्षिण चीन सागर का महत्त्व

- **समुद्री व्यापार:** यह क्षेत्र **दुनिया के सबसे व्यस्त समुद्री मार्गों में से एक** है। **वैश्विक व्यापार का 60% से अधिक हिस्सा इसी क्षेत्र के माध्यम से संपन्न होता** है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र के साथ होने वाला **भारत का लगभग 55% व्यापार दक्षिण चीन सागर के माध्यम से ही संपन्न होता** है।
- **प्राकृतिक भंडार:** विशेषज्ञों का मानना है कि इस क्षेत्र में कच्चे तेल, प्राकृतिक गैस, कोरल लाइम के विशाल भंडार मौजूद हैं।
  - **ONGC विदेश लिमिटेड (ONGC-VL)** वियतनाम की **पेट्रोवियतनाम कंपनी** के साथ मिलकर इस क्षेत्र में तेल के भंडार की खोज कर रही है। यह भारत की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने में मदद कर सकता है।
- **मछली पकड़ने का प्रमुख स्थान:** दक्षिण चीन सागर का जल **पूरे वर्ष गर्म बना रहता है।** इस कारण इस क्षेत्र को व्यावसायिक रूप से मछली पकड़ने वाले विश्व के प्रमुख क्षेत्रों में से एक माना जाता है।
- **असंख्य निर्जन द्वीप:** इस क्षेत्र में **कई निर्जन द्वीप** अवस्थित हैं, जिनका उपयोग बंदरगाहों, सैन्य ठिकानों, अनुसंधान संबंधी कार्य आदि के लिए भी किया जा सकता है।
- **नौवहन या नौसंचालन की स्वतंत्रता (Freedom of Navigation):** चीन के दावों को स्वीकार करने से इस क्षेत्र में नौवहन की स्वतंत्रता प्रभावित होगी। यह **दुनिया के अन्य हिस्सों में भी ऐसे दावों के लिए एक गलत मिसाल पेश कर सकती** है।

दक्षिण चीन सागर में चुनौतियां: चीन की आक्रामकता में वृद्धि, अत्यधिक मछली पकड़ना, समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचना, सैन्य अभ्यास करना।

आगे की राह

- **इस क्षेत्र के लिए कोड ऑफ कंडक्ट तैयार करना:** 2018 से रुकी हुई कोड ऑफ कंडक्ट वार्ता प्रक्रिया को पुनः शुरू करके इस क्षेत्र के लिए एक आचरण संहिता तैयार की जानी चाहिए।
- **संधारणीय मत्स्यन:** सभी तटवर्ती देशों को सामूहिक रूप से मछली पकड़ने के लिए संधारणीय तरीकों को अपनाना चाहिए।
- **ट्रांस बाउंड्री मैरीटाइम पीस पार्क (MPP) की स्थापना:** इज़रायल और जॉर्डन के बीच स्थापित 'लाल सागर MPP[36]' की तरह इस क्षेत्र में भी एक MPP की स्थापना की जानी चाहिए। गौरतलब है कि MPPs को देशों के बीच सहयोग और शांति को बढ़ावा देने और पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण के लिए स्थापित किया जाता है।
- **नए कृत्रिम द्वीपों के निर्माण को रोकना:** नए कृत्रिम द्वीपों के निर्माण पर रोक लगाने की आवश्यकता है। कृत्रिम द्वीपों के निर्माण से समुद्री पारिस्थितिक तंत्र को गंभीर नुकसान पहुंचता है।
- **समुद्री मार्ग की स्वतंत्रता सुनिश्चित करना:** इस क्षेत्र से गुजरने वाले सभी नागरिक और व्यापारिक जहाजों के बाधारहित आवागमन की स्वतंत्रता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

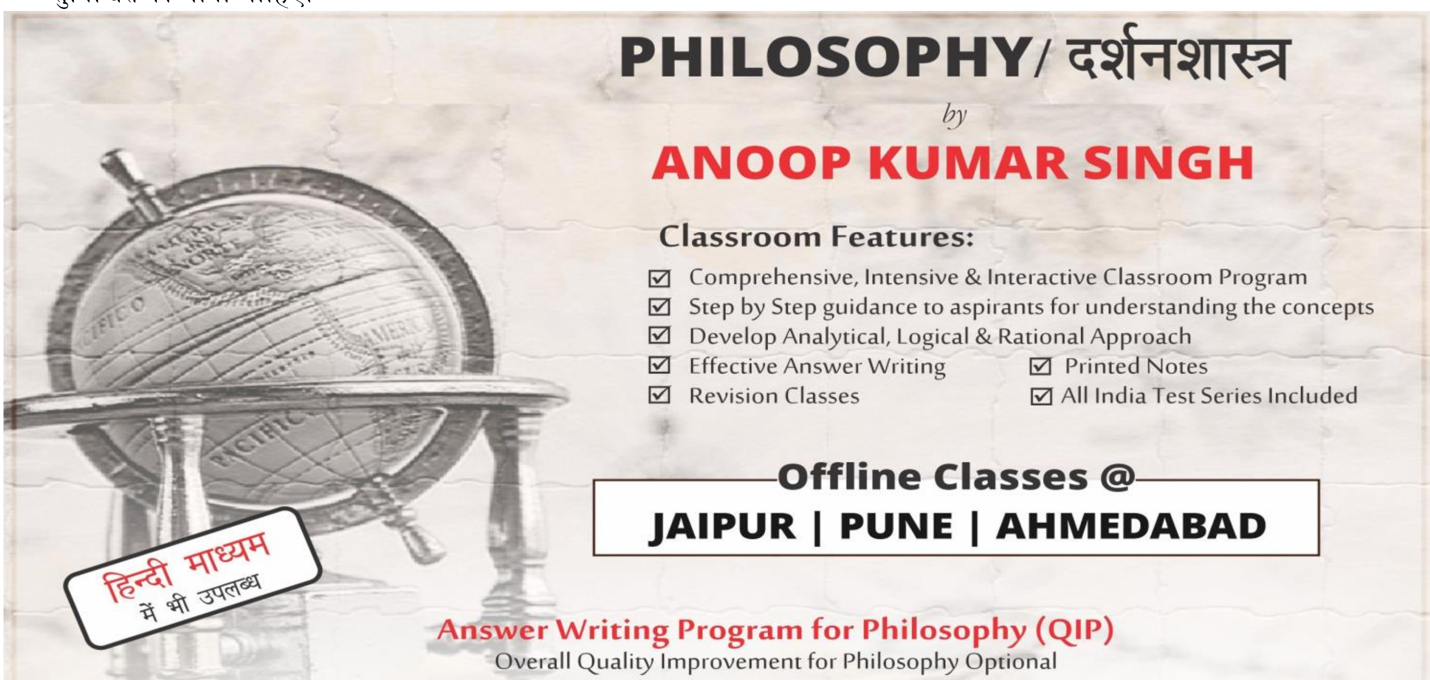

[36] Red Sea MPP

4.6. भारत-अमेरिका (India-Americas)

4.6.1. भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका संबंध: एक नज़र में (India-US Relations at a Glance)

भारत-अमेरिका संबंध

भारत-अमेरिका आपसी संबंधों के एक नए दौर में हैं जो न केवल दोनों देशों की नियति को आकार देगा, बल्कि दुनिया की नियति को भी एक नया आकार देगा। भरोसे पर आधारित हमारी आपसी साझेदारी इस नए दौर में एक सूर्य की तरह है जो चारों ओर सकारात्मकता फैलाएगी। (पी.एम., भारत)

- **द्विपक्षीय व्यापार: 118.42 बिलियन डॉलर**
- चीन के बाद अमेरिका भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है (2023-24)।

सहयोग के क्षेत्र

- **बहुपक्षीय और साथ ही मिनीलैटरल सहयोग:** जैसे- संयुक्त राष्ट्र, आसियान, G20, IMF, क्वाड, I2U2, लोकतंत्र के लिए शिखर सम्मेलन
- **रक्षा:** जैसे कि इंडिया-अमेरिका डिफेंस एक्सीलरेशन इकोसिस्टम (INDUS-X), LEMOA/लेमोआ, कॉमकासा, BECA पर हस्ताक्षर
- **प्रौद्योगिकी में रणनीतिक सहयोग:** जैसेकि iCET (महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों पर पहल), निसार/ NISAR
- **वैश्विक चुनौतियों के लिए सहयोग:** ऊर्जा, साइबर, अंतरिक्ष, जलवायु परिवर्तन (भारत-अमेरिका जलवायु और स्वच्छ ऊर्जा एजेंडा 2030 भागीदारी), ISA, CDRI

भारत के लिए चुनौतियां

- **व्यापार और आर्थिक:**
  - IPR (USA की प्रायॉरिटी वाच लिस्ट) पर मतभेद।
  - आत्मनिर्भर भारत अभियान (USA का विचार- भारत एक संरक्षणवादी बंद बाजार अर्थव्यवस्था बन रहा है)।
  - USA द्वारा सामान्यीकृत वरीयता प्रणाली (GSP) को वापस लेना।
- **वैश्विक संघर्षों पर अलग-अलग रुख:** जैसे रूस-यूक्रेन युद्ध, इजरायल-फिलिस्तीन युद्ध।
- **रूस पर रक्षा निर्भरता:** CAATSA प्रतिबंधों का डर (जैसे रूस से S-400 खरीदने पर)।
- **रणनीतिक मतभेद:** गुटनिरपेक्षता के प्रति भारत की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता।

आगे की राह

- **बहुपक्षवाद को पुनर्जीवित करना और सुधारना:** जब दुनिया में बदलाव हुए हैं, तो हमारी वैश्विक संस्थाओं को भी बदलना होगा। उदाहरण के लिए- UNSC, WTO
- **साझा दीर्घकालिक हितों पर ध्यान केंद्रित करना:** एशियाई सुरक्षा और समृद्धि, आतंकवाद का मुकाबला करना।
- **शांति और समृद्धि का सहकारिता:** क्षेत्रीय संस्थाओं के साथ मिलकर काम करना, उदाहरण के लिए- क्वाड, I2U2
  - **आसियान केंद्रीयता के साथ मुक्त, खुला और समावेशी इंडो पैसिफिक क्षेत्र।**
- आपूर्ति श्रृंखलाओं का **विविधीकरण, विकेंद्रीकरण और लोकतंत्रीकरण।**

निष्कर्ष

- भारत और अमेरिका मिलकर एक ऐसा क्षेत्र बना सकते हैं, जहां सभी छोटे और बड़े राष्ट्र अपने निर्णय स्वतंत्र और निडर होकर ले सकें, जहां प्रगति ऋण के अप्रत्याशित बोझ से बाधित न हो, जहां रणनीतिक उद्देश्यों के लिए कनेक्टिविटी का लाभ न उठाया जाए, जहां सभी राष्ट्र साझा समृद्धि के साथ आगे बढ़े।

4.6.2. भारत-कनाडा संबंध: एक नज़र में (India-Canada Relations at a Glance)

भारत–कनाडा संबंध

- भारत और कनाडा के बीच द्विपक्षीय संबंध लंबे समय से चले आ रहे हैं। यह संबंध दोनों देशों के साझा **लोकतांत्रिक मूल्यों, बहु–सांस्कृतिक, बहु–नृजातीय प्रकृति और लोगों के बीच मजबूत संपर्कों** पर आधारित हैं।

- **हाल के कुछ घटनाक्रमः** कनाडा ने दावा किया था कि उसकी धरती पर खालिस्तान समर्थक एक अलगाववादी नेता की हत्या में भारतीय एजेंट शामिल थे। कनाडा सरकार के इस दावे के कारण दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों में तनाव पैदा हो गया है।

इस संकट के संभावित प्रभाव

सामरिकः वर्तमान में चल रहे तनाव पर **पश्चिमी देशों ने कोई खास प्रतिक्रिया नहीं** दी है। इसके पीछे का कारण यह है कि पश्चिमी देश **भारत को चीन के प्रति एक प्रमुख प्रतिसंतुलन** के रूप में देखते हैं। इससे कनाडा के सामरिक हितों पर प्रभाव पड़ सकता है।

आर्थिकः संकट बढ़ने की स्थिति में, **द्विपक्षीय व्यापार व निवेश प्रवाह में व्यवधान** पैदा हो सकता है। इसका संभावित परिणाम यह हो सकता है कि **CEPA समझौते को अमल में आने में और देरी** हो।

प्रवासी संबंधः दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों को सुगम बनाने की क्षमता रखने वाले प्रवासी वर्तमान में तनाव के दौर से गुजर रहे हैं।

भारत–कनाडा संबंधों में सहयोग के क्षेत्र

- **प्रवासी भारतीयः** विश्व में भारतीय प्रवासियों का एक बड़ा हिस्सा कनाडा में निवास करता है। यह हिस्सा **कनाडा की कुल आबादी के 3 प्रतिशत से अधिक है।**
- **आर्थिकः** 2022 में वस्तुओं और सेवाओं में द्विपक्षीय व्यापार क्रमशः लगभग **9.9 बिलियन डॉलर और 6.5 बिलियन डॉलर** था।
- **सामरिक/ रणनीतिक सहयोगः कनाडा की हिंद–प्रशांत नीति, चीन को "विघटनकारी वैश्विक शक्ति"** के रूप में स्वीकार करती है। साथ ही, यह नीति साझा हितों को पूरा करने हेतु सहयोग के लिए **भारत को "प्रमुख भागीदार"** के रूप में रेखांकित करती है।

चुनौतियां

- **कनाडा की आप्रवासन (Immigration) प्रणालीः** यह प्रणाली विवादित अतीत वाले व्यक्तियों को कनाडाई नागरिकता प्राप्त करने में सक्षम बनाती है।
- **आर्थिक सहयोग का बेहतर तरीके से उपयोग न होनाः** भारत और कनाडा के बीच एक व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता (CEPA) वर्ष 2010 से लंबित है।
- **भारत के घरेलू मामलों में हस्तक्षेपः** उदाहरण के लिए– भारत में किसानों के **विरोध प्रदर्शन के दौरान,** कनाडा के प्रधान मंत्री ने किसानों के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया था।

आगे की राह

- **कूटनीति को बढ़ावा देनाः** दोनों देशों में संबंधों में सुधार की दिशा में पहला कदम मौजूदा तनाव को कम करना होना चाहिए।
- **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की जिम्मेदारीः** हिंसा, अलगाववाद या आतंकवाद का समर्थन करने वाले लोगों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के दुरुपयोग के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए।
- **आतंकवाद के खिलाफ सहयोगः** 2018 में स्थापित **आतंकवाद और हिंसक उग्रवाद का मुकाबला करने के लिए सहयोग की रूपरेखा** के तहत दोनों देशों को सहयोग करना चाहिए।

निष्कर्ष

यह महत्वपूर्ण है कि दोनों देशों के लिए **सहयोग का एक नया फ्रेमवर्क** विकसित किया जाए। यह फ्रेमवर्क अधिक **व्यावहारिक** हो तथा व्यापार, ऊर्जा जैसे **पारस्परिक रूप से लाभप्रद क्षेत्रों** पर जोर देता हो।

© Vision IAS

4.6.3. भारत-लैटिन अमेरिका संबंध: एक नज़र में (India-Latin America Relations at a Glance)

भारत- लैटिन अमेरिका संबंध

- औपनिवेशिक काल की समाप्ति के बाद भारत और लैटिन अमेरिकी देशों का साझा इतिहास रहा है। इसके बावजूद, दोनों पिछले कई दशकों से न्यूनतम द्विपक्षीय संबंधों को ही बनाए रख पाए हैं। हालांकि, हाल ही में यह क्षेत्र भारत की विदेश नीति में तेजी से प्रमुखता प्राप्त कर रहा है।

भारत के कुल आयात का **लगभग 3% हिस्सा LAC (लैटिन अमेरिका और कैरिबियन)** से आता है और भारत के आयात स्रोतों में इसका **स्थान 8वां** है।

द्विपक्षीय व्यापार: 2022 में लगभग 49 बिलियन अमेरिकी डॉलर

महत्त्व

- **व्यापार: मर्कोसुर/ MERCOSUR के साथ अधिमान्य व्यापार समझौता (PTA)।**
- **निवेश:** इस क्षेत्र में भारत का निवेश लगभग **16 बिलियन अमेरिकी डॉलर** है।
- **खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा:** लैटिन अमेरिका में उपजाऊ भूमि का विशाल क्षेत्र है; ब्राजील की खाद्य भंडारण प्रौद्योगिकियां अत्याधुनिक हैं; पर्यावरण के अनुकूल एथेनॉल को लेकर ब्राजील के साथ सहयोग।
- **रणनीतिक महत्त्व:** लैटिन अमेरिका **तांबे** के वैश्विक उत्पादन में लगभग 40% का योगदान करता है। साथ ही, विश्व के **35% लिथियम** की आपूर्ति करता है।
- **सामरिक हित:** भारत के लिए अपनी वैश्विक महत्वाकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए यह क्षेत्र महत्वपूर्ण है। इन महत्वाकांक्षाओं में UNSC, NSG आदि में अपनी स्थायी सदस्यता सुनिश्चित करना शामिल है।
- **दक्षिण-दक्षिण सहयोग:** भारत ने **पहला वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ सम्मेलन** आयोजित किया था। इसमें **29 लैटिन अमेरिकी और कैरेबियाई देश** सम्मिलित हुए थे।

चुनौतियां

- **कूटनीतिक स्तर पर पर्याप्त ध्यान न देना और पर्याप्त संस्थागत उपस्थिति का अभाव।**
- **व्यापार:** लैटिन अमेरिकी देशों की कृषि वस्तुओं पर भारत द्वारा अधिक शुल्क (चीन की तुलना में 5 गुना) लगाना।
- **कनेक्टिविटी का अभाव:** भारत के पास इस क्षेत्र के लिए कोई सीधी पोत-परिवहन सेवाएं नहीं हैं।
- **पर्याप्त संस्थागत उपस्थिति का अभाव।**
- **भाषा संबंधी बाधाएं:** स्पेनिश और पुर्तगाली भाषाओं में अकुशल पकड़ भारतीय कंपनियों के लिए एक बड़ी बाधा है; भारत के लोकाचार से अपरिचित होना भारत में लैटिन अमेरिकी कंपनियों के समक्ष प्रमुख समस्या है।
- **चीन के साथ प्रतिस्पर्धा:** चीन कई लैटिन अमेरिकी देशों में सबसे बड़ा निवेशक है। पनामा नहर के माध्यम से चीन की सीधी शिपिंग लेन है।

आगे की राह

- **व्यापार विविधीकरण और प्रगति:** 2027 तक दोतरफा व्यापार को दोगुना करके 100 बिलियन डॉलर करना, PTA को FTA में अपग्रेड करना।
- **"फोकस: LAC" कार्यक्रम को पुनर्जीवित करना (क्षेत्र में व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए), व्यापार और सामरिक प्रौद्योगिकियों पर मंत्रिस्तरीय परिषद की स्थापना करना।**
- **सुरक्षा और रक्षा उद्योग सहयोग को बढ़ावा देना।**
- एक उज्जवल भविष्य के लिए घनिष्ठ दक्षिण-दक्षिण सहयोग की दिशा में संयुक्त कदम बढ़ाने हेतु **वित्तीय संस्थानों का विकास करना चाहिए।**
- **समकालीन वास्तविकता को प्रतिबिंबित करने के लिए धारणाओं का पुनर्निर्धारण करना।**

निष्कर्ष

- भारत की वैश्विक शक्ति बनने की महत्वाकांक्षा में लैटिन अमेरिका की भूमिका बनी रहेगी। लैटिन अमेरिका व्यापार के लिए 'गोल्डीलॉक्स ज़ोन' (अर्थात, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप के अत्यधिक विनियमित और प्रतिस्पर्धी बाजार तथा कम क्रय शक्ति वाले अफ्रीका के कम प्रतिस्पर्धी बाजार के मध्य एक आकर्षक स्थान) का भी हिस्सा होगा।

4.6.4. भारत-ब्राजील (India-Brazil)

सुर्ख़ियों में क्यों?

G-20 शिखर सम्मेलन के अवसर पर भारत-ब्राजील ने अपना संयुक्त वक्तव्य जारी किया।

अन्य संबंधित तथ्य

- वर्ष 2023 **ब्राजील और भारत के बीच कूटनीतिक संबंधों की 75वीं वर्षगांठ सहित IBSA/ इब्सा (भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका) मंच की 20वीं वर्षगांठ** का भी प्रतीक है।

संयुक्त वक्तव्य की प्रमुख बिंदुओं पर एक नज़र:

- दोनों देशों ने **G-4 और L.69 के फ्रेमवर्क** पर मिलकर कार्य करने का फैसला किया है।
  - **G-4 में ब्राजील, भारत, जापान और जर्मनी** शामिल हैं। यह समूह **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में सुधार करने की मांग** कर रहा है।
  - **L.69 समूह में अफ्रीका महाद्वीप, लैटिन अमेरिका, कैरेबियाई, एशिया और प्रशांत क्षेत्र के विकासशील देश** शामिल हैं। यह समूह भी UNSC में सुधार करने का समर्थन करता है।
- इस अवसर पर **ब्राजील ने 2028-2029 के कार्यकाल के लिए UNSC की अस्थायी सीट पर भारत की उम्मीदवारी का समर्थन** किया है।
- दोनों देश **ग्लोबल बायोफ्यूल अलायन्स (GBA) के संस्थापक सदस्य** हैं। GBA बायोफ्यूल (जैव ईंधन) को अपनाने में सुविधा प्रदान करेगा।
- भारत ने **BASIC/ बेसिक समूह की ब्राजील की अध्यक्षता** का स्वागत किया है। इसके अलावा, भारत ने **2025 में UNFCCC के 30वें कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज (COP30) के लिए ब्राजील की अध्यक्षता का भी समर्थन** किया है। बेसिक समूह में **ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, भारत और चीन** शामिल हैं।
- दोनों देशों ने अपनी आर्थिक साझेदारी की पूर्ण क्षमता का लाभ उठाने की मंशा प्रकट की है। इसके लिए दोनों देश **ब्राजील की मर्कोसुर गुट की अध्यक्षता के दौरान भारत-मर्कोसुर तरजीही व्यापार समझौते (PTA) के विस्तार हेतु मिलकर कार्य करने पर सहमत हुए हैं।**
  - मर्कोसुर एक **आर्थिक और राजनीतिक गुट** है। इसमें **अर्जेंटीना, ब्राजील, पैराग्वे और उरुग्वे** शामिल हैं।
- निजी क्षेत्रक में आपसी सहयोग के लिए **इंडिया-ब्राजील बिजनेस फोरम** की स्थापना करने का निर्णय लिया गया है।
- दोनों देशों ने दुनिया के अन्य देशों में **ISA और CDRI** की साझेदारी में संयुक्त परियोजनाओं को बढ़ाने पर भी सहमति प्रकट की है। यहां **ISA** से आशय **अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन और CDRI** से आशय **आपदा प्रतिरोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन** से है।

भारत-ब्राज़ील द्विपक्षीय संबंध

- **राजनीतिक संबंध:** दोनों देश **2006 से रणनीतिक साझेदार** हैं।
- **बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग:** दोनों देश **संयुक्त राष्ट्र, G20, ब्रिक्स, IBSA जैसे मंचों पर** एक-दूसरे को सहयोग करते हैं। **IBSA भारत, ब्राज़ील और दक्षिण अफ्रीका** का समूह है।
  - **G4 ब्राज़ील, जर्मनी, भारत और जापान** का एक समूह है। ये देश **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में स्थायी सीटों के लिए एक-दूसरे का समर्थन** करते हैं।
  - ब्राज़ील **भारत के नेतृत्व वाले अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) में शामिल** हुआ है।
  - ब्राज़ील ने भारत को **मर्कोसुर (MERCOSUR) के साथ घनिष्ठ सहयोग** स्थापित करने में भी मदद की है। मर्कोसुर **दक्षिण अमेरिका का एक क्षेत्रीय व्यापारिक समूह** है।
- **व्यापार:** 2021 में भारत, ब्राज़ील का **पांचवां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार** देश था।
- **अंतरिक्ष:** 2021 में इसरो ने **ब्राज़ील का उपग्रह अमेजोनिया-1** लॉन्च किया था।
- **सुरक्षा:** रक्षा और सुरक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए **2020 में संयुक्त वक्तव्य व कार्य योजना** पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- **जैव-ईंधन में सहयोग:** ब्राज़ील **विश्व में जैव-ईंधन का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक** है। यह भारत के नेतृत्व वाली पहल **"ग्लोबल बायोफ्यूल्स एलायंस (GBA)"** में भी शामिल हुआ है।

© Vision IAS

4.7. भारत-यूरोप (India-Europe)

4.7.1. भारत-यूरोपीय संघ संबंध: एक नज़र में (India-Eu Relations at a Glance)

भारत-यूरोपीय संघ संबंध

- वर्तमान समय में भारत-यूरोपीय संघ के संबंधों को आकार देने वाले कारकों में **भू-राजनीतिक बदलाव, जैसे- रूस-यूक्रेन युद्ध, चीन का उदय, हिंद महासागर में साझा हित और कोविड-19 के बाद उभरती नई विश्व व्यवस्था** शामिल हैं।

2022-23 में दोनों के मध्य **द्विपक्षीय व्यापार 135 बिलियन अमेरिकी डॉलर** का था।

यूरोपीय संघ भारत के लिए FDI का सबसे बड़ा स्रोत है **(107 बिलियन डॉलर)**

सहयोग के क्षेत्र

- **वाणिज्यक:** EU, संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद भारतीय निर्यात के लिए दूसरा सबसे बड़ा गंतव्य है।
- **नीली अर्थव्यवस्था:** यूरोपीय संघ की **ब्लू ग्रोथ इनिशिएटिव, "नीली क्रांति"** को अपनाने हेतु भारत के आह्वान के अनुरूप है।
  - भारत को जेनरलाइज्ड सिस्टम ऑफ प्रिफ्रेंसेज (GSP) से लाभ प्राप्त हुआ है।
- **बहुपक्षवाद और नियम आधारित व्यवस्था की रक्षा करना:** दोनों पक्ष **संयुक्त राष्ट्र में सुधार, विश्व व्यापार संगठन जैसे कई सुधार एजेंडा** पर एक-दूसरे को एक महत्वपूर्ण भागीदार मानते हैं।
- **इंडो-पैसिफिक:** यूरोपीय संघ की इंडो-पैसिफिक रणनीति **इस क्षेत्र में भारत के लक्ष्यों के करीब है।**
- **वैश्विक मुद्दों पर सहयोग: जलवायु परिवर्तन से मुकाबला तथा स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु भागीदारी** की सहायता से एक सतत अर्थव्यवस्था में बदलाव को सुविधाजनक बनाना।
- **पीपल-टू-पीपल संबंध:** EU ने भारतीयों के लिए शेंगेन वीज़ा नियमों में ढील दी है।

भारत-यूरोपीय संघ संबंधों में चिंताएं

- **हालिया भटकाव: कार्बन बॉर्डर एडजस्टमेंट** मैकेनिज्म, रूस-यूक्रेन युद्ध।
- **बाजार तक पहुंच:** भारतीय कंपनियों को गैर-प्रशुल्क बाधाओं जैसे कि फाइटोसैनिटरी उपायों के मुद्दों का सामना करना पड़ता है।
- **IPR से जुड़े मुद्दे:** यूरोपीय संघ मजबूत IPR व्यवस्था की मांग करता है, जिसका भारत के फार्मास्यूटिकल और जेनेरिक दवा क्षेत्रक के निर्यात पर प्रभाव पड़ता है।
- **मानवाधिकार और गवर्नेंस से जुड़े मुद्दे:** यूरोपीय संघ ने धार्मिक स्वतंत्रता, अल्पसंख्यकों के साथ व्यवहार आदि के बारे में चिंता जताई है।
- **व्यापार असंतुलन:** यूरोपीय संघ के कुल व्यापार में चीन का हिस्सा (14.6%) भारत (2.2%) के हिस्से से कहीं अधिक है।

आगे की राह

- **BTIA अर्थात् FTA को शीघ्र संपन्न करना** महत्वपूर्ण है।
  बहुपक्षीय मुद्दों पर संवाद के चैनल स्थापित करना तथा विदेश एवं सुरक्षा नीति और व्यापार एवं आर्थिक उद्देश्यों के बीच संतुलन बनाना।
- **2021 में शुरू की गई इंडिया-EU कनेक्टिविटी** पार्टनरशिप का बेहतर उपयोग।
- ब्रेक्जिट के बाद के परिदृश्य में उपलब्ध अवसरों का पूरा लाभ उठाना।

निष्कर्ष

- भारत और यूरोपीय संघ को केवल व्यापार वाले नजरिए से आगे बढ़कर अपने महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक और रणनीतिक समानताओं को पहचानना चाहिए।

4.7.2. भारत-रूस संबंध: एक नज़र में (India-Russia Relations at a Glance)

भारत-रूस संबंध

- हाल ही में, भारतीय प्रधान मंत्री 22वें भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए रूस की आधिकारिक यात्रा पर गए।

"भारत और रूस के बीच संबंधों में स्थिरता बनी हुई है, यही कारण है कि ये हमेशा चर्चा का विषय रहते हैं।" (विदेश मंत्रालय)

द्विपक्षीय व्यापार: वित्त वर्ष 2023-24 में दोनों देशों के बीच **द्विपक्षीय व्यापार 65 बिलियन डॉलर** था। वर्ष 2025 के लिए दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार का लक्ष्य **30 बिलियन डॉलर** निर्धारित किया गया है।

दोनों देशों ने **2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ाकर 100 बिलियन अरब डॉलर** करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

भारत-रूस सहयोग के प्रमुख क्षेत्र

- **राजनीतिक:** भारत के प्रधान मंत्री और रूसी राष्ट्रपति के बीच वार्षिक शिखर सम्मेलन
- **न्यायसंगत वैश्विक विकास और सुरक्षा** के लिए बहुपक्षवाद को मजबूत करना
- **परमाणु ऊर्जा:** भारत में कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा संयंत्र (KKNPP)
- **परिवहन और कनेक्टिविटी:** जैसे कि चेन्नई-व्लादिवोस्तोक पूर्वी समुद्री गलियारा, INSTC
- **अंतरिक्ष अन्वेषण:** इसरो और रॉस्कोस्मोस के बीच बढ़ती साझेदारी, UNCOPUOS के क्षेत्र में सहयोग

भारत के लिए रूस का महत्त्व

- **चीन और उसकी आक्रामकता को संतुलित करना।**
- **रूस** भारत के लिए मुख्य रक्षा उपकरणों या साधनों (जैसे कि S-400 मिसाइल प्रणाली, INS विक्रमादित्य) का एक **प्रमुख आपूर्तिकर्ता है।**
- **व्यापार और निवेश के अवसर:** उदाहरणार्थ- रूस का सुदूर पूर्व और रूसी संघ का आर्कटिक क्षेत्र।
- **आतंकवाद से निपटना:** दोनों देश संयुक्त राष्ट्र में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक सम्मेलन को जल्द से जल्द अंतिम रूप देने का आह्वान करते आए हैं।
- UNSC और NSG जैसे **बहुपक्षीय मंचों पर रूस का समर्थन।**

संबंधों में प्रमुख चुनौतियां

- **रूस और चीन के बीच बढ़ती सैन्य साझेदारी:** उदाहरण के लिए- "नो-लिमिट्स पार्टनरशिप"
- **रूस का पाकिस्तान के साथ नजदीकी:** उदाहरण के लिए- सैन्य अभ्यास "मैत्री" ("द्रुज्बा")।
- **भारत के लिए कूटनीतिक दुविधा:** उदाहरण के लिए, अमेरिका और रूस के बीच संतुलन, रूस-यूक्रेन युद्ध।
- **व्यापार में बहुत अधिक असंतुलन:** लगभग 65 बिलियन डॉलर के कुल व्यापार में से, भारत का निर्यात 5 बिलियन डॉलर से कुछ अधिक है।
- हिंद-प्रशांत और क्वाड के विचार की **रूस द्वारा आलोचना।**

आगे की राह

- **द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों का विस्तार और विविधीकरण:** उदाहरण के लिए- 2030 तक 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार।
  - राष्ट्रीय मुद्राओं का उपयोग करके द्विपक्षीय निपटान प्रणाली को बढ़ावा देना, उदाहरण के लिए- रुपया रूबल व्यापार, वित्तीय मैसेजिंग सिस्टम की अंतर-संचालनीयता।
- यूरेशियाई क्षेत्र, आर्कटिक, अफगानिस्तान जैसे सहयोग के नए विषयों पर कार्य करके **द्विपक्षीय और क्षेत्रीय मुद्दों पर सहयोग को व्यापक बनाना।**
- **लॉजिस्टिक्स लिंक पर फोकस:** उदाहरण के लिए, उत्तरी समुद्री मार्ग की संभावनाएं
- संयुक्त राष्ट्र और अन्य मंचों (ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन आदि) में अधिक सहयोग के माध्यम से **नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था पर कार्य करना।**

© Vision IAS

निष्कर्ष

- समकालीन युग में भारत और रूस के बीच साझेदारी दुनिया के सबसे स्थिर संबंधों में से एक रही है। दोनों देश बहुध्रुवीय विश्व की स्थापना के प्रति प्रतिबद्ध हैं और पारंपरिक सैन्य, परमाणु एवं अंतरिक्ष सहयोग से आगे बढ़कर विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग कर रहे हैं।

4.7.2.1. रूस-चीन संबंध और भारत पर प्रभाव (Russia-China Ties and Impact on India)

सुर्ख़ियों में क्यों?

चीन और रूस **"नए युग के लिए समन्वय की व्यापक रणनीतिक साझेदारी"** को मजबूत बनाने पर सहमत हुए हैं। गौरतलब है कि **2024 में चीन-रूस राजनयिक संबंधों की स्थापना के 75 वर्ष** पूरे हो गए हैं।

चीन-रूस संबंध

- **राजनीतिक संबंध:** दोनों पक्षों ने रूस-यूक्रेन युद्ध से पहले **"नो लिमिट्स" रणनीतिक साझेदारी** पर हस्ताक्षर किए थे।
- **रणनीतिक संबंध:** चीन, **रूस के लिए को "दोहरे उपयोग वाली" वस्तुओं का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता** है।
  - **दोहरे उपयोग वाली वस्तुओं (Dual-use items)** से आशय ऐसी वस्तुओं या उपकरणों से है, जिनका उपयोग सैन्य और असैन्य, दोनों उद्देश्यों से किया जा सकता है।
- **आर्थिक संबंध:** चीन, **रूस का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार** देश बन गया है। 2023 में दोनों देशों के बीच **240 बिलियन डॉलर से अधिक का** द्विपक्षीय व्यापार हुआ था।

चीन और रूस को एकजुट करने वाले कारक:

- दोनों देश मानते हैं कि **संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व में अपना आधिपत्य जमाना** चाहता है,
- दोनों देश **नाटो के विस्तार से चिंतित** हैं।
- दोनों के पास अपने **अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव का उपयोग करने की वैकल्पिक एप्रोच** मौजूद है, और
- दोनों **साझा हितों को संयुक्त रूप से प्रबंधित करने** में सक्षम हैं।

चीन व रूस के बीच मजबूत होते संबंधों का भारत पर प्रभाव

- **सुरक्षा संबंधी चिंताएं:** भारत **रक्षा क्षेत्रक में अधिकतर हथियार या उपकरण** रूस से आयात करता है। चीन के साथ भारत के टकराव के दौरान इन सामग्रियों की आपूर्ति में व्यवधान से जुड़ी चिंताएं उत्पन्न होती रही हैं।
- **रूस के समर्थन में कमी:** चीन पर रूस की निर्भरता बढ़ती जा रही है। ऐसे में भारत के साथ **सीमा संघर्ष की स्थिति में रूस द्वारा चीन पर दबाव डालने की संभावना कम** हो जाती है।
- **भारत का पड़ोस:** चीन और रूस के आपस में अधिक नजदीक आने से **क्षेत्रीय शक्ति संतुलन में परिवर्तन** आ सकता है। संभावित रूप से इस क्षेत्र में भारत का प्रभाव सीमित हो सकता है।
- **रणनीतिक प्राथमिकताएं बदलना:** चीन-रूस गठबंधन वास्तव में **संयुक्त राज्य अमेरिका और पश्चिमी देशों को केंद्र में रखकर आगे बढ़** रहा है। यह **हिंद-प्रशांत और यूरेशिया** में भारत के भू-राजनीतिक हितों पर प्रभाव डालता है।

चीन-रूस संबंधों का विश्व में प्रभाव

- चीन और रूस के मजबूत होते गठबंधन ने **नाटो के विस्तार** का मार्ग प्रशस्त किया है। साथ ही, **संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व में पश्चिमी एकजुटता को बढ़ावा** मिला है।
- इससे भू-राजनीतिक व्यवस्था में नए समीकरण बन रहे हैं। **पश्चिमी देशों** ने दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों को अपना **सैन्य समर्थन बढ़ा** दिया है। साथ ही, भारत भी **संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व वाले सुरक्षा मंचों में शामिल** हो रहा है।
- यह संघर्षों को रोकने में **बहुपक्षीय सुरक्षा प्रणाली की विफलता** को रेखांकित करता है।

4.7.2.2. उत्तरी समुद्री मार्ग (Northern Sea Route)

सुर्ख़ियों में क्यों?

रूस "उत्तरी समुद्री मार्ग (NSR)" को विकसित करने के लिए 24 बिलियन डॉलर का निवेश करेगा।

उत्तरी समुद्री मार्ग के बारे में

- NSR **आर्कटिक महासागर के पूर्वी और पश्चिमी भागों को जोड़ता** है। इसे **'पूर्वोत्तर जलमार्ग (Northeast Passage: NEP)'** भी कहा जाता है।
  - NSR **बैरेंट्स सागर** से (नार्वे से लगती रूसी सीमा के नजदीक से) आरंभ होकर **बेरिंग जलसंधि** (साइबेरिया और अलास्का के बीच) तक जाता है।
  - NSR **उत्तर-पश्चिम जलमार्ग** (Northwest Passage) **से अलग** है। उत्तर-पश्चिम जलमार्ग **कनाडाई आर्कटिक से होते हुए अटलांटिक महासागर और प्रशांत महासागर को जोड़ने वाले संभावित नौवहन मार्गों की एक श्रृंखला** है।
- NSR का संपूर्ण मार्ग आर्कटिक महासागर से गुजरता है और यह **रूस के अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EEZ)** के भीतर स्थित है।
  - जलवायु परिवर्तन की वजह से बर्फ पिघलने के कारण रूस के लिए NSR का उपयोग करना **अधिक आसान** होता जा रहा है। वैसे यह मार्ग **वर्ष में केवल दो महीने के लिए** ही खुलता है।
- **NSR का महत्त्व**
  - जहाजों द्वारा आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले स्वेज नहर मार्ग की तुलना में NSR का उपयोग करने से लगभग 30-40 प्रतिशत **ऊर्जा और समय की बचत** होगी।
    - NSR की **लंबाई स्वेज नहर से होकर जाने वाले पारंपरिक जलमार्ग की लंबाई से लगभग एक-तिहाई कम है।**
  - इस मार्ग पर **समुद्री डकैती का खतरा न के बराबर** है।
  - इस मार्ग के संचालन से आर्कटिक क्षेत्र में मौजूद **प्राकृतिक संसाधनों का अन्वेषण, दोहन और परिवहन आसान** हो जाएगा।
- **प्रमुख चुनौतियां:**
  - रूस NSR पर अपनी संप्रभुता का दावा करता रहा है। इस मार्ग में **नौ-परिवहन की स्वतंत्रता (Freedom of navigation) के सिद्धांत का उल्लंघन करने से भू-सामरिक संघर्ष** उत्पन्न हो सकते हैं।
  - **आर्कटिक क्षेत्र में पड़ने वाले कोहरे के कारण नौपरिवहन परिचालन अवधि कम** हो जाएगी।
  - NSR पर जहाजों की आवाजाही बढ़ने से **आर्कटिक के पर्यावरण को नुकसान** पहुंचेगा। इसके अलावा, **जहाज परिचालन लागत में भी वृद्धि** की संभावना है।

4.7.3. भारत-यूक्रेन संबंध (India-Ukraine Relationship)

सुर्ख़ियों में क्यों?

यूक्रेन के विदेश मंत्री ने दो साल से अधिक पुराने रूस-यूक्रेन संघर्ष का शांतिपूर्ण समाधान खोजने के प्रयासों के बीच भारत यात्रा पर आए।

अन्य संबंधित तथ्य

- यूक्रेन ने आशा प्रकट की है, कि भारत, **स्विट्जरलैंड** द्वारा आयोजित किए जाने वाले **शांति शिखर सम्मेलन** में भाग लेगा।
- भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने शिखर सम्मेलन में भाग लिया, लेकिन शिखर सम्मेलन के नतीजे के रूप में किसी भी विज्ञप्ति/ दस्तावेज से स्वयं को अलग रखा।

© Vision IAS

भारत-यूक्रेन संबंधों के बारे में

- **राजनीतिक:** 1991 में यूक्रेन को मान्यता देने वाले आरंभिक देशों में भारत भी शामिल था।
- **व्यापार और आर्थिक सहयोग:** 2020 में एशिया-प्रशांत क्षेत्र में भारत, यूक्रेन का प्रमुख निर्यात गंतव्य देश था।
- **सांस्कृतिक:** भारत के सॉफ्ट पावर के घटक जैसे कि **नृत्य, योग, दर्शन, आयुर्वेद और आध्यात्मिकता का यूक्रेन में काफी प्रभाव** है।
    - भारत अलग-अलग प्रशिक्षण कार्यक्रमों के तहत दोनों देशों के मध्य **लोगों के बीच संपर्क** को बढ़ावा दे रहा है। इसके कुछ उदाहरण हैं: **भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) स्कॉलरशिप, केंद्रीय हिंदी संस्थान का छात्रवृत्ति कार्यक्रम आदि।**
- **शिक्षा:** भारतीय छात्रों के लिए यूक्रेन **मेडिकल एजुकेशन** हेतु सबसे पसंदीदा देश रहा है। युद्ध से पहले लगभग **18,000 भारतीय छात्र यूक्रेन में मेडिकल की पढ़ाई** कर रहे थे।

रूस-यूक्रेन युद्ध पर भारत का रुख

- भारत **वार्ता और कूटनीति** के माध्यम से रूस-यूक्रेन संघर्ष के **शांतिपूर्ण समाधान का समर्थन** करता है।
- भारत उन सभी शांतिपूर्ण तरीकों और साधनों का उपयोग करने के पक्ष में है, जिससे युद्ध को समाप्त करने में मदद मिलती हो।
- इसके अलावा, भारत यूक्रेन को लगातार **मानवीय सहायता** भी उपलब्ध करा रहा है।

4.7.4. भारत-फ्रांस संबंध: एक नज़र में (India-France at a Glance)

भारत–फ्रांस संबंध

- भारत और फ्रांस 1998 में रणनीतिक साझेदार बने थे। दोनों देश लोकतंत्र, मौलिक स्वतंत्रता, विधि के शासन और मानवाधिकारों के प्रति सम्मान जैसे साझा मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध हैं।

फ्रांसीसी स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध 40 में से 39 कंपनियां भारत में अपना कारोबार कर रही हैं।

फ्रांस के राजदूत ने कहा कि भारत–फ्रांस साझेदारी "सार्वभौमिक" है **क्योंकि यह "समुद्र से अंतरिक्ष तक" और उससे भी आगे तक है।**

भारत–फ्रांस संबंधों के बीच बढ़ती निकटता

- **रक्षा सहयोगः राफेल विमानों की खरीद** आदि।
- **अंतरिक्ष सहयोगः** उदाहरण के लिए– तृष्णा और मेघा ट्रॉपिक्स उपग्रह आदि।
- **भू–रणनीतिकः** 2023 रोडमैप ने हिंद महासागर क्षेत्र से लेकर संपूर्ण हिंद–प्रशांत क्षेत्र तक द्विपक्षीय सहयोग को व्यापक बनाया है।

भारत के लिए फ्रांस के साथ घनिष्ठ गठबंधन का महत्व

- **आक्रामक चीन को संतुलित करनाः** उदाहरण के लिए– हाल ही में, फ्रांस भारत के IPOI में शामिल हो गया है।
- **रक्षा क्षेत्र का आधुनिकीकरणः** जैसे महत्वपूर्ण नौसैनिक परमाणु रिएक्टर प्रौद्योगिकी, राफेल जेट इत्यादि।
- **नई प्रौद्योगिकी को अपनानाः** भारत को जूल्स होरोविट्ज़ रिसर्च रिएक्टर (JHR) और ITER पर सहयोग करने के लिए आमंत्रित किया गया है।

चुनौतियां

- **व्यापार 15.8 बिलियन डॉलर (2022) परः** अन्य साझेदार की तुलना में कम प्रदर्शन।
- **जैतापुर परमाणु परियोजना में देरीः** तकनीकी, वित्तीय, देयता संबंधी बाधाएँ बनी हुई हैं।
- भारत की विदेश नीति गुटनिरपेक्षता को प्राथमिकता देती है जबकि फ्रांस प्रमुख शक्तियों के प्रभाव को संतुलित करने के लिए व्यावहारिक गठबंधनों में भागीदारी करता है।

आगे की राह

- **मौजूदा सहयोग तंत्र का लाभ उठानाः** उदाहरण के लिए, भारत–फ्रांस आतंकवाद रोधी संयुक्त कार्य समूह।
- **बहुपक्षीय मंचों में सक्रिय भागीदारी,** उदाहरण के लिए– क्वाड और I2U2
- एक–दूसरे की रणनीतिक अनिवार्यताओं को समायोजित करने में अधिक संतुलित रुख अपनाना।

निष्कर्ष

फ्रांस और भारत बहुपक्षीय मंचों पर अधिक सक्रिय भूमिका निभाकर, एक अधिक संतुलित बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को बढ़ावा देकर और यूरोपीय संघ के साथ भारत के संबंधों को गहरा कर अपनी रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत कर सकते हैं।

DELHI: 22 अगस्त, 1 PM | 18 जुलाई, 1 PM
LUCKNOW: 18 जुलाई
BHOPAL: 23 जुलाई
JAIPUR: 16 अगस्त
JODHPUR: 11 जुलाई
फाउंडेशन कोर्स
सामान्य अध्ययन
प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा 2025
इनोवेटिव क्लासरूम प्रोग्राम

4.7.5. भारत-यूनाइटेड किंगडम (UK) संबंध: एक नज़र में (India-UK Relations at a Glance)

भारत–यूनाइटेड किंगडम संबंध

- हाल ही में, भारत और यूनाइटेड किंगडम ने रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाने हेतु महत्वाकांक्षी **'प्रौद्योगिकी सुरक्षा पहल (TSI)'** शुरू की है।

"हमारी मुक्त व्यापार समझौता वार्ता, हमारी साझा क्षमता को साकार करने तथा बेंगलुरु से बर्मिंघम तक संवृद्धि सुनिश्चित करने की हमारी महत्वाकांक्षाओं को आगे बढ़ाने का प्रतीक है।" – **FTA पर जारी बातचीत पर भारत के विदेश मंत्री की टिप्पणी।**

द्विपक्षीय व्यापार: दोनों देशों ने वित्त वर्ष 2022–23 के दौरान **36.3 बिलियन पाउंड** का व्यापार किया था। इसमें व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में रहा है।

भारत–ब्रिटेन संबंधों का महत्त्व

- **आक्रामक चीन को संतुलित करना:** उदाहरण के लिए, AUKUS में शामिल होना।
- **ब्रिटेन में भारतीय प्रवासी:** भारतीय प्रवासी के स्वामित्व वाली 600 से अधिक कंपनियां।
- **रक्षा उत्पादन में सहयोग की संभावनाएं:** उदाहरण के लिए, VSHORAD मिसाइलों और लड़ाकू जेट इंजनों के सह–उत्पादन पर वार्ता।

मुक्त व्यापार समझौते (FTA) के संभावित लाभ

- **सामाजिक सुरक्षा समझौते** (या टोटलाईजेशन अग्रीमेंट्स) के लागू होने से वीजा प्रक्रिया अधिक किफायती हो जाएगी। इससे बड़ी तादाद में भारतीय पेशेवर अल्पकालिक परियोजनाओं में कार्य कर सकेंगे।
- चमड़ा, वस्त्र, आभूषण जैसे **श्रम प्रधान क्षेत्रकों** को बढ़ावा मिलेगा।
- ब्रिटिश कंपनियों का भारत में प्लांट लगाना, विनिर्माण कार्य करना एवं निर्यात करना काफी आसान हो जाएगा। इससे **चीन को प्रतिसंतुलित** करने में मदद मिलेगी।

FTA को अंतिम रूप देने के समक्ष बाधाएं

- यूनाइटेड किंगडम IPRs को और मजबूत बनाने के लिए WTO के ट्रिप्स (TRIPS) **समझौते से इतर अन्य उपायों को अपनाने की भी वकालत** कर रहा है।
- **उत्पत्ति के नियम (ROO) के नियमों में उदारता**
- भारत ने BIT के लिए **नया मॉडल** तैयार किया है

चुनौतियां

- **भारत विरोधी गतिविधियों से निपटने में विफलता:** उदाहरण के लिए, भारतीय ध्वज का अपमान।
- **डिएगो गार्सिया का मुद्दा:** डिएगो गार्सिया की संप्रभुता को लेकर मॉरीशस और ब्रिटेन के बीच विवाद।
- **भारत की घरेलू राजनीति में ब्रिटिश हस्तक्षेप,** उदाहरण के लिए, कश्मीर का मुद्दा।

आगे की राह

- प्रौद्योगिकी और उभरते क्षेत्रों में गहन सहयोग।
- **लोगों के बीच संपर्क को बढ़ावा देना:** उदाहरण के लिए, जनरेशन यू.के.–इंडिया पहल, भारत–यू.के. युवा पेशेवर योजना।
- UN, G–20, WTO, WHO, IMF आदि में **सहयोग और समन्वय को बढ़ाना।**

निष्कर्ष

- भारत एक प्रमुख शक्ति के रूप में विकसित वैश्विक व्यवस्था में अपने लिए एक नई भूमिका बनाना चाहता है। यू.के. ब्रेक्जिट के बाद अपने रणनीतिक दृष्टिकोण को फिर से परिभाषित करने की चाह रखता है। यह भारत और यू.के., दोनों के लिए एक अनूठा क्षण है।

4.7.6. भारत-इटली संबंध (India-Italy Relations)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने **भारत और इटली के बीच प्रवासन व आवाजाही समझौते** को मंजूरी प्रदान की है।

समझौते से संबंधित प्रमुख प्रावधान:

- इसके तहत इटली में शैक्षणिक/ व्यावसायिक प्रशिक्षण पूरा करने के बाद **भारतीय छात्र 12 महीने तक वहां अस्थायी तौर पर रह** सकते हैं।
- इटली ने मौजूदा **फ्लो डिक्री के तहत 2023, 2024 और 2025 के लिए नॉन-सीज़नल तथा सीज़नल भारतीय कामगारों के लिए कोटा आरक्षित** किया है।
- यह समझौता **पांच साल तक लागू रहेगा और स्वचालित रूप से क्रमिक अवधि के लिए नवीनीकृत** हो जाएगा। हालांकि, इसे दोनों पक्षकारों द्वारा किसी भी समय समाप्त किया जा सकता है।
- **समझौते के संभावित लाभ:** लोगों से लोगों के बीच जुड़ाव को बढ़ावा मिलेगा; छात्रों, कुशल श्रमिकों, व्यापारियों के आवगमन को बढ़ावा मिलेगा; दोनों पक्षों के बीच अनियमित एवं अवैध प्रवासन पर सहयोग मजबूत होगा।

भारत और इटली के बीच संलग्नता के प्रमुख क्षेत्र

- **ऐतिहासिक**: भारत और इटली दोनों ही प्राचीन सभ्यताएं हैं। उन्होंने मसालों के व्यापार के लिए उपयोग में लाए जाने वाले मार्ग के जरिए 2000 वर्षों से अधिक समय से एक-दूसरे के साथ संपर्क और व्यापार किया है।
- **राजनीतिक संबंध:** उदाहरण के लिए- मार्च 2023 में, इटली की प्रधान मंत्री ने **रायसीना डायलॉग** गेस्ट ऑफ़ ऑनर के रूप में **भारत की अपनी पहली राजकीय यात्रा** की थी तथा भारत के प्रधान मंत्री ने G7 शिखर सम्मेलन (2024) में भाग लेने के लिए इटली का दौरा किया।
- **आर्थिक संबंध:** इटली यूरोपीय संघ में भारत का **चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार** है।
  - 2022-23 में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार 14.25 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। इसमें **व्यापार संतुलन भारत के पक्ष** में रहा था।
- **रक्षा संबंध: भारत-इटली सैन्य सहयोग समूह (MCG)** दोनों देशों के बीच **रक्षा सहयोग को बढ़ावा** देने के लिए स्थापित एक मंच है। भारत और इटली ने 2023 में **रक्षा सहयोग समझौते** पर हस्ताक्षर किए थे।
- **रणनीतिक संबंध:** मार्च 2023 में इटली की प्रधान मंत्री की भारत यात्रा के दौरान भारत और इटली के बीच संबंधों को **रणनीतिक साझेदारी** तक बढ़ाया गया था।
  - इसके तहत **इंडो-पैसिफिक क्षेत्र और विस्तारित भूमध्य सागर के बीच संबंध** की पहचान की गई है। ध्यातव्य है कि भारत इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में एक प्रमुख भूमिका निभाता है, जबकि **इटली भूमध्य सागर के केंद्र** में स्थित है तथा **इंडो-पैसिफिक की ओर एक प्राकृतिक पुल (Natural bridge)** के रूप में कार्य करता है।
  - **चीन की बेल्ट एंड रोड पहल से हटने का इटली का निर्णय** रोम और नई दिल्ली के बीच वैश्विक कनेक्टिविटी में साझा लक्ष्यों के अनुरूप है।
- **बहुपक्षवाद:** इटली ने **वासेनार व्यवस्था और ऑस्ट्रेलिया समूह** में भारत के प्रवेश का समर्थन किया था। इटली ने **अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA)**[37], **IMEC**[38] और **वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन (GBA)**[39] जैसी भारत की प्रमुख पहलों का समर्थन किया है।

सहयोग के अन्य क्षेत्र

प्रौद्योगिकी	अंतरिक्ष क्षेत्रक	प्रवासी समुदाय
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर एक समझौता **1978** से विद्यमान है। यह समझौता **इंडिया–ट्रेंटो प्रोग्राम फॉर एडवांस रिसर्च (ITPAR)** का आधार बना है।	हाल ही में, **इटालियन स्पेस एजेंसी (ASI)** और **इसरो (ISRO) के प्रमुखों** ने एक संयुक्त घोषणा–पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं।	इटली में भारतीय समुदाय (PIOs सहित अनुमानित 1,80,000) **यूरोप में भारतीयों का तीसरा सबसे बड़ा समुदाय** है। प्रथम व द्वितीय स्थान पर **यूनाइटेड किंगडम और नीदरलैंड** का स्थान है।

[37] International Solar Alliance

[38] India-Middle East-Europe Economic Corridor/ भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा

[39] Global Biofuel Alliance

© Vision IAS

भारत-इटली संबंधों में व्याप्त मुद्दे

- **सीमित व्यापार:** रोमन युग से ऐतिहासिक व्यापारिक संबंध होने के बावजूद भारत और इटली के बीच **वर्तमान में व्यापार और निवेश अपेक्षाकृत कम** है।
- **पहले से मौजूद मुद्दों के कारण विश्वास की कमी: उदाहरण के लिए: इटालियन मैरिनर्स मामला और अगस्ता वेस्टलैंड हेलीकॉप्टर घोटाला**।
- **अवास्तविक गठबंधन:** 2021 में, **भारत-इटली-जापान त्रिपक्षीय साझेदारी** की शुरुआत की गई थी, फिर भी इसे कार्यान्वित नहीं किया जा सका।

आगे की राह

- **आर्थिक साझेदारी:** व्यापार की मात्रा बढ़ाने, निवेश के नए माध्यम तलाशने और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए व्यापार संबंधों को मजबूत करने की आवश्यकता है।
- **यूरोपीय संघ-भारत साझेदारी को मजबूत करना:** यदि भारत और यूरोपीय संघ आने वाले समय में व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करते हैं, तो इटली और भारत व्यापक द्विपक्षीय व्यापार का लाभ उठा सकते हैं। इससे **पुनर्जीवित हुई यूरोपीय संघ-भारत साझेदारी को भी बढ़ावा** मिलेगा।
- **साझा वैश्विक एजेंडा:** इटली और भारत बहुपक्षीय मुद्दों पर एकजुट हो सकते हैं। इसके अलावा, वे एक साथ मिलकर एक नए वैश्विक एजेंडे को आकार देने और उसका समर्थन करने की साझा अनिवार्यता में भागीदारी कर सकते हैं।
    - उदाहरण के लिए- इटली बेल्ट एंड रोड पहल से बाहर निकल गया है।

4.7.7. भारत-ग्रीस संबंध: एक नज़र में (India-Greece at a Glance)

भारत-ग्रीस संबंध

- हाल ही में, चार दशकों में पहली बार किसी भारतीय प्रधान मंत्री ने ग्रीस की राजकीय यात्रा की। इससे भारत व ग्रीस, दोनों देशों ने अपने द्विपक्षीय संबंधों को रणनीतिक साझेदारी तक बढ़ाया।

"1983 के बाद से किसी भी भारतीय प्रधान मंत्री ने ग्रीस का दौरा नहीं किया फिर भी भारत-ग्रीस द्विपक्षीय संबंधों में न तो कोई कमी आई और न ही प्रगाढ़ता में कमी आई है" - भारतीय प्रधान मंत्री

2022-23 में द्विपक्षीय व्यापार लगभग **2 बिलियन डॉलर का था।**

भारत-ग्रीस संबंध को बढ़ाकर **रणनीतिक साझेदारी** के स्तर पर पहुंचाया गया है

प्रधान मंत्री की यात्रा के मुख्य आउटकम्स

- भारत ने **अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) में ग्रीस का स्वागत** किया।
- दोनों देश **प्राचीन स्थलों के संरक्षण और सुरक्षा में संयुक्त प्रयासों को बढ़ावा देने, तथा यूनेस्को के भीतर सहयोग को मजबूत करने** पर सहमत हुए हैं।
- दोनों देशों के बीच **आवागमन और प्रवासन साझेदारी समझौते (MMPA)** को शीघ्र अंतिम रूप देने पर सहमति बनी।

भारत के लिए ग्रीस का महत्त्व

- **वैश्विक मंचों पर समर्थन:** ग्रीस ने परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (NSG) में भारत की सदस्यता और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के दावे का समर्थन किया है।
- **भू-राजनीतिक:** ग्रीस और आर्मेनिया के साथ भारत के संबंध एक उभरती हुई तुर्की-पाकिस्तान-अज़रबैजान सैन्य धुरी के संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं। इन संबंधों के जरिए भारत इस क्षेत्र में चीन की बढ़ती उपस्थिति को प्रतिसंतुलित कर सकता है।
- **भू-सामरिक:** इस प्रकार ग्रीस के साथ भारत के मजबूत संबंध भूमध्यसागरीय क्षेत्र में भारत की पहुंच को बढ़ाने में मदद कर सकते हैं।
- **ऊर्जा केंद्र:** ग्रीस में सूर्यातप की प्रचुर मात्रा और इसकी मजबूत पवन ऊर्जा क्षमता विद्युत उत्पादन के लिए पर्याप्ति अप्रयुक्त अवसर प्रस्तुत करती है।
- **यूरोपीय बाजार तक पहुंच:** यह G20 शिखर सम्मेलन 2023 में नव घोषित भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे का भी हिस्सा है (पीरियस बंदरगाह)।

भारत-ग्रीस संबंधों से जुड़ी चिंताएं

- **द्विपक्षीय संबंधों की कमी:** दोनों देशों के मध्य पिछले चार दशकों से उच्च स्तरीय वार्ता की अनुपस्थिति के परिणामस्वरूप मजबूत रणनीतिक संबंध विकसित नहीं हो पाए हैं।
- **चीन की उपस्थिति:** चीनी स्वामित्व वाली शिपिंग कंपनी COSCO/ कॉस्को की पीरियस बंदरगाह में लगभग 60% हिस्सेदारी है।
- **कम व्यापार और निवेश:** ग्रीस के साथ भारत के व्यापार संबंधों को सीमित व्यावसायिक अवसरों, अपर्याप्त निवेश एवं पूंजी प्रवाह जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

आगे की राह

- **संबंधों को मजबूत करना:** ग्रीस और साइप्रस दोनों यूरोपीय संघ के सदस्य देश हैं। ये देश यूरोपीय संघ और भारत के बीच एक सेतु के रूप में कार्य कर सकते हैं।
- **विकासात्मक सहयोग:** भारत अपनी लाइन ऑफ क्रेडिट का विस्तार कर सकता है। साथ ही, चीन की ऋण जाल कूटनीति का विकल्प प्रदान कर सकता है।
- **पर्यटन को बढ़ावा देना:** ग्रीस भारतीयों के बीच एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल के रूप में उभर रहा है।
- **समुद्री सहयोग:** सूचना साझाकरण और संयुक्त नौसैनिक अभ्यास सहित समुद्री सुरक्षा पर सहयोग को आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

- इन दो प्राचीन सभ्यताओं के बीच संबंधों का पुनरुद्धार भारत को भूमध्य सागर में एक निश्चित उपस्थिति बनाने का अवसर प्रदान करता है, जहां वर्तमान संघर्षों और विवादों ने इस क्षेत्र के भू-रणनीतिक महत्त्व को बढ़ा दिया है।

© Vision IAS

4.7.8. भारत नॉर्डिक संबंध: एक नज़र में (India Nordic Relations at a Glance)

भारत-नॉर्डिक संबंध

- भारत-नॉर्डिक रणनीतिक संबंध लोकतांत्रिक मूल्यों, संस्थागत समानताओं, लोगों के बीच संपर्क, बहुलवादी समाज, निरंतर सुरक्षा और व्यापार सहयोग, नवाचार तथा जलवायु न्याय की मजबूत नींव पर आधारित हैं।

नॉर्डिक देश वस्तुतः नॉर्डिक क्षेत्र के पांच देश हैं: **डेनमार्क, नॉर्वे, स्वीडन, फिनलैंड और आइसलैंड।**

फिनलैंड और नॉर्वे को किए जाने वाले निर्यात में **क्रमशः 100% और 80% से अधिक की वृद्धि** हुई।

पांच नॉर्डिक देशों में से चार यूरोप में भारत के शीर्ष 20 व्यापारिक भागीदारों में से हैं।

सहयोग के क्षेत्र

- **ब्लू इकोनॉमी:** भारत और नॉर्डिक देश अपने समुद्री सहयोग को बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं।
- **भारत-नॉर्डिक शिखर सम्मेलन (2018,2022):** अमेरिका के बाद, भारत के साथ नॉर्डिक देशों का शिखर सम्मेलन स्तर पर विशेष सहयोग है।
- **आर्कटिक परिषद:** भारत आर्कटिक परिषद में एक पर्यवेक्षक है जिसमें सभी नॉर्डिक देश सदस्य हैं।
- **बहुपक्षीय सम्मिलन:** नॉर्डिक देश परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (NSG) जैसे समूहों में भारत की सदस्यता तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता का समर्थन करते हैं।

भारत-नॉर्डिक देशों के संबंधों का महत्त्व

- **नॉर्डिक संधारणीयता परियोजनाएँ:** उदाहरण के लिए, नॉर्डिक संधारणीय शहर परियोजना भारतीय स्मार्ट सिटी मिशन का समर्थन करती है।
- **नॉर्डिक नवाचार उत्कृष्टता:** उदाहरण के लिए, भारत उन केंद्रों में से एक है जो फ़िनलैंड द्वारा संचालित पाँच वैश्विक नवाचार केंद्रों में से एक की मेजबानी करता है जिसे फ़िननोड (FinNode) के रूप में जाना जाता है।
- **भारत में निवेश के स्रोत के रूप में नॉर्डिक देशों के सॉवरेन वेल्थ फंड:** उदाहरण के लिए, 1.4 ट्रिलियन डॉलर का नॉर्वे का सॉवरेन वेल्थ फंड
- **भारत-नॉर्डिक संबंधों के बेहतर होने से भारत की आर्कटिक नीति को बढ़ावा मिलता है:** यह आर्कटिक क्षेत्र में रणनीतिक उपस्थिति के लिए भारत के दृढ़ संकल्प को दर्शाता है।

चुनौतियां

- **रूस के साथ संबंध:** नॉर्डिक देश आर्कटिक क्षेत्र में रूस की आक्रामकता के खिलाफ हैं, जबकि भारत और रूस घनिष्ठ संबंध साझा करते हैं।
- **सदस्यों के अलग-अलग हित:** पांच देशों के साथ सहयोग का एक साझा लक्ष्य हासिल करना कठिन है।
- **व्यापार बाधाएं:** टैरिफ, गैर-टैरिफ बाधाएं और जटिल नियम जैसे मुद्दे व्यापार एवं निवेश के अवसरों को सीमित करते हैं।

आगे की राह

- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना:** लोगों के आपसी संबंधों को मजबूत करना।
- **सहयोग में सुधार:** नवीकरणीय ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन शमन और अपशिष्ट प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में सर्वोत्तम प्रथाओं, विशेषज्ञता एवं अनुसंधान को साझा करना।
- **डिजिटल स्टार्ट-अप, स्वास्थ्य सेवा, खाद्य प्रसंस्करण और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे विभिन्न मोर्चों पर प्रौद्योगिकी** का लाभ उठाना।
- लगातार **कूटनीतिक संवाद** की सुविधा प्रदान करना।

निष्कर्ष

- 21वीं सदी की विश्व व्यवस्था के विकास में अंतर्राष्ट्रीय नियम-आधारित प्रणाली को मजबूत करने की दिशा में **भारत-नॉर्डिक साझेदारी को विश्व स्तर पर एक महत्वपूर्ण शक्ति** के रूप में मान्यता दी गई है।

4.8. भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंध: एक नज़र में (India-Australia Relations at a Glance)

भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंध

- भारत-ऑस्ट्रेलिया में बहुत कुछ एक जैसा है। ये दोनों ही एक बहुलवादी, वेस्टमिंस्टर शैली के लोकतंत्र, राष्ट्रमंडल परंपराओं पर तो आधारित हैं हीं, इसके अलावा दोनों के बीच आर्थिक जुड़ाव भी बढ़ रहा है और दोनों ही एक-दूसरे के साथ उच्च स्तरीय बातचीत में भी संलग्न हैं।

इस जटिल विश्व में, भारत और ऑस्ट्रेलिया जैसे समान विचारधारा वाले साझेदारों के बीच विश्वास ही है जो एक स्वतंत्र, खुले, शांतिपूर्ण और समृद्ध हिंद-प्रशांत क्षेत्र के साथ-साथ नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को सुरक्षित करने में मदद कर रहा है। (विदेश मंत्रालय)

द्विपक्षीय व्यापार: 27 बिलियन डॉलर

वित्त वर्ष 2023 में भारत, ऑस्ट्रेलिया का 9वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार देश और ऑस्ट्रेलिया, भारत का 13वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार देश था।

सहयोग के क्षेत्र

- **द्विपक्षीय संबंध: 2020 में व्यापक रणनीतिक साझेदारी (CSP), 2+2 मंत्रिस्तरीय संवाद**
- **रक्षा सहयोग:** ऑस्ट्रेलिया की नेशनल डिफेंस स्ट्रेटजी (NDS) के अनुसार, भारत एक शीर्ष स्तरीय सुरक्षा साझेदार है।
- **सुरक्षा सहयोग:** सैन्य अभ्यास (AUSINDEX, मालाबार), सुरक्षा सहयोग पर संयुक्त घोषणा-पत्र और नागरिक परमाणु सहयोग समझौता।
- **क्षेत्रीय और बहुपक्षीय सहयोग:** G-20, राष्ट्रमंडल, WTO, इंडियन ओशेन रिम-एसोसिएशन फॉर रीजनल कोऑपरेशन (IOR-ARC), आसियान क्षेत्रीय मंच, क्वाड जैसे मंचों के माध्यम से रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग।
- **विज्ञान और प्रौद्योगिकी:** ऑस्ट्रेलिया-भारत रणनीतिक अनुसंधान कोष तथा साइबर और साइबर-सक्षम महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी पर समझौता।
- **पीपल टू पीपल रिलेशन:** 2021 की जनगणना के अनुसार, ऑस्ट्रेलिया में लगभग 9.76 लाख लोगों ने बताया है कि उनके पूर्वज भारतीय मूल के हैं। इससे वे ऑस्ट्रेलिया में **प्रवासी मूल के निवासियों का दूसरा सबसे बड़ा समूह बन** गए हैं।

चुनौतियां

- **भारत का उच्च व्यापार घाटा:** मुख्य रूप से कच्चे माल के कारण, भारत में ऑस्ट्रेलिया के निर्यात में कोयले का हिस्सा 74% है।
- **प्राथमिकताओं और वैश्विक नजरिए में भिन्नता:** भारत ने, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में रक्षा संबंधों को प्रमुखता प्रदान की है। इसके विपरीत, ऑस्ट्रेलिया ने आर्थिक और व्यापारिक संबंधों को उच्च प्राथमिकता दी है।
- ऑस्ट्रेलिया में **भारतीय मूल के लोगों के खिलाफ भेदभाव और नस्लवाद।**

आगे की राह

- इंडोनेशिया, जापान और अमेरिका की तरह भारत-ऑस्ट्रेलिया **सुरक्षा वार्ता और सहयोग को प्रगाढ़ करना चाहिए।**
- पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन और IORA जैसे **क्षेत्रीय संस्थानों और मंचों में समन्वय बढ़ाया जाना चाहिए।**
- **साझा हितों पर सहयोग करना चाहिए,** उदाहरणार्थ अंटार्कटिका

निष्कर्ष

- हिंद और प्रशांत महासागर के बढ़ते महत्त्व ने "इंडो-पैसिफिक" को एक जिओ-स्ट्रैटैजिक कंस्ट्रक्ट के रूप में नई गति प्रदान की है। इस क्षेत्र में अग्रणी होने के नाते भारत और ऑस्ट्रेलिया इंडो-पैसिफिक में एक "कोएलिशन ऑफ मिडल पॉवर्स" के लिए उपयुक्त स्थिति में हैं।

© Vision IAS

4.8.1. भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौते (INDAUS ECTA) का एक वर्ष पूरा हुआ {One year of India-Australia Economic Cooperation and Trade Agreement (INDAUS ECTA)}

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौता (IND-AUS ECTA), पिछले एक दशक में **किसी विकसित देश के साथ भारत का पहला मुक्त व्यापार समझौता** है। इस समझौते पर अप्रैल 2022 में हस्ताक्षर किए गए थे और यह **दिसंबर 2022** में लागू हुआ था।

IND-AUS ECTA के मुख्य बिंदुओं पर एक नज़र

- **भारत से** ऑस्ट्रेलिया को निर्यात की जाने वाली **100% वस्तुओं को ऑस्ट्रेलिया में तरजीही बाजार पहुंच का लाभ** प्राप्त होगा। इसका अर्थ है कि इन वस्तुओं को **प्रशुल्क छूट** का लाभ मिलेगा। इन निर्यातित उत्पादों में **रत्न, वस्त्र, फुटवियर** जैसे उत्पाद शामिल हैं।
- इसी तरह ऑस्ट्रेलिया से आयात की जाने वाली **70% से अधिक वस्तुओं को भारत में प्रशुल्क छूट के रूप में तरजीही बाजार पहुंच** प्राप्त होगी। इनमें **कच्चा माल तथा कोयला, खनिज अयस्क, वाइन जैसे मध्यवर्ती उत्पाद** शामिल हैं।
- इस समझौते में **उत्पत्ति के नियम (Rules of Origin), सेनेटरी और फाइटोसैनिटरी (SPS) उपाय, विवाद निपटान तंत्र, नेचुरल पर्सन्स (पेशेवरों) की आवाजाही** जैसे क्षेत्र भी शामिल हैं।

ECTA का महत्त्व

- भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच द्विपक्षीय व्यापार को **मौजूदा लगभग 27 बिलियन डॉलर से बढ़ाकर अगले पांच वर्षों में 45-50 बिलियन डॉलर** तक पहुंचाया जा सकेगा।
- इस समझौते से भारत में कम-से-कम **10 लाख अतिरिक्त रोजगार** के अवसर पैदा होंगे।
- इस समझौते से **निवेश के अवसर** पैदा होंगे। साथ ही, **स्टार्ट-अप्स को भी बढ़ावा** मिलेगा।

IND-AUS ECTA के समक्ष चुनौतियां:

- मुक्त व्यापार समझौतों के मामले में भारत का पिछला अनुभव अच्छा नहीं रहा है। **भारतीय उद्योग इन समझौतों की पूरी क्षमता का उपयोग करने में असमर्थ** रहे हैं। **इसके निम्नलिखित कारण हैं:**
  - व्यापार समझौते करते समय **उद्योग जगत से अधिक परामर्श नहीं** किया जाता,
  - व्यापार समझौते के **नियमों के अनुपालन की लागत तथा लॉजिस्टिक्स की लागत भी अधिक** होती है।

4.9. भारत-अफ्रीका (India Africa)

4.9.1. भारत-अफ्रीका संबंध: एक नज़र में (India-Africa Relations at a Glance)

भारत–अफ्रीका संबंध

चीन के विपरीत, अफ्रीका के साथ भारत की साझेदारी सहयोग के ऐसे मॉडल पर आधारित है जो प्रतिक्रियाशील, मांग–संचालित और शर्तों से मुक्त है।

"भारत की प्राथमिकता सिर्फ अफ्रीका नहीं है; भारत की प्राथमिकता सभी अफ्रीकी – अफ्रीका का हर पुरुष, महिला और बच्चा – हैं।" भारत के विदेश मंत्री

2023 में अफ्रीका में भारतीय निवेश 98 बिलियन डॉलर तक तथा कुल व्यापार 100 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया।

भारत–अफ्रीका संबंधों में बढ़ती घनिष्ठता

- **द्विपक्षीय संबंधः** उदाहरण के लिए, भारत–अफ्रीका रक्षा वार्ता **(IADD),**
- **बहुपक्षीयः** उदाहरण के लिए, G–20 में AU का शामिल होना; मिस्र और इथियोपिया का ब्रिक्स में शामिल होना; आदि
- **व्यापार और निवेशः** उदाहरण के लिए, 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को दोगुना करके 200 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचाने का टार्गेट; एशिया अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर (AAGC)।
- **अवसंरचनाः** उदाहरण के लिए, पैन–अफ्रीकी ई–नेटवर्क परियोजना।
- **क्षमता–निर्माणः** 1964 से ITEC कार्यक्रम, DIKSHA कार्यक्रम, 2020
- **जलवायुः** उदाहरण के लिए, ISA के तहत अफ्रीका में सौर ऊर्जा परियोजनाओं को सहायता प्रदान करना।

भारत के लिए अफ्रीका का महत्त्व

- **भू–रणनीतिकः** हॉर्न ऑफ अफ्रीका क्षेत्र से भारत की सुरक्षा के समक्ष खतरे उभरते रहते हैं। इनमें समुद्री पायरेसी, संगठित अपराध इत्यादि शामिल हैं।
- **भू–राजनीतिकः** भारत लंबे समय से UNSC में स्थायी सीट हासिल करने के लिए प्रयासरत है।
- **ऊर्जा सुरक्षाः** अफ्रीका में दुनिया के खनिज भंडार का लगभग 30% हिस्सा है।

चुनौतियां

- **चीन ने अफ्रीकी देशों को 134.6 बिलियन डॉलर का ऋण दिया है,** जो भारत से लगभग 11 गुना ज्यादा है।
- भारत द्वारा परियोजना का मंद क्रियान्वयन, उदाहरण के लिए– AAGC पर बहुत कम प्रगति हुई है।
- उच्च परिवहन और रसद लागत (रोड कॉस्ट से 34% से भी अधिक)।
- समुद्री डकैती, IUU मत्स्यन, नशीले पदार्थ, उदाहरण के लिए– हाल ही में, सोमाली समुद्री डाकुओं को पकड़ा गया और मुकदमा चलाने के लिए भारत लाया गया।

आगे की राह

- भौतिक और डिजिटल अवसंरचना में **भारत का निवेश बढ़ा है।**
- **भारतीय वित्तीय संस्थानों की पहुंच बढ़ी है।** उदाहरण के लिए, EXIM बैंक की शाखाओं की संख्या में वृद्धि हुई है।
- भारत–अफ्रीका समुद्री अभ्यास और HADR संचालन की आवृत्ति में वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए, AFINDEX, IMT TRILAT
- हाल ही में हस्ताक्षरित AFCFTA का लाभ उठाते हुए, भारत को निर्यात में विविधता लानी चाहिए।

निष्कर्ष

भू–राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और पुनःध्रुवीकरण के इस युग में, अफ्रीकी देशों के साथ भारत के बहुआयामी संबंध एक मौलिक रूपांतरण के लिए तैयार हैं।

© Vision IAS

4.9.2. भारत-मॉरीशस संबंध: एक नज़र में (India-Mauritius Relations at a Glance)

भारत–मॉरीशस संबंध

दोनों देशों के बहु–आयामी संबंधों में समृद्ध साझा इतिहास के साथ घनिष्ठ सांस्कृतिक, लोकतांत्रिक मूल्य और पूर्वजों के नजदीक संबंध शामिल हैं।

मॉरीशस की जनसंख्या में **लगभग 70% लोग भारतीय मूल के हैं,** इसलिए मॉरीशस को 'लिटिल इंडिया" भी कहते हैं।

भारत–मॉरीशस व्यापक आर्थिक सहयोग और भागीदारी समझौते (CECPA) वर्ष 2021 में लागू हुआ था। यह **भारत द्वारा अफ्रीका में किसी देश के साथ हस्ताक्षरित पहला व्यापार समझौता है।**

सहयोग के क्षेत्र

- **द्विपक्षीय समझौते:** दोहरा कराधान परिहार समझौता (1982), द्विपक्षीय निवेश प्रोत्साहन और संरक्षण समझौता, आदि।
- **निवेश:** उदाहरण के लिए, मॉरीशस से 161 बिलियन अमेरिकी डॉलर का **FDI** (2000–2022)।
- **सांस्कृतिक और पीपल–टू–पीपल संपर्क:** मॉरीशस में बहुत सारे हिंदी भाषी लोग रहते हैं, यहाँ विश्व हिंदी सचिवालय स्थित है।
- **भू–रणनीतिक:** उदाहरण के लिए, अगलेगा द्वीप पर उन्नत हवाई पट्टी का निर्माण।
- **मॉरीशस भारत की द्वीपीय देश नीति का केंद्रबिंदु:** वैनिला द्वीपसमूहों के साथ सामूहिक रूप से घनिष्ठता बढ़ाने के लिए।

संबंधों के समक्ष चुनौतियां

- **चीन का प्रभाव: BRI** और अन्य कारणों से हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ती उपस्थिति।
- **जलवायु परिवर्तन:** इससे मॉरीशस के समक्ष संकट पैदा हो रहा है।
- **अगलेगा द्वीप:** इस द्वीप पर भारतीय परियोजनाओं के कारण पर्यावरण संबंधी चिंताएं उत्पन्न हो गईं।

आगे की राह

- मौजूदा संबंधों में घनिष्ठता बढ़ाते हुए **चीन के प्रभाव का सामना करना।**
- **लघु द्वीपीय विकासशील देश (SIDS):** भारत को आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय सुभेद्यता का समाधान करने के लिए **SIDS** के साथ मिलकर सकारात्मक एवं सार्थक रूप से कार्य करना चाहिए।
- **सामरिक सहयोग:** समुद्री सुरक्षा सहयोग को मजबूत करना।

निष्कर्ष

बदलती क्षेत्रीय भू–राजनीति को देखते हुए मॉरीशस अपनी भावी विदेश और आर्थिक नीति को निर्धारित कर रहा है। ऐसे में भारत के लिए एक राह के रूप में मॉरीशस की चिंताओं से संबंधित महत्वपूर्ण पक्षों तथा **SIDS** के रूप में इसकी पहचान को महत्व देना होगा।

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

समसामयिकी त्रैमासिक रिवीजन

सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों की **पृष्ठभूमि, आयु, वर्किंग शेड्यूल और पारिवारिक जिम्मेदारियां अलग-अलग होती हैं।**

इसे ध्यान में रखते हुए हमने **समसामयिकी: त्रैमासिक रिवीजन** डॉक्यूमेंट को तैयार किया है। इससे उन अभ्यर्थियों को तैयारी में काफी सहायता मिलेगी, जिनका शेड्यूल अधिक व्यस्त होता है, जिन्हें मासिक समसामयिकी मैगजीन को पढ़ने व रिवीजन करने के लिए कम समय मिलता है और सिलेबस के बारे में बुनियादी एवं थोड़ी बहुत समझ होती है।

त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट को काफी सावधानीपूर्वक और बारीकी से तैयार किया गया है। इससे आपको **सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के लिए आवश्यक लर्निंग एवं रिवीजन के लिए मजबूत आधार मिलेगा।**

इस डॉक्यूमेंट में हमने विगत तीन माह की मासिक समसामयिकी मैगजीन से सभी महत्वपूर्ण आर्टिकल्स को कवर किया है। इससे महत्वपूर्ण टॉपिक्स का रिवीजन करने के लिए आपको एक समग्र और सटीक रिसोर्स मिलेगा।

डॉक्यूमेंट को पढ़ने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट की कुछ मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

कम समय में रिवीजन करने के लिए: इसे पिछले तीन महीने के करेंट अफेयर्स को कवर करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, ताकि कम समय में भी रिवीजन किया जा सके।

और अधिक जानकारी के लिए अवश्य पढ़ें: इससे आपको करेंट अफेयर्स को स्टैटिक मटेरियल से जोड़कर समझने तथा टॉपिक के बारे में अपनी समझ को और बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। इसमें NCERTs सहित बेसिक रीडिंग मटेरियल से संबंधित अध्याय के बारे में बताया गया है।

प्रश्नोत्तरी: हर भाग के अंत में 5 MCQs और मुख्य परीक्षा के लिए प्रैक्टिस हेतु 2 प्रश्न दिए गए हैं। ये प्रश्न आपको अपनी समझ का आकलन करने और प्रमुख अवधारणाओं/तथ्यों को प्रभावी ढंग से याद रखने में मदद करेंगे।

संक्षिप्त पृष्ठभूमि: प्रत्येक आर्टिकल से संबंधित एक संक्षिप्त पृष्ठभूमि दी गई है, जिससे आपको संबंधित आर्टिकल को समझने और उसका विश्लेषण करने के लिए एक मजबूत आधार मिलेगा।

विश्लेषण और महत्वपूर्ण तथ्य: इससे आपको महत्वपूर्ण नज़रिए और अलग-अलग पहलुओं से जुड़ी जानकारी तथा तथ्यों के बारे में पता चलेगा।

स्पष्ट एवं संक्षिप्त जानकारी: इसमें इन्फॉर्मेशन को सुव्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत किया गया है, जिससे क्विक और इफेक्टिव रिवीजन में मदद मिलेगी।

हमें पूरी उम्मीद है कि यह त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट समसामयिकी घटनाक्रमों के लिए काफी फायदेमंद होगा। PT 365 और Mains 365 डाक्यूमेंट्स के साथ-साथ इसे पढ़कर UPSC CSE की तैयारी की राह में आपका आत्मविश्वास काफी बढ़ जाएगा।

स्मार्ट तरीके से तैयारी कीजिए। "त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट" कुशल, टार्गेटेड और प्रभावी रिवीजन के लिए सबसे बेहतर साथी है। इसकी मदद से अपनी सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी की राह में आगे बढ़िए।

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

5. भारत के हितों पर विकसित तथा विकासशील देशों की नीतियों और राजनीति का प्रभाव (Effect of Policies and Politics of Developed and Developing Countries on India's Interests)

5.1. बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव - दसवीं वर्षगांठ {Belt and Road Initiative (BRI)- Tenth Anniversary}

सुर्ख़ियों में क्यों?

2023 में चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) की **दसवीं वर्षगांठ** मनाई गई।

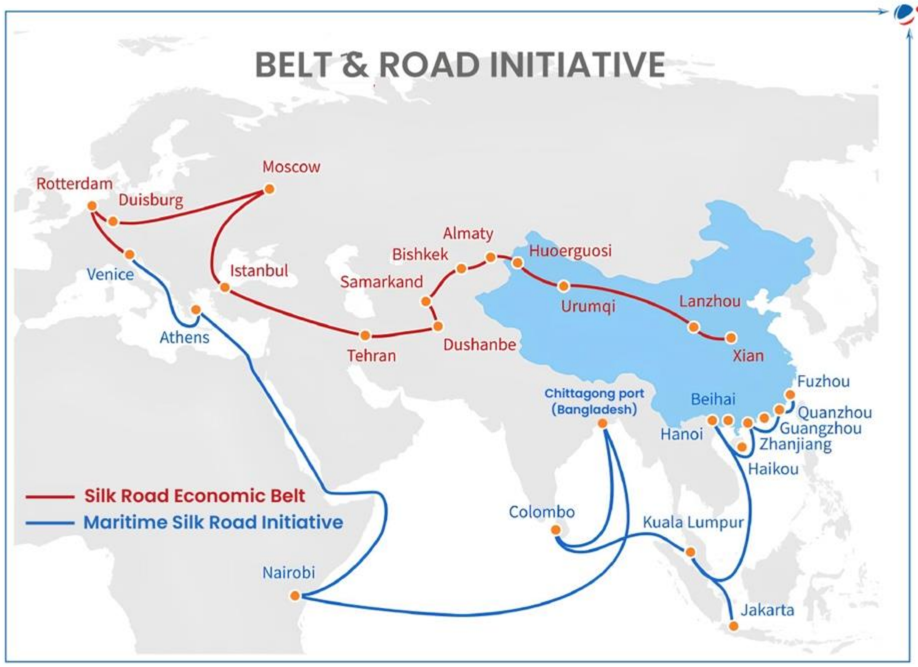

BRI के बारे में

- बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव, **चीन के नेतृत्व में एक विशाल अवसंरचना प्रोजेक्ट** है। इसे **2013 में शुरू** किया गया था।
    - इस प्रोजेक्ट के तहत **भूमि और समुद्री रूट नेटवर्क के माध्यम से एशिया को अफ्रीका तथा आगे यूरोप से जोड़ने** की योजना बनाई गई है।
    - इसके **निम्नलिखित उद्देश्य हैं:**
        - क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ाना,
        - व्यापार में बढ़ोतरी करना, और
        - आर्थिक संवृद्धि को प्रोत्साहित करना।
- **BRI से जुड़ी चिंताएं**
    - चीन इस पहल के **साझेदार देशों को छद्म शर्तों वाला ऋण** प्रदान करता है। इससे ये देश **ऋण जाल में फंस जाते** हैं। इस तरह वे **चीन के प्रभाव के प्रति सुभेद्य** हो जाते हैं।
    - BRI अवसंरचना परियोजनाओं को अपने कार्यान्वियन के क्रम में कई समस्याओं का सामना करना पड़ा है। इनमें शामिल हैं- **भ्रष्टाचार संबंधी घोटाले, श्रम कानूनों का उल्लंघन, पर्यावरणीय जोखिम और लोगों का विरोध।**
    - **भारत की चिंताएं**
        - BRI परियोजना **गिलगित बाल्टिस्तान क्षेत्र से होकर गुजरती** है। इस प्रकार, यह पहल **भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का उल्लंघन** करती है।
        - इस पहल से **छोटे दक्षिण एशियाई देशों और हिंद महासागर के तटीय देशों पर भारत का प्रभाव कम** हो रहा है।
- **BRI की प्रतिक्रिया में शुरू की गई प्रमुख पहलें**
    - G7 देशों ने **'पार्टनरशिप फॉर ग्लोबल इंफ्रास्ट्रक्चर एंड इन्वेस्टमेंट' (PGII)** पहल लॉन्च की है।
        - PGII, **"बिल्ड बैक बेटर वर्ल्ड (B3W)"** पहल का संशोधित संस्करण है।
    - **भारत द्वारा शुरू की गई पहलें**
        - हाल ही में, भारत की अध्यक्षता में संपन्न G-20 शिखर सम्मेलन में **"भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC) पहल"** शुरू की गई है।
        - भारत को **मध्य पूर्व और रूस से जोड़ने के लिए "अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC)"** परियोजना पर कार्य चल रहा है।
        - **एशिया अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर (AAGC):** जापान के साथ साझेदारी में अफ्रीकी देशों के साथ सहयोग बढ़ाने के लिए।

© Vision IAS

5.1.1 चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (China-Pakistan Economic Corridor: CPEC)

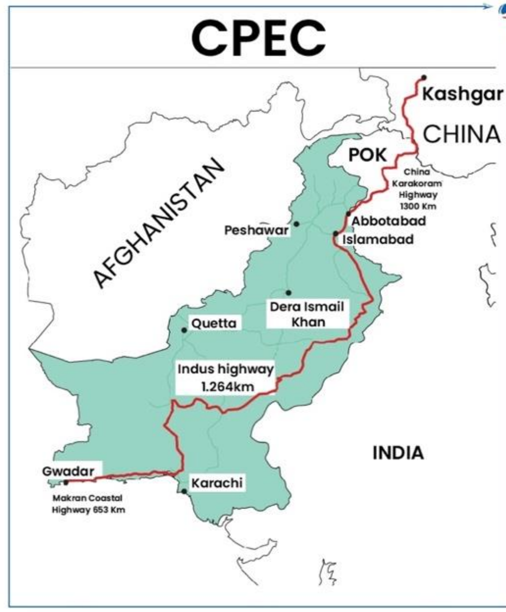

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, चीन और पाकिस्तान ने CPEC के तहत सहयोग में तेजी लाने के लिए छह समझौते किए।

CPEC के बारे में

- यह **अवसंरचना परियोजनाओं** से संबंधित एक **3,000 किलोमीटर लंबा मार्ग** है। यह गलियारा **चीन के उत्तर-पश्चिमी शिनजियांग उइगर स्वायत्त क्षेत्र और पाकिस्तान के पश्चिमी प्रांत बलूचिस्तान में स्थित ग्वादर बंदरगाह** को जोड़ता है।
- **भारत ने इस गलियारे के निर्माण पर आपत्ति प्रकट की** है, क्योंकि यह भारतीय क्षेत्र **गिलगित-बाल्टिस्तान** से होकर गुजरता है।

भारत के लिए चिंताएं

- **संप्रभुता संबंधी चिंता:** CPEC भारत की स्वीकृति के बिना PoK से होकर गुज़रता है जो भारत की संप्रभुता का उल्लंघन है।
- **रणनीतिक चिंता:** CPEC में निवेश से चीन को भारत के खिलाफ कम लागत पर एक डिटरेंट के रूप में पाकिस्तान का उपयोग करने में मदद मिल सकती है।
- **सुरक्षा संबंधी चिंताएं:** पाकिस्तान में सीमा पर अवसंरचना बढ़ने से सीमा-पार आतंकवाद और अवैध तस्करी की गतिविधियां बढ़ सकती हैं।
- **क्षेत्रीय अस्थिरता:** पाकिस्तान का आर्थिक संकट और चीनी ऋण जाल क्षेत्रीय वित्तीय अस्थिरता एवं चीन पर पाकिस्तान की निर्भरता को बढ़ाते हैं।

आगे की राह

भारत को CPEC के बारे में अपनी चिंताओं को दूर करने के लिए चीन और पाकिस्तान के साथ कूटनीतिक प्रयास करना चाहिए। साथ ही, भारत क्षेत्रीय साझेदारी को मजबूत कर सकता है और दक्षिण-एशियाई क्षेत्र में पारदर्शी विकास को बढ़ावा देने के लिए ब्लू डॉट नेटवर्क जैसी पहलों में भाग ले सकता है।

5.2. नाटो यानी उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (North Atlantic Treaty Organization: NATO)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो/ NATO) ने अपने गठन के **75 वर्ष** पूरे किए। साथ ही, **स्वीडन** आधिकारिक तौर पर नाटो में शामिल होने वाला **32वां** सदस्य बन गया है।

पूर्वी यूरोप में नाटो के विस्तार के बारे में

- सोवियत संघ ने **1955 में 7 अन्य पूर्वी यूरोपीय कम्युनिस्ट देशों** के साथ अपना स्वयं का सैन्य गठबंधन बनाकर नाटो के खिलाफ प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। इस गठबंधन को **'वारसा संधि'** नाम दिया गया था।
- लेकिन **1991 में सोवियत संघ के पतन** के बाद, वारसा संधि वाले कुछ देश नाटो के सदस्य बन गए थे। इनमें **हंगरी, पोलैंड, बुल्गारिया, एस्टोनिया, लातविया** आदि शामिल हैं।
- नाटो की **'खुले द्वार की नीति' (नाटो संधि का अनुच्छेद 10)** किसी भी यूरोपीय देश को नाटो में शामिल होने की अनुमति देती है। हालांकि, यह देश **"उत्तरी अटलांटिक क्षेत्र की सुरक्षा" को बढ़ाने वाला और उसमें योगदान देने वाला** होना चाहिए।

नाटो की प्रमुख उपलब्धियां

- **शीत युद्ध के दौरान:** शीत युद्ध के दौरान नाटो ने शीत युद्ध की तनावपूर्ण स्थिति में शांति बनाए रखने और युद्ध की स्थिति को शांत बनाए रखने में प्रमुख भूमिका निभाई थी।
- **शीत युद्ध के बाद:** नाटो ने फाउंडिंग एक्ट के माध्यम से संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस के बीच द्विपक्षीय चर्चा को प्रोत्साहित किया था।

- **यूक्रेन युद्ध:** नाटो ने यूक्रेन में रूसी कार्रवाई की सार्वजनिक रूप से निंदा की है और नाटो के सदस्य देशों एवं सहयोगियों ने यूक्रेन को पर्याप्त सहायता प्रदान की है।
- **समुद्री सुरक्षा:** नाटो का **ऑपरेशन सी गार्जियन** भूमध्य सागर में एक सुरक्षित और संरक्षित समुद्री पर्यावरण बनाए रखने में योगदान देता है।
- **मानवीय सहायता:** उदाहरण के लिए- 2023 में तुर्किये में विनाशकारी भूकंप के हजारों पीड़ितों के लिए नाटो ने अस्थायी आश्रय स्थल स्थापित किए थे।

नाटो के पूर्व की ओर विस्तार के प्रभाव

- **रूस और पश्चिमी देशों के बीच अविश्वास का सृजन:** रूस इस विस्तार को एक आक्रामक कदम के रूप में देखता है। इसके अलावा, नाटो का यह कदम रूस को चीन और ईरान के साथ पश्चिम-विरोधी गठबंधन बनाने पर विचार करने के लिए बाध्य करता है।
- **क्षेत्र में विसैन्यीकरण की विपरीत प्रवृत्ति:** नए नाटो सदस्यों को पश्चिमी कमान संरचना के साथ एकीकृत होने के लिए भारी धनराशि देने की आवश्यकता होगी। इस प्रकार, इस धनराशि को उत्पादक क्षेत्रकों की बजाये सैन्य खर्च के लिए उपयोग किया जाएगा।
- **यूरोप में मौजूदा विभाजन को तीव्र करना:** कुछ देशों को अन्य संगठनों से पहले अपने समूह में शामिल करके, नाटो अत्यधिक समृद्ध उत्तरी यूरोप और अल्प समृद्ध दक्षिणी यूरोप के मध्य तथा पूर्वी यूरोप व पूर्व सोवियत संघ के देशों के बीच पहले से मौजूद विभाजन को तेज कर देगा।
- **यूरोप में सैन्यीकरण में वृद्धि:** रूस यूरोप में नाटो के विस्तार को अस्थिरता पैदा करने वाले कारक के रूप में देखता है। इस धारणा के कारण रूस की ओर से महत्वपूर्ण विरोध हुआ है, जिसमें सैन्य हस्तक्षेप की संभावना भी शामिल है।

नाटो के समक्ष प्रमुख चुनौतियां

- **वित्त-पोषण की समस्या:** 2006 में, नाटो के रक्षा मंत्री ने इस प्रतिबद्धता पर सहमति व्यक्त की थी कि सदस्य देशों के सकल घरेलू उत्पाद का 2 प्रतिशत नाटो रक्षा के लिए आवंटित किया जाएगा। हालांकि, नाटो के अधिकांश सदस्य देश इस प्रतिबद्धता को पूरा नहीं करते हैं।
- **दक्षिणपंथी राष्ट्रवाद:** पूरे यूरोप में दक्षिणपंथी राष्ट्रवाद का प्रसार हो रहा है। साथ ही, नाटो और यूरोपीय संघ जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रति भी असंतोष बढ़ रहा है।
- **संयुक्त राज्य अमेरिका की यूरोप की रक्षा के प्रति प्रतिबद्धता:** पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ने इस गठबंधन के मूल्य पर सवाल उठाया था और कहा था कि क्या अमेरिका को **अनुच्छेद 5 की प्रतिबद्धता** का सम्मान करना चाहिए।
  - **अनुच्छेद 5** में **सामूहिक सुरक्षा के सिद्धांत का प्रावधान है।** इसमें उपबंध किया गया है कि नाटो के किसी एक सदस्य देश के खिलाफ हमला सभी सदस्य देशों के खिलाफ हमला माना जाएगा।
- **रूसी आक्रामकता:** नाटो ने रूस को पूर्व में विस्तार न करने का एक अनौपचारिक आश्वासन दिया था। हालांकि, इसके बावजूद भी सोवियत संघ के पतन के नाटो ने कई पूर्व सोवियत देशों को संगठन में शामिल किया है। इससे नाटो और रूस के बीच विश्वास में कमी आई है। इसके अलावा, इससे तनाव और आक्रामकता की संभावनाओं को बढ़ावा मिला है।
- **चीन का बढ़ता प्रभाव:** हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती सैन्य उपस्थिति तथा यूरोप के औद्योगिक और तकनीकी आधार के समक्ष खतरा उत्पन्न करने वाला उसका आर्थिक एवं तकनीकी फुटप्रिंट नाटो के लिए एक चुनौती प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष

नाटो को जटिल भू-राजनीतिक वास्तविकताओं से निपटने और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा एवं स्थिरता के स्तंभ के रूप में अपनी भूमिका को बनाए रखना होगा। इसके लिए नाटो को नवाचार, लोचशीलता और रणनीतिक दूरदर्शिता की एक व्यापक रणनीति को अपनाना होगा।

5.3. ऑकस (AUKUS)

सुर्ख़ियों में क्यों?

AUKUS सदस्य (ऑस्ट्रेलिया, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका) **उन्नत क्षमताओं वाली परियोजनाओं**[40] को लेकर **जापान के साथ सहयोग** पर विचार कर रहे हैं।

AUKUS के बारे में

- **उत्पत्ति:** इसे **2021 में गठित** किया गया था।
- **प्रकृति:** AUKUS **संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम और ऑस्ट्रेलिया** के बीच एक **त्रिपक्षीय सुरक्षा साझेदारी** है।
- **उद्देश्य:** इसका उद्देश्य सदस्य देशों की रक्षा क्षमताओं को बढ़ाना, तकनीकी एकीकरण में तेजी लाना और औद्योगिक क्षमता का विस्तार करना है।

[40] Advanced Capabilities Projects

- **AUKUS साझेदारी के दो प्राथमिक क्षेत्र या पिलर्स हैं:**
    - **पिलर-I:** इसमें **पारंपरिक हथियारों से युक्त और परमाणु ऊर्जा से संचालित पनडुब्बियों** का विकास शामिल है। इसके तहत, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों ही देश ऑस्ट्रेलिया को परमाणु-संचालित पनडुब्बियां बनाने में मदद कर रहे हैं।
    - **पिलर-II:** इसमें **उन्नत क्षमता विकास** शामिल है। इसके तहत सहयोग बढ़ाने के लिए संयुक्त क्षमताओं के विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
        - इनमें साइबर क्षमता तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, क्वांटम प्रौद्योगिकी और समुद्र की गहराई में अन्वेषण से जुड़ी अतिरिक्त क्षमताओं का विकास शामिल है।
- AUKUS आपात स्थिति में सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध गठबंधन होने की बजाय मुख्य रूप से रक्षा प्रौद्योगिकियों को आगे बढ़ाने हेतु एक मंच के रूप में कार्य करता है।
- महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों को साझा करने की सुविधा के लिए, 2021 में एक **कानूनी रूप से बाध्यकारी त्रिपक्षीय समझौते** पर हस्ताक्षर किए गए थे। इसे **एक्सचेंज ऑफ नेवल न्यूक्लियर प्रोपल्शन इंफॉर्मेशन एग्रीमेंट (ENNPIA)** के रूप में जाना जाता है।

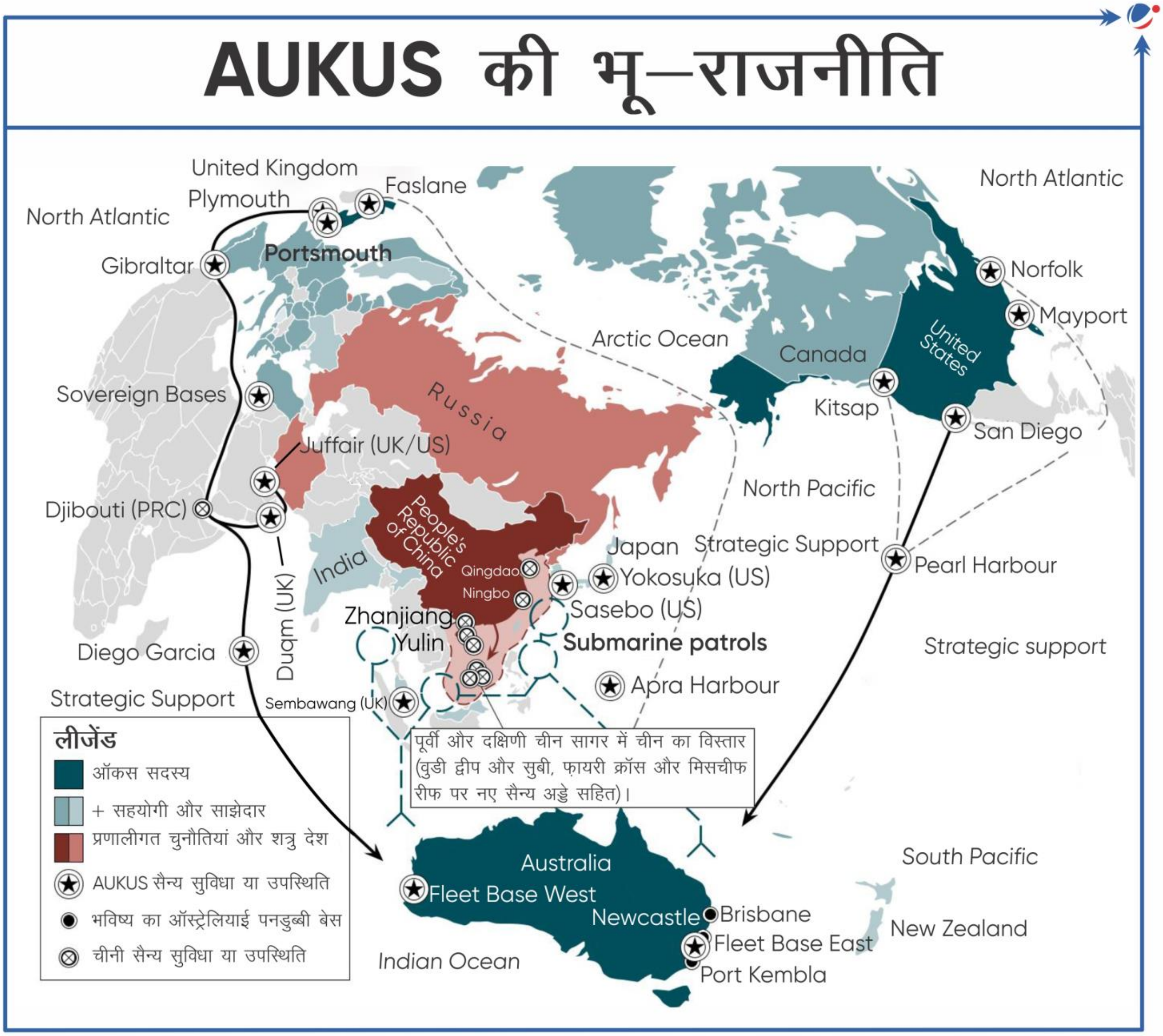

- **AUKUS के निहितार्थ:**
    - **हिंद-प्रशांत के लिए सामरिक निहितार्थ:** ऑस्ट्रेलिया की रक्षा क्षमताओं को मजबूत करके, AUKUS का लक्ष्य एक स्वतंत्र, खुले, सुरक्षित एवं शांतिपूर्ण और समावेशी हिंद-प्रशांत के विज़न को प्राप्त करना है।

- **हिंद-प्रशांत में संयुक्त राज्य अमेरिका का नवीनीकृत प्रयास:** AUKUS को हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा के लिए अमेरिका की मजबूत प्रतिबद्धता के रूप में देखा जाता है।
- **यूनाइटेड किंगडम के सामरिक वर्चस्व को फिर से स्थापित करना:** AUKUS हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा में दीर्घकालिक भूमिका के लिए यूनाइटेड किंगडम की आकांक्षा को पूरा करने में योगदान देगा।

- **AUKUS से संबंधित चिंताएं:**
  - AUKUS के आधिकारिक **वक्तव्यों और रणनीतिक उद्देश्य** में स्पष्टता का अभाव है।
  - **चीन, AUKUS का विरोध** करता है। इससे हिंद-प्रशांत में क्षेत्रीय तनाव पैदा हो सकता है।
  - उल्लेखनीय है कि ऑस्ट्रेलिया परमाणु ऊर्जा से चलने वाली पनडुब्बियों को हासिल करने की मंशा रखता है। अमेरिका AUKUS के जरिये ऑस्ट्रेलिया की यह मंशा पूरी करने को लेकर प्रतिबद्ध है। यही कारण है कि **ऑस्ट्रेलिया ने डीजल-इलेक्ट्रिक अटैक क्लास पनडुब्बियों से संबंधित फ्रांस के साथ किए गए समझौते को ख़ारिज** कर दिया था।
    - विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा अफगानिस्तान से अपने सैनिकों को वापस बुलाने के एकतरफा फैसले के बाद **AUKUS ने फ्रांस और AUKUS देशों के बीच अटलांटिक-पार संबंधों में विभाजन को बढ़ा** दिया है।
- **AUKUS क्वॉड्रिलैटरल सिक्योरिटी डायलॉग (Quad/ क्वाड) से अलग है:** AUKUS क्वाड के विपरीत **रक्षा साझेदारी को प्राथमिकता** देता है। वहीं क्वाड का व्यापक ध्यान **हिंद-प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक सहयोग** पर केंद्रित है।
  - क्वाड **संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, भारत और जापान का एक समूह** है। यह एक स्वतंत्र, खुले, समृद्ध और समावेशी हिंद-प्रशांत क्षेत्र को लेकर प्रतिबद्ध है, जो समृद्ध और वैश्विक मानदंडों के अनुकूल हो।

भारत और AUKUS

- भारत के लिए AUKUS का महत्व:
  - **क्वाड का पूरक:** AUKUS एक साझा खतरे के रूप में चीन से निपटने तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्र को स्वतंत्र, खुला और समावेशी बनाए रखने के लिए क्वाड के प्रयासों को मजबूत करेगा।
  - **फ्रांस के साथ रणनीतिक सहयोग:** यह **फ्रांस** के साथ रणनीतिक सहयोग और यूरोपीय देशों के साथ विश्वास को गहरा करने के अवसर प्रस्तुत करता है।
- भारत के लिए चिंताएं
  - भविष्य में परमाणु हमला करने वाली पनडुब्बियों की बढ़ती उपस्थिति के कारण पूर्वी हिंद महासागर में भारत के **क्षेत्रीय प्रभाव में संभावित कमी** आ सकती है।
  - इसके अतिरिक्त, AUKUS संभावित रूप से **हिंद-प्रशांत में शक्ति संतुलन को बदल सकता है और क्वाड के महत्त्व को कम** कर सकता है।

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

सरकारी योजनाएं

त्रैमासिक रिवीजन

सिविल सेवा परीक्षा में आपके ज्ञान, एनालिटिकल स्किल और सरकारी नीतियों तथा पहलों की गतिशील प्रकृति के साथ अपडेटेड रहने की क्षमता को जांचा जाता है। इसलिए इस चुनौतीपूर्ण परीक्षा के लिए एक व्यापक और सुनियोजित दृष्टिकोण काफी आवश्यक हो जाता है।

"सरकारी योजनाएं त्रैमासिक रिविजन" डॉक्यूमेंट के साथ सिविल सेवा परीक्षा में सफलता की अपनी यात्रा शुरू कीजिए। यह विशेष पेशकश आपको परीक्षा की तैयारी में एक परिवर्तनकारी अनुभव प्रदान करेगी। सावधानीपूर्वक तैयार किया गया हमारा यह डॉक्यूमेंट न केवल आपकी सीखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए बल्कि टाइम मैनेजमेंट और याद रखने की क्षमता को बढ़ाने के लिए भी डिज़ाइन किया गया है। इस डॉक्यूमेंट को त्रैमासिक आधार पर तैयार किया जाता है। यह डॉक्यूमेंट फाइनल परीक्षा के लिए निरंतर सुधार और तनाव मुक्त तैयारी हेतु अभ्यर्थियों के लिए एक आधार के रूप में कार्य करेगा।

यह सीखने की प्रक्रिया को बाधारहित और आसान यात्रा में बदल देता है। इसके परिणामस्वरूप, आप परीक्षा की तैयारी के साथ-साथ सरकारी योजनाओं, नीतियों और उनके निहितार्थों की गहरी समझ विकसित करने में सफल होते हैं।

डॉक्यूमेंट को पढ़ने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

सरकारी योजनाएं त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट की मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

1. सुर्ख़ियों में रहीं में योजनाएं: अपडेट रहिए, आगे रहिए!

इस खंड में **आपको नवीनतम घटनाक्रमों से अवगत** कराया जाता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि आपकी तैयारी न केवल व्यापक हो, बल्कि हालिया तिमाही के लिए प्रासंगिक भी हो। सुर्ख़ियों में रही योजनाओं के रियल टाइम एकीकरण से आप नवीनतम ज्ञान से लैस होकर आत्मविश्वास से परीक्षा देने में सक्षम बन पाएंगे।

2. सुर्ख़ियों में रहीं फ्लैगशिप योजनाएं: परीक्षा में आपकी सफलता की राह!

भारत सरकार की 'फ्लैगशिप योजनाएं' **सिविल सेवा परीक्षा के सिलेबस के कोर** में देखने को मिलती हैं। हम इस डॉक्यूमेंट में इन महत्वपूर्ण पहलों को गहराई से कवर करते हैं, जिससे सरकारी नीतियों के बारे में **आपकी गहरी समझ विकसित** हो। इन फ्लैगशिप योजनाओं पर ध्यान केंद्रित करके, हम आपको उन प्रमुख पहलुओं में महारत हासिल करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं, जिन्हें परीक्षक सफल उम्मीदवारों में तलाशते हैं।

3. प्रश्नोत्तरी: पढ़िए, मूल्यांकन कीजिए, याद रखिए!

मटेरियल को समझने और मुख्य तथ्यों को याद रखने में काफी अंतर होता है। इस अंतर को खत्म करने के लिए, हमने इस डॉक्यूमेंट में एक 'प्रश्नोत्तरी' खंड शामिल किया है। इस डॉक्यूमेंट में **सावधानी से तैयार किए गए 20 MCQs** दिए गए हैं, जो आपकी **समझ को मजबूत करने के लिए चेकपॉइंट** के रूप में काम करते हैं। ये मूल्यांकन न केवल आपकी प्रगति का आकलन करने में मदद करते हैं बल्कि महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रभावी ढंग से याद रखने में भी सहायक होते हैं।

'सरकारी योजनाएं त्रैमासिक रिवीजन' एक डॉक्यूमेंट मात्र नहीं है; बल्कि यह आपकी परीक्षा की तैयारी में एक रणनीतिक साथी भी है। यह आपकी लर्निंग एप्रोच में बदलाव लाता है, जिससे यह एक सतत और कुशल प्रक्रिया बन जाती है। परीक्षा की **तैयारी के आखिरी चरणों में आने वाले तनाव को अलविदा कहिए, प्रोएक्टिव लर्निंग एक्सपीरियंस** को आपनाइए और आत्मविश्वास के साथ सफलता की ओर आगे बढ़िए।

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

6. महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संस्थान, एजेंसियां और मंच, उनकी संरचना, अधिदेश (Important International Institutions, Agencies, and Fora, Their Structure, Mandate)

6.1. बदलते समय में वैश्विक संस्थाएं (Global Institutions in the Changing Times)

सुर्ख़ियों में क्यों?

संयुक्त राष्ट्र प्रणाली, विश्व व्यापार संगठन, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसे प्रमुख वैश्विक संस्थान अपने वांछित उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम नहीं हो रहे हैं। इस कारण इन संस्थाओं में व्यापक सुधारों की मांग उठ रही है।

समकालीन मुद्दे और वैश्विक संस्थाओं की सीमाएँ

- **विकासशील देशों का बढ़ता प्रभाव:** विकासशील देशों के बीच भारत के बढ़ते प्रभाव के बावजूद, वैश्विक संस्थाओं पर पश्चिमी देशों का प्रभाव कायम है।
    - उदाहरण के लिए- भारत विश्व में **सबसे बड़ी आबादी वाला देश और तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था** (क्रय शक्ति समता के आधार पर) है, लेकिन IMF में भारत का **विशेष आहरण अधिकार (SDR) कोटा केवल 2.75%** है।
- **बढ़ते द्विपक्षीय और बहुपक्षीय समूह:** ध्यातव्य है कि G20, G7, ब्रिक्स जैसे संगठनों ने वैकल्पिक मंच की व्यवस्था स्थापित की है। इस वजह से वैश्विक संस्थाओं के समग्र महत्त्व और प्रासंगिकता में कमी आई है।
    - उदाहरण के लिए- **ब्रिक्स देशों** ने विकासात्मक आवश्यकताओं के वित्त-पोषण के लिए विश्व बैंक के विकल्प के रूप में **न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB)** की स्थापना की है।
- **संरक्षणवादी प्रवृत्तियाँ:** व्यापार संबंधी बाधाएं और नीतियाँ जो अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की प्रभावशीलता एवं वैधता को कमजोर करती हैं।
    - उदाहरण के लिए- अमेरिका के "अमेरिका फर्स्ट" दृष्टिकोण के कारण आयातित वस्तुओं पर टैरिफ लगाया गया, जो विश्व व्यापार संगठन के नियमों का उल्लंघन था।
- **बढ़ता संघर्ष:**
    - **रूस-यूक्रेन युद्ध:** यूक्रेन पर आक्रमण ने सुरक्षा परिषद की बड़े संघर्षों का समाधान करने में असमर्थता को उजागर किया है। साथ ही, युद्ध ने वैश्विक व्यापार और वित्त को बाधित किया, जिससे WTO एवं IMF की भूमिका को लेकर पर प्रश्न खड़े हुए हैं।
    - **इज़राइल-फिलिस्तीन संघर्ष:** संयुक्त राष्ट्र में शक्ति असंतुलन, राष्ट्रों के बीच शांति-सुरक्षा के कार्यों में बाधा डालता है।

मौजूदा संस्थाओं को सुधार के बिना जारी रखने में क्या समस्याएं हैं?

- **प्रतिनिधित्व और समावेशिता:** पिछली शताब्दी में स्थापित ये वैश्विक संस्थाएं, विकासशील देशों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व प्रदान नहीं करती हैं। इस कारण **ये वर्तमान वैश्विक शक्ति संरचना को प्रतिबिंबित नहीं** करती हैं।
- **वीटो शक्ति का दुरुपयोग:** स्थायी सदस्य अपने हित में या अपने सहयोगियों के हित में किसी प्रस्ताव या संकल्प के खिलाफ इस वीटो शक्ति का दुरुपयोग करते हैं।
    - उदाहरण के लिए- रूस ने यूक्रेन में उसके कृत्यों की निंदा करने वाले संकल्पों को रोकने के लिए अपनी वीटो शक्ति का दुरुपयोग किया था।
- **विवाद समाधान की असफल प्रणालियां:** उदाहरण के लिए- अमेरिका द्वारा विश्व व्यापार संगठन के अपीलीय निकाय की नियुक्ति को अवरुद्ध किया जाना।
- **उभरती चुनौतियों से निपटने में असमर्थ होना:** पिछली सदी में स्थापित ये वैश्विक संस्थाएं 21वीं सदी के मुद्दों जैसे **जलवायु परिवर्तन, साइबर-सुरक्षा, डेटा संरक्षण** आदि पर प्रभावी ढंग से ध्यान देने में सक्षम नहीं हैं।
    - कोविड-19 महामारी ने संकट के समय में **प्रभावी प्रतिक्रिया देने के लिए देशों को एक साथ लाने में संयुक्त राष्ट्र और विश्व स्वास्थ्य संगठन की विफलता** को देखा गया है।

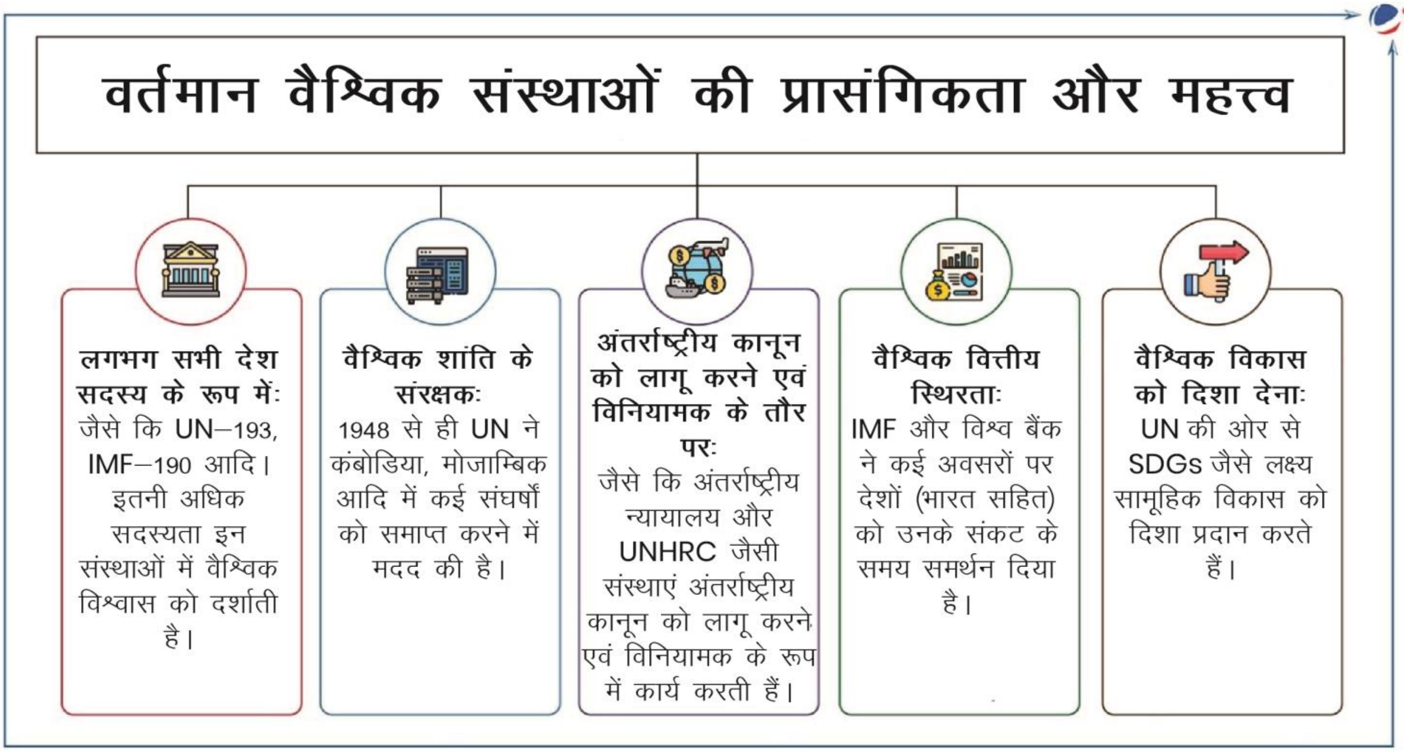

आगे की राह

- **गवर्नेंस में व्यापक परिवर्तन:** उभरती शक्तियों को अधिक प्रतिनिधित्व और मजबूत पक्ष देने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसे निकायों का पुनर्गठन किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए- परिषद की स्थायी सदस्यता का विस्तार करना चाहिए।
- **वित्तीय सुधार:** निजी पूंजी और नए दानकर्ताओं के माध्यम से इन संस्थाओं के वित्त-पोषण में विविधता लानी चाहिए, जैसे- **निजी निवेश को बढ़ाना।**
- **प्रवर्तन को मजबूत करना:** वैश्विक संस्थाओं के माध्यम से तय किए गए नियमों और प्रतिबद्धताओं को मजबूत प्रवर्तन एवं विवाद समाधान तंत्र के रूप में प्रभावी बनाना चाहिए । उदाहरण के लिए- समुद्री कानून पर संयुक्त राष्ट्र अभिसमय (UNCLOS) जैसी संस्थाओं को सशक्त बनाना।
- **प्रौद्योगिकी को अपनाना:** जलवायु परिवर्तन की निगरानी से लेकर निरस्त्रीकरण या मानवाधिकारों की पुष्टि करने तक, इन संस्थाओं को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), उपग्रह निगरानी और डिजिटल डेटा संग्रह जैसी प्रौद्योगिकियों का बेहतर उपयोग करना चाहिए।

6.1.1. भारत और बहुपक्षीय विकास बैंक (India and Multilateral Development Banks)

सुर्ख़ियों में क्यों?

संयुक्त राष्ट्र (UN) महासचिव ने बहुपक्षीय विकास बैंकों (MDBs) में सुधार करने संबंधी भारत के प्रयासों की सराहना की।

बहुपक्षीय विकास बैंक (MDBs) के बारे में

- ये **अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान** हैं, जो विकासशील देशों को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करते हैं।
- इन बैंकों का स्वामित्व सदस्य देशों के पास होता है और ये वैश्विक स्तर पर काम करते हैं। इनका लक्ष्य सदस्य देशों में आर्थिक विकास को बढ़ावा देना, गरीबी कम करना और संधारणीय विकास का समर्थन करना होता है।
- प्रमुख बहुपक्षीय विकास बैंकों में **विश्व बैंक समूह, एशियाई विकास बैंक** आदि शामिल हैं।

बहुपक्षीय विकास बैंकों (MDBs) में सुधार की आवश्यकता क्यों?

- **21वीं सदी की बदलती जरूरतों के अनुरूप ढलना:** इसमें अब जलवायु परिवर्तन, आय असमानता जैसे मुद्दों को महत्त्व देना जरूरी हो गया है।

- **सबका प्रतिनिधित्व और पक्ष रखना:** विकासशील देश MDBs में अपने वोटिंग अधिकार को बढ़ाने और संबंधित निर्णय लेने में अधिक तर्कसंगत भागीदारी की मांग कर रहे हैं।
- **निजी क्षेत्रक से संसाधन जुटाना:** परंपरागत रूप से MDBs सार्वजनिक वित्त-पोषण पर अधिक निर्भर रहे हैं। इसलिए, विकास के स्तर को बढ़ाने के लिए MDBs को सरकारी संसाधनों के साथ-साथ निजी पूंजी का भी लाभ उठाना चाहिए।

सुधारों की राह में मौजूद चुनौतियां

- अलग-अलग सदस्य देशों के बीच आम सहमति बनने में कठिनाइयां,
- सुधारों को लागू करने के लिए सीमित वित्तीय और तकनीकी संसाधन,
- सुधारों को अपनाने से जुड़ी धीमी मंजूरी प्रक्रिया, आदि।

भारत की G20 अध्यक्षता के दौरान MDBs में सुधार हेतु "इंडिपेंडेंट एक्सपर्ट ग्रुप (IEG)" द्वारा दिए गए सुझाव

- 2030 तक MDBs द्वारा **वार्षिक आधार पर ऋण देने की क्षमता को तीन गुना** बढ़ाकर 390 बिलियन डॉलर करना।
- **MDBs के लिए निम्नलिखित तीन मुख्य कार्य निर्धारित करना:**
  - चरम गरीबी को समाप्त करना,
  - साझा समृद्धि को बढ़ावा देना, और
  - ग्लोबल पब्लिक गुड्स को बढ़ाने में योगदान करना।
- संसाधन जुटाने से जुड़े तौर-तरीकों का विस्तार करना और उन्हें अपडेट करना।
- **अन्य:** MDBs के संचालन में निजी क्षेत्रक की भूमिका को शामिल करना, आदि।

6.2. संयुक्त राष्ट्र (United Nations)

6.2.1. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद: एक नज़र में (UNSC at a Glance)

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC)

- UNSC की स्थापना संयुक्त राष्ट्र चार्टर द्वारा 1945 में संयुक्त राष्ट्र के छह प्रमुख अंगों में से एक के रूप में की गई थी। इसकी प्राथमिक जिम्मेदारी अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए काम करना है।

परिषद में 5 स्थायी सदस्य हैं, जबकि 10 अस्थायी सदस्य दो साल के कार्यकाल के लिए चुने जाते हैं।

भारत संयुक्त राष्ट्र का संस्थापक सदस्य है और इसने 8 बार UNSC के अस्थायी सदस्य के रूप में कार्य किया है।

UNSC में सुधार की आवश्यकता

- **पुरानी संस्थाः** अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका और कैरिबियन से कोई स्थायी प्रतिनिधित्व नहीं होने के कारण यह अब वर्तमान विश्व व्यवस्था का प्रतिनिधि नहीं रह गया है।
- **UNSC की व्यापक शक्तियां:** उदाहरण के लिए– प्रतिबंध लगाकर राष्ट्रों की संप्रभुता का अतिक्रमण करना।
- **वीटो शक्तियां:** UNSC में P–5 के बीच बार–बार मतभेद होता रहता है, जिसके कारण वीटो शक्तियों का उपयोग करके प्रमुख निर्णयों को रोक दिया जाता है।

UNSC का महत्त्व

- इसका उद्देश्य **अंतर्राष्ट्रीय विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से हल करना है।**
- **प्रतिबंध लगानाः** शांति और सुरक्षा बनाए रखना।
- **शांति मिशनः** यह 3 महाद्वीपों में 11 ऑपरेशन की देखरेख करता है।

UNSC में भारत का योगदान

- भारत ने अपने कार्यकाल के दौरान **'तालिबान तथा लीबिया प्रतिबंध समितियों' और UNSC की 'आतंकवाद–रोधी समिति' की अध्यक्षता** की।
- **मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा (UDHR)** को तैयार करने में योगदान।
- **संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में सैनिकों का सबसे बड़ा प्रदाता** और पूर्ण महिला सैन्य दल को तैनात करने वाला पहला देश।

भारत के समक्ष चुनौतियां

- **आतंकवाद की परिभाषा पर आम सहमति का अभावः** विभिन्न देशों के बीच मतभेदों के कारण CCIT (अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक अभिसमय) पर अभी तक सहमति नहीं बन पाई है।
- **कोविड–19 के बाद की विश्व व्यवस्थाः** मंदी और संकुचित राष्ट्रवाद के कारण वैश्विक सहयोग की संभावनाओं को चुनौती मिलती है।
- **बहुपक्षीय कूटनीति के लिए संसाधनों की कमी,** जैसे– कर्मचारी, वित्त, बौद्धिक और संस्थागत बुनियादी ढाँचा।
- क्षेत्रीय प्रतिद्वंदी UNSC में स्थायी सदस्यता की मांग करने वाले G4 का विरोध करते रहे हैं।

निष्कर्ष

- विभिन्न देशों के हित और एक–दूसरे पर हावी होने की चाहत के कारण संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार की प्रक्रिया ठप पड़ी हुई है। जो देश सुरक्षा परिषद में अपनी स्थिति मजबूत करना चाहते हैं, उन्हें अन्य देशों के विरोध का सामना करना पड़ता है, जो अपनी वर्तमान स्थिति को खोना नहीं चाहते। इस कारण से वैश्विक शासन में पुरानी ताकतें ही हावी हैं।

© Vision IAS

6.2.2. भारत और संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना: एक नज़र में (India and UN Peacekeeping at a Glance)

भारत और यू.एन. पीसकीपिंग यानी संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना

- हाल ही में, इंडियन आर्मी ने **संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना की शुरूआत की 76वीं वर्षगांठ** मनाई।

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना के सिद्धांत: पक्षकारों की सहमति, निष्पक्षता और आत्मरक्षा तथा जनादेश की रक्षा के अलावा बल का प्रयोग न करना।

सौंपे गए कार्य: नागरिकों की रक्षा करना और मानवाधिकारों को बढ़ावा देना, पूर्व लड़ाकों के निरस्त्रीकरण व गुट से पृथक्करण और उन्हें मुख्य धारा में फिर से लाने में सहायता करना।

भारत के लिए संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों की प्रासंगिकता

- क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों को नियंत्रित करके अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिए भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- उन क्षेत्रों में रणनीतिक पदचिह्न जहां भारत के आर्थिक/ ऊर्जा/ बहुपक्षीय हित हैं।
- **अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दावे को मजबूत करना:** जैसे कि UNSC की स्थायी सदस्यता।
- सैन्य बलों के लिए दक्षता का प्रदर्शन।

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में भारत का योगदान

- भारत ने शांति स्थापना मिशनों में 2,87,000 के आस-पास सैनिकों की सेवाएं प्रदान की हैं।
- भारत **लैंगिक शोषण और दुर्व्यवहार पर ट्रस्ट फंड में योगदान देने वाला पहला देश था।** इसे 2016 में स्थापित किया गया था।
- भारत द्वारा शुरू किया गया "ग्रुप ऑफ फ्रेंड्स" शांति सैनिकों, खासकर महिला शांति सैनिकों के खिलाफ अपराधों को रोकने और दोषियों को सजा दिलाने के लिए काम कर रहा है। यह समूह कांगो, लाइबेरिया, दक्षिण सूडान और हैती जैसे देशों में शांति मिशनों को मजबूत करने पर केंद्रित है।
- इंडियन आर्मी ने प्रति वर्ष 12,000 से अधिक सैनिकों को प्रशिक्षित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना केंद्र (CUNPK) की स्थापना की है।

संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों के सामने आने वाली चुनौतियाँ

- **संगठनात्मक चुनौतियाँ**
  - **गैर-समावेशी:** निर्णय लेने की प्रक्रिया में सैनिकों और पुलिस की कोई भूमिका नहीं होती।
  - **संयुक्त राष्ट्र के पास अपर्याप्त शक्ति**
  - **कई सारे अनावश्यक मिशन:** उदाहरण के लिए- भारत और पाकिस्तान में संयुक्त राष्ट्र सैन्य पर्यवेक्षक समूह (UNMOGIP)
- **परिचालन में चुनौतियाँ**
  - **घटता अंतर्राष्ट्रीय समर्थन**
  - **शांति स्थापित करने में क्षेत्रीय संगठन की भूमिका:** उदाहरण के लिए- अफ्रीकी एकता संगठन (OAU)

संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के लिए भारत द्वारा प्रस्तावित सुधार

- **निर्णय लेना:** सैनिकों और पुलिस का योगदान देने वाले देशों की अधिक भूमिका। मिशनों की सीमाओं को पूरी तरह पहचानते हुए उनकी विवेकपूर्ण तैनाती।
- **क्षेत्रीय दृष्टिकोण:** मध्यस्थता, युद्ध विराम की निगरानी आदि में क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय संगठनों का समर्थन करें
- **निकास रणनीति:** शांति स्थापना मिशनों को "शुरू से ही एग्जिट रणनीति" को ध्यान में रखना चाहिए।
- **शांति सैनिकों की सुरक्षा:** यह अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाकर सुनिश्चित की जानी चाहिए।

निष्कर्ष

- शांति स्थापना, संघर्ष से शांति की ओर कठिन मार्ग पर चलने में देशों की सहायता करने के लिए संयुक्त राष्ट्र के पास उपलब्ध सबसे प्रभावी साधनों में से एक साबित हुई है।

6.2.3. संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद: एक नज़र में (UNHRC at a Glance)

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद

- यह 2006 में स्थापित एक अंतर–सरकारी निकाय है, जिसे पूर्व संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग की जगह बनाया गया था। इस परिषद में 47 सदस्य देश हैं और इसका मुख्य उद्देश्य दुनिया भर में सभी मानवाधिकारों को बढ़ावा देना और उनकी रक्षा करना है।

मानवाधिकार उल्लंघन की जांच करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय जांच आयोग और तथ्य–खोज मिशन स्थापित किया गया है।

भारत को भारी बहुमत के साथ छठे कार्यकाल (2022–24) के लिए UNHRC में फिर से चुना गया।

UNHRC का महत्त्व

- मानवाधिकार मुद्दे के संबंध में देशों के बीच संवाद के लिए मंच।
- मानवाधिकार शिक्षा और सीखने को बढ़ावा देने के साथ–साथ परामर्श सेवाएं और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों को मजबूत करना।
- सदस्य देशों के मानवाधिकार रिकॉर्ड की सार्वभौमिक आवधिक समीक्षा (UPR) के माध्यम से नियमित मूल्यांकन करना।
- मानवाधिकारों के प्रचार और संरक्षण में नागरिक समाज की भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।

UNHRC की उपलब्धियां

- विशेष प्रक्रियाओं द्वारा प्रस्तुत देश–विशिष्ट रिपोर्टों की संख्या में 104 प्रतिशत की वृद्धि हुई।
- UNHRC ने इंटरनेट पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार को सुनिश्चित करने हेतु एक संकप पारित किया है।
- स्वस्थ पर्यावरण के अधिकार को मानव अधिकार के रूप में मान्यता देना।

चुनौतियाँ

- **परिषद की सीटें मानवाधिकारों का उल्लंघन करने वाले देशों के पास रही हैं।** उदाहरण के लिए– सऊदी अरब, चीन और सीरिया। वे अपनी स्थिति का उपयोग खुद की जाँच को रोकने के लिए करते हैं।
- **गुटों में मतदान करने की प्रवृत्तिः** उदाहरण के लिए, OIC और अफ्रीका।
- **गैर–बाध्यकारी सिफारिशें:** देश आसानी से सिफारिशों को खारिज कर सकते हैं।

आगे की राह

- परिषद चुनावों में खुले मतपत्र जैसे प्रक्रियात्मक सुधार।
- राजनीतिकरण को कम करने और आम सहमति बनाने के लिए समय पर और सटीक जानकारी का प्रावधान।
- अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दायित्वों के राष्ट्रीय कार्यान्वयन को सुनिश्चित करना।
- मानवाधिकार रक्षकों को प्रतिशोध से बचाना।

निष्कर्ष

- मौजूदा सुधारों, सदस्यों की जवाबदेही में वृद्धि और सहयोगात्मक प्रयासों के साथ, UNHRC दुनिया भर में मानवाधिकारों को अधिक प्रभावी ढंग से बढ़ावा दे सकता है और उनकी रक्षा कर सकता है। इससे एक अधिक न्यायपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा।

6.2.4. अंतर्राष्ट्रीय समुद्र संगठन (International Maritime Organisation: IMO)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत को **अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (IMO) परिषद में सर्वाधिक मतों के साथ दो वर्ष के कार्यकाल (2024–25) के लिए फिर से चुना** गया है।

IMO परिषद के बारे में

- **उत्पत्ति:** इसकी स्थापना **1948 में IMO कन्वेंशन** को अपनाने के बाद हुई थी। यह **संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष एजेंसी** है।
- **उद्देश्य:** इसका उद्देश्य आपसी सहयोग के जरिए सुरक्षित, सिक्योर, पर्यावरण के अनुकूल, कुशल और सतत पोत परिवहन को बढ़ावा देना है।
- **IMO परिषद:** यह परिषद IMO का **कार्यकारी निकाय** है। यह IMO के **कार्यों की निगरानी** करती है।

IMO का महत्त्व

- **पर्यावरण संरक्षण:**
  - **पोतों से होने वाले समुद्री प्रदूषण पर रोकथाम:** IMO ने **मार्पोल (MARPOL) कन्वेंशन** के माध्यम से पोतों से होने वाले समुद्री प्रदूषण की रोकथाम और उसे कम करने का प्रयास किया है।
  - **समुद्री जैव विविधता का संरक्षण:** यह संगठन संभावित आक्रामक जलीय जीवों के प्रसार पर रोक लगाकर **समुद्री जैव विविधता का संरक्षण** करता है।
  - **ध्वनि प्रदूषण का समाधान:** यह संगठन **वाणिज्यिक पोत परिवहन से जल के भीतर उत्पन्न होने वाले ध्वनि प्रदूषण को कम करने हेतु IMO के दिशा-निर्देशों** का अनुपालन सुनिश्चित करता है।
  - **जलवायु परिवर्तन का शमन:** IMO **परिवहन क्षेत्रक का ऐसा पहला अंतर्राष्ट्रीय विनियामक** है, जिसने अंतर्राष्ट्रीय पोत परिवहन के लिए **ऊर्जा-दक्षता उपायों को अपनाया है।**
  - **समुद्र में डंप किए जा रहे अपशिष्ट का निपटान:** IMO ने अपशिष्ट और अन्य पदार्थों की समुद्र में की जा रही डंपिंग पर **लंदन डंपिंग कन्वेंशन और प्रोटोकॉल** को अपनाया है।
    - इस कन्वेंशन के तहत समुद्र की सतह के नीचे भूगर्भीय संरचनाओं में **कार्बन कैप्चर और प्रच्छादन (Sequestration) की प्रक्रिया भी नियंत्रित** की गई है।
- **समुद्री संरक्षा और सुरक्षा:**
  - **व्यापारिक पोतों की संरक्षा और सुरक्षा:** IMO ने **'जीवन की सुरक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन अर्थात् SOLAS कन्वेंशन, 1974'** को अपनाया है।
    - यह कन्वेंशन समुद्र में जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए **पोत निर्माण, पोत से संबंधित उपकरणों और पोतों की आवाजाही के लिए मानक** निर्धारित करता है।
  - **समुद्री पाइरेसी और सशस्त्र डकैती को रोकना:** IMO समुद्री पाइरेसी व सशस्त्र डकैती से निपटने के लिए सदस्य देशों को उनके राष्ट्रीय या क्षेत्रीय उपाय करने में सहायता प्रदान करता है।
    - उदाहरण के लिए- **'जिबूती कोड ऑफ कंडक्ट'**।
  - **सप्रेशन ऑफ अनलॉफुल एक्टिविटीज (SUA) ट्रीटीज:** यह एक अंतर्राष्ट्रीय कानूनी फ्रेमवर्क है। इसका उद्देश्य पोतों के खिलाफ की गई गैर-कानूनी गतिविधियों पर की गई कार्रवाई को सक्षम बनाना है।
  - **मादक पदार्थों की तस्करी की निगरानी:** IMO अपनी **समुद्री सुरक्षा समिति (MSC)**[41] और **सुविधा समिति (FAL)**[42] के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय पोतों द्वारा मादक पदार्थों की तस्करी पर रोक लगाता है।

IMO के समक्ष चुनौतियां

- **संगठन में सदस्य देशों का असमान प्रभाव:** IMO का मौजूदा वित्त-पोषण तंत्र कई कमजोरियों से ग्रस्त है। इसे न्यायसंगत बनाने के लिए अधिक उत्सर्जन करने वाले राष्ट्रों से अधिक धन तथा कम उत्सर्जन करने वाले राष्ट्रों से कम धन लेने की व्यवस्था की जानी चाहिए।
  - असमान वित्त-पोषण के कारण कुछ सदस्य देशों का असमान प्रभाव पड़ता है।
- **उद्योग का अनुपातहीन प्रभाव:** इसके परिणामस्वरूप IMO ऐसे रुख अपनाता है, जो जलवायु परिवर्तन शमन जैसी अन्य समस्याओं पर उद्योग की चिंताओं का समान रूप से समर्थन नहीं करता है।
  - ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के अनुसार, IMO के अंदर समिति स्तर पर सभी परामर्शकारी सदस्यों में से 57 प्रतिशत उद्योग समूहों से संबंधित हैं।
- **उभरती प्रौद्योगिकियों को विनियमित करने की क्षमता का अभाव:** IMO के पास पर्याप्त कार्यबल का अभाव है।
- **वार्ताओं के दौरान राजनीतिक सहमति का अभाव-**

41 Maritime Safety Committee

42 Facilitation Committee

- उदाहरण के लिए- अर्जेंटीना, ब्राजील, भारत जैसे देश **CBDR-RC**[43] सिद्धांत का हवाला देते हैं ताकि GHG का विनियमन भेदभावपूर्ण तरीके से न हो।
- **संगठन का अत्यधिक सीमित विनियामकीय दायरा:** IMO के नीतिगत मिश्रण में आर्थिक साधनों और वैकल्पिक प्रणोदन (Propulsion) प्रौद्योगिकियों जैसे नवीन साधनों का अभाव है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त वर्णित ये सभी चुनौतियां भारत के समक्ष परिषद का सदस्य होने के नाते एक सक्रिय भूमिका निभाने का आधार प्रस्तुत करती हैं। भारत अपनी सक्रिय भूमिका के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (IMO) में संगठनात्मक और गवर्नेंस संबंधी सुधार करने में मदद कर सकता है। इसके अलावा, भारत पोतों की सुरक्षित एवं संधारणीय आवाजाही सुनिश्चित करने सहित महासागरों और समुद्रों के संरक्षण एवं उनके संधारणीय उपयोग (SDG-14) को बढ़ावा दे सकता है।

6.2.5. भ्रष्टाचार के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन (United Nations Convention against Corruption: UNCAC)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भ्रष्टाचार के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन (UNCAC) के 20 वर्ष पूरे हुए।

UNCAC के मुख्य बिंदुओं पर एक नज़र

- UNCAC पर **9 दिसंबर, 2003 को मेक्सिको** में हस्ताक्षर किए गए थे। यह कन्वेंशन **2005 में लागू** हुआ था।
- यह **भ्रष्टाचार के खिलाफ कानूनी रूप से बाध्यकारी एकमात्र सार्वभौमिक कन्वेंशन** है।
- **पक्षकार:** 190 देश। **भारत** भी इसका पक्षकार है।
- इसमें **भ्रष्टाचार के अलग-अलग रूप** शामिल हैं। इनमें **रिश्वतखोरी, किसी के प्रभाव में आकर कार्य करना, पद का दुरुपयोग और निजी क्षेत्र में भ्रष्टाचार की विविध गतिविधियां** शामिल हैं।
- **इस कन्वेंशन में पांच मुख्य पद्धतियां शामिल हैं:**
  - **रोकथाम संबंधी उपाय:** इसके तहत भ्रष्टाचार से निपटने वाली संस्थाओं की स्थापना इत्यादि शामिल हैं।
  - **अपराधीकरण और कानून लागू करना:** देशों द्वारा भ्रष्टाचार के कृत्य को अपराध की श्रेणी में शामिल करना और इसकी रोकथाम के लिए कानून लागू करना।
  - **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** देश भ्रष्टाचार से निपटने के लिए एक-दूसरे की कानूनी सहायता करने हेतु बाध्य हैं।
  - **एसेट्स की रिकवरी,** और
  - **तकनीकी सहायता** और सूचनाओं का आदान-प्रदान।
- ड्रग्स और अपराध पर संयुक्त राष्ट्र कार्यालय (UNODC) **कन्वेंशन का संरक्षक है।** UNODC इस **कन्वेंशन के पक्षकार देशों के सम्मेलन के सचिवालय** के रूप में भी कार्य करता है।

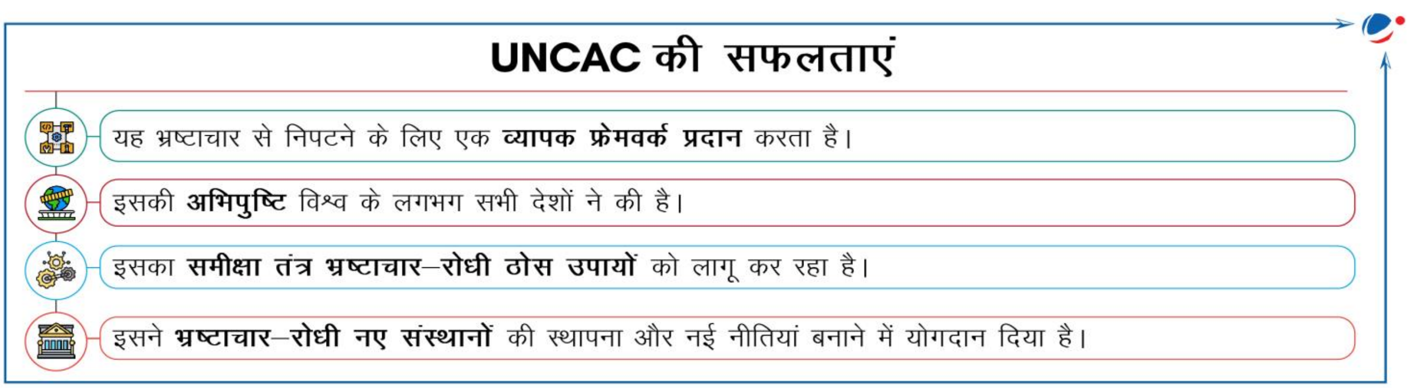

[43] Common but Differentiated Responsibilities and Respective Capabilities/ साझा लेकिन विभेदित जिम्मेदारियां और संबंधित क्षमताएं

UNCAC से संबंधित मुद्दे

- **UNCAC भ्रष्टाचार को स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं** करता है।
- भ्रष्टाचार रोधी कानूनों, संस्थानों और उनके प्रभावों में कोई तालमेल नहीं है।
- UNCAC समीक्षा प्रक्रिया में **सिविल सोसाइटी को शामिल करने की जरूरत नहीं** होती है। इससे भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई कमजोर पड़ जाती है।

6.3. अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (International Criminal Court: ICC)

सुर्ख़ियों में क्यों?

अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC) के अभियोजक ने इजरायल के प्रधान मंत्री और हमास नेताओं पर **मानवता के खिलाफ अपराध और युद्ध अपराध का आरोप लगते हुए** उनके खिलाफ गिरफ्तारी वारंट की मांग की है।

अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC) के बारे में

- यह **पहला अंतर्राष्ट्रीय स्थायी न्यायालय है** जो गंभीर अंतर्राष्ट्रीय अपराधों के आरोपी व्यक्तियों की जांच करता है और उन पर अभियोग चलाता है।
- ICC की संस्थापक संधि को **रोम संविधि** के रूप में जाना जाता है। इस संधि को **1998** में अपनाया गया था और यह **2002** में लागू हुई थी। यह ICC को **4 मुख्य अपराधों** के संदर्भ में अधिकार-क्षेत्र प्रदान करता है (इन्फोग्राफिक देखें)।
- **सदस्यता:** ICC की रोम संविधि के पक्षकार देशों की संख्या **124 है।**
    - **भारत** रोम संविधि के **पक्षकार नहीं** हैं।
- **निर्णयों का प्रवर्तन:** ICC के निर्णय **बाध्यकारी** होते हैं।
    - **इसके पास स्वयं का पुलिस बल नहीं है।** यह संदिग्धों की गिरफ्तारी और आत्मसमर्पण के लिए देशों के सहयोग पर निर्भर करता है।
- **पूरकता का सिद्धांत (Complementarity Principle):** ICC राष्ट्रीय आपराधिक प्रणालियों का पूरक है। इसके द्वारा केवल तभी मुकदमा चलाया जाता है, जब संबंधित देश वास्तव में ऐसा करने के लिए अनिच्छुक या असमर्थ हों।

ICC के तहत अपराधों की 4 श्रेणियां

नरसंहार	मानवता के खिलाफ अपराध	युद्ध अपराध	आक्रामकता का अपराध
• **किसी राष्ट्रीय, नृजातीय, नस्लीय या धार्मिक समूह** के सदस्यों को मारकर या अन्य तरीकों से उस समूह को खत्म करने का विशिष्ट इरादा।	• **नागरिक आबादी पर बड़े पैमाने पर हमले करके किए गए गंभीर अपराध** • इसके लिए **रोम संविधि में 5 रूपों में अपराधों को सूचीबद्ध किया गया है।** इनमें हत्या, बलात्कार, अवैध कारावास, जबरन गायब करना, दासता, यातना, रंगभेद जैसे अपराध शामिल हैं।	• **सशस्त्र संघर्ष के संदर्भ में जिनेवा कन्वेंशंस का गंभीर उल्लंघन** • **बाल सैनिकों का उपयोग; नागरिकों/ युद्धबंदियों की हत्या या यातना; अस्पतालों व ऐतिहासिक स्मारकों पर जानबूझकर आक्रमण करना आदि।**	• **किसी देश द्वारा दूसरे देश की संप्रभुता, अखंडता या स्वतंत्रता के खिलाफ सशस्त्र बल का उपयोग**

रोम संविधि के तहत निर्धारित ICC के क्षेत्राधिकार

- **नरसंहार, मानवता के खिलाफ अपराध या युद्ध अपराध (1 जुलाई 2002 अथवा उसके बाद किए गए) के मामले में-**
  - ऐसा अपराध जो किसी **पक्षकार देश के नागरिक** द्वारा, या किसी **पक्षकार देश के राज्य क्षेत्र** में, या **ICC के क्षेत्राधिकार को स्वीकार करने वाले किसी देश** में किए गए हों।
  - **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC)** द्वारा संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अध्याय-VII के तहत ICC अभियोजक को **सौंपा गया आपराधिक मामला।**
- **आक्रामकता के अपराधों के मामले में:**
  - **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद** द्वारा ICC अभियोजक को सौंपे गए आपराधिक मामले, चाहे इसमें पक्षकार देश या गैर-पक्षकार देश शामिल हों।
  - **अभियोजक अपनी पहल पर या किसी पक्षकार देश के अनुरोध** पर भी जांच शुरू कर सकता है।
- ICC को **18 वर्ष से कम आयु के किसी भी व्यक्ति के संबंध में कोई क्षेत्राधिकार प्राप्त नहीं है।**

आपराधिक न्याय के संदर्भ में ICC की सीमाएं

- **ICC के पास अपने निर्णयों के प्रवर्तन के लिए किसी विशेष तंत्र का अभाव** है। यह देशों के साथ सहयोग पर निर्भर है।
- कई पक्षकार देश भी गिरफ्तारी और आत्मसमर्पण के लिए **न्यायालय के अनुरोधों पर सहयोग करने के लिए अनिच्छुक** होते हैं।
  - अब तक, **ICC ने 46 गिरफ्तारी वारंट जारी किए हैं। इनमें से केवल 21 में** ही इसके सदस्य देशों की सहायता से गिरफ्तारी की गई है।
- ICC के अभियोजक और न्यायाधीशों के प्राधिकार पर प्रभावी निगरानी की कमी के कारण **उन पर प्रभावी नियंत्रण व संतुलन का अभाव** रहता है।
- ICC केवल 1 जुलाई 2002 (जब रोम संविधि लागू हुई थी) के बाद किए गए अपराधों की ही सुनवाई कर सकता है। इसे **पूर्वव्यापी क्षेत्राधिकार (Retrospective jurisdiction) प्राप्त नहीं है।**
- ICC पर **पक्षपात करने का आरोप** लगाया जाता रहा है। इसकी **पश्चिमी साम्राज्यवाद के एक साधन के रूप में कमजोर देशों (विशेष रूप से अफ्रीकी देशों) के खिलाफ पक्षपात करने के लिए आलोचना** की जाती है।

भारत रोम संविधि में क्यों शामिल नहीं हुआ?

- **ICC को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अधीन** करने से इसमें राजनीतिक हस्तक्षेप की संभावना बढ़ सकती है।
- ICC के गैर-पक्षकार देशों को बाध्य करने की **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की शक्ति**, संप्रभुता के सिद्धांतों का उल्लंघन करती है।
- सुरक्षा परिषद या किसी पक्षकार की ओर से संदर्भित किए बिना **अभियोजक को स्वप्रेरणा से मामला दर्ज करने के संबंध में व्यापक क्षमता और शक्तियां** प्राप्त हैं। इन शक्तियों के कारण **ICC का राजनीतिक उद्देश्यों के लिए दुरुपयोग** किया जा सकता है।
- **परमाणु हथियारों और आतंकवाद को ICC के क्षेत्राधिकार से बाहर** रखा गया है, जबकि ये युद्ध अपराध के गंभीर साधन बन सकते हैं।

निष्कर्ष

ICC के प्रभावी कामकाज के लिए सभी पक्षकार देश ICC के साथ पूर्ण सहयोग करने के लिए **प्रभावी राष्ट्रीय फ्रेमवर्क निर्मित** कर सकते हैं। संदिग्धों को गिरफ्तार करने के लिए **गिरफ्तारी की ठोस रणनीतियों** की आवश्यकता है। साथ ही, ICC के पक्षकार देशों को आपराधिक कानून एवं प्रक्रिया का ज्ञान और अनुभव रखने वाले **अत्यधिक योग्य न्यायाधीशों का चुनाव** करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

6.3.1. जेनोसाइड कन्वेंशन (Genocide Convention)

सुर्ख़ियों में क्यों?

अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (ICJ) ने इजरायल के खिलाफ दायर नरसंहार के केस में **अंतरिम फैसला** सुनाया है। ध्यातव्य है कि **दक्षिण अफ्रीका ने ICJ में इजरायल पर जेनोसाइड कन्वेंशन का उल्लंघन करने का आरोप** लगाया था।

अन्य संबंधित तथ्य

- **ICJ में दक्षिण अफ्रीका बनाम इजरायल मामला:** दक्षिण अफ्रीका ने तर्क दिया था कि जिस तरह से इजरायल **गाजा में अपने सैन्य अभियान चला रहा है,** उससे **जेनोसाइड कन्वेंशन का उल्लंघन** हुआ है।

- **ICJ द्वारा किया गया अस्थायी उपाय:** ICJ ने फैसला सुनाया है कि **इजरायल को गाजा (फिलिस्तीन) में नरसंहार कृत्यों को रोकने के लिए सभी उपाय करने होंगे।** हालांकि, इसने युद्ध-विराम का आदेश नहीं दिया है और न ही इजरायल को अभी तक दोषी बताया है।

जेनोसाइड कन्वेंशन के बारे में

- **नाम:** इसे आधिकारिक तौर पर **"नरसंहार के अपराध की रोकथाम और सजा पर कन्वेंशन, 1948"** के नाम से जाना जाता है।
    - इसमें पहली बार **नरसंहार के अपराध को संहिताबद्ध** किया गया था।
    - यह **संयुक्त राष्ट्र महासभा** द्वारा अपनाई गई **पहली मानवाधिकार संधि भी है।**
- **नरसंहार की परिभाषा:** नरसंहार के अपराध को जेनोसाइड कन्वेंशन के **अनुच्छेद II** में परिभाषित किया गया है।
    - इस अनुच्छेद में नरसंहार (Genocide) को किसी **राष्ट्रीय, नृजातीय, नस्लीय या धार्मिक समूह को पूर्ण या आंशिक रूप से समाप्त करने के इरादे से किए गए कृत्यों के रूप में** परिभाषित किया गया है।
    - कन्वेंशन के अनुसार नरसंहार एक अपराध है, जो **युद्ध के समय और शांति के समय** दोनों में हो सकता है।
- **सदस्यता:** जेनोसाइड कन्वेंशन को **153 राष्ट्रों** द्वारा अनुमोदित किया गया है। **भारत ने 1949 में इस संधि पर हस्ताक्षर** किए थे और **1959 में इसका अनुमोदन** किया था।
- **इस कन्वेंशन पर हस्ताक्षर करने वाले राष्ट्रों की ज़िम्मेदारी:** राष्ट्रों का दायित्व है कि वे नरसंहार न करें एवं नरसंहार के अपराध को रोकने और इससे जुड़े हुए समूहों को दंडित करने के उपाय करें। इसमें नरसंहार से संबंधित कानून बनाना और अपराधियों को दंडित करना शामिल है।
    - **हालांकि, भारत ने इस विषय पर कोई कानून नहीं बनाया है।**
- **क्षेत्राधिकार:** अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (ICJ) कन्वेंशन की व्याख्या एवं इसके प्रवर्तन से संबंधित मामलों की सुनवाई करता है।

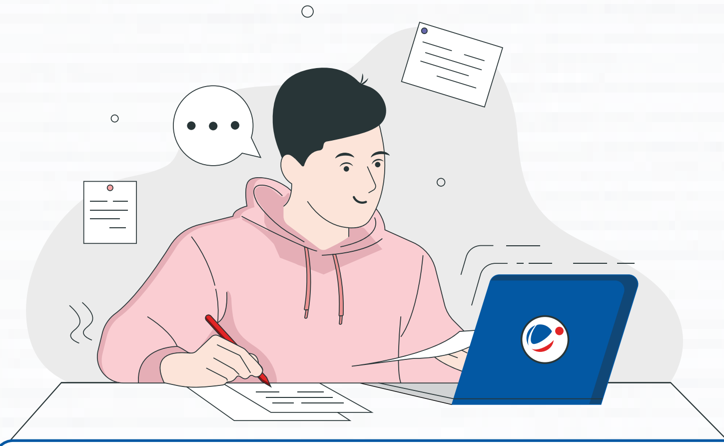

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

UPSC प्रीलिम्स की तैयारी की स्मार्ट और प्रभावी रणनीति

UPSC प्रीलिम्स सिविल सेवा परीक्षा का पहला और अत्यधिक प्रतिस्पर्धी चरण है। इसमें वस्तुनिष्ठ प्रकार के दो पेपर (सामान्य अध्ययन और CSAT) शामिल होते हैं, जो अभ्यर्थी के ज्ञान, उसकी समझ और योग्यता का परीक्षण करने के लिए डिज़ाइन किए जाते हैं।

यह चरण अभ्यर्थियों को व्यापक पाठ्यक्रम में महारत हासिल करने और बदलते पैटर्न के अनुरूप ढलने की चुनौती देता है। साथ ही, यह चरण टाइम मैनेजमेंट, इन्फॉर्मेशन को याद रखने और प्रीलिम्स की अप्रत्याशितता को समझने में भी महारत हासिल करने की चुनौती देता है।

इस परीक्षा में सफलता प्राप्त करने हेतु कड़ी मेहनत के साथ-साथ तैयारी के लिए एक समग्र और निरंतर बदलते दृष्टिकोण की भी आवश्यकता होती है।

तत्काल व्यक्तिगत मेंटरिंग के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

प्रीलिम्स की तैयारी के लिए मुख्य रणनीतियां

तैयारी की रणनीतिक योजना: पढ़ाई के दौरान सभी विषयों को बुद्धिमानी से समय दीजिए। यह सुनिश्चित कीजिए कि आपके पास रिवीजन और मॉक प्रैक्टिस के लिए पर्याप्त समय हो। अपने कमजोर विषयों पर ध्यान दीजिए।

अनुकूल रिसोर्सेज का उपयोग: ऐसी अध्ययन सामग्री चुनिए जो संपूर्ण और टू द पॉइंट हो। अभिभूत होने से बचने के लिए बहुत अधिक कंटेंट की जगह गुणवत्ता पर ध्यान दीजिए।

PYQ और मॉक टेस्ट का रणनीतिक उपयोग: परीक्षा के पैटर्न, महत्वपूर्ण विषयों और प्रश्नों के ट्रेंड्स को समझने के लिए विगत वर्ष के प्रश्न-पत्रों का उपयोग कीजिए। मॉक टेस्ट के साथ नियमित प्रैक्टिस और प्रगति का आकलन करने से तैयारी तथा टाइम मैनेजमेंट में सुधार होता है।

करेंट अफेयर्स की व्यवस्थित तरीके से तैयारी: न्यूज़पेपर और मैगजीन के जरिए करेंट अफेयर्स से अवगत रहिए। समझने और याद रखने में आसानी के लिए इस ज्ञान को स्टेटिक विषयों के साथ एकीकृत कीजिए।

स्मार्ट लर्निंग: रटने के बजाय अवधारणाओं को समझने पर ध्यान दीजिए, बेहतर तरीके से याद रखने के लिए निमोनिक्स, इन्फोग्राफिक्स और अन्य प्रभावी तरीकों का उपयोग कीजिए।

व्यक्तिगत मेंटरिंग: व्यक्तिगत रणनीतियों, कमजोर विषयों और मोटिवेशन के लिए मेंटर्स की मदद लीजिए। मेंटरशिप स्ट्रेस मैनेजमेंट में भी मददगार होता है, ताकि आप मेंटल हेल्थ को बनाए रखते हुए परीक्षा पर ठीक से ध्यान केंद्रित कर सकें।

UPSC प्रीलिम्स की जटिलताओं को ध्यान में रखते हुए, Vision IAS ने अपना बहुप्रतीक्षित "ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज़ और मेंटरिंग प्रोग्राम" शुरू किया है। इस प्रोग्राम में नवीनतम ट्रेंड्स के अनुरूप संपूर्ण UPSC सिलेबस को शामिल किया गया है।

इसकी प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- UPSC सिलेबस का व्यापक कवरेज
- टेस्ट सीरीज का फ्लेक्सिबल शेड्यूल
- टेस्ट का लाइव ऑनलाइन/ ऑफ़लाइन डिस्कशन और पोस्ट-टेस्ट एनालिसिस
- प्रत्येक टेस्ट पेपर के लिए आंसर-की और व्यापक व्याख्या
- अभ्यर्थी के अनुरूप व्यक्तिगत मेंटरिंग
- ऑल इंडिया रैंकिंग के साथ इनोवेटिव अस्सेस्मेंट सिस्टम और परफॉरमेंस एनालिसिस
- क्विक रिविजन मॉड्यूल (QRM)

अंत में, एक स्मार्ट स्टडी प्लान, प्रैक्टिस, सही रिसोर्स और व्यक्तिगत मार्गदर्शन को मिलाकर बनाई गई रणनीतिक तथा व्यापक तैयारी ही UPSC प्रीलिम्स में सफलता की कुंजी है।

"ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज़ और मेंटरिंग प्रोग्राम" के लिए रजिस्टर करने और ब्रोशर डाउनलोड करने हेतु QR कोड को स्कैन कीजिए

7. परिशिष्ट (Appendix)

परिशिष्ट: महत्वपूर्ण आंकड़े एवं तथ्य

आर्थिक कूटनीति	2008 और 2020 के बीच, भारत ने अनुदान और ऋण के रूप में **लगभग 8.35 बिलियन अमेरिकी डॉलर का वितरण किया।**
भूराजनीति में प्रौद्योगिकी की भूमिका	**भू-राजनीति को प्रभावित करने वाली प्रौद्योगिकी:** राज्य की संप्रभुता की पारंपरिक अवधारणा को चुनौती देती है; चौथी औद्योगिक क्रांति राष्ट्र की आर्थिक शक्ति और प्रतिस्पर्धात्मकता को आकार देगी; उन्नत सैन्य प्रौद्योगिकी वैश्विक मंच पर प्रभाव डालती है। **भारत की भू-राजनीति में प्रौद्योगिकी की केंद्रीयता:** भूटान और नेपाल द्वारा UPI को अपनाना, SAARC के सदस्यों के लिए GSAT-9 उपग्रह लॉन्च किया गया; OSOWOG, ISA, आदि।
आपदा राहत कूटनीति	**भारत की पहलें: तुर्किये में आए विनाशकारी भूकंप के बाद 'ऑपरेशन दोस्त; चक्रवात प्रभावित म्यांमार** की सहायता के लिए भारत ने **'ऑपरेशन करुणा'; नेपाल, मालदीव, श्रीलंका, बांग्लादेश और मॉरीशस** की आरंभिक चेतावनी प्रणालियां (EWSs) विकसित करने में मदद; **मॉरीशस और कोमोरोस में चिकित्सा सहायता दलों** को भेजना।
पैराडिप्लोमेसी	7वीं अनुसूची में संघ सूची के तहत **विदेशी मामले विशेष रूप से "संघ" का विषय** है। **सिस्टर-सिटी की अवधारणा:** मुंबई और हो ची मिन्ह सिटी, (वियतनाम); चेन्नई और ग्वांगझोउ सिटी (चीन) आदि।
भारत की रणनीतिक स्वायत्तता	**रणनीतिक स्वायत्तता के स्तंभ:** विदेश नीति के मामले में स्वतंत्रता; सैन्य आत्मनिर्भरता; रणनीतिक निर्णय लेने की स्वायत्तता; आर्थिक संप्रभुता; ऊर्जा-सुरक्षा। **मुद्दे:** यह भारत की 'वैश्विक दक्षिण के समर्थन' की आकांक्षाओं के विपरीत है; अस्पष्ट रुख अपनाने का आरोप; युद्धों को वित्त-पोषित करने का आरोप; रूस-चीन-पाकिस्तान धुरी का उदय।
भारत: द वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ	ग्लोबल साउथ की अवधारणा का सर्वप्रथम उल्लेख **ब्रैंट रिपोर्ट, 1980** में किया गया था। भारत के बहुपक्षीय मंचों के लिए 5 स्तंभों वाला दृष्टिकोण। ये स्तंभ हैं: **सम्मान, संवाद, सहयोग, शांति और समृद्धि।**
विश्व को एकजुट करने वाले देश के रूप में भारत	भारत के अधीन G20 की अध्यक्षता के तहत G20 का शिखर सम्मेलन की थीम **"वसुधैव कुटुंबकम्- एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य"** थी। **विश्व को एकजुट करने वाले देश के रूप में भारत:** मिशन लाइफ/ LiFE, ISA, GBA, VOSS
भारत का विकासात्मक सहयोग	**भारत का विकासात्मक सहयोग:** अनुदान सहायता, ऋण सहायता; दक्षिण-दक्षिण सहयोग; विकासात्मक साझेदारी प्रशासन (DPA)। **विकासात्मक सहयोग में भारत द्वारा प्रयास:** IREC प्रोग्राम, भारत सहायता मिशन, NEST प्रभाग, इथियोपिया को बेहतर गुणवत्ता वाला जर्मप्लाज्म प्रदान किया गया।

© Vision IAS

बंदरगाहों का भू-राजनीतिक महत्त्व	▶ **सामरिक अवस्थिति वाले बंदरगाह:** अगालेगा द्वीप (मॉरीशस); सितवे बंदरगाह (म्यांमार); दुकम बंदरगाह (ओमान)। ▶ **चुनौतियाँ:** स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स (चीन); हंबनटोटा (चीन की उपस्थिति); समुद्री डकैती; सीमित वित्तीय संसाधन।
रणनीतिक साधन के रूप में कच्चा तेल	▶ **भारत तेल का तीसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता है; भारत दुनिया का चौथा सबसे बड़ा रिफाइनर,** पेट्रोलियम उत्पादों का छठा सबसे बड़ा आयातक और पेट्रोलियम उत्पादों का सातवां सबसे बड़ा निर्यातक है। ▶ **भारत की पहलें:** रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार कार्यक्रम, जैव ईंधन पर राष्ट्रीय नीति, HELP
भारत और G20	▶ **भारत के लिए G20 की अध्यक्षता का महत्त्व: नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन** (GBA); **ग्लोबल साउथ की अभिव्यक्ति** (अफ्रीकी संघ को G20 का स्थायी सदस्य बनाया गया); **आर्थिक अवसर** (IMEC); **भारत के प्रभाव का विस्तार; देशों के बीच आपसी विश्वास में वृद्धि** (यूक्रेन मुद्दे पर आम सहमति); **अपने हितों को ध्यान में रख वैश्विक एजेंडा बनाना और विश्व व्यवस्था को आकार देना**
भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC)	▶ **IMEC में रेलमार्ग, जहाज-रेल पारगमन नेटवर्क (सड़क और समुद्र) तथा सड़क परिवहन मार्ग (व नेटवर्क) शामिल होंगे। इसमें दो गलियारे शामिल हैं:** - **पूर्वी गलियारा:** यह भारत को अरब की खाड़ी से जोड़ेगा। - **उत्तरी गलियारा:** यह अरब की खाड़ी को यूरोप से जोड़ेगा। - यह परियोजना **वैश्विक अवसंरचना और निवेश के लिए साझेदारी (PGII)** का हिस्सा है। ▶ **IMEC का महत्त्व:** व्यापार सुविधा और पहुंच से व्यापार लागत में कमी आएगी; क्षेत्रीय कनेक्टिविटी में वृद्धि; भारत, पश्चिम एशिया और यूरोप के बीच आर्थिक एकीकरण में प्रभावी भूमिका।
अफ्रीकी संघ: G20 का एक स्थायी सदस्य	▶ **महत्त्व:** G20 के लिए- अफ्रीका महाद्वीप की क्षमताओं का उपयोग करना; G20 की विश्वसनीयता को बढ़ावा देना; G20 की छवि का पुनर्निर्माण; **भारत के लिए-** ग्लोबल साउथ की अभिव्यक्ति बनना; भारत की आकांक्षाओं के अनुरूप; UNSC में स्थायी सदस्यता; संसाधनों का विविधीकरण; **अफ्रीका के लिए-** समावेशिता; असंतुलन को दूर करना; अफ्रीका की संवृद्धि का संकेत। ▶ **भारत के प्रयास:** पैन अफ्रीकन ई-नेटवर्क प्रोजेक्ट (PANEP); भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन; भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम; एशिया-अफ्रीका विकास गलियारा।
ब्रिक्स का विस्तार	▶ **महत्व:** बहुध्रुवीय विश्व को आकार देना; नए क्षेत्रों में समूह की उपस्थिति का विस्तार करना; वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रभाव बढ़ाना; वि-डॉलरीकरण को बढ़ावा। ▶ **ब्रिक्स के विस्तार से संबंधित मुद्दे:** सदस्य देशों में विकास के विविध स्तर; चीन द्वारा अपने प्रभाव क्षेत्र को बढ़ाने का प्रयास; सदस्यों के बीच व्यापक आंतरिक मतभेद।
भारत और हिंद-प्रशांत	▶ **वैश्विक व्यापार का 50% और तेल का 40% हिस्सा** हिंद-प्रशांत क्षेत्र से गुजरता है। भारत का 90 प्रतिशत व्यापार इस क्षेत्र से होता है। इसमें 80 प्रतिशत महत्वपूर्ण माल ढुलाई- कोयला, पेट्रोलियम और गैस, लौह अयस्क, उर्वरक आदि शामिल हैं। ▶ **हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए भारत की नीति:** सुरक्षा प्रदाता, विकास संबंधी सहायता आदि को मजबूत और संरक्षित करना; सूचना प्रबंधन और विश्लेषण केंद्र (IMAC); समुद्री डोमेन जागरूकता (MDA); विदेश मंत्रालय अंतर्गत अलग IPO; सागर/SAGAR

IPEF	▶ इसे मई 2022 में टोक्यो में लॉन्च किया गया था। **इसे संयुक्त राज्य अमेरिका और हिंद-प्रशांत क्षेत्र के अन्य भागीदार** देशों ने संयुक्त रूप से लॉन्च किया था। ▶ **सदस्य:** IPEF के **14 भागीदार देश** है। इनमें भारत भी शामिल है। IPEF के भागीदार देशों की **वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 40% और वैश्विक वस्तु एवं सेवा व्यापार में 28% की हिस्सेदारी** है।
क्वाड (QUAD)	▶ **क्वाड समान विचारधारा वाले चार देशों का एक अनौपचारिक मंच है। इसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत, ऑस्ट्रेलिया और जापान** शामिल हैं। ▶ **भारत के लिए क्वाड का महत्त्व:** हिंद-प्रशांत में भारत की सक्रिय भागीदारी; एक्ट ईस्ट को बढ़ावा; रक्षा संबंधी सहभागिता; सहयोग के विविध क्षेत्र।
भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी	▶ **नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी को 2008** में विदेश नीति के एक उपकरण के रूप में अपनाया गया था। ▶ **महत्त्व:** सामरिक आवश्यकताओं की पूर्ति (UNSC, IMF); बहुपक्षवाद को बढ़ावा (सार्क, बिम्सटेक); सॉफ्ट पावर प्रभाव को बढ़ावा (योग); क्षेत्रीय स्थिरता और सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण (RATS)
चीन का बढ़ता प्रभाव और भारत के लिए ख़तरा	▶ **खतरा:** लद्दाख में चीन की घुसपैठ; CPEC; चीन का रक्षा बजट 222 बिलियन डॉलर बनाम भारत का 75 बिलियन डॉलर; UFWD; बढ़ता व्यापार घाटा (99 बिलियन डॉलर); हंबनटोटा बंदरगाह। ▶ **शमन:** चीनी सेना का सीधा मुकाबला; IPOI; क्वाड; टिकटॉक पर प्रतिबंध लगाना; G20 में EU को शामिल करना; भारत द्वारा अपनी सॉफ्ट पावर का प्रयोग।
भारत-नेपाल	▶ **भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार** और पर्यटकों के लिए शीर्ष स्रोत देश है। दोनों देशों के **मध्य द्विपक्षीय व्यापार 11 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का है** (2021-22) {पिछले वर्ष की तुलना में 41% की वृद्धि}। ▶ **हालिया पहलें:** भारत-नेपाल संयुक्त आयोग की छठी बैठक आयोजित हुई थी; **जयनगर (बिहार) से कुर्था (नेपाल)** रेल लिंक; लुंबिनी में **बौद्ध विहार।**
भारत-भूटान	▶ भारत, आयात स्रोत और एक निर्यात गंतव्य के रूप में **भूटान का शीर्ष व्यापारिक भागीदार है।** व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में है; व्यापार, वाणिज्य और पारगमन समझौता (2016) एक मुक्त व्यापार व्यवस्था स्थापित करता है। ▶ **सहयोग के क्षेत्र:भूटान में RuPay और BHIM ऐप की शुरुआत की गई है; भारत-भूटान SAT';** भूटान का गेलेफु माइंडफुलनेस सिटी (कनेक्टिविटी); ताला (जलविद्युत); MTRAT, दंतक (सुरक्षा)।
तालिबान शासन	▶ **2021 के बाद के संबंध:** भारत तालिबान शासन को मान्यता नहीं देता; काबुल में तकनीकी मिशन; ICCR छात्रवृत्ति योजना। ▶ **महत्व:** मध्य एशिया का प्रवेश द्वार; क्षेत्र की स्थिरता तापी पाइपलाइन के लिए मार्ग प्रशस्त कर सकती है; पाकिस्तान स्थित आतंकवादी समूह से लड़ने के लिए स्थिरता महत्वपूर्ण है।

भारत-मालदीव	▶ भारत 2023 में **मालदीव का सबसे बड़े व्यापारिक भागीदार** के रूप में उभरा है। द्विपक्षीय व्यापार 2023 में लगभग 548 मिलियन अमेरिकी डॉलर। ▶ **महत्त्व:** भारत की **'नेबरहुड फर्स्ट' नीति और सागर** (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और संवृद्धि) विज़न का एक महत्वपूर्ण सदस्य; भारत का लगभग 50 प्रतिशत विदेशी व्यापार और उसका 80 प्रतिशत ऊर्जा आयात समुद्री संचार मार्गों (SLOCs) के माध्यम से ही होता है; इसकी अवस्थिति 'टोल गेट' की भांति है।
इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA)	▶ **IORA के बारे में:** 1997 में स्थापित, IOR के भीतर क्षेत्रीय सहयोग और संधारणीय विकास को मजबूत करने के लिए; क्षेत्र: समुद्री सुरक्षा और संरक्षा; मत्स्यन; इंडो पैसिफिक पर 'IORA का दृष्टिकोण। ▶ **महत्त्व:** दुनिया की 1/3 आबादी; मात्रा के हिसाब से भारत का 95% व्यापार और मूल्य के हिसाब से 68% व्यापार हिंद महासागर के माध्यम से समुद्र के रास्ते होता है; लगभग 250 मिलियन लोग तट से 50 किलोमीटर के भीतर रहते हैं।
बिम्सटेक चार्टर	▶ **बिम्सटेक के बारे में:** 1997 में स्थापित; **सदस्य:** बांग्लादेश, भारत, श्रीलंका, थाईलैंड, म्यांमार, नेपाल और भूटान। ▶ **चार्टर:** आधारभूत दस्तावेज जो लक्ष्यों, सिद्धांतों और संरचना को रेखांकित करता है; 20 मई को लागू हुआ।
SASEC	▶ **SASEC के बारे में:** 2001 में स्थापित; ADB इसके सचिवालय के रूप में कार्य करता है; सदस्य: बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, म्यांमार, नेपाल और श्रीलंका। ▶ **फोकस क्षेत्र:** परिवहन, व्यापार में सुगमता, ऊर्जा और आर्थिक गलियारा विकास।
अब्राहम समझौता	▶ **यह संयुक्त राज्य अमेरिका (USA), संयुक्त अरब अमीरात (UAE) और इज़रायल** के बीच एक सामूहिक समझौता है। इस समझौते पर सितंबर, 2020 में हस्ताक्षर किए गए थे। ▶ **महत्त्व:** फारस की खाड़ी में स्थिरता को बढ़ाने और संघर्ष को रोकने के लिए; इज़रायल-फिलिस्तीन मुद्दे का समाधान; देशों के बीच व्यापार में वृद्धि; धार्मिक एकीकरण; प्रॉस्पेरिटी ग्रीन एंड ब्लू एग्रीमेंट; 1994 में जॉर्डन के बाद इजरायल और किसी अरब देश के बीच संबंधों का यह पहला सामान्यीकरण है।
इज़रायल-हमास युद्ध	▶ **प्रभाव:** हमास को मजबूती और फिलिस्तीनी प्राधिकरण का कमजोर होना, क्षेत्रीय अस्थिरता, आर्थिक (तेल की कीमत में वृद्धि क्योंकि वैश्विक स्तर पर तेल उत्पादन में ओपेक (OPEC) देशों की लगभग 32% हिस्सेदारी है)। ▶ **गाजा में तत्काल युद्ध विराम;** सभी बंधकों की रिहाई; मानवीय सहायता के प्रवाह का विस्तार।

नागोर्नो-काराबाख क्षेत्र	**अज़रबैजान ने इस क्षेत्र पर पूर्ण नियंत्रण हासिल कर लिया है।** **युद्ध: पहला युद्ध 1988 में, दूसरा 2020 में।** **भारत का रुख:** भारत ने कहा कि संघर्ष का कोई भी स्थायी समाधान केवल कूटनीतिक वार्ता के माध्यम से शांतिपूर्ण तरीके से प्राप्त किया जा सकता है।
भारत-इजरायल	भारत एशिया में **इज़रायल का दूसरा सबसे बड़ा और वैश्विक स्तर पर सातवाँ सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है;** द्विपक्षीय व्यापार में हीरे का व्यापार लगभग 50% है। **महत्त्व:** आतंकवाद-रोधी और खुफिया जानकारी साझा करना; 1971 और कारगिल युद्ध में सहायता; कश्मीर पर भारत की स्थिति का समर्थन; UNSC में स्थायी सीट और IMEC गलियारे के लिए समर्थन।
भारत-UAE	**UAE ने BIT पर हस्ताक्षर किए; CEPA परिषद; रणनीतिक संबंध 2015।** **सहयोग के प्रमुख क्षेत्र:** UAE भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार (2022-23) और दूसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य है; भारत में UAE का निवेश लगभग 20-21 बिलियन अमेरिकी डॉलर है; ब्रिक्स, I2U2; 3.5 मिलियन भारतीय प्रवासी, IMEC, इसरो और UAE अंतरिक्ष एजेंसी द्वारा बाह्य अंतरिक्ष का अन्वेषण एवं उपयोग।
भारत-सऊदी अरब	2023 में भारत के कुल व्यापार में सऊदी अरब के साथ व्यापार का **हिस्सा 4.53 प्रतिशत था।** भारत अपना 18% से अधिक कच्चा तेल सऊदी अरब से आयात करता है। 50 बिलियन डॉलर की वेस्ट कोस्ट रिफाइनरी परियोजना के कार्यान्वयन में तेजी लाना। **महत्त्व: 'लुक वेस्ट'** नीति और **भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा;** UNSC में व्यापक सुधार किए जाने की मांग का समर्थन; भारत-GCC-मुक्त व्यापार समझौता वार्ता में तेजी लाने में महत्वपूर्ण भूमिका; प्रवासी: 2.4 मिलियन; इस्लाम के सबसे पवित्र स्थल मक्का और मदीना इस्लाम को जोड़ते हैं।
भारत-GCC	**GCC के बारे में:** सऊदी अरब, यूएई, ओमान, कुवैत, कतर और बहरीन; भारत के तेल आयात में लगभग 35% और गैस आयात में 70% का योगदान; भारत का सबसे बड़ा ब्लॉक ट्रेडिंग पार्टनर, जिसका द्विपक्षीय व्यापार लगभग 184 बिलियन अमेरिकी डॉलर है।
भारत-मध्य एशिया	**मध्य एशिया:** चारों ओर से स्थल-रुद्ध पांच देश- कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उज्बेकिस्तान; तीसरी ईसा पूर्व से 15वीं ईस्वी तक सिल्क रोड पर वस्तु व्यापार, विचारों का आदान-प्रदान। **महत्त्व:** तुर्कमेनिस्तान चौथा सबसे बड़ा गैस भंडार; चीन की स्ट्रिंग नीति का प्रतिउत्तर; यहां की शांति और सुरक्षा अफगानिस्तान में शांति से जुड़ी हुई है।
दक्षिण चीन सागर	**महत्त्व:** वैश्विक व्यापार का 60% हिस्सा इसी सागर से होकर गुजरता है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र के साथ भारत का लगभग 55% व्यापार इसी जल क्षेत्र से होकर गुजरता है; ONGC-VL तेल भंडार की खोज कर रहा है; फिशिंग ग्राउंड्स; कई निर्जन द्वीप आदि।

© Vision IAS

भारत-अमेरिका	▶ **द्विपक्षीय व्यापार:** 118.42 बिलियन डॉलर; चीन के बाद अमेरिका भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है (2023-24)। ▶ **सहयोग के क्षेत्र:** संयुक्त राष्ट्र, आसियान, G-20, IMF, क्वाड, I2U2, लोकतंत्र के लिए शिखर सम्मेलन; इंडिया-अमेरिका डिफेंस एक्सीलरेशन इकोसिस्टम (INDUS-X), LEMOA/लेमोआ, कॉमकासा, BECA पर हस्ताक्षर; **CET; निसार/NISAR; ISA, CDRI**
भारत-EU	▶ **द्विपक्षीय व्यापार: 135 बिलियन अमेरिकी डॉलर (2022-23);** भारत के लिए FDI का सबसे बड़ा स्रोत है (107 बिलियन डॉलर) ▶ **सहयोग:** EU, संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद **भारतीय निर्यात के लिए दूसरा सबसे बड़ा गंतव्य है; दोनों ही बहुपक्षवाद और नियम-आधारित व्यवस्था का बचाव करते हैं;** यूरोपीय संघ की इंडो-पैसिफिक रणनीति **इस क्षेत्र में भारत के लक्ष्यों के करीब है; स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु भागीदारी।** ▶ **चुनौतियां:** भारतीय कंपनियों को गैर-प्रशुल्क बाधाओं जैसे कि फाइटोसैनिटरी उपायों के मुद्दों का सामना करना पड़ता है; यूरोपीय संघ मजबूत IPR व्यवस्था की मांग करता है; यूरोपीय संघ के कुल व्यापार में चीन का हिस्सा (14.6%) भारत (2.2%) के हिस्से से कहीं अधिक है।
भारत-रूस	▶ **द्विपक्षीय व्यापार:** 65 बिलियन डॉलर (2023-24) **{2025 तक इसे बढ़ाकर 30 बिलियन डॉलर करने का लक्ष्य रखा गया है};** दोनों देशों ने **2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ाकर 100 बिलियन अरब डॉलर** करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। ▶ **महत्त्व: चीन की आक्रामकता को संतुलित करना;** S-400 मिसाइल प्रणाली; INS विक्रमादित्य; रूस का सुदूर पूर्व और रूसी संघ का आर्कटिक क्षेत्र; दोनों देश संयुक्त राष्ट्र में CCIT को जल्द से जल्द अंतिम रूप देने का आह्वान करते आए हैं।
भारत-फ्रांस	▶ **भारत और फ्रांस 1998 में रणनीतिक साझेदार बने** ▶ **संबंधों में निकटता:** राफेल विमानों की खरीद और स्कॉर्पीन पनडुब्बियों (P-75 प्रोजेक्ट) के अनुबंध पर हस्ताक्षर; तृष्णा और मेघा ट्रॉपिक्स उपग्रह; दोनों देश हिंद-प्रशांत क्षेत्र से जुड़े हुए हैं
भारत-UK	▶ **2021 में दोनों देशों ने व्यापक रणनीतिक साझेदारी** पर हस्ताक्षर किए; दोनों देशों के मध्य वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान **36.3 बिलियन पाउंड का व्यापार** हुआ था। ▶ **महत्त्व:** 2021 में, दोनों देशों ने **इंडिया-यूनाइटेड किंगडम द्विपक्षीय संबंधों के भविष्य के लिए रोडमैप,** 2030 पर हस्ताक्षर किए थे; 2+2 तंत्र; **आक्रामक चीन को संतुलित करना** (AUKUS); ब्रिटेन में भारतीय प्रवासी के स्वामित्व वाली 600 से अधिक कंपनियां हैं, जो 1 बिलियन पाउंड से अधिक का कॉर्पोरेट कर का भुगतान करते हैं।

भारत-नॉर्डिक

- **डेनमार्क, नॉर्वे, स्वीडन, फिनलैंड और आइसलैंड; इन देशों की संयुक्त GDP का आकार 1.6 ट्रिलियन डॉलर है,** इन देशों की प्रति व्यक्ति आय 54,000 डॉलर है।
- 2018-19 से 2022-23 के दौरान नॉर्डिक क्षेत्र में भारत से किए जाने वाले निर्यात में **39% से अधिक की वृद्धि हुई है।**
- **सहयोग के क्षेत्र:** नीली अर्थव्यवस्था; भारत-नॉर्डिक शिखर सम्मेलन; आर्कटिक शिखर सम्मेलन; UNSC और NSG के लिए भारत का समर्थन।

भारत-ऑस्ट्रेलिया

- **द्विपक्षीय व्यापार: 27 बिलियन डॉलर; वित्त वर्ष** 2023 में भारत, ऑस्ट्रेलिया का 9वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार देश और ऑस्ट्रेलिया, भारत का 13वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार देश था।
- **महत्त्व:** 2020 से व्यापक रणनीतिक साझेदारी (CSP); 2+2 मंत्रिस्तरीय संवाद; भारत शीर्ष व्यापारिक भागीदार है; सुरक्षा सहयोग और असैन्य परमाणु सहयोग समझौते पर संयुक्त घोषणा; SCRI; भारतीय, ऑस्ट्रेलिया में दूसरा सबसे बड़ा प्रवासी समूह हैं।

भारत-अफ्रीका

- 2023 में अफ्रीका में भारतीय निवेश 98 बिलियन डॉलर तक तथा कुल व्यापार 100 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया, भारत अफ्रीका में 5वा सबसे बड़ा निवेशक है, भारतीय प्रधानमंत्री ने अफ्रीका के संबंध में 10 निर्देशक सिद्धांतों की घोषणा की है।
- **महत्त्व:** हॉर्न ऑफ अफ्रीका क्षेत्र में अस्थिरता, चीन के सैन्य अड्डे जैसे- जिबूती, अफ्रीका की 60% आबादी 25 वर्ष से कम आयु की है, अफ्रीका में दुनिया के खनिज भंडार का लगभग **30% हिस्सा है, दक्षिण-दक्षिण सहयोग।**

भारत-मॉरीशस

- **मॉरीशस की जनसंख्या में लगभग 70% लोग भारतीय मूल के हैं; 2011 में CECPA** पर हस्ताक्षर किए गए; वाकाशियो दुर्घटना।
- **सहयोग के क्षेत्र:** दोहरा कराधान परिहार समझौता (1982); मॉरीशस से 161 बिलियन अमेरिकी डॉलर का FDI (2000-2022); भारत मॉरीशस के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में से एक रहा है; भारत ने हेलीकॉप्टर, जहाज, विमान की आपूर्ति की; अगालेगा द्वीप पर उन्नत हवाई पट्टी; मॉरीशस भारत की द्वीपीय देश नीति का केंद्रबिंदु।

BRI

- चीन के नेतृत्व में 2013 में शुरू, अवसंरचना परियोजना का एक रूप।
- **भारत की चिंताएँ:** भारत की संप्रभुता का उल्लंघन; चीन के प्रभाव में वृद्धि और दक्षिण एशिया के छोटे आकार के देशों पर भारत के प्रभाव में कमी।

CPEC

- चीन के उत्तर-पश्चिमी झिंजियांग उइगर स्वायत्त क्षेत्र और ग्वादर बंदरगाह को जोड़ने वाली अवसंरचना परियोजनाओं का **3,000 किलोमीटर लंबा मार्ग।**
- **यह गिलगित बाल्टिस्तान** के भारतीय क्षेत्र से होकर गुज़रता है।

NATO

- **स्वीडन नाटो में 32वें सदस्य** के रूप में शामिल हुआ है।
- **उपलब्धियाँ:** शीत युद्ध के दौरान तनावपूर्ण स्थिति में भी शांति बनाए रखना; फाउन्डिंग एक्ट; यूक्रेन में रूसी कार्रवाइयों की सार्वजनिक रूप से निंदा; नाटो ने भूमध्य सागर को सुरक्षित और संरक्षित बनाने में योगदान दिया।

© Vision IAS

AUKUS	▶ **AUKUS के बारे में:** इसकी घोषणा 2021 में की गई थी; यह ऑस्ट्रेलिया, यू.के. और यू.एस. के बीच एक त्रिपक्षीय रणनीतिक रक्षा गठबंधन है। ▶ **उद्देश्य:** रक्षा क्षमताओं को बढ़ावा देना, तकनीकी एकीकरण में तेजी लाना और औद्योगिक क्षमता का विस्तार करना; 2021 में एक्सचेंज ऑफ नेवल न्यूक्लियर प्रोपल्शन इन्फ़ॉर्मेशन एग्रीमेंट (ENNPIA) पर हस्ताक्षर किए गए।
भारत और बहुपक्षीय विकास बैंक (MDBs)	▶ **MDBs अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाएं हैं,** जो विकासशील देशों को विकास और तकनीकी सहायता उपलब्ध करवाते हैं। विश्व बैंक समूह, ADB ऐसी ही संस्थाएं हैं। ▶ **सुधारों की आवश्यकता क्यों:** वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के लिए; विकासशील देशों के लिए अधिक मताधिकार; निजी क्षेत्रक की लामबंदी का लाभ उठाने के लिए।
UNSC	▶ **भारत संयुक्त राष्ट्र का संस्थापक सदस्य है और इसने 8 बार UNSC के अस्थायी सदस्य के रूप में कार्य किया है।** ▶ **UNSC में भारत का योगदान:** भारत ने अपने कार्यकाल के दौरान 'तालिबान तथा लीबिया प्रतिबंध समितियों' और UNSC की 'आतंकवाद-रोधी समिति' की अध्यक्षता की; मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा (UDHR) को तैयार करने में योगदान; संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में सैनिकों का सबसे बड़ा प्रदाता; G-77 देशों द्वारा प्रस्तावित CCIT का प्रारूप तैयार करने में मदद करना।
UNHRC	▶ इस परिषद में 47 सदस्य देश हैं; सीटों का न्यायसंगत भौगोलिक वितरण; मानवाधिकार उल्लंघन की जांच करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय जांच आयोग और तथ्य-खोज मिशन स्थापित किया गया है; भारत को भारी बहुमत के साथ छठे कार्यकाल (2022-24) के लिए UNHRC में फिर से चुना गया। ▶ **UNHRC का महत्त्व:** मानवाधिकार मुद्दे के संबंध में देशों के बीच संवाद के लिए मंच; मानवाधिकारों की निगरानी के लिए विशेष प्रक्रियाएं; मानवाधिकार रिकॉर्ड की सार्वभौमिक आवधिक समीक्षा (UPR); नागरिक समाज की भागीदारी को प्रोत्साहन।
यू.एन. पीसकीपिंग	▶ **संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना के सिद्धांत:** पक्षकारों की सहमति, निष्पक्षता और आत्मरक्षा तथा जनादेश की रक्षा के अलावा बल का प्रयोग न करना। ▶ **संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में भारत का योगदान:** भारत ने शांति स्थापना मिशनों में 2,87,000 के आस-पास सैनिकों की सेवाएं प्रदान की हैं। भारत **लैंगिक शोषण और दुर्व्यवहार पर ट्रस्ट फंड में योगदान देने वाला पहला देश था।** भारत द्वारा **"ग्रुप ऑफ फ्रेंड्स"** शुरू किया गया है।
IMO	▶ **यह संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष एजेंसी है।** ▶ **महत्त्व:** पोतों से होने वाले समुद्री प्रदूषण पर रोकथाम, समुद्री जैव विविधता का संरक्षण, ध्वनि प्रदूषण का समाधान, जलवायु परिवर्तन का शमन, समुद्र में डंप किए जा रहे अपशिष्ट का निपटान, SOLAS, जिबूती कोड ऑफ कंडक्ट।

UNCAC	▶ **UNCAC के बारे में: यह कन्वेंशन 2005 में लागू** हुआ था। यह **भ्रष्टाचार के खिलाफ कानूनी रूप से बाध्यकारी एकमात्र सार्वभौमिक कन्वेंशन है।** ▶ **इस कन्वेंशन में पांच मुख्य पद्धतियां शामिल हैं:** भ्रष्टाचार से निपटने वाली संस्थाओं की स्थापना, देशों द्वारा भ्रष्टाचार के कृत्य की रोकथाम के लिए कानून लागू करना, देश भ्रष्टाचार से निपटने के लिए एक-दूसरे की कानूनी सहायता करने हेतु बाध्य हैं, एसेट्स की रिकवरी, तकनीकी सहायता और सूचनाओं का आदान-प्रदान।
जेनोसाइड कन्वेंशन	▶ **नरसंहार के अपराध की रोकथाम और सजा पर कन्वेंशन, 1948** ▶ इसमें पहली बार नरसंहार के अपराध को संहिताबद्ध किया गया था। यह संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अपनाई गई पहली मानवाधिकार संधि भी है। ▶ **भारत ने 1949 में इस संधि पर हस्ताक्षर** किए थे।

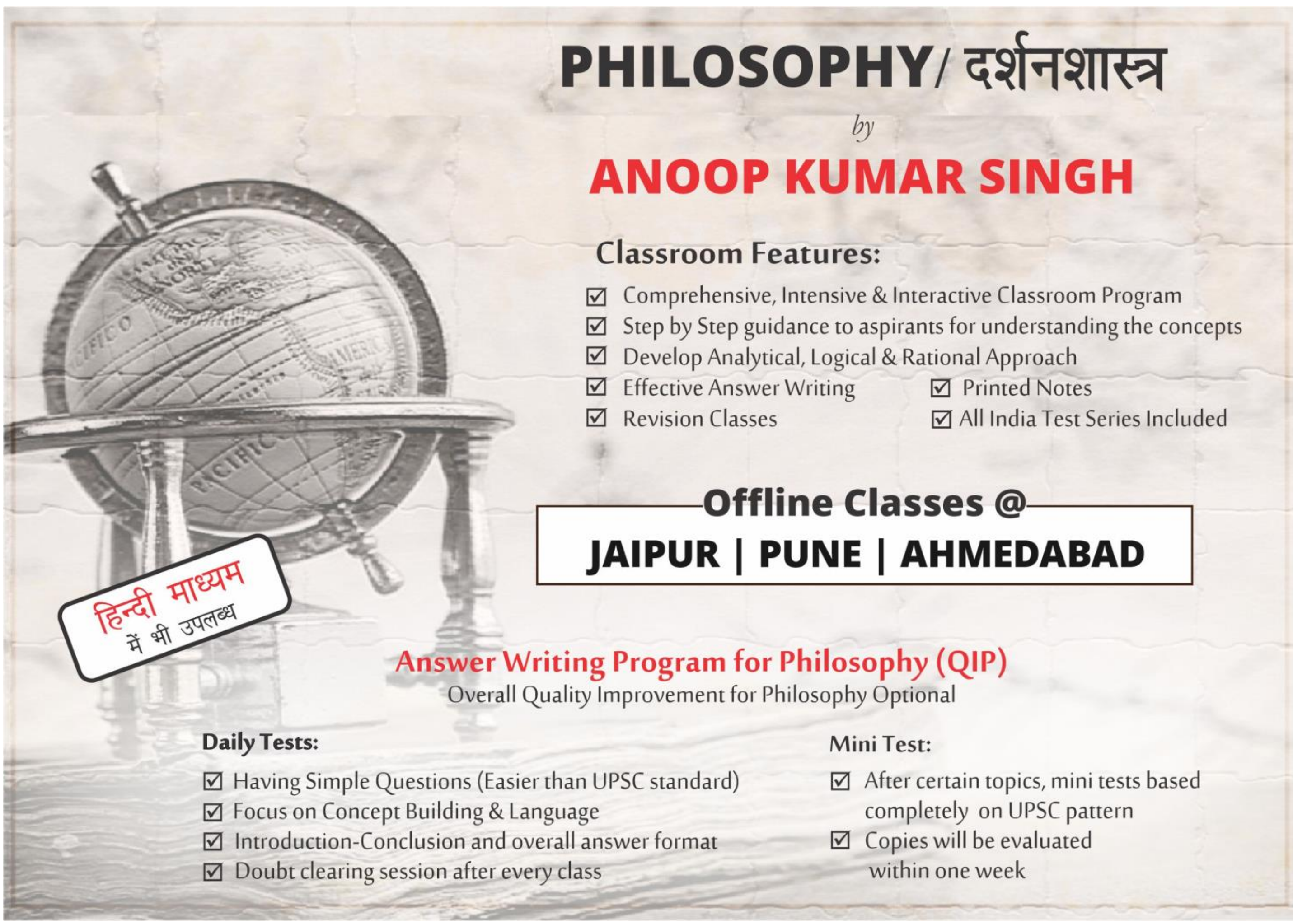

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

करेंट अफेयर्स की बेहतर तैयारी कैसे करें?

करेंट अफेयर्स सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी की आधारशिला है, जो प्रीलिम्स, मेन्स और इंटरव्यू तीनों चरणों में जरूरी होता है। परीक्षा के प्रश्न डायनेमिक स्रोतों से तैयार किए जा रहे हैं। ये प्रश्न सीधे वर्तमान की घटनाओं से जुड़े होते हैं या स्टैटिक कंटेंट तथा वर्तमान की घटनाओं, दोनों से जुड़े होते हैं। इस संदर्भ में, करेंट अफेयर्स से अपडेट रहना अभ्यर्थी को सिविल सेवा परीक्षा के नए ट्रेंड को समझने में सक्षम बनाता है। सही रिसोर्सेज और एक रणनीतिक दृष्टिकोण के जरिए अभ्यर्थी इस विशाल सेक्शन को अपना सकारात्मक पक्ष बना सकते हैं।

करेंट अफेयर्स के लिए दोहरी स्तर वाली रणनीति

करेंट अफेयर्स के लिए दोहरी स्तर वाली रणनीति

अपनी फाउंडेशन को मजबूत करना

न्यूज़पेपर पढ़ना: फाउंडेशन

वैश्विक और राष्ट्रीय घटनाओं की व्यापक समझ हेतु न्यूज़पेपर पढ़ने के लिए प्रतिदिन एक घंटा समर्पित करना चाहिए।

न्यूज़ टुडे: संदर्भ की सरल प्रस्तुति

न्यूज़पेपर पढ़ने के साथ-साथ, न्यूज़ टुडे भी पढ़िए, जिसमें लगभग 200 या 90 शब्दों में करेंट अफेयर्स का सारांश प्रस्तुत किया जाता है। यह रिसोर्स अभ्यर्थियों को महत्वपूर्ण न्यूज़ की पहचान करने, तकनीकी शब्दों और घटनाओं को समझने में मदद करता है।

मासिक समसामयिकी मैगजीन: गहन विश्लेषण

व्यापक कवरेज और घटनाओं के विस्तृत विश्लेषण के लिए मासिक समसामयिकी मैगजीन आपकी जरूरत पूरी कर सकती है। इससे अलग-अलग क्षेत्रों में विभिन्न घटनाओं के संदर्भ, महत्त्व और निहितार्थ को समझने में सुविधा होती है।

तैयारी और रिविजन में महारत हासिल करना

वीकली फोकस: फाउंडेशन को मजबूत करना

किसी टॉपिक के बारे में अपनी समझ को मजबूत करने के लिए वीकली फोकस का संदर्भ लीजिए। इसमें किसी प्रमुख मुद्दे के विभिन्न पहलुओं और आयामों के साथ-साथ स्टेटिक तथा डायनेमिक घटकों को शामिल किया जाता है।

आर्थिक सर्वेक्षण और बजट के हाईलाइट्स तथा सारांश

इसमें आसानी से समझ के लिए जटिल जानकारी को एक कॉम्पैक्ट प्रारूप में प्रस्तुत किया जाता है। आर्थिक सर्वेक्षण और केंद्रीय बजट के सारांश डाक्यूमेंट्स से आप महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

PT 365 और Mains 365: परीक्षा में प्रदर्शन बढ़ाना

पूरे वर्ष के करेंट अफेयर्स की तैयारी के लिए PT 365 और Mains 365 का उपयोग कीजिए। इससे प्रीलिम्स और मेन्स, दोनों के लिए रिविजन में भी मदद मिलेगी।

Vision IAS का **त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट** उन छात्रों के लिए उपयोगी रिसोर्स है, जो 2-3 महीनों से मंथली अपडेट पढ़ने से चूक गए हैं। यह प्रमुख घटनाक्रमों का सारांश प्रदान करके लर्निंग में निरंतर सहायता प्रदान करता है।

ब्रोशर पढ़ने के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए

"याद रखिए, करेंट अफेयर्स को केवल याद ही नहीं रखना होता है, बल्कि घटनाओं के व्यापक निहितार्थों और अंतर्संबंधों को समझना भी होता है। जिज्ञासा के साथ आगे बढ़िए; समय के साथ, यह बोझ कम होता जाएगा और यह एक ज्ञानवर्धक अनुभव बन जाएगा।"

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

8. विगत वर्षों के प्रश्न 2013-2023 (सिलेबस के अनुसार) {Previous Year Questions 2013-2023 (Syllabus-Wise)}

भारत और उसके पड़ोसी देश- संबंध (India and its neighborhood- relations)

- 'भारत श्रीलंका का बरसों पुराना मित्र है।' पूर्ववर्ती कथन के आलोक में श्रीलंका के वर्तमान संकट में भारत की भूमिका की विवेचना कीजिए। (Indian is an old-age friend of Sri Lanka. Discuss India's role in the recent crisis in Srilanka in the light of the precedent statement.) (2022)
- आपके विचार में क्या बिमस्टेक (BIMSTEC) सार्क (SAARC) की तरह एक समानांतर संगठन है ? इन दोनों के बीच क्या समानताएँ और असमानताएँ हैं? इस नए संगठन के बनाए जाने से भारतीय विदेश नीति के उद्देश्य कैसे प्राप्त हुए हैं? (Do you think BIMSTEC is a parallel organization like SAARC? What are the similarities and dissimilarities between the two? How Indian foreign policy objectives realized by forming a new organization?) (2022)
- मध्य एशिया, जो भारत के लिए एक हित क्षेत्र है, में अनेक बाह्य शक्तियों ने अपने-आप को संस्थापित कर लिया है। इस संदर्भ में, भारत द्वारा अश्गाबात करार, 2018 में शामिल होने के निहितार्थों पर चर्चा कीजिए। (A number of outside powers have entrenched themselves in Central Asia, which is a zone of interest to India. Discuss the implications, in this context, of India's joining the Ashgabat Agreement, 2018.) (2018)
- "चीन अपने आर्थिक संबंधों एवं सकारात्मक व्यापार अधिशेष को, एशिया में संभाव्य सैनिक शक्ति हैसियत को विकसित करने के लिए, उपकरणों के रूप में इस्तेमाल कर रहा है।" इस कथन के प्रकाश में, उसके पड़ोसी के रूप में भारत पर इसके प्रभाव पर चर्चा कीजिए। ('China is using its economic relations and positive trade surplus as tools to develop potential military power status in Asia'. In the light of this statement, discuss its impact on India as her neighbour.) (2017)
- भारत की ऊर्जा सुरक्षा का प्रश्न भारत की आर्थिक प्रगति का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भाग है। पश्चिम एशियाई देशों के साथ भारत के ऊर्जा नीति सहयोग का विश्लेषण कीजिए। (The question of India's Energy Security Constitutes the most important part of India's economic progress. Analyse India's energy policy cooperation with West Asian countries.) (2017)
- शीतयुद्धोत्तर अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य के संदर्भ में, भारत की पूर्वोन्मुखी नीति के आर्थिक और सामरिक आयामों का मूल्यांकन कीजिए। (Evaluate the economic and strategic dimensions of India's Look East Policy in the context of the post Cold War international scenario.) (2016)
- "भारत में बढ़ते हुए सीमापारीय आतंकी हमले और अनेक सदस्य राज्यों के आंतरिक मामलों में पाकिस्तान द्वारा बढ़ता हुआ हस्तक्षेप सार्क (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन) के भविष्य के लिए सहायक नहीं हैं।" उपयुक्त उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिए। ("Increasing cross-border terrorist attacks in India and growing interference in the internal affairs of several memberstates by Pakistan are not conducive for the future of SAARC (South Asian Association for Regional Cooperation)." Explain with suitable examples.) (2016)
- परियोजना 'मौसम' को भारत सरकार की अपने पड़ोसियों के साथ संबंधों को सुदृढ़ करने की एक अद्वितीय विदेश नीति पहल माना जाता है। क्या इस परियोजना का एक रणनीतिक आयाम है? चर्चा कीजिए। (Project 'Mausam' is considered a unique foreign policy initiative of Indian Government to improve relationship with its neighbours. Does the project have a strategic dimension? Discuss.) (2015)
- आतंकवादी गतिविधियों और परस्पर अविश्वास ने भारत-पाकिस्तान संबंधों को धूमिल बना दिया है। खेलों और सांस्कृतिक आदान-प्रदानों जैसी मृदु शक्ति किस सीमा तक दोनों देशों के बीच सद्भाव उत्पन्न करने में सहायक हो सकती है? उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए। (Terrorist activities and mutual distrust have clouded India – Pakistan relations. To what extent the use of soft power like sports and cultural exchanges could help generate goodwill between the two countries? Discuss with suitable examples.) (2015)

- दक्षिण चीन सागर के मामले में, समुद्री भूभागीय विवाद और बढ़ता हुआ तनाव समस्त क्षेत्र में नौपरिवहन की और ऊपरी उड़ान की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने के लिये समुद्री सुरक्षा की आवश्यकता की अभिपुष्टि करतें हैं। इस सन्दर्भ में भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा कीजिये। (With respect to the South China sea, maritime territorial disputes and rising tension affirm the need for safeguarding maritime security to ensure freedom of navigation and over flight throughout the region. In this context, discuss the bilateral issues between India and China.) (2014)
- भारत श्री लंका संबंधों के संदर्भ में, विवेचना कीजिए कि किस प्रकार आंतरिक (देशीय) कारक विदेश नीति को प्रभावित करते हैं। (In respect of India-Sri Lanka relations, discuss how domestic factors influence foreign policy.) (2013)
- गुजराल सिद्धान्त से क्या अभिप्राय है? क्या आज इसकी कोई प्रासंगिकता है? विवेचना कीजिए। (What is meant by Gujral doctrine? Does it have any relevance today? Discuss.) (2013)

द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक समूह और भारत से जुड़े और/या भारत के हितों को प्रभावित करने वाले समझौते (Bilateral, regional and global groupings and agreements involving India and/ofecting India's interests)

- 'संघर्ष का विषाणु एस.सी.ओ. के कामकाज को प्रभावित कर रहा है' उपरोक्त कथन के आलोक में समस्याओं को कम करने में भारत की भूमिका बताइये। ("Virus of Conflict is affecting the functioning of the SCO'In the light of the above statement point out the role of India in mitigating the problems.) (2023)
- I2U2 (भारत, इज़रायल, संयुक्त अरब अमीरात और संयुक्त राज्य अमेरिका) समूहन वैश्विक राजनीति में भारत की स्थिति को किस प्रकार रूपांतरित करेगा? (How will I2U2 (India, Israel, UAE and USA) grouping transform India's position in global politics?) (2022)
- "यदि विगत कुछ दशक एशिया के विकास की कहानी के रहे, तो परवर्ती कुछ दशक अफ्रीका के हो सकते हैं।" इस कथन के आलोक में, हाल के वर्षों में अफ्रीका में भारत के प्रभाव का परीक्षण कीजिए। ("If the last few decades were of Asia's growth story, the next few are expected to be of Africa's." In the light of this statement, examine India's influence in Africa in recent years.)(2021)
- 'भारत और जापान के लिए समय आ गया है कि एक ऐसे मजबूत समसामयिक संबंध का निर्माण करें, जिसका वैश्विक एवं रणनीतिक साझेदारी को आवेष्टित करते हुए एशिया एवं सम्पूर्ण विश्व के लिए बड़ा महत्व होगा।' टिप्पणी कीजिए। (The time has come for India and Japan to build a strong contemporary relationship, one involving global and strategic partnership that will have a great significance for Asia and the world as a whole.' Comment.) (2019)
- 'भारत और यूनाइटेड स्टेट्स के बीच संबंधों में खटास के प्रवेश का कारण वाशिंगटन का अपनी वैश्विक रणनीति में अभी तक भी भारत के लिए किसी ऐसे स्थान की खोज करने में विफलता है, जो भारत के आत्म-समादर और महत्वाकांक्षा को संतुष्ट कर सके।' उपयुक्त उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिए। ("What introduces friction into the ties between India and the United States is that Washington is still unable to find for India a position in its global strategy, which would satisfy India's National self- esteem and ambitions" Explain with suitable examples.) (2019)
- भारत-रूस रक्षा समझौतों की तुलना में भारत-अमेरिका रक्षा समझौतों की क्या महत्ता है ? हिन्द-प्रशान्त महासागरीय क्षेत्र में स्थायित्व के संदर्भ में विवेचना कीजिए। (What is the significance of Indo-US defence deals over Indo-Russian defence deals? Discuss with reference to stability in the Indo-Pacific region.) (2020)
- "भारत के इज़राइल के साथ संबंधों ने हाल में एक ऐसी गहराई एवं विविधता प्राप्त कर ली है, जिसकी पुनर्वापसी नहीं की जा सकती है।" विवेचना कीजिए। ("India's relations with Israel have, of late, acquired a depth and diversity, which cannot be rolled back." Discuss.) (2018)
- इस समय जारी अमरीका ईरान नाभिकीय समझौता विवाद भारत के राष्ट्रीय हितों को किस प्रकार प्रभावित करेगा? भारत को इस स्थिति के प्रति क्या रवैया अपनाना चाहिए? (In what ways would the ongoing U.S-Iran Nuclear Pact Controversy affect the national interest of India? How should India respond to this situation?) (2018)

© Vision IAS

- अफ्रीका में भारत की बढ़ती हुई रुचि के सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष है। समालोचनापूर्वक परीक्षण कीजिए। (Increasing interest of India in Africa has its pro and cons. Critically examine.) (2015)
- हाल के कुछ वर्षों में भारत व जापान के मध्य आर्थिक संबंधों में विकास हुआ है पर अब भी वह उनकी संभाविता से बहुत कम है। उन नीतिगत दबावों (व्यवरोधों) को स्पष्ट कीजिए जिनके कारण यह विकास अवरुद्ध है। (Economic ties between India and Japan while growing in the recent years are still far below their potential. Elucidate the policy constraints which are inhibiting this growth.) (2013)

भारत के हितों पर विकसित और विकासशील देशों की नीतियों और राजनीति का प्रभाव (Effect of policies and politics of developed and developing countries on India's interests)

- 'नाटो का विस्तार एवं सुदृढीकरण, और एक मजबूत अमेरिका-यूरोप रणनीतिक साझेदारी भारत के लिये अच्छा काम करती है।' इस कथन के बारे में आपकी क्या राय है? अपने उत्तर के समर्थन में कारण और उदाहरण दीजिये। ('The expansion and strengthening of NATO and a stronger US-Europe strategic partnership works well for India.' What is your opinion about this statement? Give reasons and examples to support your answer.) (2023)
- भारत-प्रशांत महासागर क्षेत्र में चीन की महत्त्वाकांक्षाओं का मुकाबला करना नई त्रि-राष्ट्र साझेदारी AUKUS का उद्देश्य है। क्या यह इस क्षेत्र में मौजूदा साझेदारी का स्थान लेने जा रहा है? वर्तमान परिदृश्य में, AUKUS की शक्ति और प्रभाव की विवेचना कीजिए। (The newly tri-nation partnership AUKUS is aimed at countering China's ambitions in the Indo-Pacific region. Is it going to supersede the existing partnerships in the region? Discuss the strength and impact of AUKUS in the present scenario.) (2021)
- "संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन के रूप में एक ऐसे अस्तित्व के खतरे का सामना कर रहा है जो तत्कालीन सोवियत संघ की तुलना में कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण है।" विवेचना कीजिए। ("The USA is facing an existential threat in the form of a China, that is much more challenging than the erstwhile Soviet Union." Explain.) (2021)
- सूचना प्रौद्योगिकी समझौतों (ITA) का उद्देश्य हस्ताक्षरकर्ताओं द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी उत्पादों पर सभी करों और प्रशुल्कों को कम करके शून्य पर लाना है। ऐसे समझौतों का भारत के हितों पर क्या प्रभाव होगा? (The aim of Information Technology Agreements (ITAs) is to lower all taxes and tariffs on information technology products by signatories to zero. What impact would such agreements have on India's interests?) (2014)
- वर्ष 2014 में अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा सहायक बल (ISAF) की अफगानिस्तान से प्रस्तावित वापसी क्षेत्र के देशों के लिए बड़े ख़तरों (सुरक्षा उलझनों) भरा है। इस तथ्य के आलोक में परीक्षण कीजिए कि भारत के सामने भरपूर चुनौतियाँ हैं तथा उसे अपने सामरिक महत्त्व के हितों की रक्षा करने की आवश्यकता है। (The proposed withdrawal of International Security Assistance Force (ISAF) from Afghanistan in 2014 is fraught with major security implications for the countries of the region. Examine in light of the fact that India is faced with a plethora of challenges and needs to safeguard its own strategic interests.) (2013)
- 'मोतियों के हार' (द स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स) से आप क्या समझते हैं? यह भारत को किस प्रकार प्रभावित करता है ? इसका सामना करने के लिए भारत द्वारा उठाए गए कदमों की संक्षिप्त रूपरेखा दीजिए। (What do you understand by 'The String of Pearls'? How does it impact India? Briefly outline the steps taken by India to counter this.) (2013)
- बंगलादेश के ढाका में शाहबाग स्क्वायर में हुए विरोध प्रदर्शनों ने समाज में राष्ट्रवादी व इस्लामी शक्तियों के बीच मौलिक मतभेद उजागर किया है। भारत के लिए इसका क्या महत्त्व है? (The protests in Shahbag Square in Dhaka in Bangladesh reveal a fundamental split in society between the nationalists and Islamic forces. What is its significance for India?) (2013)
- मालदीव में पिछले दो वर्षों में हुई राजनैतिक घटनाओं की विवेचना कीजिए। यह बताइए कि क्या ये भारत के लिए चिंता का विषय हैं। (Discuss the political developments in Maldives in the last two years. Should they be of any cause of concern to India?) (2013)

भारतीय प्रवासी (Indian Diaspora)

- भारतीय प्रवासियों ने पश्चिम में नई ऊंचाइयों को छुआ है। भारत के लिये इसके आर्थिक और राजनीतिक लाभों का वर्णन करें। (Indian diaspora has scaled new heights in the West. Describe its economic and political benefits for India.) (2023)
- 'अमेरिका एवं यूरोपीय देशों की राजनीति और अर्थव्यवस्था में भारतीय प्रवासियों को एक निर्णायक भूमिका निभानी है'। उदाहरणों सहित टिप्पणी कीजिए। ('Indian diaspora has a decisive role to play in the politics and economy of America and European Countries'. Comment with examples.) (2020)
- दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों की अर्थव्यवस्था एवं समाज में भारतीय प्रवासियों को एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इस संदर्भ में, दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय प्रवासियों की भूमिका का मूल्यनिरूपण कीजिए। (Indian Diaspora has an important role to play in South East Asian countries economy and society. Appraise the role of Indian Diaspora in South-East Asia in this context.) (2017)

महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संस्थान, एजेंसियां और मंच- उनकी संरचना और शासनादेश (Important International institutions, agencies and fora- their structure, mandate)

- 'समुद्र ब्रह्मांड का एक महत्वपूर्ण घटक है'
उपरोक्त कथन के आलोक में पर्यावरण रक्षण और समुद्री संरक्षा एवं सुरक्षा को बढ़ाने में आई.एम.ओ. (अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन) की भूमिका पर चर्चा करें। ('Sea is an important Component of the Cosmos' Discuss in the light of the above statement the role of the IMO (International Maritime Organisation) in protecting environment and enhancing maritime safety and security.) (2023)
- 'स्वच्छ ऊर्जा आज की ज़रूरत है।' भू-राजनीति के सन्दर्भ में, विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मंचों में जलवायु परिवर्तन की दिशा में भारत की बदलती नीति का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। (Clean energy is the order of the day. Describe briefly India's changing policy towards climate change in various international fora in the context of geopolitics.) (2022)
- एस० सी० ओ० के लक्ष्यों और उद्देश्यों का विश्लेषणात्मक परीक्षण कीजिए। भारत के लिए इसका क्या महत्त्व है? (Critically examine the aims and objectives of SCO. What importance does it hold for India?) (2021)
- कोविड-19 महामारी के दौरान वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करने में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लू.एच.ओ.) की भूमिका का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (Critically examine the role of WHO in providing global health security during the COVID-19 pandemic.) (2020)
- 'आवश्यकता से कम नगदी, अत्यधिक राजनीति ने यूनेस्को को जीवन-रक्षण की स्थिति में पहुँचा दिया है।' अमेरिका द्वारा सदस्यता परित्याग करने और सांस्कृतिक संस्था पर 'इजराइल विरोधी पूर्वाग्रह' होने का दोषारोपण करने के प्रकाश में इस कथन की विवेचना कीजिए। ('Too little cash, too much politics, leaves UNESCO fighting for life.' Discuss the statement in the light of US' withdrawal and its accusation of the cultural body as being 'anti-Israel bias'.) (2020)
- गदि 'व्यापार युद्ध' के बर्तमान परिदृश्य में विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू० टी० ओ०) को जिन्दा बने रहना है, तो उसके सुधार के कौन-कौन से प्रमुख क्षेत्र हैं, विशेष रूप से भारत के हित को ध्यान में रखते हुए? (What are the key areas of reform if the WTO has to survive in the present context of 'Trade War', especially keeping in mind the interest of India?) (2018)
- संयुक्त राष्ट्र आर्थिक व सामाजिक परिषद् (इकोसॉक) के प्रमुख प्रकार्य क्या हैं? इसके साथ संलग्न विभिन्न प्रकार्यात्मक आयोगों को स्पष्ट कीजिए। (What are the main functions of the United Nations Economic and Social Council (ECOSOC)? Explain different functional commissions attached to it.) (2017)
- यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन) के मैक्ब्राइड आयोग के लक्ष्य और उद्देश्य क्या-क्या हैं? इनमें भारत की क्या स्थिति है? (What are the aims and objectives of the McBride Commission of the UNESCO? What is India's position on these?) (2016)
- "विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू.टी.ओ.) के अधिक व्यापक लक्ष्य और उद्देश्य वैश्वीकरण के युग में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रबंधन और प्रोन्नति करना है। परन्तु (संधि) वार्ताओं की दोहा परिधि मृतोन्मुखी प्रतीत होती है, जिसका कारण विकसित और विकासशील देशों के बीच मतभेद है।" भारतीय परिप्रेक्ष्य में, इस पर चर्चा कीजिए । ("The broader aims and objectives of WTO are to manage and promote international trade in the

© Vision IAS

era of globalization. But the Doha round of negotiations seem doomed due to differences between the developed and the developing countries." Discuss in the Indian perspective.) (2016)

- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में स्थायी सीट की खोज में भारत के समक्ष आने वाली बाधाओं पर चर्चा कीजिए। (Discuss the impediments India is facing in its pursuit of a permanent seat in UN Security Council.) (2015)
- भारत ने हाल ही में "नव विकास बैंक" (NDB) और साथ ही "एशियाई आधारिक संरचना निवेश बैंक" (AIIB) के संस्थापक सदस्य बनने के लिये हस्ताक्षर किये हैं। इन दो बैंकों की भूमिकाएं एक दूसरे से किस प्रकार भिन्न होंगी ? भारत के लिये इन दो बैंकों के रणनीतिक महत्व पर चर्चा कीजिये। (India has recently signed to become founding member of New Development Bank (NDB) and also the Asian Infrastructure Investment Bank (AIIB). How will the role of the two Banks be different? Discuss the strategic significance of these two Banks for India.) (2014)
- विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू.टी.ओ.) एक महत्त्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संस्था है, जहाँ लिए गए निर्णय देशों को गहराई से प्रभावित करते हैं। डब्ल्यू.टी.ओ. का क्या अधिदेश (मैंडेट) है और उसके निर्णय किस प्रकार बंधनकारी है ? खाद्य सुरक्षा पर विचार-विमर्श के पिछले चक्र पर भारत के दृढ़-मत का समालोचनापूर्वक विश्लेषण कीजिये। (WTO is an important international institution where decisions taken affect countries in a profound manner. What is the mandate of WTO and how binding are their decisions? Critically analyse India's stand on the latest round of talks on Food security.) (2014)
- अंतर्राष्ट्रीय निधीयन संस्थाओं में से कुछ की आर्थिक भागीदारी के लिए विशेष शर्तें होती हैं, जो शर्त लगाती हैं कि उपस्कर के स्रोतन के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला सहायता का एक बड़ा भाग, अग्रणी देशों से उपस्कर स्रोतन के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। ऐसी शर्तों के गुणों-अवगुणों पर चर्चा कीजिए और क्या भारतीय संदर्भ में ऐसी शर्तों को स्वीकार न करने की एक मज़बूत स्थिति विद्यमान है। (Some of the International funding agencies have special terms for economic participation stipulating a substantial component of the aid to be used for sourcing equipment from the leading countries. Discuss on merits of such terms and if, there exists a strong case not to accept such conditions in the Indian context.) (2014)
- विश्व बैंक व अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, संयुक्त रूप से ब्रेटन वुड्स नाम से जानी जाने वाली संस्थाएँ, विश्व की आर्थिक व वित्तीय व्यवस्था की संरचना का संभरण करने वाले दो अन्तःसरकारी स्तम्भ हैं। पृष्ठीय रूप में, विश्व बैंक व अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष दोनों की अनेक समान विशिष्टताएँ हैं, तथापि उनकी भूमिका, कार्य तथा अधिदेश स्पष्ट रूप से भिन्न हैं। व्याख्या कीजिए। (The World Bank and the IMF, collectively known as the Bretton Woods Institutions, are the two inter-governmental pillars supporting the structure of the world's economic and financial order. Superficially, the World Bank and the IMF exhibit many common characteristics, yet their role, functions and mandate are distinctly different. Elucidate.) (2013)

विविध (Miscellaneous)

- 'उभरती हुई वैश्विक व्यवस्था में, भारत द्वारा प्राप्त नव-भूमिका के कारण, उत्पीड़ित एवं उपेक्षित राष्ट्रों के मुखिया के रूप में दीर्घ काल से संपोषित भारत की पहचान लुप्त हो गई है।' विस्तार से समझाइये। ("The long-sustained image of India as a leader of the oppressed and marginalised Nations has disappeared on account of its new found role in the emerging global order" Elaborate) (2019)

विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न

मुख्य परीक्षा के सिलेबस के अनुसार अलग कर वर्ष 2013–2023 तक पूछे गए प्रश्नों (अंतर्राष्ट्रीय संबंध खंड के लिए) की सॉफ्ट कॉपी डाउनलोड करने के लिए दिए QR कोड को स्कैन कीजिए।

वीकली फोकस: अंतर्राष्ट्रीय संबंध

क्र. सं.	टॉपिक	अन्य जानकारी
1.	भारत एवं संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार	
2.	भारत और चीन के आर्थिक संबंध	
3	वैश्वीकरण: अंत या रूपांतरण की ओर?	
4.	कोविड–19 और विश्व व्यवस्था	
5.	भारत और हिंद–प्रशांत	
6.	क्षेत्रीय संपर्क: ग्रेट गेम में भारत की भूमिका	
7.	जबरन विस्थापन: एक मानवीय त्रासदी और विकास संबंधी चुनौती	
8.	पैराडिप्लोमेसी: विदेश नीति के विकेन्द्रीकरण के गुण और दोष	
9.	लोकतंत्र का विश्लेषण: उद्भव से लेकर लोकतंत्र के समक्ष खतरे और पुनरुद्धार तक	
10.	भारतीय विदेश नीति का बदलता स्वरूप	
11.	भारत की आर्थिक कूटनीति पर एक नज़र	
12.	विश्व व्यवस्था: उदय और संभावित पतन	
13.	ग्लोबल पब्लिक गुड्स: हमारे साझे भविष्य को पोषित करना	
14.	भारत की नेबरहुड पॉलिसी: संभावनाएं और चुनौतियां	
15.	विदेशों में भारतीय प्रवासी	

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION
SANDHAN

संधान के जरिए पर्सनलाइज्ड तरीके से UPSC प्रीलिम्स की तैयारी कीजिए

(ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज के तहत पर्सनलाइज्ड टेस्ट सीरीज)

UPSC प्रीलिम्स की तैयारी के लिए सिर्फ मॉक टेस्ट देना ही काफी नहीं होता है; बल्कि इसके लिए स्मार्ट तरीके से टेस्ट की प्रैक्टिस भी जरूरी होती है।

अभ्यर्थियों की तैयारी के अलग-अलग स्तरों और उनकी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, हमने संधान टेस्ट सीरीज को डिजाइन किया है। यह ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज के तहत ही एक पर्सनलाइज्ड टेस्ट सीरीज है।

संधान की मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

प्रश्नों का विशाल संग्रह: इसमें UPSC द्वारा विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्नों (PYQs) के साथ-साथ VisionIAS द्वारा तैयार किए गए 20,000 से अधिक उच्च गुणवत्ता वाले प्रश्न उपलब्ध हैं।

पर्सनलाइज्ड टेस्ट: अभ्यर्थी अपनी जरूरत के अनुसार विषयों और टॉपिक्स का चयन करके पर्सनलाइज्ड टेस्ट तैयार कर सकते हैं।

प्रश्नों के चयन में फ्लेक्सिबिलिटी: अभ्यर्थी टेस्ट के लिए Vision IAS द्वारा तैयार किए गए प्रश्नों या UPSC के विगत वर्षों के प्रश्नों में से चयन कर सकते हैं।

समयबद्ध मूल्यांकन: अभ्यर्थी परीक्षा जैसी स्थितियों को ध्यान में रखते हुए तय समय-सीमा में टेस्ट के जरिए अपने टाइम मैनेजमेंट स्किल का मूल्यांकन कर उसे बेहतर बना सकते हैं।

प्रदर्शन में सुधार: टेस्ट में अभ्यर्थी के प्रदर्शन के आधार पर, सुधार की गुंजाइश वाले क्षेत्रों पर पर्सनलाइज्ड फीडबैक दिया जाएगा।

स्टूडेंट डैशबोर्ड: स्टूडेंट डैशबोर्ड की सहायता से अभ्यर्थी हर विषय में अपने प्रदर्शन और ओवरऑल प्रगति को ट्रैक कर सकेंगे।

संधान के मुख्य लाभ

अपनी तैयारी के अनुरूप प्रैक्टिस: अभ्यर्थी अपनी जरूरतों के हिसाब से विषयों और टॉपिक्स का चयन कर सकते हैं। इससे अपने मजबूत पक्षों के अनुरूप तैयारी करने में मदद मिलेगी।

पर्सनलाइज्ड असेसमेंट: अभ्यर्थी अपनी आवश्यकता के अनुसार टेस्ट तैयार करने के लिए Vision IAS द्वारा तैयार प्रश्नों या UPSC में पिछले वर्षों में पूछे गए प्रश्नों का चयन कर सकते हैं।

कॉम्प्रिहेंसिव कवरेज: प्रश्नों के विशाल भंडार की उपलब्धता से सिलेबस की संपूर्ण तैयारी सुनिश्चित होगी।

लक्षित तरीके से सुधार: टेस्ट के बाद मिलने वाले फीडबैक से अभ्यर्थियों को यह पता लग सकेगा कि उन्हें किन विषयों (या टॉपिक्स) में सुधार करना है। इससे उन्हें तैयारी के लिए बेहतर रणनीति बनाने में सहायता मिलेगी।

प्रभावी समय प्रबंधन: तय समय सीमा में प्रश्नों को हल करने से टाइम मैनेजमेंट के लिए कौशल विकसित करने में मदद मिलेगी।

आत्मविश्वास में वृद्धि: कस्टमाइज्ड सेशन और फीडबैक से परीक्षा के लिए अभ्यर्थियों की तैयारी का स्तर तथा उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।

यह अपनी तरह की एक इनोवेटिव टेस्ट सीरीज है। संधान के जरिए, अभ्यर्थी तैयारी की अपनी रणनीति के अनुरूप टेस्ट की प्रैक्टिस कर सकते हैं। इससे उन्हें UPSC प्रीलिम्स पास करने के लिए एक समग्र तथा टार्गेटेड अप्रोच अपनाने में मदद मिलेगी।

रजिस्ट्रेशन करने और "ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज" का ब्रोशर डाउनलोड करने के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए

संधान पर्सनलाइज्ड टेस्ट कैसे एक परिवर्तनकारी प्लेटफ़ॉर्म बन सकता है, यह जानने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

AHMEDABAD | BENGALURU | BHOPAL | CHANDIGARH | DELHI | GUWAHATI | HYDERABAD | JAIPUR | JODHPUR | LUCKNOW | PRAYAGRAJ | PUNE | RANCHI

लाइव / ऑनलाइन
कक्षाएं भी उपलब्ध

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

सामान्य अध्ययन फाउंडेशन कोर्स 2025

प्रीलिम्स और मेन्स, दोनों

दिल्ली	अवधि
22 अगस्त | 1 PM	12–14 महीने

VisionIAS ऐप को डाउनलोड करने के लिए दिए गए **QR कोड को स्कैन कीजिए**

निःशुल्क काउंसिलिंग के लिए **QR** कोड को स्कैन कीजिए

डेली MCQs और अन्य अपडेट्स के लिए हमारे ऑफिशियल **टेलीग्राम ग्रुप को ज्वाइन कीजिए**

- सामान्य अध्ययन फाउंडेशन कोर्स में GS मेन्स के सभी चारों पेपर, GS प्रीलिम्स, CSAT और निबंध के सिलेबस को विस्तार से कवर किया जाता है।
- अभ्यर्थियों के ऑनलाइन स्टूडेंट पोर्टल पर लाइव एवं ऑनलाइन रिकॉर्डेड कक्षाओं की सुविधा भी उपलब्ध है, ताकि वे किसी भी समय, कहीं से भी लेक्चर और स्टडी मटेरियल तक प्रभावी ढंग से पहुंच सकें।
- इस कोर्स में पर्सनालिटी डेवलपमेंट प्रोग्राम भी शामिल है।
- 2025 के प्रोग्राम की अवधिः 12–14 महीने
- प्रत्येक कक्षा की अवधिः 3–4 घंटे, सप्ताह में 5–6 दिन (आवश्यकता पड़ने पर रविवार को भी कक्षाएं आयोजित की जा सकती हैं)

नोटः अभ्यर्थी फाउंडेशन कोर्स की लाइव वीडियो कक्षाएं घर बैठे अपने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी देख सकते हैं। साथ ही, अभ्यर्थी लाइव चैट के जरिए कक्षा के दौरान अपने डाउट्स और विषय संबंधी प्रश्न पूछ सकते हैं। इसके अलावा, वे अपने डाउट्स और प्रश्न को नोट कर दिल्ली सेंटर पर हमारे क्लासरूम मेंटर को बता सकते हैं, जिसके बाद फोन/ मेल के जरिए अभ्यर्थियों के प्रश्नों का समाधान किया जाता है।

GS फाउंडेशन कोर्स की अन्य मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

नियमित तौर पर व्यक्तिगत मूल्यांकन
अभ्यर्थियों को नियमित ट्यूटोरियल, मिनी टेस्ट एवं ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज के माध्यम से व्यक्तिगत व अभ्यर्थी के अनुरूप और ठोस फीडबैक दिया जाता है

सभी द्वारा पढ़ी जाने वाली एवं सभी द्वारा अनुशंसित
विशेषज्ञों की एक समर्पित टीम द्वारा तैयार की गई मासिक समसामयिकी मैगजीन, PT 365 और Mains 365 डॉक्यूमेंट्स तथा न्यूज़ टुडे जैसी प्रासंगिक एवं अपडेटेड अध्ययन सामग्री

नियमित तौर पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन
इस कोर्स के तहत अभ्यर्थियों के डाउट्स दूर करने और उन्हें प्रेरित रखने के लिए नियमित रूप से फोन/ ईमेल/ लाइव चैट के माध्यम से "वन–टू–वन" मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।

ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज़
प्रत्येक 3 सफल उम्मीदवारों में से 2 Vision IAS की ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज को चुनते हैं। Vision IAS के पोस्ट टेस्ट एनालिसिस के तहत टेस्ट पेपर में स्टूडेंट्स के प्रदर्शन का विस्तार से विश्लेषण एवं समीक्षा की जाती है। यह अपनी गलतियों को जानने एवं उसमें सुधार करने हेतु काफी महत्वपूर्ण है।

कोई क्लास मिस ना करें
प्रत्येक अभ्यर्थी को एक व्यक्तिगत "स्टूडेंट पोर्टल" उपलब्ध कराया जाता है। इस पोर्टल के जरिए अभ्यर्थी किसी भी पुराने क्लास या छूटे हुए सेशन और विभिन्न रिसोर्सेज़ को एक्सेस कर सकते हैं एवं अपने प्रदर्शन का सापेक्ष एवं निरपेक्ष मूल्यांकन कर सकते हैं।

बाधा रहित तैयारी
अभ्यर्थी VisionIAS के क्लासरूम लेक्चर्स एवं विभिन्न रिसोर्सेज़ को कहीं से भी तथा कभी भी एक्सेस कर सकते हैं और वे इन्हें अपनी जरुरत के अनुसार ऑर्गनाईज कर सकते हैं।

/c/VisionIASdelhi /vision_ias /visionias_upsc /VisionIAS_UPSC

Heartiest
Congratulations
to all Successful Candidates

79 in **TOP 100** Selections in **CSE 2023**
from various programs of **Vision IAS**

1 AIR
Aditya Srivastava

2 AIR **Animesh Pradhan**

5 AIR **Ruhani**

6 AIR **Srishti Dabas**

7 AIR **Anmol Rathore**

9 AIR **Nausheen**

10 AIR **Aishwaryam Prajapati**

हिंदी माध्यम में 35+ चयन CSE 2023 में

हिंदी माध्यम टॉपर

53 AIR **मोहन लाल**

136 AIR **अर्पित कुमार**

238 AIR **विपिन दुबे**

257 AIR **मनीषा धार्वे**

313 AIR **मयंक दुबे**

517 AIR **देवेश पाराशर**

UPSC TOPPERS/OPEN SESSION: QR स्कैन करें

53 AIR
मोहन लाल
TOPPERS' TALK

136 AIR
अर्पित कुमार
TOPPERS' TALK

विगत वर्षों में UPSC मेन्स में पूछे गए प्रश्न

UPSC मेन्स 2024 के लिए व्यापक रणनीति

DELHI

HEAD OFFICE
Apsara Arcade, 1/8-B 1st Floor, Near Gate-6 Karol Bagh Metro Station

MUKHERJEE NAGAR CENTER
Plot No. 857, Ground Floor, Mukherjee Nagar, Opposite Punjab & Sindh Bank, Mukherjee Nagar

GTB NAGAR CENTER
Classroom & Enquiry Office, above Gate No. 2, GTB Nagar Metro Building, Delhi - 110009

FOR DETAILED ENQUIRY
Please Call: +91 8468022022, +91 9019066066

enquiry@visionias.in | /@visioniashindi | /visionias.upsc | /vision_ias_hindi/ | /hindi_visionias

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची